Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112383

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसायन

मार्च १९५६

गुरुकुल पत्रिका

वर्ष ८ वार्षिक ३)

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

अंक ९ इस अङ्क का ।=)

गुरुकुल पत्रिका

सम्पादक
साहित्य मनीषी
डा० गणपति सिंह वर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

112383
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
112383

विषय अनुक्रमणिका

विषय	लेखक	पृष्ठ
सर्पगन्धा बढे हुए रक्तचाप के लिए रामबाण		१८१
अनुभाविक प्रयोग	श्री डा० भाई परमानन्द	१८२
अपस्मार मृगी (Epilepsy)	श्री कविराज हरिकृष्ण सहगल	१८३
हास्य और स्वास्थ्य	श्री राममूर्ति	१८७
भोजन के सम्बन्ध में आपको यह ज्ञान अवश्य रखना चाहिये		१८६
मुर्ग (Cock)	श्री कविराज हरिकृष्ण सहगल	१९३
आप चिन्ताओं की चिता से कैसे बच सकते हैं	श्री डेल कार्नेगी	१९७

रसायन फायलें

रसायन की निम्नलिखित वर्षों की थोडी सी फायलें स्टॉक में शेष हैं जिन्हें आवश्यकता हो मंगालें।

सन् १९४८--पूरे वर्ष की फायल जिसमें, फलों से इलाज ३।) का और मलेरिया विशेषांक शामिल है। मूल्य ६) डाकखरच १।)

सन १९५०--५१ पूरे साल की फायल इसमें वसवराजियम पूर्वार्द्ध ४) का विशेषांक शामिल है। मूल्य ६) डाकखरच १।)

सन १९५१-५२ पूरे साल के सब अङ्क जिसमें वसवराजियम उत्तरार्द्ध शामिल है। मूल्य ६) पो० १।)

सन १९५३—५४ पूरे वर्ष के सब अङ्क जिनमें सिद्ध रसायन विशेषांक ५) मूल्य का सम्मिलित है। मूल्य ६) डाकखरच १।)

सन १९५४—५५ पूरे वर्ष के सब अङ्क और 'अमर विद्या' ३) का विशेषांक शामिल है। मूल्य ६) डाकखरच १।)

पता—रसायन कार्यालय, ३ दरियागंज, देहली

"बुद्ध जयन्ती-महोत्सव"

भगवान बुद्ध का महापरिनिर्वाण हुए २५०० वर्ष हो गये। इस साल सारे संसार के बौद्ध तथा श्रद्धालु लोग भगवान बुद्ध की २५०० वीं बुद्ध-जयन्ती मनाने जारहे हैं। इस अवसर पर हम आपको भगवान बुद्ध की अनुपम शिक्षा तथा सन्देश से परिचित कराना अपना कर्तव्य समझते हैं। 'धर्मदूत' इसी उद्देश्य को लेकर २१ वर्षों से मानवमात्र की सेवा करता आ रहा है। क्या आप भी 'धर्मदूत' के ग्राहकों में से हैं? यदि नहीं तो आज ही ३) वार्षिक चन्दा भेजकर मासिक पत्र—

"धर्मदूत"

का ग्राहक बन जाइए। 'धर्मदूत' का मई अंक "बुद्ध जयन्ती" विशेषांक होगा, जिसमें अलभ्य चित्रों एवं अनुपम लेखों का सुन्दर समन्वय रहेगा। कृपया लिखें—

व्यवस्थापक, 'धर्मदूत', सारनाथ-बनारस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाज के नैतिक स्तर को ऊंचा उठाकर उसमें प्राण फूंकने वाला और जीवन में शांति एवं सामञ्जस्य का पथ प्रशस्त करने वाला।

ऋषिकेश की पावन-भूमि से प्रकाशित

चरित्र-निर्माण

स चि त्र मा सि क—अ व श्य प ढ़ि ये

उत्तर प्रदेश, हिमालय प्रदेश, विन्ध्य प्रदेश, दिल्ली, मध्यभारत, बम्बई, मध्य प्रदेश, पंजाब, पेप्सू, नैपाल आदि राज्य सरकारों द्वारा स्कूलों, कालेजों, पुस्तकालयों एवं वाचनालयों और उत्तर प्रदेश की ग्राम पंचायतों के लिये स्वीकृत।

वार्षिक मूल्य ६।) :: एक प्रति ।।-)

निर्माण-कार्यालय, ऋषिकेश (देहरादून) उ० प्र०

फ्लैशटोन

जब किसी रोग के कारण अथवा क्षय, शोक, चिन्ता, अधिक परिश्रम और अत्यन्त साहस का कार्य करने से मांस के सेलों की जीवनीय शक्ति क्षीण होकर शरीर सूखने लगता है तब ऐसी अवस्था में यह विशेष वनस्पतियों द्वारा निर्मित औषधि अत्यन्त सफल सिद्ध होती है। कृश शरीर को मोटा-ताजा मांसल बनाने व वजन बढाने तथा मस्तिष्क, हृदय और फेफड़ों की निर्बलता दूर करने की यह अनुपम औषधि है। किसी भी कारण से सूखे हुए शरीर को पुष्ट बनाती है। आने वाले रोगों को रोकती है। अन्य औषधि सेवन करते हुए भी शक्ति के लिये इसको अवश्य खाना चाहिये। सूखे हुए बच्चे, गर्भिणी स्त्री, तरुण वृद्ध सबके शरीर को मोटा-ताजा, मांसल और पुष्ट एवं सुन्दर बनाती है, चेहरे पर लालिमा आ जाती है। प्रत्येक प्रकृति वाले को प्रत्येक ऋतु में अनुकूल है। परहेज कोई नहीं। खाने में स्वादिष्ट। तपेदिक (क्षय) में जब मांस क्षीण होकर शरीर सूखता जा रहा हो और अन्य उपद्रव बढ़ रहे हों उस समय इसका सेवन नवजीवन प्रदान करता है। दिमागी काम करने वालों के लिये परमोपयोगी है। मूल्य १ पौंड ६) आधा पौंड ५) डाकखरच पैकिंग अलग।

एलोपैथिक निघंटु

इसमें औषधियां तैयार करने की भिन्न-भिन्न विधियां, नाप तौल (ग्रेन, ड्राम, औंस पौंड, मिनिम, सी०सी०, किलोग्राम, स्टोन, टीकपफुल, क्वार्ट, मन, सेर, तोले इत्यादि) ब्रिटिश फार्मेकोपिया में वर्णित औषधियोंके भिन्न २ रूप (एसिटा एसिड्स इलिक्सर्स, ऐक्सट्रैक्ट्स, डिकोक्शन्स, लिनिमेंटस्, स्पिरिटस टिंचर्स, सीरप्स, टेबलेटस इत्यादि), एम्प्यूल्स, वाथ्स, चेटस, कैप्स्यूल्स, डूस एनिमा, आइस बैग, पिग्मेंटस इत्यादि का वर्णन, औषधियों को शरीर में प्रविष्ट करने के भिन्न २ तरीके, औषधियों की मात्रा निश्चित करना, परस्पर विरोधी गुण रखनेवाली औषधियां, विस्फोटक, संयोग, औषधियों की सेवन विधि, बच्चोंके नुस्खे, बच्चों के लिए भिन्न २ औषधियों की मात्रा, औषधियों की घुलनशीलता, भांति २ के लोशन तैयार करना, सैंकड़ों परिभाषिकशब्द, शरीर के विभिन्न अंगों पर विभिन्न औषधियों का क्या प्रभाव पड़ता है, भिन्न २ प्रकार के ऐसिडस, ऐका, इमलशन्स, लिनिमेंटस, लिकर्स, लोशन्स मिक्चर्स, पाउडर्स इत्यादि तैयार करने के तरीके तथा लगभग दो हजार एलोपैथिक पेटेण्ट तथा साधारण औषधियों का वर्णन (मात्रा, मुख्य अवयव, गुण आदि) लिखा हुआ है। यह पुस्तक वैद्यों, हकीमों तथा ग्राम चिकित्सकों के लिए अनिवार्य और आयुर्वेदिक विद्यालयों के विद्यार्थियों तथा जनसाधारण के लिए अत्युपयोगी है। इसका पहला संस्करण केवल छः महीने में समाप्त हो गया। दूसरे परिवर्द्धित संस्करण को भी समाप्त होते देर न लगेगी मूल्य १०।।) डाक खरच १=)

बवासीर का सरल इलाज

अब दवा खाने या लगाने अथवा आपरेशन कराने का झंझट नहीं रहेगा। 'अंकुरना' दवा का पांच मिनट रोजाना केवल ५ दिन मस्सों को धूवां स्पर्श कराने से खूनी और बादी बवासीर दोनों को बिना कष्ट के आराम हो जाता है। मस्से सुकडकर साफ हो जाते हैं मूल्य ५।) डाकखरच सहित।

पता—रसायन कार्यालय (३ दरियागंज) पो० बो० ११२५ देहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसायन फार्मेसी देहली का प्रमुख सचित्र मासिक पत्र

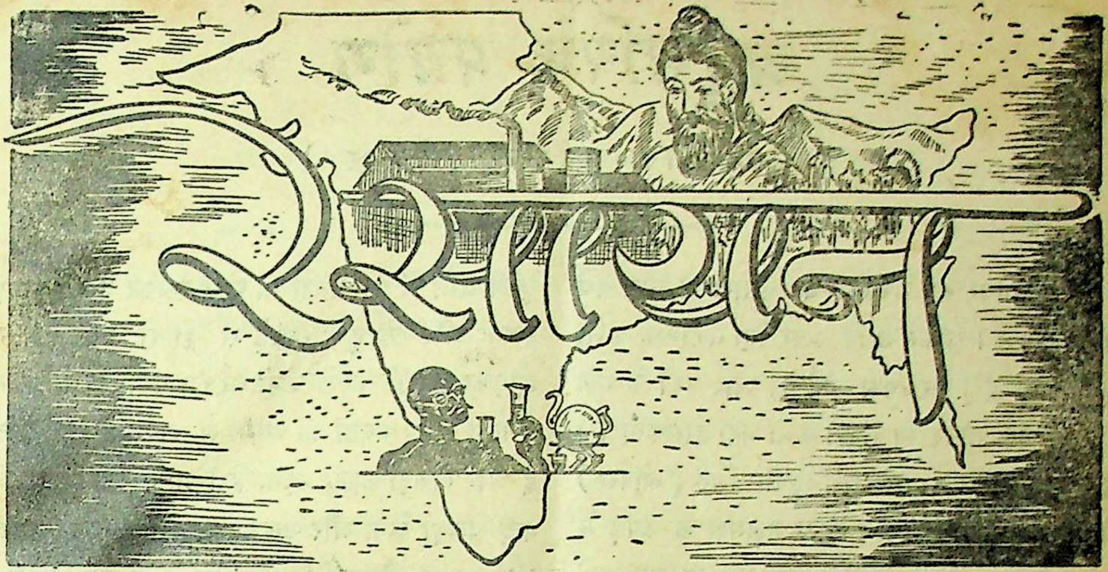

'सिद्ध रसे करिष्यामि, निर्दारिद्र्य मयं जगत् ।'

वर्ष ८ | देहली मार्च १९५६ | अङ्क ६

❀ 'सर्पगन्धा' बढ़े हुए रक्तचाप के लिए रामबाण ❀

भारत में पैदावार बढ़ाने के प्रयत्न

नई दिल्ली, ११ मार्च । हाल में सर्पगन्धा पौधे की जड़ों की ख्याति बहुत बढ़ गई है और दुनिया भर का ध्यान इनकी ओर आकृष्ट हुआ है । कारण यह है कि जड़ें बढ़े हुए रक्तचाप को कम करती हैं और उन्निद्र-रोग, बहम के रोग, कुछ तरह के पागलपन और दिमाग की खराबियों में शामक औषधि का काम करती है ।

आजकल रक्तचाप की वृद्धि का रोग बहुत बढ़ गया है । सर्पगन्धा की जड़ें इसके लिए रामबाण सिद्ध हो रही हैं और इसीलिए इनकी मांग दिन २ बढ़ती जारही है । दुनियाभर में इनकी सप्लाई भारतसे ही होती है । वास्तव में विदेशों में इनकी इतनी मांग है कि यहां जंगलोंमें पैदा होने वाली सर्पगन्धा से उसे पूरा करना बहुत कठिन है । इसलिए अब यह जरूरी होगया है कि शीघ्र ही इसकी खेती का काम शुरू किया जाय ।

वन गवेषणशाला, देहरादून में कई वर्षों से इसकी खेती के बारेमें प्रयोग किए जारहे हैं । इन प्रयोगोंके परिणामों से ज्ञात हुआ है कि सिंचाई की व्यवस्था वाली रेतीली मिट्टी की जमीन में दो साल के पौधों से प्रति एकड़ हवासे सूखे हुए लगभग २००० पोंड जड़ें (रेशे वाली जड़ें मिलाकर) और तीन साल के पौधों से लगभग ३००० पौंड जड़ें प्राप्त होसकती हैं । इस प्रकार की खेती से पैदा होनेवाले पौधों की जड़ों में औषधि की मात्रा उतनी ही होती है जितनी वनों में पैदा होने वाले पौधों की जड़ों में मिलती है ।

अब तक केवल मोटी जड़ों का ही उपयोग किया जाता है । लेकिन यह देखा गया है कि रेशे वाली जड़ों में औषधि की मात्रा अपेक्षाकृत अधिक होती है और इसलिए उनका भी उपयोग किया जाना चाहिए ।

सर्पगन्धा पौधे की जड़ों की कम उपलब्धि होने पर उसके डंठलों, पत्तों आदि का भी उपयोग किया जा सकता है क्योंकि उनमें भी काफी औषधि तत्व होता है । अभी तक उन्हें वैसे ही फेंक दिया जाता है ।

वन गवेषणशाला की छोटी वस्तुओं सम्बन्धी शाखा ने सर्पगन्धा के विषयमें एक लेख प्रकाशित किया है और एक इश्तहार भी निकाला है । इसमें इसकी खेती आदि के बारे में पूरी जानकारी दी है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुभविक प्रयोग

(लेखक—श्री डा० भाई परमानन्द कोल्हापुर)

१. गोंवर या मिझल्स–यह बेमारी की सायं बच्चे को पकडती है। लेकिन उसके ऊपर पैदा न होनेके वास्ते बहुत इलाज है। मेरा कम खर्च का और बच्चों के गले में लटकानेसे गोवर का संसर्ग कभी नहीं होसकता है। यह प्रयोग–नारियल का सूखा हुआ गिर (खोपरा) और काला सुरमा समभाग एकत्र मलमल के कपड़े में बांधकर गले में बांधना तो भी ऐसा बांधना जब बच्चे दोनों नथनों से श्वास लेने सकता है उस वक्त उसका गन्ध नथनों में जाना चाहिये। जिस वक्त गाम में १/२ बच्चे को इस बेमारी का असर होने लगता है उस वक्त दूसरे सब वक्त दुसरे सब बच्चों को यह दवा गले में लटकानेको दो। देखो यह प्रयोग किये हुए एक भी बच्चे पर बेमार का कुछ असर नहीं हो सकता है। जैसा परमेश्वर सब दुनियां को समान देखता है तैसे यह दवा कुछ बच्चे को फायदा और कुछ पर उलटा नुकसान ऐसा नहीं करता है। सबको समान फायदा देता है। हम यह प्रयोगसे हजारों बच्चोंको संरक्षण किया है।

द्वितीय योग

२. जलोदर या नागोदर–इस पर भी चौदह दिन में बेमार का रोगी पर कुछ चिन्ह भी नहीं रह सकता है। एक बार करके देखने से प्रयोग का प्रताप मालूम हो सकता है। यह प्रयोग–एक मीठे पानी में रहने वाला बड़ा खेकड़ा लेना उसकी पीठ का कवच निकालना और कवच फेंक देना और शेष रहा हुवा खेंकड़ा लेना उसकी नागी या पांव निकालना नहीं। कवच निकलने के बाद उस जगह रुई या मदार का दुग्ध (चींक) जितना रह सके उतना भर देना और खुली जगा में एक पतरा या प्लेट रखकर उसमें खेंकड़ा रखना और रखे हुए खेंकड़े से दो दो अंगुल जगा छोड़कर जंगली कण्डे चोंहों तरफ रखना और अग्नि लगाना। यह कण्डों की अग्नि से सब दूध सूख जाता है और खेंकड़ा काला पड़ता है। अग्नि शान्त होने के बाद खेंकड़ा लेना और उसका खलबत्ते में चूर्ण बनाना और उसकी चौदह गोलियां बनाना और दस रोज एक गोली पानी या गोमूत्र के साथ निगलना ऐसा चौदह दिन दुध और चावल या रोटी का परेज करके शुरू करना। यह अल्पमोली बहुगुणी दवा का कैसा अद्-भुत चमत्कार है। वह प्रत्यक्ष आप देख सकेंगे।

तृतीय योग

३. फालिज (अर्धाङ्ग) की दवा—वात प्रकृति वाले रोगियों को हुवा अर्धाङ्ग सिर्फ एक घण्टे के अन्दर ऐसा भाग जाता है कि यह रोगी को अर्धाङ्ग था इसकी पहिचान भी दूसरे आदमी को नहीं हो सकती है, ऐसी अचूक फायदा देने वाली दवा अभी तक नहीं मिल गयी। यह प्रयोग—पहिले रोगी को यह अर्धाङ्ग किस कारण से हुआ (गनोरिया या सिफीलीस से या वातव्याधी से) वातव्याधी से जो होता है तो उस पर जरूर यह प्रयोग करना। उष्णता से या दूसरे संसर्गजन्य रोग से हो सकेगा तो यह प्रयोग से फायदा नहीं मिलता है और भी जिसका ४ या ६ महीने का नया अर्धाङ्ग होता है और उसके ऊपर अंग्रेजी इन्जेक्शन्स का इलाज नहीं किया हो तो यह प्रयोग का ६ महीने तक के रोगियों पर करके अकसीर देखा है।

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपस्मार-मृगी (EPILEPSY)

(लेखक—कविराज हरिकृष्ण सहगल, बागीची अलाउद्दीन, देहली)

लक्षण

इस रोग में स्पर्श ज्ञान और गति करने वाले अङ्ग नियम में नहीं रहते। ऐच्छिक वात संस्थान में झटके आने लगते हैं रोगी मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर पड़ता है।

कारण

बहुधा यह रोग वंशज हुवा करता है। परन्तु बच्चों में दान्त निकलना, उदर कृमि, सहसा भयभीत होना भी कारण होते हैं। युवकों में यह रोग अधिक काम सेवन, हस्त मैथुन, मस्तिष्क आघात (निराशा), मस्तिष्क शोथ, मस्तिष्क की झिल्लियों की शोथ, मस्तिष्क में जल संचय, मस्तिष्क में विद्रधियों की उत्पत्ति, अधिक मस्तिष्क कार्य, क्रोध, चिन्ता, भय, अधिक मद्यपान, आतशक, छोटे जोड़ों की पीड़ा का रोग (नुकरस), आमवात, रक्तमें विष, नाक गले, आमाशय व मुत्रेन्द्रिय में किसी पुरातन खराशदार रोग के होने से होता है। स्त्रियों में यह रोग मासिक धर्म के दोष व काम विकृति के कारण होता है।

यह रोग दो प्रकार का माना जाता है। ग्रैण्ड माल (Grand Mal) या हाट माल (Haut Mal) यह तीव्र मृगी का नाम है। साधारण मृगी को पेटिट माल (Petit Mal) कहा जाता है। इन दोनों से अन्य भी मृगी का एक प्रकार डाक्टर मानते हैं। उसे ऐपीलेप्टिक वर्टिगो कहते हैं। यह बहुत ही हल्की मृगी होती है। डाक्टरी मतानुसार एक भयङ्कर मृगी भी होती है उसे अंग्रेजी में स्टेटस ऐपीलेप्टिका कहा जाता है। इसमें रोग का वेग आकर रोगी मूर्च्छित हो जाता है। और जब वेग कम होने लगता है दूसरा वेग आरम्भ हो जाता है। इसी तरह निरन्तर दौरे पड़ते जाते हैं।

यूनानी में बड़ों की मृगी को सरा और बच्चों की मृगी को डमडल सब्यान कहा जाता है। आयुर्वेद में इसे अपस्मार कहते हैं और प्राचीन ग्रंथों में इसका नाम श्वानाघ्री आया है जो मेरे विचार में बहुत ही उपयुक्त नाम है। कुत्ते को जब पागलपन हो जाता है, तो उसके होश जाते रहते हैं, वह डरता है। उसके हाथ पांव गति करते हैं उसके मुख से झाग आता है और यही सर्व लक्षण मृगी के रोगी में पाये जाते हैं, और सम्भवतः इसे श्वानाघ्री कहने का यह भी कारण है कि प्राणिज चिकित्सा में कुत्ता इस रोग की सर्व श्रेष्ठ औषध है। और खास तौर से दिवाना अर्थात् पागल कुत्ता।

रोग लक्षण

कुछ चिन्ह ऐसे हैं जो रोगी में रोगाक्रमण काल के बहुत निकट ही होते हैं और रोगी अपने आप को संभाल भी नहीं सकता और कभी एक दो दिन पूर्व भी होते हैं। इन चिन्हों में एक यह है कि रोगी अपने हाथ, पांव की अंगुलियों अथवा पेट पर से सरसराहट होती है। यह सरसराहट ऊपर को शिर तक जाती है। इसे अंग्रेजी में औराऐपीलैप्टिक कहते हैं। इसके होते ही दौरा हो जाता है। इससे अन्य दौरा से पूर्व रोगी को शिर पीड़ा होती है। यह शिर पीड़ा मामूली नहीं बहुत ही तीव्र होती है। अथवा नाक में विशेष प्रकार की गंध अनुभव होती है। आंखों के सामने चिंगारियां उड़ती दिखाई देती हैं। दौरा से पूर्व भयानक मूर्तियां दिखाई देती हैं। कानों में बाजे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बजते हैं। बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। थोड़ी निर्बलता होती है कभी ज्वर होता है। झटके लगने पर शिर कुछ एक ओर को खिंच जाता है। जो एक विशेष चिन्ह है, कभी २ इनमें से कोई भी चिन्ह उत्पन्न नहीं होता।

वेग काल

रोगी को पूर्व से विदित होता है कि दौरा होने वाला है चुनांचे प्रथम उसका शरीर ऊमड़ जाता है। और साथ में ही शिर और आंखें एक ओर को फिर जाते हैं। मुख का वर्ण पीत हो जाता है। आंखें खुली रह जाती हैं। अगर रोगी खड़ा हो तो शरीर के अकड़ जाने के कारण पीठ के बल गिर जाता है। श्वास कष्ट हो जाने के कारण इसके मुख से चीख निकल जाती है। श्वास लेना कठिन होता है। मुख नीलवर्ण हो जाता है, श्वास के रुकने से सर्व अङ्ग ढ़ीले हो जाते हैं। इस लिए मल मूत्र स्वतः निकल जाते हैं। थोड़ी देर शरीर की अकड़ाव रहकर झटके लगने आरम्भ हो जाते हैं। यह अवस्था कुछ क्षण रह कर रोगी बेजान होकर लेटा रहता है। मुख और नाक से झाग निकलते हैं। कभी २ इनमें रक्त भी मिश्रित होता है। ऐसी अवस्था में रोगी पूर्णतया मूर्च्छित हो जाता है और उसे अपने इर्द गिर्द का कुछ मालूम नहीं होता थोड़े समय बाद वह स्वयं ही होश में आ जाता है। और तीव्र शिर पीड़ा का वर्णन करता है। इसके बाद वह प्रगाढ़ निद्रा में कुछ घन्टों के लिए चला जाता है।

चिकित्सा

बच्चों में अगर उदर कृमि हों तो उनके मारने की चिकित्सा करें। अगर रोग का कारण दान्तों का निकलना हो तो उसकी चिकित्सा करें। युवकों में आमाशय उदर और यकृत के कार्यों की शक्ति बढ़ाने के उपाय करें। दान्त अगर खराब हों तो उनकी चिकित्सा करें कोष्ठ बद्धता न होने दें। कोष्ठ बद्धता से दौरा शीघ्र होता है। शराब, कहवा, तम्बाकू से परहेज रखें। ईश्वरोपासना व अध्ययन किसी सीमा में करें। क्रोध से बचे रहें।

स्त्रियों में उनके मासिक धर्म को समय पर लावें। रोगी को मांस, अण्डे, मछली व उष्ण पदार्थ खाने को न दें। रोगियों को हरित सब्जियां और दुग्ध पथ्य होते हैं। शुद्ध वायु में रहना, सर्द पानी से स्नान करना, प्रातः सायं घूमना, अधिक सोना, शीघ्र पचने योग्य भोजनों का खाना और स्वास्थ्य के नियमों का पालन अच्छे होते हैं।

जिन लोगों को मृगी का रोग हो, उन्हें विवाह सूत्र में न बन्धना चाहिये क्योंकि यह रोग वंश में आगे चलता है और सन्तान को भी रोग की शंका रहती है।

अंग्रेजी औषधियों में इस रोग के लिए ब्रोमाइडज अर्थात् ब्रोमाइड आफ पोटासियम, ब्रोमाइड आफ सोडियम, ब्रोमाइड आफ अमोनियम आदि बहुत उपयोगी सिद्ध हुई हैं। ब्रोमाईड को भोजन के बाद व हलवा में रख कर देना अधिक लाभप्रद सिद्ध हुवा है। और तीनों ब्रोमाइडों को मिलाकर देना अधिक लाभ करता है। ब्रोमाईडकी मात्रा १५ से ३० ग्रेन तक की आरम्भ करनी चाहिये, अधिक तीव्रावस्था में ५०–६० ग्रेन तक भी एक बार में दी जा सकती है। ब्रोमाइड के प्रयोग काल में भोजन लवण रहित देने से शीघ्र लाभ होता है। और अधिक मात्रा में प्रयोग से मुहासे निकल आते हैं।

मृगी के रोगी को अगर आतशक हो चुका है तो पोटाशियम आयोडाइड दी जाती है। जिनको पोटासियम आयोडाइड से लाभ न हो उन्हें बोरिक (सुहागा) के मिलाने से लाभ हो जाता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेदिक चिकित्सा

१—पिप्पली, सेंधानक, हींग, सुहांजना, हिंगुपत्री, काकोली, सरसों, काकनासा, कैटर्य, चन्दन, कुत्ते के कन्धे की अस्थि, कुत्ते के नाखून, तथा कुत्ते की पसली, बकरे के मूत्र के साथ पुष्य नक्षत्र में पीसलें, अपस्मार में इससे प्रदेह तथा धूपन करें।
(चरक)

२—काले कुत्ते के बाल मृगी के रोगी के गले में बांधने से लाभ होता है।

३—अपस्मार रोगी के लिए कुत्ते के मूत्र की नस्य हितकर है। (चरक)

४—पुष्य नक्षत्र में निकाला गया कुत्ते के पित्त का अंजन अपस्मार नाशक है। (चरक)

५—कुत्ते का पित्त घी मिलाकर परम धूपन माना जाता है। (चरक)

६—पागल कुत्ते का शिर काटलें और उसे हाण्डी में रखकर हांडी के मुख को कपड़ मिट्टी करके बन्द करदें। और सूखने पर गजपुट में भस्म करें। १ रत्ती प्रातः सायं ५ काली मिरचों के चूर्ण के साथ मिलाकर दें। अथवा कुत्ते के शिर की भस्म २ माशा पोटाशियम ब्रोमाइड २ माशा, सौंफ २ माशा, इलायची बड़ी २ माशा सब को मिलाकर बच्चों को २ रत्ती उसकी माता के दुग्ध में मिलाकर और बड़ों को ४ रत्ती दें। यह योग मुझे एक सन्त जी ने दिया था और उनके पिता को यह योग एक हरिजन से जो मृगी रोग का प्रसिद्ध चिकित्सक था प्राप्त हुआ था और यह कई बार का ही परीक्षित प्रयोग है। इसे बना कर चिकित्सा में यश लाभ करें।

७—जिन युवकों में मृगी का कारण उदर, आमाशय व मूत्र प्रणाली में खारिश व विष हो उन्हें उपरोक्त योग इस प्रकार बनाना चाहिये। कुत्ते के शिर की अस्थि भस्म २ माशा, मूत्राशय अश्मरी का पत्थर २ माशा, पोटाशियम ब्रोमाइड २ माशा०, सौंफ २ माशा०, इलायची बड़ी २ मा० चूर्ण करें, मात्रा २ से ४ रत्ती तक। आज से १५० वर्ष तक महाराष्ट्र और गुजरात में मृगी चिकित्सा में अकेली मूत्राशय अश्मरी के चूर्ण का प्रयोग सफलता से होता आया है।

८—एक कर्ण कटे नाथ हमारे मित्र थे, लाहौर में अकसर मिला करते थे। कुछ रोगों के विशेष चिकित्सक थे। एक बार उन्हों ने अपनी जूती के तले को रगड़ कर, उसके चूर्ण को, ३ माशा प्रति दिन की मात्रा में चूरी में मिलाकर और खिलाकर एक स्त्री को मृगी रोग से मुक्त किया था। अगर जूती के तले को सुंघाने मात्र से मृगी का वेग दूर हो जाता है तो खिलाने से उससे भी अधिक लाभ होता है।

९—तीव्र मृगी में

कुत्ते के शिर की अस्थि भस्म, मनुष्य कपाल अस्थि भस्म, मूत्राशय अश्मरी, पोटाशियम ब्रोमाइड, सौंफ, इलायची बड़ी २—२ माशा लेकर मिलावें और २ से ४ रत्ती तक की मात्रा में दें। नोट—मनुष्य कपाल अस्थि भस्म अकेली ही १ से २ रत्ती की मात्रा में घृत के साथ देने से मृगी रोग को नाश कर देती हैं।

प्राणिज औषधियों में से शेर, चीता, बिल्ली, रीछ, भेड़िया, गीदड़, लूमड़ी, ऊंट, गर्दभ, बैल आदि सैंकड़ों जीव हैं जिनके अङ्ग प्रत्यङ्गों से मृगी की सफल चिकित्सा होती है। अब प्राणिज चिकित्सा का एक अन्तिम योग लिखकर वनस्पतिक योगों का वर्णन होगा।

१०—कुत्ते के शिर की अस्थि भस्म, मनुष्य कपाल अस्थि भस्म, मूत्राशय अश्मरी, ऊंट के नाक के कीड़े (छाया में शुष्क किये हुए), पोटासियम ब्रोमाइड, सौंफ, इलायची बड़ी २—२ माशा लेकर मिलावें और २ से ४ रत्ती की मात्रा में दें। ऊंट के नाक के कीड़ों का अकेला प्रयोग आज भी भारत में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृगी के विशेष चिकित्सक सफलता से कर रहे हैं।

११—जिन युवकों में मृगी का कारण यकृत विकृति, कोष्ठबद्धता आदि हो, उनके लिये अफसनतीन बहुत अच्छी औषध है। शर्बत अफसनतीन का प्रयोग करावें अथवा अफसनतीन १ भाग को सुरासार १० भाग में डालकर, कांच के ढक्कन वाली शीशी में बन्द करके रख दें, दो तीन दिन के बाद इसे वस्त्र से छान लें। मात्रा ½ से २ ड्राम तक दें। अफसनतीन का चूर्ण भी दे सकते हैं। अगर चूर्ण देना हो तो अफसनतीन के बराबर भाग पोटासियम ब्रोमाइड व सौभाग्य भस्म सम्मिलित करें।

१२—मृगी का कारण अगर आमाशय, उदर विकृति व कोष्ठ बद्धता हो तो हरड़, बहेड़ा, आमला, उस्तखदूस प्रत्येक ३ तो०, उदसलीब १॥ तो०, अकरकरा १॥ माशा, मुनक्का ½ सेर (बीज रहित), मुनक्का को तोड़कर अन्य सर्व औषधियों को कूट पीसकर चूर्ण करलें, बाद में मुनक्का को सिल पर पीसकर उसमें सब चूर्ण मिलालें, और थोड़ा गरम करके रखलें, मात्रा ७ मा० जल के साथ प्रति दिन दिया करें।

नोटः—इस नुसखे में भी पोटाशियम ब्रोमाइड को बढाया जा सकता है।

१३—वह युवक जिनमें मृगी का कारण अति काम सेवन व हस्त मैथुन हो, कस्तूरी ४ रत्ती, गोरोचन ८ रत्ती, पीपल की जटा ४ मा०, पोटाशियम ब्रोमाइड ४ मा०, काली मिरच २ मा०, जीरा श्वेत २ मा०, लहसुन कली २ मा०, हींग ८ रत्ती, अफीम ४ रत्ती, मुक्ता २ मा०, घोड़ा बच ४ मा०, तुलसी पत्र १५ अदद विधि—इन सबको गधी के दुग्ध में घोटकर, मोठ के बराबर गोली बना कर, छाया में सुखा लें। बड़े आदमी को दो गोली दूध से दें और बच्चों को उनकी माता के दुग्ध से दें।

अपस्मार वटी

१४—पोहकरमूल, चिरायता, ब्राह्मी, सोंठ, कपूर, दारु हल्दी, देवदारू, बच, नागरमोथा, पिपलामूल, खुरासानी अजवायन, यह सब समान भाग ले, सुक्ष्म चूर्ण कर जल से वटी बनावें, मात्रा ४ रत्ती से ८ रत्ती तक दिन में दो बार जलके साथ दें। तीन मास तक निरन्तर सेवन करने से पुरानी से पुरानी मृगी दूर होती है।

नोटः—इस योग में भी पोटाशियम ब्रोमाइड बढ़ाना इस योग को अधिक शक्ति शाली बना सकता है। तथा यह योग अधिक मद्यपान, आतशक, रक्त में विष के कारण उत्पन्न मृगी में अधिक हितकर है।

१५—मस्तिष्क शोथ, मस्तिष्क की झिल्लियों की शोथ से उत्पन्न मृगी में—मकड़ी का जाला १ नग, काली किरच १ नग, घरेलु मक्खी १ नग, गुड़ ३ मा० सबको मिला गोली सी बना लें और जल के साथ निगलवावें।

१६—अधिक मस्तिष्क कार्य, क्रोध चिन्ता, भय, अधिक काम सेवन, निराशा हस्तमैथुन से उत्पन्न मृगी में—ब्राह्मी, कूठमीठी, शंख पुष्पी, बच मीठी, शु० कुचला, स्वर्ण माक्षिक भस्म १—१ तो०, अभ्रक भस्म, मल्ल चन्द्रोदय, शृंग भस्म, केसर प्रत्येक ६—६ मा०, कस्तूरी १॥ मा०, सर्पगन्धा घन सत्व ५ तो०। विधि—जटामांसी १० तो० को जल ६० तो० में २४ घन्टे भिगो रखें और क्वाथ सिद्ध करें जब १५ तो० रह जाये उतार लें। अब काष्ठादि औषधियों को सूक्ष्म चूर्ण करें तथा रस भस्मादि को भली भांति खरल करें, केशर कस्तूरी को अलग पीसकर मिलावें, अन्त में सर्पगंधा घन सत्व मिलावें और जटामांसी के रस के साथ मर्दन कर २—२ रत्ती की गोलियां बनालें।

(शेष पृष्ठ १८८ पर पढ़ें)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हास्य और स्वास्थ्य

(लेखक—श्री राममूर्ति रमईहार मैनपुरी)

112383

मानव-हृदय सागर में अनेकानेक भाव-तरङ्गें हिलोर लेती रहती हैं तथा हम इस प्रकार भी कह सकते हैं कि इसको बाह्य जगत की दैनिक घटनायें अछूता नहीं छोड़ती। जगत के विविध भाव इस पर प्रभाव डालते हैं। फलतः मानव प्रकृति परिवर्तन शील है। जब हम किसी निस्सहाय बालक को देखते हैं तो हमारा हृदय करुणा से भर जाता है। कभी हम आकस्मिक घटना को सुनकर आश्चर्य सागर में डूब जाते हैं। जब हम स्वच्छ निर्झर को कल-कल ध्वनि के साथ स्फटिक शिलाओं पर अटखेलियां खेलते देखते हैं तो हमारा मन उसी में लीन हो जाता है। ऋतु राज बसन्त में आम्र कुञ्ज से आती हुई कोयल की सुमधुर ध्वनि सुनकर हम पुलकित हो जाते हैं। कभी हम सड़क पर गिरते हुए बाबू को देखकर खिल-खिला उठते हैं। कहने का तात्पर्य है कि विभिन्न परिस्थितियां मानव हृदय में उत्पन्न होती रहती हैं।

मानव-जीवन में हास-परिहास का महत्व पूर्ण स्थान है। इससे जीवन में मधुरिमा का सञ्चार होता है। जब हम विषाद सागर में डूब जाते हैं तब हंसी-मजाक का सहारा लेकर पार हो जाते हैं। जब हमारी मानसिक प्रवृत्तियों का संकोचन हो जाता है, तब हास्य स्वास्थ्य का दाता बन जाता है। निराशा के अन्धकारमय जीवन में हम हास्य के प्रकाश के सहारे अपनी यात्रा पूर्ण करते हैं। हास्य ही मन को हलका करने वाला केवल साधन है। अन्यथा जीवन भार स्वरूप है। यदि हमको हास्य से वञ्चित कर दिया जाय तो जीवन में कटुता आ जायगी और जहां कटुता है वहां स्वास्थ्य पंख लगा कर उड़ जाता है।

हास्य से मनोरञ्जन भी होता है और मनोरञ्जन स्वास्थ्य का पोषक है। चाहे मनोरञ्जन साहित्य से किया जाय अथवा किसी अन्य साधन से, सभी प्रकार का हास्य जीवन एवं स्वास्थ्य की कुञ्जी है। यहां पर कहने का आशय यह है कि मनोरञ्जन ऐसा न हो जो हास्य से कोसों दूर हो। संसार में हास्य के गणनातीत साधन है परन्तु हास्य ऐसा न हो जो किसी के हृदय को वेदना पहुँचाय, नहीं तो जिस पर हंसा जायेगा उसको दुःख होगा। हास्य मर्म स्थल को छूता हुआ होना चाहिए। गोस्वामी तुलसीदास जी लिखित पुष्प-वाटिका में हास्य की मधुरिमा का अवलोकन करते ही बनता है—

"पुनि आवउ एहि बिरियां काली।
अस कहि मन बिहंसी एक आली॥"

में एक सखी ने सीता जी की मीठी चुटकी किस शिष्ट हास्य से ली है।

अब हास्य के क्रियात्मक रूप की ओर आइए। चिकित्सा-शास्त्रवेत्ताओं का मत है कि हास्य से फेफड़ों का व्यायाम होता है। फेफड़े मानव-शरीर का मूल स्रोत है, क्योंकि इनको रक्त साफ करने का यंत्र कहा जाता है। यदि यह यंत्र ठीक नहीं है तो अनेक प्रकार के रोग शरीर को घेर लेते हैं। इनकी अस्वस्थावस्था में दुस्साध्य रोग-दमा-का मानव शरीर मन्दिर बन जाता है और जीवन दुखमय एवं निराशापूर्ण होजाता है। अतः इस यंत्र को स्वस्थ रखने का जितना अच्छा साधन हो सके करना चाहिये। चाहे श्वास-प्रश्वास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रिया से पर्याप्त वायु पहुँचा कर या हंसकर इनका व्यायाम करना चाहिए।

प्रति दिन कम से कम तीन बार बड़े जोर से हंसना चाहिए, क्योंकि एक डाक्टर महोदय का कथन है—"Laughing thrice a day keeps the doctor away" के अनुसार नित्य तीन बार हंसने वाले को डाक्टर का दरवाजा खटखटाना नहीं पड़ता। डा० डब्ल्यू० जे० क्रोमी का कथन है—

"Laughing is an exercise which aids digestion. Laugh and grow fat. A laugh doeth good like a medicine. Laughing stirs up the abdominal organs and increases the circulation of the blood, it aids peristaltis and causes the flow of the juices etc, needed in digestion. Take a five minutes dose of laughter after each meal" हंसना एक ऐसा व्यायाम है जो पाचन शक्ति को सुधारता है। यदि मोटा होना है तो खूब हंसिये। प्रसन्नचित्त औषधि की तरह लाभ प्रद है। अतः भोजन के पश्चात् थोड़ा-बहुत हंस लेना आवश्यक है।" इस प्रकार हास्य शरीर और मन दोनों के लिए ईश्वरीय उपहार है।

यदि मनोवैज्ञानिक दृष्टिसे भी देखा जाय तो ज्ञात होगा कि फेफड़ों के व्यायाम के अतिरिक्त हंसने से, प्रसन्नचित्त से, मनुष्य निरोगता को प्राप्त होता है। यदि व्यक्ति किसी रोग से ग्रस्त है तो हंसने से उसका आधा रोग दूर भाग जाता है। क्यों ? मन का प्रभाव शरीर पर पड़ता है। कहा भी है—"If the mind is sound then the body is also sound" यदि मन स्वस्थ है तो शरीर भी निरोग है'। इसके अतिरिक्त हंसने का प्रभाव रक्त के श्वेत कणों पर भी पड़ता है, मन की प्रसन्नता से इनकी अभिवृद्धि होती है और वे रोग के कीटाणुओं पर विजय प्राप्त करके शरीर को निरोग बनाते हैं। इसके विपरीत मन की उदासीनता से इनकी कमी होती है और वे रोग के कीटाणुओं से परिजित रहते हैं तथा शरीर रोग ग्रस्त हो जाता है। प्रायः यह देखा जाता है कि हंसी-मसखरा वाले व्यक्ति हृष्ट-पुष्ट हैं।

इस प्रकार ज्ञात होता है कि हास्य स्वास्थ्य का स्रोत एवं मूल है। जब हास्य में इतना जीवनोपयोगी गुण है तो हमारा दुर्भाग्य है जो हम जीवन पर्यन्त रोगी बने रहते हैं। कभी हमारा मन हलका नहीं होता, शरीर अस्त-व्यस्त रहता है, तो इस जीवनामृत औषधि 'हास्य' का सेवन क्यों कर न करना चाहिये ? अवश्य।

(शेष पृष्ठ १८६ का)

दिन में ३ बार जल के साथ सेवन करें। अपस्मार, हिस्टीरिया में अपूर्व लाभ होता है, रक्तचाप तथा उन्माद में भी यह गोलियां लाभ करती हैं।

सर्पगन्धा घन सत्व निर्माण विधि—१ सेर सर्पगंधा के अधकुटे चूर्ण को ४ सेर पानीमें भिगों लें, २४ घन्टा के बाद अग्नि पर चढ़ाकर २ सेर जल शेष रखना, काथ शीतल हो जाने पर औषधि को हाथों से खूब मलना और महीन कपड़े से छान लेना, इस काथ को पुनः कलईदार बर्तन में आग पर चढ़ा दें, जब वह गाढ़ा हो जाये तो उतारलें, और किसी चौड़े मुख के पात्र में रखें, यह सर्प गन्धा घन सत्व है।

१७—ऐजीलैप्टिक वर्टिगो अर्थात् मामूली मृगी में—अकरकरा पीसकर २-२ रत्ती की मात्रा में प्रातः सायं मधु में मिलाकर चटावें।

नोटः—अकरकरा, जायफल, ऊदसलीब व निर्विसी को मामूली मृगी में बच्चों के ग्रीवा में बांधने से लाभ होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोजन के सम्बन्ध में आपको यह ज्ञान अवश्य रखना चाहिये

प्रत्येक खाद्य पदार्थ में 'फैट्स' "प्रोटीन" और 'कार्बोहाइड्रेट' ये तीन पदार्थ मिले हुए रहते हैं। किसी में किसी एक की अधिकता, किसी में किसी की अधिकता रहती है। साधारणतया सब प्रकार के अन्नों में कार्बोहाइड्रेट अधिक रहते हैं। दालों में प्रोटीन अधिक और घी और तेल में फैट्स अधिक होते हैं। कार्बोहाइड्रेट का गुण शरीर में गर्मी कायम रखना है। प्रोटीन का शरीर में स्फूर्ति बढ़ाना। और फैट्स का मांस मेद की वृद्धि करना। क्रम से पित्त वात और कफ धातु के ये गुण हैं।

शरीर को स्वस्थ रखने के लिये ऐसे भोजन की आवश्यकता है, जिसमें ये सब तत्त्व आवश्यक परिमाण में प्राप्य हों। केवल फैट, केवल प्रोटीन, अथवा केवल कार्बोहाइड्रेट के सेवन से मनुष्य स्वस्थ नहीं रह सकता। सम (Well-balanced) भोजन ही सर्वोत्तम भोजन है।

हमारे पूर्वजों ने नित्य का—रोटी दाल भात, तरकारी घी दूध का—जो सादा भोजन रखा है, उसमें सब आवश्यक पदार्थ मिश्रित हैं। रोटी भात में कार्बोहाइड्रेट हैं। दालों और दूध में प्रोटीन है और घी में फैट्स हैं। इनमें अधिक परिवर्तन की या कांट छांट की आवश्यकता नहीं है। इसी नियत किये हुए भोजन से मनुष्य स्वस्थ रह सकता है।

केवल फल और दूध ऐसे हैं, जिनमें तीनों पदार्थ आवश्यक वजन से मिलते हैं। अतएव केवल फल खाकर या केवल दूध पीकर भी मनुष्य मजे में स्वस्थ रह सकता है।

भोजन दो तरह के भी माने गये हैं। एक तो खारापन पैदा करने वाले (Alkaline) और दूसरे खटाई पैदा करने वाले (Acid)। इनकी सूची इस प्रकार है:—

खारापन पैदा करने वाली वस्तुएं:—(बेर और आलू बुखारे को छोड़कर) सब तरह के फल और (मटर सेव और लोभिया को छोड़कर) सब तरह की तरकारियां, तरबूज और खरबूजे, दूध, मक्खन, दही, मट्ठा, चोकर, दाल, आटा, बाजरा, ज्वार, ककड़ी, लौकी आदि तरकारियां। अनाज और फलों के छिलके में खनिज लवण और विटामिन हैं। अनाज और दाल के छिलके जब नहीं निकाले जाते तो वे खारापन पैदा करने वाले भोजन होते हैं। जापान के सोयाबीन में बहुत अधिक खारापन है।

खटाई पैदा करने वाली वस्तुएं:—सब तरह के मांस, मछली, मुर्गी आदि सफेद बारीक छने हुए आटे की रोटी, पूरी, हलवा, मैदे की बनी हुई सब तरह की चीजें, सब तरह के सूखे मेवे, जैसे:-अखरोट, बादाम, मूंगफली आदि छिलका निकाली सब तरह की दाल, मिठाइयां, सफेद चीनी, शराब, चाय और कहवा (काफी) में सब से अधिक खटाई मिलती है।

ऊपर दी हुई खारापन और खटाई पैदा करने वाले भोजन की सूची से हर एक मनुष्य ८० फीसदी खारापन पैदा करने वाली खाने और पीने की वस्तुओं का चुनाव कर सकता है। यदि शरीर स्वस्थ है, तो केवल २० फीसदी खटाई पैदा करने वाला भोजन हम कर सकते हैं। लेकिन जिनको कोई रोग हो तो उन्हें १०० फी सदी खारापन पैदा करनेवाला ही भोजन करना चाहिये।

मनुष्य के शरीर में 'खून' ही जीवन है। वह खारापन लिये होता है। उसे स्वस्थ रखने के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खारापन पैदा करने वाले ही भोजन के पदार्थ खाना चाहिये।

आजकल एक विशेष वस्तु पर अधिक जोर दिया जाता है, जिसे विटामिन कहते हैं। ये भी हमें स्वस्थ रखने के लिये आवश्यक तत्त्व हैं। इनके अभाव में हमारा शरीर पोषण नहीं पा सकता और स्वस्थ नहीं रह सकता।

विटामिन

मुख्य विटामिन ६ प्रकार के हैं:—

विटामिन ए:—यह छूत की बीमारियों से हमें बचाती है। दांतों और फेफड़ो को मजबूत रखती है। सन्तानोत्पादक शक्ति को भी बढ़ाती है।

निम्न लिखित वस्तुओं में यह विटामिन काफी मात्रा में पाई जाती:—

पालक, बथुआ, पोदीना, चौलाई, आदि सब प्रकार के हरे शाक, नीम की कोंपल, गाजर, टोमाटर, पपीता, पका हुआ आम, शलजम, दूध, दही, मक्खन, घी (वनस्पति में नहीं), अंडे की जर्दी, गेहूं, अंखुआ निकले चना, मूंग।

इस विटामिन के अभाव से आंखें खराब होती हैं। और दांत मजबूत नहीं रहते।

विटामिन बी:—यह शरीर और स्नायुओं को पुष्ट करती है। बेरी-बेरी बीमारी को रोकती है। सन्तानोत्पादक शक्ति को भी बढ़ाती है।

निम्नलिखित वस्तुओं में यह काफी मात्रा में पाई जाती है:—

सब प्रकार के हरे शाक, टमाटर, मूली, गाजर प्याज, आलू, मुनक्का, गेहूँ, चावल, सूखे मेवे, सेम, सब प्रकार के फल।

इसके अभाव से स्मरण-शक्ति कमजोर होती है। पेट में केंचुए पड़ जाते हैं। पाचन शक्ति निर्बल होती है। जोड़ों में दर्द सूजन हो जाती है।

विटामिन सी:—इससे चमड़े और खून की बीमारियों से शरीर सुरक्षित रहता है। यकृत् को स्वस्थ रखती है। इससे बुद्धि बढ़ती है। निम्नलिखित वस्तुओं में यह काफी मात्रा में होती है:—

हरी २ तरकारियां, सब तरह के निम्बू, टमाटर गाजर, आलू, फूलगोभी, लौकी, पपीता, शकरकन्द, अंखुआ निकले हुए अनाज, सन्तरे।

इसके अभाव से शरीर की दशा बिगड़ जाती है। फोड़े फुंसी बहुत निकलते हैं। नींद ठीक नहीं नहीं आती। बुद्धि मन्द हो जाती है। सिर में चक्कर आते हैं।

विटामिन डी:—इस से हड्डियां और दांत मजबूत रहते हैं। सूखा रोग को रोकती है। यह निम्नलिखित वस्तुओं में काफी मात्रा में पाई जाती है:—

दूध, पालक, टमाटर, अंडे की जर्दी, सूर्य की किरण अर्थात् धूप। इसके अभाव से शरीर की हड्डियां नहीं पनपतीं। कण्ठमाला रोग होता है।

विटामिन ई:—इस से सन्तानोत्पत्ति शक्ति प्राप्त होती है। दूध पिलाने वाली माताओं के लिये यह अधिक उपयोगी है। निम्नलिखित वस्तुओं में यह काफी मात्रा में पाई जाती हैं:—

सब तरह के अन्न, सब तरह की तरकारियां, सब तरह के फल, मक्खन, मलाई, दूध, अंडे की जर्दी। इसके अभाव में नपुंसकता, बांझपन हो जाता है।

विटामिन जी:—यह अन्तड़ियों की बीमारी रोकती है। इससे पागलपन दूर होता है। निम्नलिखित वस्तुओं में यह काफी मात्रा में पाई जाती है:—

दूध, गेहूँ, अंडे, टमाटर, पालक, दाल मूंगफली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोजन में प्राप्य खनिज पदार्थ

(१) कैल्शियम:—(Calcium) चूना-इसके अभाव से हड्डियां कमजोर रहती हैं। शरीर मजबूत नहीं होता। शलजम, बादाम, अञ्जीर, फूलगोभी, अंडे की जर्दी, दूध, चोकर, दाल, आटा, निम्बू, मूली और सतरे में मिलता है।

(२) आयरन (Iron) लोहा:—इसके अभाव से खून विकृत हो जाता है, जिससे नाना प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं। यह अंडे की जर्दी, चोकर, दाल, आटा, बादाम, पालक, खजूर, छुहारा, मुनक्का, किशमिश, अखरोट, प्याज और मूली में मिलता है।

(३) सोडियम (Sodium):—इसकी कमी से बदहज्मी होती है। यह फूलगोभी, दूध, शलजम, सेब, किशमिश, गाजर और प्याज में मिलता है।

(४) फास्फोरस (Phosphorus):—इसके अभाव से दिमाग की कमजोरी आती है। हड्डियां भी कमजोर रहती हैं। यह अंडे की जर्दी, बादाम, चोकर, दाल, आटा, मटर, अखरोट, बन्दगोभी, फूलगोभी, खीरा, ककड़ी, सेब, लौकी, पालक और मछली में मिलता है।

(५) क्लोरीन (Chlorine):—इसकी कमी से शरीर विकारों से भर जाता है। यह टमाटर, पालक, दूध, बन्दगोभी, अंडे की सफेदी, केले, खजूर, निम्बू, नारियल और चोकर, दाल, आटेमें मिलता है।

(६) आयोडीन (Iodine):—इसकी कमी से गिल्टियां निकलती हैं और शरीर में विकार इकट्ठा होता है। यह गाजर, आलू, बन्दगोभी, नाशपाती, अनन्नास, केले और पालक में मिलता है।

(७) सल्फर (Sulphur) गन्धक:—इसकी कमी से यकृत में विकार उत्पन्न होता है और शरीर में विकार इकट्ठा होता है। यह शलजम, पालक, गोभी, मूली, प्याज, अंडे, मूंगफली, चोकर, दाल, आटा और सन्तरा में मिलता है।

(८) मैग्नेशियम (Magnasium) इसकी कमी से स्नायु निर्बल होते हैं और खून में खटाई पैदा होती है और बेचैनी पैदा होती है। यह चोकर, बादाम, मूंगफली, टमाटर, पालक, खजूर, अंजीर, किशमिश, निम्बू, चुकन्दर, बन्दगोभी और सेब में पाया जाता है।

(९) पोटाशियम (Potassium) इसकी कमी से फोड़े और फुंसियां होती हैं। और यकृत में खराबी पैदा होती है। यह टमाटर, शलगम, पालक, प्याज, बन्दगोभी, फूलगोभी, दूध, अन्नास, आलू बुखारा, निम्बू और सन्तरा, नाशपाती और चकोतरे में पाया जाता है।

भोजन में फलों और कची सब्जी और सादी तौर से पकाई हुई तरकारियों को विशेष स्थान मिलना चाहिये। टमाटर, मूली, खीरा, ककड़ी आदि का सलाद, निम्बू और नमक की सहायता से बहुत अच्छा तैयार किया जा सकता है। मौसमी तरकारियों का सलाद सर्वोत्तम होता है। इस प्रकार का बनाया हुवा सलाद भोजन के साथ अवश्य खाना चाहिए।

बहुत से डाक्टरों की सम्मति के अनुसार, हम निम्नलिखित परिमाण का भोजन रात दिन में थोड़ा २ करके प्रत्येक तरुण मनुष्यके लिये काफी समझते हैं।

चोकर, दाल, आटा:—	८ छटांक
छिलकेदार दाल:—	२ ,,
चावल:—	२ ,,
घी:—	$\frac{1}{2}$,,
नमक:—	$\frac{1}{4}$,,
तरकारी:—	४ ,,
फल:—	१ ,,
दूध:—	$\frac{1}{2}$ सेर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस भोजन से प्रोटीन, फैट, कार्बोहाइड्रेट, विटामिन आदि सब तत्त्व उचित मात्रा में मिल जाते हैं। हर एक को अपनी आयु, स्वास्थ्य और परिश्रम के अनुसार भोजन की मात्रा ठीक कर लेनी चाहिये।

समय

भोजन उसी समय करना चाहिये, जब भूख खूब लगी हुई हो। असली भूख और नकली भूख में अन्तर है। कुछ लोग सोडावाटर, लैमोनेड, आईस-क्रीम, मिठाई, पकवान आदि खा पीकर भूख प्यास का निवारण करने की आदत डाल लेते हैं। परन्तु इन मनुष्यों को शीघ्र ही अनुभव हो जाता है कि मीठा पानी पीने तथा स्वादिष्ट भोजन करने से उनकी स्वाभाविक क्षुधा निवारण नहीं होती। उलटे इस चक्कर में पड़ने से उनकी स्वाभाविक भूख नष्ट हो जाती है। एक बार जब आदत पड़ जाती है, तो उनको अन्न की अपेक्षा, ये स्वादिष्ट पेय और खाद्य पदार्थ अधिक रुचिकर मालूम होते हैं। वे फिर जीवन में सच्ची भूख का अनुभव कभी नहीं करते।

स्वाभाविक भूख उन प्राणियों में विशेष रूप से देखने में आती है, जिनका संसर्ग मनुष्य से नहीं रहता। बन के पशु और पक्षी, इधर उधर विचरते रहते हैं और भोजन की तलाश उसी समय करते हैं, जब उन्हें भूख मालूम होती है। हमारे आसपास के पशु पक्षियों की सच्ची क्षुधा निरन्तर कृत्रिम भोजन देने से नष्ट हो जाती है। इसी प्रकार घर के बच्चों की सच्ची क्षुधा भी लाड़ प्यार के कारण, मनमाना मीठा पकवान तथा मोहनभोगादि खिलाने से नष्ट हो जाती है। हिन्दुस्तान का यह हाल है, कि जो मां बाप जितने अमीर होते हैं, वे उतने ही नजाकत के भोजन खुद करते हैं और अपने बच्चों को कराते हैं। सच्ची क्षुधा क्या है, इसका अनुभव उन्हें कभी नहीं होता।

मनुष्य की ऐसी मण्डली को सच्ची क्षुधा का अनुभव उस समय कुछ होता है, जब वे भाग्यवश कभी तीर्थयात्रा को निकलते हैं। पैदल घूमने और देर में भोजन मिलने के कारण उनके पेट में सच्ची भूख उत्पन्न होती है। उस समय उन्हें मोटे से मोटा अन्न खाने में विशेष आनन्द मालूम होता है। परन्तु घरों में आकर वे फिर पुरानी आदतों से घिर जाते हैं।

स्वाभाविक भूख लगने के समय मुंह में लार उत्पन्न होती है, और मन में एक विशेष प्रकार की चेतना पैदा होती है। उस समय यदि कोई अन्न का नाम ले, तो तभी मुंह में लार भी भर आती है। उस समय जो अन्न खाया जाता है, उसमें विशेष आनन्द आता है। ऐसी भूख उसी समय जागृत होती है, जब भोजन समय से किया जाए, और भोजन के पदार्थ स्वाभाविक खाने की ही आदत हो। समय भोजन का वही है जब सच्ची भूख लगे।

(क्रमशः)

पूंगी (सुपारी) पाक

इस अति स्वादिष्ट पाक के सेवन से स्त्रियों के समस्त प्रकारके रोग यथा प्रदर, कटि पीड़ा, योनि रोग, गर्भाशय च्युति, आलस्य और शिर दरद समूल नष्ट हो जाते हैं। इसके सेवन करने से किसी बीमारी का भय नहीं रहता और एक मास सेवन करने से पुरानी बीमारियां दूर होकर स्त्री के स्वास्थ्य और सौंदर्य में चार चांद लग जाते हैं। यह विशेष पद्धति से बनाया जाता है अतः अन्य सुपारी पाकों की भांति कटु और पौडर रूप में नहीं है बल्कि बर्फी की शक्ल में है जिसे कोमल से कोमल प्रकृति की स्त्री भी प्रसन्नतापूर्वक सेवन कर लाभ उठा सकती है। कीमत १ पौंड ५) डाक पैकिंग खरच १।।।−)

पता—रसायन फार्मेसी, ३ दरियागंज देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुर्ग (COCK)

(लेखक—कविराज हरिकृष्ण सहगल, बागीची अलाउद्दीन, देहली)

मुर्गों की कई जातियां हैं, इनमें दो जातियां अधिक प्रसिद्ध हैं। एक अंग्रेजी यह बहुत कम होते हैं और दूसरे देशी। यह विलायती मुर्गों से छोटे होते हैं। विलायती मुर्ग तीन प्रकार के होते हैं एक बडे टर्की यह मयूरों के समान सुन्दर होते हैं इनका कद भी बडा होता है। एक काले और सफेद चिन्हों से युक्त होते हैं, इन्हें भी टर्की कहते हैं, तीसरे कुक्कुटों के समान कुक्कुट होते हैं।

देशी मुर्गों में हरेल, असील (यह लडने में प्रसिद्ध हैं) और कर्क नाथ आदि की जातियां हैं। कर्कनाथ बिलकुल काले होते हैं इनकी अस्थियों तक का वर्ण श्याम होता है। देशी मुर्गों में जंगली और घरेलू ऐसे भी दो भेद हैं। वन मुर्ग अधिक सुन्दर होता है। भारतीय मुर्ग की आयु ढाई वर्ष होती है।

वन मुर्ग मयूर की तरह सांप के शिकार का शौकीन होता है। उसमें मयूर के अधिकांश गुण पाये जाते हैं। यक्ष्मियों के लिए वनमुर्ग का मांस रस विशेष महत्व रखता है।

घरेलू मुर्ग त्रिदोषघ्न है। शास्त्र जहां एक शब्द त्रिदोषघ्न कहता है, वहां आधुनिक विज्ञानके अनुसार परिभाषा करते हुए कहना पडेगा कि मुर्ग मांस शरीर के हार्मोनज उत्पन्न करने वाली रसग्रन्थियों को शक्ति देता है! डाक्टर कहते हैं कि शरीर की रोगों से रक्षा और स्वास्थ्य को बनाये रखने के लिए शरीर की हार्मोज उत्पादक ग्रन्थिों का शक्तिशाली रहना आवश्यक है। जब तक यह ग्रन्थियां निर्बल नहीं होती, स्वास्थ्य भंग नहीं होता। रोग होने पर यह ग्रन्थियां अधिक मात्रा में ओज उत्पन्न कर रोग नाश का यत्न करती हैं। इसका मतलब यह हुआ कि जो पदार्थ त्रिदोषघ्न हैं वह निश्चय से ओजोत्पादक ग्रन्थियों की कार्यशक्ति को भी बढाता है।

वन मुर्ग—स्निग्ध, गर्म, वातहर, वृष्य, स्वेद कारक, बल को बढाने वाला है। वृंहण है, वातरोग, क्षय, वमन, विषम ज्वर को हरने वाला है। मुर्ग के विषय में कहा जाता है कि इसकी पाचक अग्नि इतनी तीव्र होती है कि दवन्नी व चवन्नी को निगल जाए तो आध घण्टे में उसका रूप बदल जाता है।

यक्ष्मियों को मुर्ग मांस परम मांस वर्द्धक है (चरक) मुर्ग को मयूर के मांस रस में घृत से पकाकर इसमें खट्टे फलों के रस डालकर खाने से बाजीकरण होता है।

बच्चा नर मुर्ग, जिसने मुर्गी से संग न किया हो, लेकर गेहूँ के आटे में घृत मिलाकर गोली बना चौदह दिन तक खिलावें ताकि मोटा हो जावे। फिर हरताल वर्की १ तोला के २१ टुकडे कर उर्द के आटे में १ भाग मिला ज्वारके बराबर गोली बना एक गोली मुर्ग को खिलावें। उस मुर्ग को ज्वार तथा उर्द से अन्य कुछ खाने को न दें। परन्तु मुर्ग जल के बिना प्यासा न रहे। इक्कीस दिन के बाद मुर्ग को मारकर साफ करलें। सेर भर घृत में दम पुख्त कर पकावें। इसके बाद उसे बर्तन में रखकर इतना मधु डालें कि वह डूब जाये। इसके बाद सात दिन उसे भूमि में गाड़े रहें। फिर एक तोला उक्त मुर्ग का मांस प्रतिदिन खाते रहें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नोट—मुर्ग जिस दिन आवाज दे उसी रोज उसे समाप्त करदें ।

नपुन्सक शक्ति के लिए युनानी चिकित्सकों ने मुर्ग मांस और मुर्ग भेजे का खाना उत्तम बताया है । सर्दी के जुखाम में चूजा मुर्ग का मांस रस बढ़िया दवा है । वातिक शिर पीडा, मुर्गी मांस सेवन से मिटती है । पित्तज सरसाम में चूजा मुर्ग का मांसरस खट्टे अंगूर व अनार का पानी मिलाकर भोजनमें दिया जाता है । पक्षाघात के रोगीं को भोजन में चूजा मुर्ग देने से अधिक लाभ होता है ।

कुक्कुर मांस तैल—कुक्कुट मांस ३० पल, सहचर २५ पल, उर्द २ सेर, दशमूल ३ सेर, बलामूल ३ सेर, केवडामूल डेढ सेर, विधि—दो द्रोण जल में पकाकर चौथाई रखें । फिर एक सेर तिल तैल, ४ सेर दुग्ध डालकर पकावें और पकाते हुए यह ओषधियां डालें—जीवनीय गण मजीठ, चव्य, कटफल त्रिकुटा, रास्ना, पिप्पलामूल, मोरेठी, पुष्करमूल, उर्द, केवांच, एरण्डमूल, शतावर, तीनों नमक, पीपल, असगन्ध, गिलोय, जौखार, अजवायन, कपूर, कचूर, इन्द्रजौ, सोंठ, मोथा, पुनर्नवा दोनों, हरिद्रा, शतावर, दोनों कटेली १–१ तोला पीसकर डालें, यह पक्षाघात और अर्दित में प्रशस्त है । (चरक)

कफवात (राशा) दालचीनी डालकर वृद्ध मुर्ग के मांस रस को पिलाने से लाभ होता है ।

श्वास रोगी के भोजन में मुर्गी के बच्चे का मांस रखने से लाभ होता है । कास श्वास रोग में मोर, तीतर, मुर्ग के मांस, दशमूल के स्वरस अथवा कुलथी के रस से सिद्ध हितकर होते हैं । (चरक)

वन मुर्ग व मुर्ग का मांस वातगुल्म में हितकर है । इसे शाली चावल, घृत तथा मद्य से देना चाहिए । वातरक्तमें मुर्गका मांस रस हितकर है । वातिक मदात्य में मुर्गा के स्निग्ध अम्ल रसोंसे उपचार करें । (चरक)

मुर्ग मांस व भेजा के खानेसे उन्माद दूर होता है । महा मयूर घृतमें मयूर के स्थान पर मुर्ग डालकर घृत कल्प को पकाकर प्रयोग करें । इससे उर्ध्वजत्रुज रोग दूर होते हैं । स्मृति नाश में मुर्ग का भेजा पकाकर खिलाना इस रोग की दवा है । इससे मस्तिष्क पुष्टि होती है रक्त पित्त में मुर्गी का भेजा खिलावें । अतिसार में बूढी मुर्गी का शोरबा बहुत हितकर होता है । प्रवाहिका व अतिसारमें मुर्ग के स्निग्ध उष्ण मांस रस को पुराने शाली चावलों के साथ दें । (चरक)

चरक में कामला चिकित्सा में लिखा है कि मुर्ग का रस, अम्ल कटु द्रव्यों से सिद्ध मांसरस, सूखी मूली, कुलथी से बने यूष तथा अन्नों को खिलावे ।

नोट—आचार्य चरक ने क्या वैज्ञानिक ढंग पर मुर्ग के मांस रस को शीतल कर दिया है ?

वृक्क व मूत्राशय के रोगों में मुर्गियों का मांस उत्तम भोजन है; मुर्ग मांस में लोह और ताम्र होते हैं, मूत्राशय की सूजन में मुर्गी को पालक के साग में पकाकर खिलावें । कुछ रोगों में मुर्ग मांस रस पथ्य है । शरीर को मोटा करने के लिये मोटी मुर्गी का मांस खाइये । विषैले जन्तु ने काट खाया हो तो चूजा का मांस बढ़िया है ।

आचार्य चरक प्रमेह में पथ्य लिखते हुये कहते हैं कि जो विष्किर (बखेर कर खाने वाले पक्षी अर्थात् मुर्ग, तीतर, बटेर आदि) जो प्रतुद (मांस भक्षी गृध्र, बाज, काक, चील आदि) पक्षी, इनके मांस रस के द्वारा रूक्ष यवान्न, यवमाण्ड, सक्तु सहित, अपूप भी खावे ।

नोटः—आचार्य ने मांस रस के साथ ठण्डे और रूक्ष यवों का प्रयोग बताकर आयुर्वेदिक साइन्स की पूर्णता को स्पष्ट कर दिया ।

सरसाम में जब कफ प्रकुपित हो तो मुर्गी को जिव्हा करके, गरम २ शिर पर बांधा जाता है । जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्प काट खाये, वहीं मुर्गियों के गुदा स्थान को छील कर लगावें, शास्त्रानुसार मुर्ग गुदा में विष होता है।

कुक्कुट विषैले कीड़े पतङ्गों के भोजन का शौकीन होता है। इनके भोजन से उसे हार्मोज़ प्राप्त होते हैं, विष प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती है। मुर्ग मांस खाने से मनुष्य में ओज और शक्ति बढ़ती हैं। कुक्कट (मांस) खाने वालों के कद और भार, वनस्पतियों पर जीवन व्यतीत करने वालों से अधिक होते हैं। अफ्रीका में एक ही जल वायु में और एक ही स्थान पर दो कबीले रहते हैं। केकेयु और मसाई। केकेयु कबीले के लोग काश्तकार हैं उनका भोजन अनाज और तरकारियां हैं, मसाई कबीले के लोग गडरिये हैं। उनका भोजन मांस, अण्डे, दूध और प्राणियों का रक्त है। भोजन के अन्तर का यह प्रभाव है कि मसाई लोग साधारणतया केकेयु लोगों से कद में ३" उञ्चे होते हैं और उनका भार भी २७ पौंड अधिक होता है।

ब्राजील में भी जो लोग समुद्र तट के पास रहते हैं और मच्छली मांस अण्डों का भोजन करते हैं उनके कद उन लोगों से अधिक बडे हैं जो दूर के स्थानों में रहते हैं और मांस भोजन नहीं करते।

आचार्य चरक इन सिद्धान्तोंको जानते थे और यही कारण है कि उन्होंने रोग क्षमता और रोग निवारण के लिये मांस का और विशेषतया मुर्ग, बटेर, तीतर, लावा का प्रयोग किया। आचार्य चरक दैविक, शारीरिक तथा मानसिक चिकित्सा के विद्वान थे।

मस्तिष्क में पिच्यूट्री नाम की ग्रंथि है उसका स्राव सर्व प्रकार के मस्तिष्क के दबाव तथा शोक को दूर करता है। यही कारण है कि उन्माद में मुर्ग का भेंजा खाने से लाभ होता है। तथा स्मृति नाश दूर होता है।

मुर्ग और मुर्गी दोनों के उदर के अङ्गों, आन्तें, वृक्क आमाशय आदि को धोकर जलालें। इस भस्मको खाने से वृक्काश्मरी में लाभ होता है।

कामला रोग होने पर मुर्ग के बच्चे (जिसने बांग न दी हो) को मार कर और तत्काल पेट फाड़ कर, कामला रोगी के वृष्णों पर बांध दें, ऐसा रात्री को करें, प्रातः उसे खोल दें, खोलने पर पीला होगा, दूसरी और तीसरी रात भी ऐसा ही करें। जब स्वास्थ्य ठीक हो जायेगा तब कुक्कुट पीत नहीं होगा।

घुटनों, पीठ, वृक्क, वस्ति हृदय आदि में कभी स्निग्ध स्वेद की आवश्यकता पड़ती है। ऐसी अवस्था में किसी भी पक्षी, मुर्ग कबूतर आदि को मार कर और उसका पेट फाड़कर उसे उस स्थान पर लगाने से स्निग्ध स्वेद हो जाता है।

मुर्ग के मांस रस के साथ पुनर्नवा चूर्ण लेने से अंत्रवृद्धि Hernia दूर होता है।

मुर्ग रक्त

आचार्य चरक कहते हैं कि वन मुर्ग का रक्त चाटने से रक्त पित्त दूर होता है। और यह सत्य है क्योंकि पाश्चात्य विज्ञान भी इसकी पुष्टि करता है। क्योंकि मुर्गी का रक्त ऐड्रेनेलीन ग्रंथि को उत्तेजित करता है। मान्टीरयल यूनिवर्सिटी कैनेडा के प्रधान डाक्टर सेली लिखते हैं कि जब चोट से रक्त स्राव आरम्भ हो जाये तो वृक्कों की ग्रंथियां तथा मस्तिष्क की ओजोत्पादक ग्रंथियां रस बना कर रक्त में छोड़ देती हैं। इससे रक्त जम कर रक्त स्राव बन्द हो जाता है। रक्त के रक्त कणों की लाली में ओज है। और यही मुर्ग के रक्त का ओज, ओजोस्रावी ग्रंथियों पर प्रभाव डालता है।

मुर्ग के मांस, रक्त को अधोदष्ठा के मस्तिष्क में तथा उर्धम दष्ट के पैरों के क्षत में रखना चाहिये। आंख में सफेदी (फूला) हो तो चूजा मुर्ग के बाजु के रक्त की एक दो बूंद टपकाने से लाभ होता है। मुर्ग के बाजु के रक्त की कुछ बूंद आंख में डालने से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औपटिक नर्व की शक्ति बढ़ती है, तथा दृष्टि की रक्षा करने वाली हार्मोज में वृद्धि होती है।

वृद्ध मुर्ग का भेंजा स्त्री दुग्ध में मिलाकर आंख में डालना भी उत्तम चिकित्सा है।

रक्त पित्त में जब फेफड़े से रक्त आता हो, मुर्गी का रक्त, चक्किरा (हुद हुद) के गुर्दे के साथ मिलाकर बाकला के दाने के बराबर देने से लाभ होता है।

मुर्ग वसा

मुर्ग वसा, मधु मिला लगाने से तिमिर दूर होता है। (आंख की कलाओं की शुष्कता नाश का क्या सुन्दर उपाय है) मुर्ग वसा दुग्ध में पकाकर कान में डालने से कान की पीड़ा दूर होती है। मुर्ग की वसा कि उत्तर वस्ति देने से मूत्राघात दूर होता है। (चरक)

ओष्ठ फटे हों तो मुर्गी की ताजी वसा सफा करके लगावें। नदी का मगर व काली मच्छली (कच्छप) काटलें, तो वहां पर बतख व मुर्ग की चर्बी लगावें। आदमी काट ले तो गन्दा बिरोजा, जैतून, मोम और मुर्ग की चर्बी इनका लेप करें। दान्तों की चमक जाती रहे तो मुर्गी की चर्बी मलें, इसके मलने से बच्चों के दान्त सुगमता से निकल आते हैं।

मुर्ग के ताज पर तैल लगा देने से मुर्ग बांग नहीं देता। अपस्मार में मुर्ग के शिर का ताज शुष्क करके धूनी लेना उसकी उत्तम चिकित्सा है। मुर्गी के पंखों की धूनी बिच्छु के दंश विष प्रभाव को दूर करती है।

आतशक के व्रणों पर मुर्ग के रक्त का लगाना लाभ करता है। आंखों में व्रण हों व उनके निशान मिटाने हों तो मुर्ग के पित्ते का ताजा और कुछ २ उष्ण पानी नेत्रों में डालें, मुर्गी का पित्ता अञ्जन की तरह आंख में लगाना चाहिये। मुर्ग का पित्ता मुर्दासंग के साथ, इन्द्री पर लेप कर सम्भोग करें तो आनन्द वृद्धि हो चहेरे की झाइयों पर पित्ता का लेप करने से वह दूर होती हैं।

काले (कर्कनाथ) मुर्ग का पित्ता, पांच लौंग, ग्यारह काली मिरचें मिलाकर पीसें, थोड़ा लेकर रक्त चूक व शहद में मिलाकर सम्भोग पूर्व इन्द्री पर मलें और विशेष आनन्द अनुभव करें।

मुर्ग अण्ड

मुर्ग के अण्ड (Testicles) लेकर, धागे में पिरोकर बावर्चीखाना में लटका दें, सूख जाने पर पीस लें। दो माशा प्रति दिन दूध से २—१ दिन खाने से अतीव बाजीकरण होता है।

विस्तर पर मूत्र निकल जाता हो, संगदाना मुर्ग ४ रत्ती देना चाहिये।

बीट

हल्दी, गुड़, मुर्ग की बीट का लेप अर्शहर है। (चरक) श्वेत मुर्ग की बीट पीसकर लगाने से त्वचा के वर्ण को श्वेत करती है। कुट, मरैठी, पंवाड़ बीज का चूर्ण घृत मिलाकर श्वेत मुर्गको जो १ दिनका भूखा हो खिलाना चाहिये, प्रातः उसकी बीट लेकर श्वेत कुष्ठ पर लगावें, लाभ करता है। मुर्ग की बीट जल में घोटकर पिलाने से वमन होकर विष निकल जाता है।

वमन कराने के लिये अगर मुर्गी के पंख का व्यवहार कराना हो तो उस पंख को रोगन हिना व तिल तैल से स्निग्ध कर लेना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप चिन्ताओं की चिता से कैसे बच सकते हैं ?

[लेखक—डेल कार्नेगी]

डेल कार्नेगी संसार के उन महालेखकों में से हैं जिनकी पुस्तकें पृथिवी के एक छोर से दूसरे छोर तक बड़े चाव से पढ़ी और मनन की जाती हैं। इस लेख में उनके अमूल्य विचार पढ़िये।

पदार्थ विज्ञान में एक सिद्धान्त है कि एक ही समय में एक ही स्थान को दो पदार्थ नहीं घेर सकते। यह एक वैज्ञानिक सत्य है। मनोविज्ञान का सिद्धान्त है कि दो विचार आपके मन को एक ही समय में नहीं घेर सकते, न ही दो भावनायें एक ही समय में मन में समा सकती हैं। यह भी पूर्ववत् एक वैज्ञानिक तथ्य है।

वास्तव में मनोविज्ञान की एक महत्वपूर्ण खोज यह है कि मनुष्य के लिए उस समय यह असम्भव है कि वह किसी प्रकार की चिन्ता कर सके जब कि उसका मन पूर्णतया किसी और विचार में उलझा हुआ हो।

चिन्ता से अपना बचाव करने का सबसे उत्तम उपाय यह है कि आप अपने कार्यों में इतने व्यस्त हो जायं कि उन कार्यों को करते रहने के बगैर कोई सोच विचार आपके नजदीक न फटकने पाये। गत महायुद्ध में इङ्गलैण्ड की नैया के अत्यन्त सफल नाविक विन्स्टन चर्चिल ने एक बार कहा था कि मैं कार्यों में इतना संलग्न रहता हूँ कि चिन्ता करने का समय ही नहीं मिलता। सच तो यह है कि जो लोग रात-दिन रचनात्मक कार्यों में जुटे रहते हैं उन्हें शायद ही कभी तन्तु सम्बन्धी (nervous) कष्ट होते हों।

कोलम्बिया यूनीवर्सिटी के शिक्षा के प्रोफैसर जेम्ज एल० मर्सेल लिखते हैं—"काम खत्म होते ही चिन्ता तंग करना शुरू कर देती है। उस समय हमारी कल्पना हमें अपनी की गई भूलों की तरफ ले जाती है और बढ़ा चढ़ा कर हमें उन्हें दिखाती है। इन समयों में हमारा मन उस मोटर के समान होता है जो संचालित हो चुकी है और बे-तहाशा दौड़ रही है। इस पर किसी प्रकार का नियन्त्रण न होने से उस समय यह खतरा होने लगता है कि यह अपने आप को भी नष्ट कर देगी। इसलिए इस खतरे से बचने का सबसे उत्तम इलाज अपने आपको पूर्णतया रचनात्मक कामों में खो देना है।"

महायुद्ध के दिनों में उन मानसिक रोगियों के लिए जो भिन्न भिन्न समराङ्गणों से वापिस भेजे जाते थे एक ही इलाज था जिसका प्रयोग मानसिक चिकित्सक किया करते थे और वह यह था कि उन्हें काम में जुटाये रखो। इन रोगियों का एक एक क्षण किसी न किसी कार्य में खपाया जाता था, विशेषतया खुली हवा में किये जाने योग्य कार्यों में, जैसे—मछली पकड़ना, शिकार करना, बाल खेलना, तस्वीरें खेंचना, बागबानी करना नाचना इत्यादि। उन्हें अपने भयानक अनुभवों पर माथा-पच्ची करने का अवसर ही नहीं दिया जाता था।

आजकल मानसिक-चिकित्सा पद्धति में कार्य को नुस्खे के रूप में इलाज के समय प्रयोग में लाया जाता है। प्राचीन यूनान में भी वैद्य लोग आज से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अढ़ाई हजार वर्ष पहले इसका प्रयोग किया करते थे। बैन फ्रैंक्लिन के समय में क्वैकर लोग फिलेडैलिफिया में इसे व्यवहार में लाते थे। १७७४ में अपने स्वास्थ्य केन्द्र में उन्होंने इस प्रकार की काम में व्यस्त रखने की योजनायें चलाई थीं। उन्होंने अपने अनुभवों से सिद्ध किया था कि इस प्रकार काम में जुटाए रखने से रोगियों के ज्ञान-तन्तु बहुत सुख पाते हैं।

इस सिद्धान्त के उदाहरण के रूप में एक स्त्री की कहानी है। यह स्त्री मुझे महायुद्ध के दिनों में मिली थी। उसका एकलौता लड़का पर्ल हार्बर की घटना के दूसरे ही दिन सेना में भर्ती हो गया। उस समय से वह बहुत दुःखी रहने लगी। हर समय कुढ़ती रहती और यही सोचा करती कि कहीं वह घायल न हो गया हो। या मारा ही गया हो। यहां तक कि वह इस व्यथा में हड्डियों का ढांचा रह गई। अन्तमें उसे समझ आई कि वह बहुत भूल कर रही है। उसे इस भावुकतापूर्ण तूफान पर विजय पानी ही चाहिये। तो क्या करें? उसने अपने आपको काम में मसरूफ रखने का पक्का इरादा किया।

अपनी राम कहानी कहते कहते उसने मुझे बतलाया कि तब मैंने अपनी नौकरानी को छुट्टी दे दी और घर का सारा काम अपने हाथों से करने लगी। किन्तु उससे मुझे अधिक सहायता नहीं मिली। कारण यह था कि घरेलू काम मेरे लिए एक आदत की चीज बन गये और मैं उन्हें करते करते भी चिन्ता में डूब जाती। मैं फिर इस तलाश में रहने लगी कि मुझे ऐसा काम मिले जो न केवल मेरे शरीर को ही अपने में लगाये रखे, बल्कि मेरे मन को भी। और एक एक मिनट मेरा उसमें लगे। इसलिए मैंने एक बड़े 'स्टोर डिपार्टमैंट' में माल बेचने की नौकरी करली।

इसके तुरन्त बाद मैंने आपको काम के सख्त भंवर में फसे हुये पाया। हर समय ग्राहकों का जमघटा मेरे चारों तरफ रहता। उनमें से कुछ तो कीमतें की पूछ-ताछ करते, कुछ छोटे-बड़े साइजों के बारे में सलाह लेते और कुछ अलग-अलग रंगों के कपड़े आदि मांगते। मुझे अपने काम के सिवाय कोई भी क्षण कुछ और सोचने को न मिलता। जब रात्रि का समय हो जाता तो अपने पीड़ित पांव के सिवाय कुछ और दिमागमें न आता। तब खाना खानेके तुरन्त बाद चारपाई पर लेटते ही बेहोशी की नींद में सो जाती।

प्रसिद्ध कवि लौंगफैलो के साथ जब अपनी धर्मपत्नी के जलकर मरने की दुर्घटना हुई तो अपना 'ग़म ग़लत' करने के लिए उसने भी काम का आश्रय लिया। उसके पांच छोटे-छोटे बच्चे थे। वह उनकी माता का कार्य भी स्वयं सम्भालने लगा। वह उन्हें भ्रमणार्थ बाहर ले जाता, उनका दिल रोचक कहानियों से बहलाता, उनके साथ खेलता, और उन्हें धीरज बंधाता और खुश रखने की हर समय चेष्टा करता। उससे अपना दुःख भुलाने के लिये डैंटे की 'डिवाइन कौमेडी' का अंग्रेजी में अनुवाद किया। इस प्रकार रचनात्मक कामों द्वारा उसे चिन्ता से छुटकारा मिला।

जार्ज बर्नार्डशा ने निम्न शब्दों में इस सारी बात का निचोड़ सा निकाल कर रख दिया है।

"The secret of being miserable is to have the leisure to bother about whether you are happy or not."

अर्थात् अपने आपको दुःखी करने का राज़ इस बात में है कि तुम अपने लिए इतना अवकाश ढूंढ निकालो कि जिसमें यह सोच सको कि तुम सुखी हो या दुःखी।

इसलिए जब चिंता तुम्हारे दरवाजे पर दस्तक दे तो घृणा से उस पर मत थूको, बल्कि कमर कसकर अपने आपको भरपूर काम में खो दो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा अन्वेषण कार्य

संसार में मानव रोगों की निरापद चिकित्साके लिए नैसर्गिक जड़ी बूटियों का प्रथम स्थान है क्योंकि हमारा शरीर प्राकृतिक है। वेद में भी वनौषधियों की प्रशंसा की है:—

औषधयः समवन्त सोमेन सहराज्ञा।
यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तं राजनं पारयामसि॥
यजु० १२-९६

भावार्थ—औषधियां अपने राजा सोम (चन्द्र) के साथ बोलीं कि हे राजन्! ब्राह्मण (वैद्य) जिस रोगीके लिए हमारा उपयोग करता है उस रोगी को वह रोगरूपी सागर से पार करता है।

इस संस्था के प्रवर्तक कवि० डा० गणपतिसिंह वर्मा ने गत २७ वर्षों में जिन प्रभावजन्य अज्ञात अनुभूत योगों, द्रव्यों और जड़ी बूटियों का ज्ञान संग्रह किया है वह चिकित्सकों और जनसाधारणसे अप्रगट नहीं है। तद्‌विषयक उनके द्वारा लिखी गई दर्जनों पुस्तकें और सैंकड़ों लेख इस बात के स्पष्ट प्रमाण हैं। इस चौथाई शताब्दी की निरन्तर खोज और योगों तथा द्रव्यों के अन्वेषण तथा परीक्षण ने रोगग्रस्त मानव को रोगमुक्त करने का नया मार्ग खोल दिया है। जो जो योग अब तक के परीक्षण में सहस्रों रोगियों पर सफल सिद्ध हो चुके हैं उनको ही पेटेण्ट औषधियों का रूप दिया गया है। इनमें अनेक जानी पहचानी और अज्ञात औषधियां हैं जिनके अनुभूत गुणों का विवेचन न शास्त्र में मिलता है और नही प्राचीन निघण्टुओं और आधुनिक मेटेरिया मेडिकाओं में। यह अनुभव का ही फल है। पर ऐसे सौभाग्य की देन दुर्लभ होती है जिनके बारे में पहले कुछ नहीं कहा जा सका। नई उपयोगी औषधियों में से अधिकांश का लम्बे तथा गहरे अनुसन्धान के बाद ही पता चला करता है और इस पर बड़ा व्यय हुआ करता है। आधुनिक युग में जिन कुछेक रसायनों को महत्वहीन समझा जाता था अनेक वर्षों के अनुसन्धान के बाद उनकी उपादेयता का अब पता चला है। अनुभूत योगों में से जो कुछ अद्‌भुत अचिंत्य शक्ति का परिचय मिलता है उसका पता पृथक्करण व हेतु से नहीं लगता। उसे प्रभावजन्य समझना चाहिये। प्रस्तुत लघु सूची पत्र में कतिपय ऐसी ही अनुसन्धानित आयुर्वेदिक पेटेण्ट औषधियों का सार दिया गया है जो वास्तविक अर्थों में अनुभूत, प्रमाणित और विश्वासजन्य हैं, जिनके निर्माण में स्वच्छता, द्रव्यों की विशुद्धता, कठिनता से प्राप्त होने वाली वनस्पतियों की प्राप्ति, योग द्रव्यों की सर्वांग पूर्णता व निर्माणपद्धति पर पूरा नियन्त्रण रखा जाता है। सभी चिकित्सक व रोगी सन्तोषपूर्वक इन औषधियों पर निर्भर रह सकते हैं। यह औषधियां चिकित्सक को यश दिलाने और रोगी को रोगमुक्त करने में अपूर्व हैं। आपसे प्रार्थना है कि आयुर्वेद का गौरव बढ़ाने के लिए आप इस संस्था की औषधियों को निज प्रयोग में लाकर तथा अधिकाधिक प्रचार करके हमें सहयोग प्रदान करें।

खालिसा

यहां कुछेक गंजनाशक जड़ी-बूटियों द्वारा निर्मित दवा है। सिर की चांद में या दाढ़ी, मूछमें जहांके बाल उडकर गंज पड़ गई हो वहां इसको मलने से नये बाल ऊग आते हैं और गंज मिट जाती है। मू० ५) पो० १।)

केशिनी

यह तैल दिमागी कमजोरी, थकावट और सिर दरद को दूर करता है। दिमाग को ताजा और ठण्डा रखता है, खुजली, भूसी को दूर करके झडते बालों को रोकता है। कुछ दिन निरन्तर लगाते रहने से गंजापन और बालों का सफेद होना रुक जाता है। कुछ विशेष केश टॉनिक जड़ी-बूटियों के रसों को तेल में विशेष पद्धति से पचाया जाता है, जलाया नहीं जाता जिससे बूटियोंके सब तत्व तेल में अक्षुण रहते हैं और अपना पूरा प्रभाव करते हैं। मूल्य ४ औंस १।।) एक पौंड ५।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुधान

अधिक मानसिक परिश्रम, चिन्तन, अध्यापन, या किसी अकथनीय कारण से जिनका दिमाग कमजोर होगया है, स्मरणशक्ति घट गई है, हृदय दुर्बल होगया है, सिर में हल्का २ दरद और थकावट रहती है उनके लिए 'बुधान' बहुत लाभदायक है। इसके सेवन से उपरोक्त दोष मिट जाते हैं। दिमाग पुष्ट होकर स्मरण-शक्ति तीव्र होजाती है। इससे उन्माद तक के रोगियों को लाभ हुआ है। बुद्धिजीवी लोगों के लिए वरदान स्वरूप है। मूल्य ४) डाकखरच १।)

टंकरोल

दो दिन में इसकी ६ मात्राओं के सेवन से जुकाम (प्रतिश्याम) ठीक हो जाता है। दो खुराक खाने से ही शिर का भारीपन, छींकें आना, नाक से पानी बहना आदि दूर होजाता है। इसका प्रभाव श्लेष्मकला पर होता है। २४ मात्रा की शीशी का मूल्य १) छः मात्रा का नमूना ।≈)

निद्राणी

स्वास्थ्य के लिए निद्रा उतनी ही आवश्यक है जितना कि भोजन, जल और शुद्ध वायु। भोजन के पचन और सात्म्यीकरण से शरीर की प्रत्येक सेल को अपनी स्थिती बनाये रखने की सामग्री मिलती है तो पूर्ण निद्रा से आराम मिलने के कारण घिसी हुई सेलों का पुनः निर्माण हो जाता है और खरच हुई शक्ति पुनः संचित हो जाती है। यदि युवा पुरुष को रात्रि में ६–७ घण्टे निरन्तर गहरी नींद नहीं आती या बीच २ में टूट जाती है तो यह मस्तिष्क धमनियों की कठोरता, पाचन सम्बन्धी रोग, विबन्ध, ब्लडप्रेशर (रक्तचाप) नाड़ी दौर्बल्य आदि व्याधियों का लक्षण है। 'निद्राणी' इन सब अवस्थाओं में अपना निश्चित प्रभाव दिखाती है। कुछ ही मात्राओं के सेवन से रात्रि भर खूब गहरी नींद आने लगती है और प्रातःकाल उठने पर देह में स्फूर्ति और मन प्रफुल्लित होता है। इसमें कोई मादक या विषैला द्रव्य नहीं है। मूल्य ४) आधाकोर्स २॥) डाकखरच १।)

नेत्राण

आंखों का दुखना, नेत्र पीड़ा, लाली, जलन, खुजली, सूजन, कीचड़ आना तथा अन्य नेत्र रोगों में परम लाभकारी है। दो बून्द नेत्रों में डालते ही ठंडक पड़ जाती है और २-४ दिन डालनेसे आराम होजाता है। वैसे ही कभी २ डालते रहने से नेत्र साफ रहते हैं और कोई रोग नहीं होने पाता। मूल्य ॥)

नाग सुरमा

यह सुरमा रसायनिक प्रक्रिया द्वारा बनाया जाता है। यह सभी नेत्र रोगों में लाभकारी है। दृष्टिमन्दता, दूर या निकट कम दिखाई देना, तिमिर, धुन्ध, जाला, आंखों से पानी बहना आदि रोगों को नष्ट करके दृष्टि को तेज बना देता है। लगाते ही नेत्रों में ठंडक प्रतीत होती है। ६ माशा की शीशी १॥।) तीन माशा १)

हनीक

इस दवा का प्रयोग आपको मोतियाबिन्दु के आपरेशन के कष्ट से बचा सकता है। प्रारम्भिक मोतिया इससे मिट ही जाता है किन्तु बढा हुआ मोतिया आगे बढने नहीं पाता तथा निरन्तर कई मास लगाते रहने से आराम भी हो जाता है। मूल्य ५)

पायोगन

यह पायोरिया की सफल दवा है। इस दवा को दांतों पर मलकर ५ मिनट लगा रहने दो और फिर कुल्ला कर डालो। इस प्रकार प्रातःकाल, दोपहर और रात्रि को सोने से पहिले लगाने से मसूढों का गला हुआ मांस भरने लगेगा, पीप और रक्त का बहना बन्द होकर हिलते हुए दांत मजबूत हो जाते हैं। १ औंस का मूल्य २॥)

दन्तद्युति मंजन

यह मंजन मसूढ़े फूलना, दन्त पीडा, पानी लगना, मैल जमना, खून जाना, मुख में दुर्गन्ध आना आदि अनेकों रोगों को दूर करके दांतों को स्वच्छ चमकदार बनाता है। लगाने के बाद मुख से सुगन्धि आने लगती है। मूल्य ॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

च्वसोमला

दमा के लिए यह परीक्षित दवा है। इसका प्रभाव श्वासप्रणाली और स्वरयंत्र पर होता है। इसके सेवन से नाडीमण्डल की उत्तेजना शान्त होकर श्वास नलिकाओं का प्रसार होता है जिससे रोगी सुख का सांस लेता है और उसका कष्ट दूर हो जाता है। पूरा कोर्स समाप्त होजाने के बाद श्वास नलिकायें पूर्ण स्वच्छ और फेफड़े पुष्ट होजाते हैं। फिर कभी दमा का दौरा पड़ने का भय नहीं रहता। मूल्य ५)

कफ कर्श

यह नई और पुरानी हर प्रकार की खांसी में लाभदायक है। इसके सेवनके कुछ ही देर बाद धसक में आराम होने लगता है और कुछ ही दिन सेवन करने से पूरा आराम हो जाता है। मूल्य १)

दिलावरी

इस दवा का प्रभाव हृदय और फेफड़ों पर होता है जिससे हृदय की धड़कन, कमजोरी, शूल, शिथिलता, दाह, घबराहट, तृषा आदि दूर होकर हृदय तथा मस्तिष्क ताजा और पुष्ट होजाता है। मूल्य ५)

हृदयरोग की दवा 'हीराभस्म' विशेष

हृदय रोगों का सर्वोपरि इलाज यह हीरा भस्म है। इसके सेवन से भयंकर हृदय रोग को भी अवश्य आराम हो जाता है। यह हृदय उत्तेजक और शूल-हारि होने से हृदय शूल (जिसमें भयंकर दाह होकर मूर्च्छा आजाती है) तथा मिथ्या हृदयच्छूल जो हृदय यन्त्र के बाहिर चलता है दोनों पर अपना तत्काल प्रभाव दिखाती है। यदि धमनियों में रक्तसंग्रह होता हो या अवरोध होता हो तो उसे भी दूर करती है एवं वातनाड़ियों को बल देकर रोग को निर्मूल कर देती है। यह भस्म एक बूटी के क्वाथ के साथ सेवन की जाती है अनुपान की बूटी सहित २० मात्रा का मूल्य ५०) पो० १।)

आमाशयम

दिनभर कुर्सी या गद्दी पर बैठकर काम करने वालों का आमाशय (मेदा) प्रायः दुर्बल हो जाता है, कारण झुककर बैठने से आमाशय पर दबाव पड़ता है जिससे उसके क्रिया संचालन में बाधा पड़ती है और धीरे २ वह निष्क्रिय सा होता चला जाता है। फिर भोजन पचन उचित रूपसे नहीं होता और भांति २ की उदर सम्बन्धी व्याधियां उत्पन्न होजाती हैं। यदि आमाशय कठोर होजाये तो खाने की औषधियां बहुत कम लाभ पहुँचाती हैं। 'आमाशयम' आमाशय पर मालिश करने की दवा है जो लगाते ही त्वचामें प्रविष्ट होजाती है। यह खाने की दवाइयों की अपेक्षा शीघ्र लाभप्रद है। इसके प्रयोग से आमाशय सबल होकर अपना काम सुचारु रूप से करने लगता है। मूल्य एक औंस का ४) डाकखरच सवा रुपया।

अमोनिरी

यह हमारी नवअनुसन्धानित विशेष वनस्पतियों द्वारा निर्मित और दो वनस्पयियों द्वारा भावित योग है जिसे दीर्घ परीक्षण के बाद अब प्रकाश में ला रहे हैं। यह औषधि आजकल के बहुप्रचलित पेट रोगों और उनके उपसर्गों यथा—आंत की सूजन व शूल, व्रण, वायुविकार, मल की सड़न से उत्पन्न होने वाले विष दोष, गैस चढ़ना, अम्लपित्त, आंव, जीर्ण कब्ज, भूख न लगना, खून की कमी, नींद न आना, बुढापा लाने वाली अम्लता, जोड़ों का दर्द व खांसी, जुकाम आदि के लिए अद्भुत गुणकारी सिद्ध हुई है। आमाशय और आंतें बलवान होकर भूख खूब लगती है। स्वच्छ रक्त बनने से शरीर पुष्ट होजाता है। मूल्य एक कोर्स ४) डाकखरच १।)

लीवर शर

यह दवा यकृत सम्बन्धी सभी रोगों के लिए हितकर है। लीवर सारयुक्त इस दवा के सेवन से शारीरिक मानसिक कमजोरी, यकृत दुर्बलता, श्याम और पीत पाण्डुरोग, हाथ पांव की सूजन, सांस फूलना आदि विकार मिटते हैं। मूल्य २।।)

कोलरास

हैजा की प्रत्येक दशा में इसके सेवन से लाभ होजाता है। अब तकके परीक्षण में अद्भुत लाभकारी सिद्ध हुई है। प्रतिवर्ष हजारों रोगी इसके सेवन से स्वास्थ्य लाभ करते हैं। मूल्य १।) मात्र।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रहणी शाल

नई संग्रहणी में इसको ७ दिन सेवन करने से ही पूरा आराम होजाता है। ३ मात्रायें सेवन करते ही इसका विशिष्ठ गुण दृष्टिगोचर होने लगता है। पुरानी संग्रहणी में २ से ३ सप्ताह सेवन करना आवश्यक है। एक सप्ताह की दवा का मूल्य ३)

स्वर्णजल

संग्रहणी रोग की यह सर्वश्रेष्ठ अव्यर्थ अमीरी दवा है। यह स्वर्ण योग है जिसमें स्वर्ण को प्रमाणु रूप में लाकर जल में घुलनशील बनाया जाता है। दस दिन की ३० मात्रा का मूल्य १५)

सनोल

यह पुराने कब्ज की दवा है। इसे लगातार १५ दिन सेवन करने से पुरानी कब्ज मिट जाती है। प्रति दिन प्रातःकाल दस्त खुलकर साफ आता है। पेट साफ होजाने से चित्त प्रसन्न रहता है और भूख अच्छी लगती है तथा शरीर में स्फूर्ति आती है। दवा का कोर्स पूरा होजाने के बाद फिर कभी कब्ज नहीं होगा और समय पर नियमित रूप से दस्त साफ हुआ करेगा। मूल्य ३।।) पो० १।।।-)

डायबोडीन

इक्षुमेह, मधुमेह (डायबीटीज) प्रसिद्ध और भयंकर रोग है और इस रोग की यह दवा विश्वास-जनक चिकित्सा है। डाक्टरीमें इन्सुलीन के इन्जेक्शन काम चलाऊ इलाज है इससे रोग नहीं मिटता। जब रोग बहुत बढ गया हो तो इससे सहायता ली जासकती है किन्तु रोग को निर्मूल करनेके लिए 'डायबोडीन' का सेवन परमावश्यक है। यह दवा १० दिन में अपना असर दिखा देती है और २० दिन के सेवन से सुगर नार्मल के बराबर होजाती है। दो मास सेवन से रोग समूल नष्ट हो जाता है। यह नवीन खोज की गई वनस्पतियों के परीक्षण का सफल परिणाम है। मूल्य पूरा कोर्स २४) परीक्षार्थ आधा कोर्स १२) डाकखर्च जुदा।

वृक्कोल

गुर्दे की चाहे जैसी घोर पीडा हो, इस दवा के सेवन से १५ मिनटमें ही चैन पड जाता है और दूसरी तथा तीसरी मात्रासे पूर्ण आराम होजाता है। मू० १।।)

बवासीर का सरल इलाज (अंकुरना)

बवासीर चाहे खूनी हो या बादी–दोनों को ही ५ दिन में पूर्ण आराम होजाता है। इस दवा में खाने या लेप करने का कोई झंझट नहीं। केवल थोडी सी देर इस दवा का धुवां मस्सों को स्पर्श कराना होता है जिससे किसी प्रकार का किंचित भी कष्ट नहीं होता। दवा का नाम अंकुरना है। मूल्य ५) डाकखर्च १।)

गठना

गठना–गठिया (Gout) सन्धि पीडा, सन्धि बात, रींघनवाय, लकवा, कटिपीडा, पार्श्वशूल तथा सम्पूर्ण वायु रोगों के लिए यह अकेली और बहुपरीक्षित दवा है। खाट में पडा रोगी भी ३ दिवस के सेवन से चलने फिरने लग जाता है। इससे हर प्रकार के वायु रोग नष्ट होजाते हैं। एक शीशी की कीमत ३)

मलना

यह नव आविष्कृत कैपशूल हैं। ६ कैपशूल के सेवन से मलेरिया बुखार निश्चित रूप से दूर हो जाता है। टाइफाइड और क्षय को छोड़कर बाकी सब प्रकार के ज्वरों को दूर करने की क्षमता इसमें है। कीनीन या आर्सेनिक आदि किसी विष का मिश्रण इसमें नहीं है इसलिए ऐसी औषधियोंसे उत्पन्न होनेवाले दुष्प्रभाव भी इसमें नहीं हैं। सर्वथा निर्दोष, मलेरिया और सभी प्रकार के ज्वरों की अमोघ दवा ६ कैपशूल ।।।) तथा ३६ कैपशूल का पैकिंग ३।।)

ल्युकोआयर

इस दवा के सेवनसे नया श्वेत और रक्त प्रदर ६ दिन में ही मिट जाता है, साथ ही हडफूटन, कमर का दरद, उदासी आदि व्याधियां दूर होकर रुग्णा स्त्री स्वस्थ और पुष्ट बन जाती है। ६ दिन की दवा का मूल्य २) यदि रोग पुराना हो तो ४ शीशी सेवन करना चाहिये। एक शीशी से चार शीशी तक का पो० १।)

नियन्त्रक

यह लगाने या रखने की दवा नहीं है, बल्कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाने की निर्दोष दवा है। इसके सेवन करने के बाद फिर गर्भ नहीं रहता। परीक्षण में श्रेष्ठ और सफल सिद्ध हुई है। मासिक धर्म प्रतिमास नियमित होता रहेगा, शरीर पुष्ट बनेगा। स्वास्थ्य पर किसी प्रकार का कुप्रभाव नहीं पड़ता। मूल्य ५) डाकखर्च १।)

पीताम्बर (एक मनान टॉनिक)

यह दवा पर्वतों पर बर्फ में पाई जाने वाली एक अत्यन्त शक्तिवर्द्धक बूटी के योग से बनी है। इसके सेवन से स्त्री पुरुषों में किसी भी कारण से उत्पन्न हुई अशक्ति, दुर्बलता, शरीर का दुबलापन, वजन घट जाना, खून की कमी, गहरी नींद न आना, उत्साह और स्फूर्ति का अभाव आदि विकार मिटकर शरीर पुष्ट, शक्ति सम्पन्न और कान्तिमय होजाता है, क्योंकि इसके सेवन से खून में श्वेत और लाल अणु खूब बढते हैं। मूल्य एक मास की दवा का १०) पो० १।)

नोट—निरामिष भोजी, अविवाहित और विद्यार्थी इसके लिए आवेदन न करें।

बाल रस

यह दवा विशिष्ट वनस्पतियों का अत्यन्त स्वादिष्ट और मीठा तरल सत्व है इसलिए बच्चे प्रसन्नतापूर्वक पी लेते हैं। इसमें चीनी नाममात्र को भी नहीं है। बालकों के ज्वर, खांसी, वमन, दूध पटकना, अपचन, हरे पीले दस्त, सूखा रोग, अशक्ति, खून की कमी आदि व्याधियों को दूर करनेकी अपूर्व दवा है। एक शीशी के सेवन से ही बच्चा निरोग और पुष्ट तथा मोटा-ताजा बन जाता है। स्वस्थ बालक को सेवन कराते रहने से वह प्रायः सभी रोगों से सुरक्षित रहता है।

जोइन्टान

टूटी हड्डी जोड़ने की अद्भुत दवा

मनुष्य की हड्डी चाहे जहां से टूट गई हो—इसकी एक मात्रा खिलाने से अपने आप यथास्थान बैठकर तुरन्त जुड जाती है और जोड के स्थान पर वेल्ड किये की भांति एक गोल कडा सा लग जाता है जो कुछ दिन बाद स्वयं ही मिट जाता है। यदि दो मात्रायें खिलायें तो दो और तीन मात्रा खिलाने से तीन कड़े से लग जाते हैं, जो कुछ समय बाद मिट जाते हैं। जैसा केस हो उसी के अनुसार मात्रायें देना चाहिये। चाहे जैसा केस हो ३ मात्रा से ठीक हो जाता है। तीन मात्रा का मूल्य ३) छः मात्रा का ५) तथा १२ मात्रा कामूल्य ६) है। हमारे क्लिनिक में आने वाले गरीब रोगियों को यह दवा मुफ्त दी जाती है।

चन्द्रजीवन कल्प

आयुर्वेदिक चिकित्सकों के लिए यह सुन्दर अवसर है कि वह इस कल्प से तपेदिक (क्षय) की चिकित्सा कर यश प्राप्त करें और देश की सबसे बड़ी समस्या को हल करने में योगदान दें। इस कल्प को सरलता पूर्वक रोगी के घर पर ही कराया जा सकता है। एक मास का कल्प पूरा होने पर क्षय के कीटाणुओं का नाश हो जाता है। शरीर में रस, रक्त, मांस तथा धातु की वृद्धि होकर शक्ति और स्फूर्ति का संचार होने लगता है, ज्वर, खांसी आदि उपद्रव व क्षय के प्रायः लक्षण मिटकर रोगी स्वस्थता अनुभव करने लगता है। इस कोर्स को समाप्त करने के बाद 'फ्लैशटोन' नामक दवा भी एक मास सेवन करना उचित है। कोर्स का मूल्य ३०) रु० मात्र। विशेष जानकारी के लिए पत्र व्यवहार करें।

अग्निस्थाई पारद गुटी

अग्निस्थाई पारे के दिव्य गुणों को प्रायः सभी जानते हैं किन्तु यह दुर्लभ वस्तु है, वर्षों के सतत प्रयास से अब हम इसको बनाने में सफल होचुके हैं। इस पारद को चाहे जितनी तेज आग पर रखो, न उड़ेगा और न वजन कम होगा। इसकी गोली को मुख में रखकर चाहे जितना शारीरिक, मानसिक परिश्रम करो थकावट बिल्कुल न होगी। २—योगाभ्यास करने वालों को समाधिस्थ अवस्था प्राप्त होती है। ३—भजन पूजनमें मन एकाग्र होता है। ४—दूधमें गोली उबालकर पीने से अत्यन्त बल और पराक्रम प्राप्त होता है। अन्य गोपनीय गुण सेवन विधि में पढें। अनेक चिकित्सकों और महात्माओं द्वारा परीक्षित मूल्य २१) छोटी १०)

जी० एस० आयुर्वेदिक रीसर्च प्रॉडक्टस ३ दरियागंज, देहली ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रत्नों के साथ तुलनेवाली अनुपम पुस्तकें

४० से अधिक आयुर्वेदीय पुस्तकों के रचयिता प्रसिद्ध लेखक व चिकित्सक राजवैद्य डा० गणपतिसिंह वर्मा द्वारा रचित व प्रकाशित—यह वही पुस्तकें हैं जिनकी वैद्य, हकीम, डाक्टर और जनसाधारण मुक्तकंठ से प्रशंसा कर रहे हैं। जिनके विषय में देश के गणमान्य लोगों की सम्मति है कि इन पुस्तकों का प्रत्येक घर में होना अत्यावश्यक है। क्योंकि इनके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक स्थान में सहसा ही जाने वाले रोगों का सरलतापूर्वक इलाज कर सकता है। प्रत्येक पुस्तक के कई २ संस्करण हो चुके हैं जो कि इनकी लोकप्रियता का सबसे बड़ा प्रमाण है।

अनुभूत योग चिन्तामणि

इसके लेखक ने ५ वर्ष तक लम्बी २ यात्रायें करके संन्यासियों की कठिनतम सेवा और भ्रमण के अथक परिश्रम के अतिरिक्त ५४३५ रुपये खर्च करके जो ५३३ जादु असर अनुभूत नुस्खे प्राप्त किये थे वह निष्कपट भाव से इस पुस्तक में प्रकाशित कर दिये हैं। भारतवर्ष के सैंकड़ों वैद्यों, हकीमों और डाक्टरों ने इन सब नुस्खों की पचासों बार परीक्षा करके शत प्रतिशत अनुभूत होने के प्रमाणपत्र दिये हैं जिससे सिद्ध होगया है कि इसमें एक भी ऐसा योग नहीं–जो अनुभूत सिद्ध न हो, सबके सब संन्यासियोंके हृदय के गुप्त योग है। भारत के गणमान्य हकीमों व वैद्यों का निर्णय है कि जिसके पास यह पुस्तक नहीं, निःसन्देह उसकी चिकित्सा और औषधालय अधूरा है। मूल्य प्रथम भाग पांचवीं आवृति ४।) द्वितीय भाग ४) डा० ख० जुदा।

१५ वर्ष के कठिन परिश्रम का फल

अनुभूत योग प्रकाश

आज से १५ वर्ष पूर्व जिस पुस्तक को प्रकाशित करने का आयोजन प्रकाशित किया गया था वह पुस्तक अब छपकर तैयार होगई है। इस पुस्तक के योगों के विषय में केवल इतना बतला देना ही काफी होगा कि गत १५ वर्ष के सतत उद्योग से बड़े २ साधु, महात्मा, फकीरों, भीलों से लेकर राजा, रईसों तथा ख्यातिवान प्रसिद्ध विद्वान वैद्यों, हकीमों और डाक्टरों के उन अनुभूत चमत्कारी योगों को इस पुस्तक के पृष्टों पर अंकित कर दिया है–जिनको आज तक जमाने की हवा भी न लगी थी। फिर इसके लेखक डा० जी० एस० वर्मा का नाम ही बड़ी जमानत है कि पुस्तक कैसी है। इसमें सबसे बड़ी वह रीसर्च आपको मिलेगी जिसे आज तक आपने सुना भी न होगा अर्थात समुद्रीय द्रव्यों यथा मुक्ता शुक्ति, प्रवाल, शंख, कपर्दिका आदि का तेल बनाना। इन तेलों की तुलना में इन द्रव्यों की भस्में बहुत तुच्छ लाभ पहुँचाती हैं। इन तेलों से अनेक कष्टसाध्य कहे जाने वाले रोग शीघ्र मिट जाते हैं। दूसरी विशेषता यह है कि इन तेलों से उड़ने वाले सभी द्रव्य यथा पारद, हिंगुल (शिंगरफ) आदि स्थाई हो जाते हैं। इस पुस्तक में कोई ऐसा रोग नहीं छोड़ा जिस पर अनुभूत सिद्ध योग न छपा हो। मूल्य ६) डाकखर्च ॥=)

इन्जेक्शन बनाना व लगाना सीखो

इन्जेक्शन चिकित्सा तत्काल प्रभाव दिखाने वाली होने से आज लोकप्रिय हो रही है, किन्तु वैद्यों हकीमों को इसकी जानकारी न होने से उन्हें बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड रहा है। इन्हीं भावों से प्रेरित होकर यह पुस्तक तैयार की गई है, जिसमें समस्त रोगों की चिकित्सा आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक और एलोपैथिक इन्जेक्शनों द्वारा ही करना बतलाया गया है। रोगशीर्षक के नीचे क्रमशः प्रत्येक रोग के तीनों प्रकार के इंजेक्शन ऐसे ढंग से लिखे गये हैं कि जिससे चिकित्सक एक क्षण में निश्चय कर सकता है कि कौनसा इन्जेक्शन किस स्थान पर, कितनी मात्रा में, कितने अन्तर से, किस प्रकार लगाना चाहिये और साथ २ इन्जेक्शन बनाने की विधि भी लिखदी गई है। आयुर्वेदिक इन्जेक्शन जिन द्रव्यों से बनाये जाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं वह तमाम आपके घर में, खेतों और जंगलों में सर्वत्र मिल सकते हैं। एक-एक रोग पर कई २ इन्जेक्शन बनाने के योग लिखे गये हैं। इसके अतिरिक्त सीरम, वैक्सिन, पेनिसीलीन, विटामिन्स के इंजेक्शनों का वर्णन और उनको लगाने की सरल व निरापद सचित्र विधि भी खूब समझा कर लिखदी गई है। इस पुस्तक को पढने के बाद इन्जेक्शनोंके विषय में जानने को कुछ भी शेष न रहेगा और सब प्रकारके इन्जेक्शन तरल (लिक्विड) टेबलेट व पौडरादि रूप में बना व लगा सकेंगे। मूल्य ५) डाकखरच ।।।-)

सिद्ध रसायन

रस-रसायन की जिन कठिन क्रियाओं से वैद्य बन्धु घबराकर उनके दिव्य गुणों से वंचित रह जाते हैं, उन क्रियाओं का लम्बा अनुभव करके विद्वान लेखकने उनका सरल तरीका इस ग्रन्थ में दर्शाया है और साथ ही महान रसायनाचार्य नागार्जुन और अन्य सिद्धोंकी संचिकाओं के अज्ञात योगों को उनकी गुत्थी सुलझाकर प्रकाशित किया है जिनसे पाठक न केवल काया (कायाकल्प) रंगने में ही सफल होंगे बल्कि स्थिर मति वाले माया (कीमिया) रंगने में भी सफल होंगे। इस प्रकार पाठकों को जहां आर्थिक संकट से मुक्ति मिलेगी वहां असाध्य समझकर छोड़ दिये जाने वाले रोगों के वे सिद्धहस्त चिकित्सक भी बन जावेंगे। इस पुस्तक के कुछेक योगों का दिग्दर्शन करा देने से आपको अनुमान हो जायगा कि यह कितना अपूर्व ग्रन्थ है। यथा—शुद्ध बद्ध और सिद्ध करने वाली दिव्य औषधियां, औद्भिदाम्ल व बूटियां, रस बन्धन, गन्धक को स्थाई करना, बद्ध पारद को सिद्ध बनाना, रजत रंजन (कीमिया) अभ्रक सत्व की द्रुति, द्रुति से पारद बन्धन, वंग स्तम्भन, पारद भस्म रक्तयोगेन ताम्रोद्धार (कीमिया) तांबा और रजत (चांदी) वेधी सिद्ध हरताल, हरिताल कल्प देह व लौह वेधी, सिद्ध हरिताल तैल, सिद्ध कुचला कल्प, सर्वरोग हर फिटकड़ी रसायन (कल्प) पुरुषों के गुप्त रोगों पर रामबाण सिद्ध खादक, पारद गुटिका बंगवेधी, सिंगरफ मोमियां बनाना, नौसादर तैल, सिद्ध गोरखी जलमुद्रा, सिद्ध गन्धक—एक गिरनारी माहात्मा का योग जिसको बनाना अति सरल है और क्षय (T. B.) संग्रहणी जैसे अनेक भयंकर रोगों का सफल इलाज है आदि। इसमें अन्य पुस्तकों की भांति जोड़-तोड़ कर एकत्र की हुई सामग्री नहीं है बल्कि लेखक ने जीवन भर का अनुभव बन्द किया है। इसके पाठकों के लिए लेखक का सद्परामर्श और सहायता भी सदैव प्रस्तुत रहेगी। मूल्य ५) डाकखरच ।।।)

संन्यासियों की चमत्कारी गुप्त बूटियां

इस पुस्तक में सैंकड़ों ऐसी ही जड़ी-बूटियों के गुप्त रहस्य प्रकट किये गये हैं, जिनकी बदौलत संन्यासियों की धाक जमी हुई है। इनमें से अधिकांश बूटियां वही हैं, जो आपको जंगल, खेत, बागीचों और पंसारियों की दुकानों पर मिल जावेंगी जिनसे आवश्यकता पड़ने पर सिर से पांव तक के समस्त रोगों का इलाज हर जगह प्रत्येक आदमी आसानी से कर धन और यश कमा कसता है। इस पुस्तक के पढ़ लेने के बाद आपके पास रोगियों का तांता बंधा रहेगा। विषय सूची मुफ्त ।४५० पृष्ठ, २ भाग मू० ५।।) पो० ।।।)

गुप्त योग रत्नावली

इस पुस्तक में डा० नेगी के व निज के बढ़-बढ़ गुप्त योग प्रकाशित किये गये हैं जिनको भारतवर्ष के कोने २ से तथा अरब, मिश्र और अफ्रीका आदि प्रदेशों के विभिन्न स्थानों में जाकर लेखक ने प्राप्त किये थे। मूल्य २।।) डा० ख० ।।=)

पेटेण्ट औषधियां व भारतवर्ष

संसार में सबसे अधिक लाभदायक व्यापार पेटेण्ट औषधियों का है। अमृतधारा और सुधासिंधु के मालिकों ने १-१ पेटेण्ट दवा के नुस्खे से लाखों रुपया कमाया है। विलायती फर्मे एक-एक पेटेण्ट दवा से बेहद रुपया कमा रही हैं। यदि उनकी तरह आप भी भारतवर्ष, इंग्लैंड, अमरीका की प्रसिद्ध और सर्वप्रिय प्रतिवर्ष करोड़ों रुपयों की बिकने वाली पेटेण्ट औषधियों के नुसखे बिना किसी कष्ट के घर बैठे सीख कर साधारण पूंजी से सैंकडों रुपये मासिक की स्थाई आमदनी पैदा करना चाहते हैं तो आज ही 'पेटेण्ट औषधियां और भारतवर्ष' नामक पुस्तक की एक प्रति मंगाकर पढ़ें। १६७ योगवाली मूल्य ।।।=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यौवन के गुप्त रहस्य

लुटी हुई जवानी और बीता हुआ यौवन वापिस आने के अनुपम उपाय-पुरुषत्व और जवानी के वह गुप्त रहस्य, जिनको जानने से अशक्ति के ऐसे रोगी जिन्हें किसी दवा से लाभ नहीं हुआ या सैंकडों रुपये की दवा खाकर भी निराश बैठे हैं निःसन्देह सशक्त बन सकते हैं। मनुष्य देह का वह केन्द्र जहां से स्वास्थ्य और यौवन का रस झरकर समस्त शरीर का पोषण करता है, उस केन्द्र को शक्ति प्रदान करने के अनूठे उपाय, जिससे लुटी हुई जवानी और बीता हुआ यौवन पुनः लौट आता है। पुरुषों के अकथनीय भयंकर रोग बिना दवा सेवन किये ही किस प्रकार नष्ट हो जाते हैं। उर्द्ध्वरेता होने का वह प्रयोग जिससे पुरुष की शक्ति में कमी नहीं आती। रसग्रंथियों से आश्चर्यजनक दवाइयां बनाने के प्रयोग। हजारों रुपये खर्च करके डा० वोरनाफ की बताई हुई बन्दर की रसग्रंथि लगवाने व आपरेशन का कष्ट सहन किये बिना ही सुगमता से प्रत्येक स्त्री-पुरुष वही शक्ति कैसे प्राप्त कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त पुरुषों के रोगों के सम्बन्ध में निदान व ऐसे २ गुप्त प्रयोग इस पुस्तक में दर्ज किये गए हैं, जिनको उपयोग करनेवाला पुरुषत्व पर गर्व कर सकता है। मूल्य ३) डाकखरच ।।≈)

हिन्दी से अंग्रेजी मैट्रिक

विश्व के ज्ञान, विज्ञान और व्यापार तथा कला-कौशल को सीखने के लिए आज की विश्व-भाषा अंग्रेजी का सीखना सबके लिए जरूरी है। इसको सीखना कोई कठिन भी नहीं है। जिस प्रकार अंग्रेज मातायें अपने बालकों को अपने घरों में ही अंग्रेजी सिखा देती हैं ठीक उसी प्राकृतिक नियमानुसार यह ३२० पृष्ठोंकी पुस्तक तैयार की गई, जिसे २ घंटा प्रति दिन पढने से केवल हिन्दी पढ़े-लिखे व्यक्ति को भी चार मास में भली प्रकार याद होजाती है। इसमें ए० बी० सी० डी० से लेकर आवश्यक ग्रामर (व्याकरण) अनुवाद आदि इङ्गलिश की मैट्रिक तक का सब ज्ञान हिन्दी से अंग्रेजी और अंग्रेजी से हिन्दी में ऐसे सरल और सुबोध ढंग से ४८ पाठों में छपा है कि जिसे केवल अंग्रेजी में मैट्रिक की परीक्षा देने वाले लड़के-लड़कियां निसन्देह पास होजाते हैं। दसवां संस्करण अभी छपा है। मूल्य ३।।) डाकखरच ।।।)

७८६ वर्ष का प्राचीन रस ग्रन्थ

बसवराजियम—हजारों वर्ष पहिले दक्षिण भारत में चालुक्यवंशीय राजाओं का राज्य था। उनके प्रधान मन्त्री रुद्र साम्प्रदायी महान रसतन्त्रज्ञ बसवराज ने सं० १२२५ में इस सिद्ध सम्प्रदायी अनुपम ग्रन्थ की रचना की थी, जिसमें भगवान रुद्र के अनुयायी वनों में विचरने वाले रसायनाचार्य नागार्जुन, नागबोधि, नित्यनाथ, चर्पटी, कणेरी, पूज्यपाद आदि योगियों का रसज्ञान भरा पडा है; श्री गोविन्दपादाचार्य के कथनानुसार शरीर को अजरामर करने में पारे की बराबरी करने वाली न तो कोई जड़ी बूटी है और न ही कोई रसायन और भस्म है। पारे में यह बड़े आश्चर्य की बात है कि वह स्वयं मूर्छित होकर रोगी के रोग को दूर करता है और बंधा हुआ होकर मुक्ति देता है तथा अच्छी तरह मरा हुआ दूसरों को जीवन देता है। आज मद्रास प्रान्तीय वैद्यों की जो प्रतिष्ठा, यश और कीर्ति सर्वत्र प्रसिद्ध हो रही है वह सब इसी ग्रन्थ के योगों का प्रताप है। यह ग्रन्थ तैलंग भाषा में ताड पत्रों पर लिखा हुआ उपलब्ध हुआ था, जिससे अब तक तैलंग भाषा-भाषी वैद्य ही लाभ उठाते रहे, किन्तु यह जानकर आप अतीव प्रसन्न होंगे कि अब आयुर्वेद बृहस्पति श्री गोवर्धन जी शर्मा छांगाणी के अतुल परिश्रमके फलस्वरूप आज यह ७८६ वर्ष का प्राचीन तैलंग हस्तलिखित दुर्लभ ग्रन्थ हिन्दी भाषा में भी हमारे द्वारा प्रकाशित होगया है। इस ग्रन्थ के विषय में कहा गया है कि सतयुग में चरक, त्रेता में रसार्णव तथा द्वापर में सिद्ध विद्याभू का महात्म्य है उसी प्रकार कलियुग में बसवराजियम पूज्य ग्रन्थ है। इसमें जो निदान, लक्षण प्रत्येक रोग के बतलाए हैं। उनको समझकर इसमें वर्णित योगों द्वारा जो चिकित्सा करेगा, भगवान रुद्र की कृपा से निःसन्देह वह सर्वत्र यश और सिद्धि प्राप्त करेगा। २५ प्रकरणों वाले सम्पूर्ण ग्रन्थ का मूल्य ८।।) डाकखरच १≈)

पता—रसायन फार्मेसी (३ दरियागंज) पो० बो० ११२५ देहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

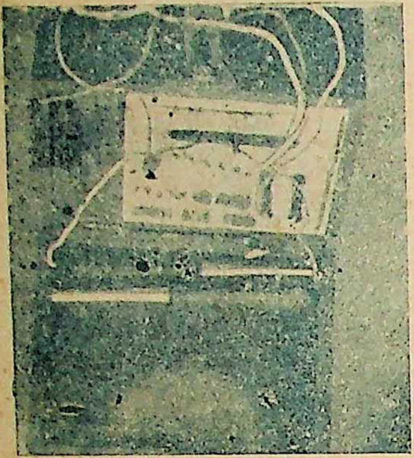

सेल्फ एक्टिंग

इलेक्ट्रो मेग्नेटिक

यह बेटरी सेल पर चलने वाली बिजली के इलाज की मशीन है। इसके द्वारा गठिया, आमवात आदि सभी वातरोगों, पक्षाघात, लकवा, अर्श, मधुमेह, अनेक प्रकार की शारीरिक पीड़ाओं व शोथ आदि ३३ रोगों का इलाज किया जा सकता है। किस रोग पर इस मशीन द्वारा बिजली का किस प्रकार प्रयोग किया जाय इसके लिए पुस्तिका साथ भेजी जाती है। मूल्य २५) डाक व्यय २॥≡)

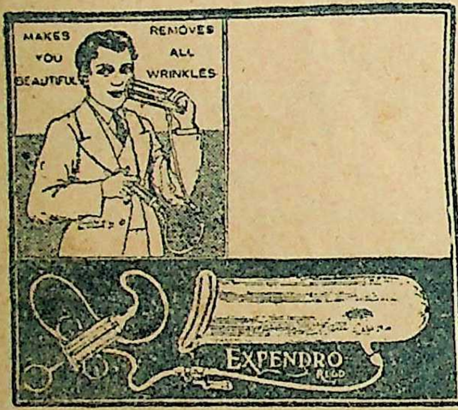

एक्सपैंडरो

इस यन्त्र की उपयोगिता प्रायः सभी जानते हैं। नसों और मांसपेशियों की शिथिलता में जहां प्राकृतिक रूप से रक्त का परिभ्रमण सम्यकरूपेण नहीं होता वहां इसके प्रयोग से आशातीत लाभ होता है। नसों और मांसपेशियों को सशक्त बनाने के लिए इसका प्रयोग करना उत्तम उपाय है। मूल्य १५) बढ़िया ८) डाक खरच पै० २॥)

वर्मा एलोपैथिक चिकित्सा

'एलोपैथिक चिकित्सा' की उपयोगिवा ही इस लोकप्रियता का सबसे बड़ा कारण है। घर बैठे डाक्टर बना देने वाली इस पुस्तक में स्त्रियों, पुरुषों तथा बच्चोंको होने वाले हर रोग की अनुभव सिद्ध एलोपैथिक (डाक्टरी) चिकित्सा दी गई है। जिससे हर बीमारी का इलाज आसानी से किया जा सकता है। हर रोग के कारण, लक्षण, चिकित्सा—जहां पेटेण्ट मेडिसन देना ही ठीक है वहां पेटेण्ट मेडिसन, जिस हालत में जो योग देना उचित है वह, जहां इन्जेक्शन देना आवश्यक है वहां इंजेक्शन और जहां पर नवीन औषधियों का देना ठीक है वहां नवीन औषधियें अर्थात रोग को हर प्रकार से ठीक करने के उपाय दे दिये हैं और जहां सर्जिकल प्रयोग ही उचित है वहां वह भी दे दिया गया है। पथ्य आदि का भी पूरा वर्णन है। ४०० रोगों का निदान व चिकित्सा आदि सब कुछ दिया है। ५०० पृष्ट मूल्य १२) डाकखरच १≡)

पता—रसायन फार्मेसी ३, दरियागंज, पो० बो० ११२५ देहली

डा० जी० एस० वर्मा मुद्रक व प्रकाशक द्वारा स्वस्तिक प्रिंटिंग प्रेस, देहली में छपकर प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसायन

मई १९५९

वर्ष ८ वार्षिक ३।

अंक ११ इस अङ्क का ।≈)

पत्रिका

सम्पादक
साहित्य मनीषी
डा० गणपति सिंह वर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुधान

अधिक मानसिक परिश्रम, चिन्तन, अध्यापन, या किसी अकथनीय कारण से जिनका दिमाग कमजोर होगया है, स्मरणशक्ति घटगई है, हृदय दुर्बल होगया है, सिर में हल्का २ दरद और थकावट रहती है उनके लिए 'बुधान' बहुत लाभदायक है। इसके सेवन से उपरोक्त दोष मिट जाते हैं। दिमाग पुष्ट होकर स्मरणशक्ति तीव्र हो जाती है। इससे उन्माद तक के रोगियों को लाभ हुआ है। बुद्धिजीवी लोगों के लिए वरदान स्वरूप है। मूल्य ४) डाकखरच १।≈)

निद्राणी

स्वास्थ्य के लिये निद्रा उतनी ही आवश्यक है जितना कि भोजन, जल और शुद्ध वायु। भोजन के पचन और सात्म्यीकरण से शरीर की प्रत्येक सेल को अपनी स्थिति बनाये रखने की सामग्री मिलती है तो पूर्ण निद्रा से आराम मिलने के कारण घिसी हुई सेलों का पुनः निर्माण होजाता है और खरच हुई शक्ति पुनः संचित होजाती है। यदि युवा पुरुष को रात्रि में ६-७ घण्टे निरन्तर गहरी नींद नहीं आती या बीच २ में टूट जाती है तो यह मस्तिष्क धमनियों की कठोरता, पाचन सम्बन्धी रोग, विवन्ध, ब्लडप्रेशर (रक्तचाप) नाडी दौर्बल्य आदि व्याधिओं का लक्षण है। 'निद्राणी' इन सब अवस्थाओं में अपना निश्चित प्रभाव दिखाती है। कुछ ही मात्राओं के सेवन से रात्रि भर खूब गहरी नींद आने लगती है और प्रातःकाल उठने पर देह में स्फूर्ति और मन प्रफुल्लित होता है। इसमें कोई मादक या विषैला द्रव्य नहीं है। मूल्य ४) आधाकोर्स २॥) डाकखरच १।≈)

नेत्राण

आंखों का दुखना, नेत्र पीड़ा, लाली, जलन, खुजली, सूजन, कीचड़ आना तथा अन्य नेत्र रोगों में परम लाभकारी है। दो बून्द नेत्रों में डालते ही ठंडक पड़ जाती है और २-४ दिन डालनेसे आराम होजाता है। वैसे ही कभी २ डालते रहने से नेत्र साफ रहते हैं और कोई रोग नहीं होने पाता। मूल्य ॥)

नाग सुरमा

यह सुरमा रसायनिक प्रक्रिया द्वारा बनाया जाता है। यह सभी नेत्र रोगों में लाभकारी है। दृष्टिमन्दता दूर या निकट कम दिखाई देना, तिमिर, धुन्ध, जाला, आंखों से पानी बहना आदि रोगों को नष्ट करके दृष्टि को तेज बना देता है। लगाते ही नेत्रों में ठंडक प्रतीत होती है। ६ माशा की शीशी १॥) तीन माशा १)

हनीक

इस दवा का प्रयोग आपको मोतियाबिन्दु के आपरेशन के कष्ट से बचा सकता है। प्रारम्भिक मोतिया इससे मिट ही जाता है किन्तु बढ़ा हुआ मोतिया आगे बढ़ने नहीं पाता तथा निरन्तर कई मास लगाते रहने से आराम भी होजाता है। मूल्य ५)

पायोगन

यह पायोरिया की सफल दवा है। इस दवा को दांतों पर मलकर पांच मिनट लगा रहने दो और फिर कुल्ला कर डालो। इस प्रकार प्रातःकाल, दोपहर और रात्रि को सोने से पहिले लगाने से मसूढ़ों का गला हुआ मांस भरने लगेगा, पीप और रक्त का बहना बन्द होकर हिलते हुये दांत मजबूत हो जाते हैं। एक औंस का मूल्य २॥) डाक खरच १।≈)

दन्तद्युति मंजन

यह मंजन मसूढ़े फूलना, दन्त पीड़ा, पानी लगना, मैल जमना, खून जाना, मुख में दुर्गन्ध आना आदि अनेकों रोगों को दूर करके दांतों को स्वच्छ चमकदार बनाता है। लगाने के बाद मुख से सुगन्धि आने लगती है। मूल्य ॥)

गठना

गठना-गठिया (Gout) सन्धि पीड़ा, सन्धिवात, रींघनवाय, लकवा, कटिपीड़ा, पार्श्वशूल तथा सम्पूर्ण वायु रोगों के लिए यह अकेली और बहुपरीक्षित दवा है। खाट में पड़ा रोगी भी ३ दिवस के सेवन से चलने फिरने लग जाता है। इससे हर प्रकार के वात रोग नष्ट हो जाते हैं। एक शीशी की कीमत ३)

जी० एस० आयुर्वेदिक रीसर्च प्रॉडक्टस ३ दरियागंज, देहली ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसायन फार्मेसी देहली का प्रमुख सचित्र मासिक पत्र

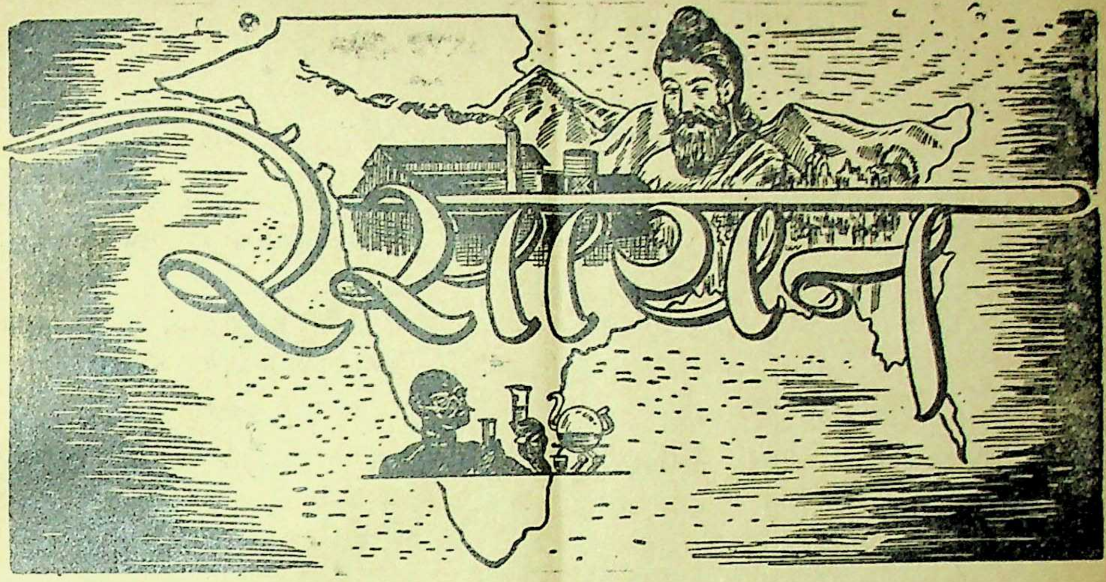

'सिद्धे रसे करिष्यामि, निर्दारिद्रय मयं जगत् ।'

वर्ष ८	देहली मई १९५६	अङ्क ११

❀ जय शेष भगवान ❀

[लेखक—स्वामी पारसनाथ]

सर्प वंश अवतंस, अंश भगवान अनूपम् ।
शीतल सुन्दर सुखद, सरल सोभाग्य स्वरूपम् ॥
लक्ष्मण का अवतार, धार की धरा सुखारी ।
बनकर वर बलराम, कंस की शेखी मारी ॥
सर्प वंश के आदि गुरु, प्रिय बालक रघुवंश के ।
रक्षा कीजे नाथ मम, सर्प वंश के दंश से ॥*

* सर्प दंश पर झाड़ने के लिये यह कविता मंत्र का काम करेगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुभूत योग रत्नावली

सोजाक की चिकित्सा

सर्व प्रथम सोजाक वाले रोगी को बलाबल देखकर (रेचन) जुलाब देकर उसका कोष्ट शुद्ध करें। पश्चात निम्नलिखित योग सेवन करायें। यह मेरे अनुभूत योग हैं।

प्रयोग नं० १

देशी हल्दी ५ सेर को एक मट्टी की हंडिया में डालकर उसमें २॥ सेर (अढाई सेर) गौ दुग्ध भरदें। पश्चात उस हल्दी को खुश्क करलें बाद उस हल्दी का पाताल यंत्र द्वारा तैल निकाल लेवें और शीशी में भर कर सुरक्षित रख छोड़े।

सेवन विधि—सींख भरकर मलाई में या मक्खन में रखकर रोगी को खिलावें, नित्य प्रति प्रातः काल खिलावें, चन्द दिनों में रोगी रोग मुक्त हो जावेगा।

प्रयोग नं० २

तुत्थ २ तोले का २ टुकड़ाकर पाव भर रीठे के पोस्त में रखकर किसी कूंजी में बन्ध करके ३ सेर उपलों की आंच देवें। फिर सर्वाङ्ग शीतल होने पर निकाल लेवें तुत्थ कुश्ता होकर बरामद होगा। सोजाक रोग चाहे कैसाही भयंकर क्यों नहो सिर्फ १ रत्ती प्रमाण में मलाई में रखकर खाना चाहिये तथा चिकित्सक रोगी को अपने पास रक्खे। रोगी को जब प्यास लगे तब बजाय पानी के रोगन जर्द नीम गर्म पिलावें ईश्वर चाहे तो रोग ५—६ दिन के अन्दर नष्ट हो जायेगा (नोट) जल १२ घण्टे पूर्व नहीं पीना चाहिये।

प्रयोग नं० ३

तीन माशा नीलाथोथा को १ छटांक मक्खन के साथ तांबे के बर्तन में नीम के सोटे से (जिसके नीचे पैसा लगा हो) २४ घण्टे खरलकर रख छोडें।

सेवन विधि—सादे पान में १ माशा रख प्रातः सेवन करें। खाने के लिए जी चाहे सो खाना कैसा भी भयंकर सोजाक हो ७ दिन में नष्ट हो जावेगा। श्रीमान वैद्य वर्ग से करबद्ध प्रार्थना है कि इन्हीं तीन प्रयोगों को बनाकर परीक्षा कर इस दास को उत्साही बनावें।

(प्रज्ञा वैद्य लक्ष्मीनारायण शर्मा, आयुर्वेदभिषक श्री श्याम चिकित्सा सदन सीधमुख, चूरू)

'रक्त स्राव'

एक साधारण कृषक का परीक्षित योग है जो रक्त स्राव पर शत प्रतिशत प्रभाव दिखलाता है। लाभ उसी समय से होने लगता है जब से औषधि रोगी को दी जाती है।

यह एक क्षुप है जो शीतल मुलीह होता है इसकी जड़ें सफेद होती है इनमें इलायची जैसी गंध आती है। इसका ग्रामीण भाषा नाम 'कालाघमरा' है। यह पौधा वर्षा काल में सर्वत्र पाया जाता है। परन्तु अन्य ऋतुओं में पानी के नालों या नहर, बम्बा तथा कूओं पर सदैव मिलता है।

इसके पंचांग को लेकर कूटकर १ तोला को शहद के साथ रोगिणी को चटाइये। लाभ पूर्ण रूप से ३ दिन में प्रतीत हो जायेगा।

वैद्य वर्ग से प्रार्थना है कि उस क्षुप के अन्य गुणों को खोज करके मुझे सूचित करने की कृपा करें।

राममूर्त्ति रमईहार, (मैनपुरी)

संतान का अद्भुत योग

पीपल की जटा ३ तो०, केशर १ तो०, नाग केशर १ तो०, करञ्जवे के बीज १ तो०, बनतुलसा की जड़ १ तो०, गुलाब का जीरा १ तो०, छोटी इलायची के बीज १ तो०, अर्क बेद मुश्क २० तो०, गुलाब का अर्क २० तो०, सबको कूटछानकर अर्क बेद मुष्क तथा अर्क गुलाब में ४ प्रहर घोटे पश्चात् ४—४ रत्ती की गोली बनावें १—१ गोली प्रातः सायं गौदुग्ध के साथ देवें परन्तु मासिक धर्म होने से १० दिन पूर्व से ही

शेष पृष्ट २३८ पर पढ़ें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक लहसुन प्रेमी अंग्रेज

मि० गारलिक किंग का जरमनी में व्याख्यान

(लेखक—स्वामी पारसनाथ जी)

"आप शायद सुनकर हैरान होंगे कि इस समय मेरी आयु १५० वर्ष की है। मेरी उमर लोगों को आश्चर्य में डाल देती है। लेकिन मैं क्या करूं? मुझे सत्य कहना ही पड़ता है। झूंठ बोलने की न तो आदत है और न आवश्यकता है। आप लोगों को मेरी आयु ४५ साल जैसी मालूम पड़ती होगी? परन्तु, वास्तव में १५० साल समाप्त कर चुका हूं। मैंने लहसुन की कृपा से ही यह दीर्घ जीवन प्राप्त किया है। उसी ने मुझे तन्दुरुस्ती दी है। उसी लहसुन के द्वारा, मैं दो मरतबा 'काया कल्प' भी कर चुका हूँ।

मेरा जन्म नार्वे के ओस्लो नगर में हुआ था। मेरे पिता जी लकड़ी के व्यापारी थे। नार्वे के लोग लम्बे, निरोगी, और कठिनाई का सामना करने वाले होते हैं। वहां का जल वायु ही उनको वैसा बना देता है। नार्वे निवासी शान्त स्वभाव, मिलनसार और सेवा भाव के प्रेमी होते हैं। हमारा देश नार्वे, शीत प्रधान देश है। सूर्य भगवान के दर्शन बहुत कम होते हैं।

लहसुन का महत्व मुझे कैसे ज्ञात हुआ, यह एक लम्बी कहानी है। मैं पहिली वार सन् १८६५ ई० में हिन्दुस्तान गया था। हिमालय की अलकनंदा नदी के किनारे एक महात्मा जी के दर्शन हुए थे। उनका मुख मण्डल तेज से चमक रहा था। मैं एक सप्ताह तक उनके सतसंग में रहा था। उन्होंने कहा था कि उनका तेज, लहसुन के प्रताप से है। उन्होंने एक बड़ी दिलचस्प कहानी सुनाई। एक वार चित्रकूट में भयानक अकाल पड़ा था। जंगल में रहने वाले सब साधु और योगी, भूखे मरने लगे। वे अपनी अपनी कुटी छोड़कर अन्य सूबों में चले गये थे। एक साधु ६० वर्ष का जर्जर था। उससे चला फिरा तक न जाता था। वह वहीं रहा। लहसुन का एक खेत समीप था। भूख-प्यास लगती तो लहसुन के पत्ते और गांठें खाया पिया करता था। एक साल इसी प्रकार गुजार दिया। दूसरी साल जब वर्षा हुई तब गये हुए साधु लोग वापस आने लगे। उन्होंने जो उस वृद्ध साधु को देखा तो खूब तन्दरुत ६० साल का वह वृद्ध, ४० साल वाला जवान बन गया था। खूब दौड़ता था, नदी में जाकर स्नान करता था और कुल्हाड़ी लेकर जंगल से, धूनी के लिए, मोटी मोटी लकड़ी काट लाता था। तब यह सिद्धांत प्रकट हुआ कि—

लहसुन भी काया कल्पकारी महौषधि है!

मैं भी इस अपनी १५० वर्ष वाली आयु में मीलों दौड़ता हूँ। एक छोटे बच्चे की तरह, अपने शरीर को, उलटा-सीधा और टेढ़ा-मेढ़ा कर सकता हूँ। जमनास्टक और प्लेलरवाल पर कसरत किया करता हूँ।

इधर व्याख्यान हो रहा था। उधर सड़क पर एक ऐक्सीडेंट हो गया। एक मोटर तेजी से निकली और एक बारह-तेरह साल के लड़के को जोर का धक्का देती हुई निकल गई। लड़का सड़क पर गिरा और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेहोश होगया। व्याख्यानदाता मि० किंगकी नजर उस लड़के पर पड़ गई। वह खड़े हुए व्याख्यान दे रहे थे और सब श्रोता शान्ति से बैठे रहे थे। हिन्दुस्तान की तरह खड़े होकर व्याख्यान सुननेकी असभ्यता जरमनी में नहीं है। तुरंत मंच पर से मि० किंग कूदे और सड़क पर लड़के के पास जा बैठे। वह सड़क करीब ही थी। किंग ने बालक की नाड़ी देखी तो नाड़ी लापता थी। उन्होंने जेब से एक रबड़ की नली निकाली और लड़के के नाक में एक सिरा डालकर दूसरे सिरे को अपने मुंह में लगाकर हवा भरने लगे। जिस प्रकार साइकिल के टायर में हवा भरी जाती है उसी तरह। कुछ मिनटबाद लड़के ने आंखें खोलदीं और दर्शक उस विचित्र व्यक्ति की ओर चकित होकर देखने लगे। इसके बाद मि० किंग ने अपने कोट की जेब से एक छोटी सी शीशी निकाली। दो तीन बूंद बच्चे के मुंह में कोई तरल पदार्थ टपका दिया। दवा के अंदर जाते ही बच्चे ने करवट ली। फिर वह उठकर बैठ भी गया। तब उसने कहा—'यह बचा अब खतरे के बाहर है। इसे इसके घर पहुँचा दिया जावे। दो आदमी उस बच्चे को उसके घर ले गये।

सब लोग फिर व्याख्यान शाला में पहुँचे। मि० किंग, भारत की आध्यात्मिक विद्या पर बोलने लगे। १५ मिनट बाद एक पुलिस इंसपेक्टर, वही लड़का और उसके माता पिता—मंच के पास आ खड़े हुए। पुलिस इंसपेक्टर ने वक्ता मि० किंग से कहा—'केवल चन्द मिनट मुझे देने की कृपा कीजिये और फिर अपना व्याख्यान जारी फरमावें।' मि० किंग ने लेकचर देना रोक दिया और इंसपेक्टर के सामने प्रश्न वाचक दृष्टि से देखने लगे।

इंसपेक्टर कहने लगा—'आदरणीय भद्रपुरुष! मैं और बच्चे के माता पिता आपको धन्यवाद देने आये हैं। आपके पास ऐसा कौनसा जादू का जल है, जिसने मरे हुए बच्चे को जिला दिया? इस पानी के विषय में आप हमें ज्ञान देकर हमारी जिज्ञासा शान्त करने की कृपा करें।

तब मि० किंग ने उत्तर दिया—'डियर इंसपेक्टर साहब! मेरे पास कोई भी जादू का पानी नहीं है। जादू और आश्चर्य से भरा हुआ तो भारत वर्ष ही है जिसे आप लोग 'इण्डिया' कहते हैं। उसी इण्डिया ने मुझे कुछ जड़ी बूटियों का ज्ञान दिया है। जिस र[illegible] से मृतकतुल्य बालक पुर्नजीवित हो गया वह 'लहसु[न] का रस' था। यदि उस रस का व्यवहार उस समय [न] किया जाता तो बेशक लड़का मर जाता और संसा[र] का कोई डाक्टर उसे जीवित न कर सकता।'

'और आपने इस बच्चे के शरीर में हवा क[्यों] भरी थी?' इन्सपेक्टर ने दूसरा सवाल किया।

मि० किंग ने उत्तर दिया—'मोटर के धक्के [से] इस बालक के सिर पर गहरा धक्का लगा था। जिस[की] वजह से इसका प्राण वायु भी रुकने लग गया था। यदि मैं शीघ्र घटना स्थल पर न पहुँच जाता तो इ[स] कारणसे बच्चा मर जाता। जैसे साइकिल में हवा भ[री] जाती है—उसी तरह पूरी ताकत से मैंने हवा भरी थी। मेरी हवा के स्पर्श से उसका प्राण वायु रुक गया [था।] फिर जो मैंने लहसुन का अर्क टपकाया तो उसने प्रा[ण] में गतिका संचार कर दिया। लड़का होशमें आगय[ा।] प्राण वायु का ज्ञान और लहसुन की शक्ति का ज्ञ[ान] मुझे इण्डिया ने दिया है। इस कारण मैं इण्डिया [को] अपना मास्टर मानता हूं। मुझे बड़ी प्रसन्नता है [कि] इण्डिया के इस साधारण ज्ञान द्वारा माता पिता [को] अपना लाडला लड़का फिर मिल गया। आप [मुझे] धन्यवाद न दें। पहिले तो धन्यवाद परमात्मा [को] दीजिये, जिसने लहसुन जैसी संजीवनी बूटीका निर्[माण] किया। फिर धन्यवाद दीजिये इण्डिया के योगियों [को] जिन्होंने लहसुन के प्रयोगों पर रिसर्च की थी।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथ जोड़कर लड़केकी माता बोली—'योगीराज जी ! मेरे शरीरमें गठिये का रोग है। डाक्टरी इलाज करते २ थक गई हूँ। कोई प्रयोग प्रकट कीजिये।'

मि० किंग ने उत्तर दिया—'बिल्कुल सरल चिकित्सा है इसकी। रात के समय दूध में लहसुन के बारीक टुकड़े डलो। फिर ऐसा पकाओ कि वह दूध लहसुन से ओतप्रोत होजाये। एक सेर दूध में एक बड़ी गांठ लहसुन की छीलकर उबाल लेना चाहिये। लहसुन के छोटे २ टुकड़े कर लेना उचित है। यदि छः सप्ताह तक आप निरन्तर, चौबीस घण्टेमें एकबार यह प्रयोग करेंगी तो गठिया हमेशा के लिये छू मन्तर होजायगा। यही दवा खाया कीजिये।'

इसके बाद मि० किंग ने अपना व्याख्यान फिर शुरू करते हुए जनता से कहा—'शरीर में गठिया पैदा करनेवाला पदार्थ खटाई है। जो लोग ज्यादा खट्टी चीजें खाते हैं, उनके जोड़ों में यूरिक एसिड पैदा हो जाता है। वही आगे चलकर गठिया का रोग बन जाता है। चीनी भी गठिये की सहायक है। उन मिठाइयों से बचना चाहिये जिनमें चीनी ज्यादा पड़ती है। सप्ताह में एक बार तैल की मालिश जरूर करनी चाहिये। जो लोग नित्य सरसों के तैल की मालिश करके स्नान करते हैं उनके शरीर में कभी भी गठिया पैदा नहीं हो सकता है। जिस प्रकार नालियों के मोड पर कचरा जमा हो जाता है, उसी तरह शरीर के जोड़ों में, भोजन का कचरा भर जाता है। नाली का कचरा पानी की तेज धारा बहा देती है। जोड़ों पर मालिश करने से रक्त की रफ्तार तेज हो जाती है और कचरा बह जाता है।

देवियों और भाइयों ! आपकी जर्मन जाति बड़ी सुसंस्कृत जाति है। जर्मन लोग, ज्ञान के बहुत प्यासे हैं। इस कारण आज मैं उनको कुछ नई बातें बतलाना चाहता हूँ। भारत वर्ष के सिरका नाम है—हिमालय ! उसी पहाड़ से श्री गंगा जी नामी एक परम प्रसिद्ध तथा परम पवित्र एक नदी निकली है। उसे हिन्दू लोग मोक्षदायिनी मानते हैं। उसी गंगा की एक धारा का नाम है अलखनन्दा। उसीके किनारे, हिमालय की गुफाओं में निवास कर मैंने कई वर्ष तक हिमालय की जड़ी बूटियोंका ज्ञान प्राप्त किया था। वहीं पर मुझे प्रसिद्ध जड़ी लहसुनकी महिमा मालूम हुई थी। इस समय मेरी आयु १५० वर्ष की है और मैं दो बार 'काया कल्प' भी कर चुका हूं। वह काया कल्प, लहसुन के द्वारा ही होता है। अज्ञानी लोग, लहसुन की बदबू से घबराते हैं किन्तु वही उसका अमृत रूप गुण है। शरीर में रोग लाने वाले सब कीड़े, लहसुन की उसी बदबू से मर जाते हैं। अगर कोई ८० साला वृद्ध फिर तरुण बनना चाहे तो उसे लहसुन सेवन करने के लिए तैयार हो जाना चाहिए।

प्रिय सज्जनों ! लहसुन तीन प्रकार का होता है। सर्व श्रेष्ठ लहसुन वह कहलाता है जिसकी गांठ का एक ही जवा, एक ही तुरी, एक ही पूर्ति हो। वह सर्व गुण सम्पन्न लहसुन कहलाता है। आयुर्वेद ने प्रकृति के पदार्थों के ६ गुण माने हैं। उनमें से ५ गुण अकेले लहसुन में हैं। लहसुन में केवल खटाई नहीं है। और खटाई ही मानव शरीर में बीमारियों को पैदा करती है। इस लिए प्रकृति माता ने लहसुन को खटाई से मुक्त करके उसे शुद्ध अमृत बना दिया है। अमीर लोग, शक्ति प्राप्त करने के लिए, महंगी से महँगी कस्तूरी तलाश किया करते हैं। उन लोगों को यह पता ही नहीं है कि लहसुन के समान कोई कस्तूरी इस संसार में नहीं है। काया कल्प के लिये लहसुन की एक पूरी गांठ, रोजाना खानी चाहिये। हां मैं आपको यह बतला रहा था कि लहसुन तीन प्रकार प्रकार का होता है। पहला नम्बर का लहसुन वह जिसमें एक ही पूर्ति हो। दोयम नम्बर का लहसुन वह होता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसमें मोटी मोटी १०—१५ ही पूर्तियां हों। तीसरे दर्जे का लहसुन वह है जिसमें पतली-पतली अनेक तुरिया हों और गांठ की छोटी हो। ऐसा लहसुन जल्दी सूखकर निकम्मा हो जाता है।

काया कल्प करने के लिए लहसुन का सेवन खूब करना चाहिये। उसकी बू से मत डरो, उसकी गर्मी से भी मत डरो। लहसुन का स्वभाव है कि कुछ दिन अपना जोश खूब दिखलाता है और फिर चांद की तरह शीतल हो जाता है। अगर किसी जली या कटी हुई उंगली पर लहसुन लगा दिया जावे तो पहिले वह कुछ मिनटों तक खूब लगेगा, किन्तु बाद में शांत हो जायगा।

लहसुन जब शरीर में पहिले पहल प्रवेश करता है, तब सिंह की तरह दहाड़ता है और शरीर के कीटाणुओं को अपने आगमन की सूचना देता है। फिर वह उन्हें मारने और जलाने में लग जाता है। वही उसकी प्रारम्भिक गरमी है, जिसके कारण प्रायः लोग घबड़ा जाते हैं। वे लोग लहसुन की उष्णता और गंध की शिकायत करते हैं। हालांकि वही दोनों स्वास्थ्य को ठीक करते हैं। वह गरमी और वह गंध कीटाणुओं का संहार करती है। बाद में लहसुन शांत होकर—काया कल्प कारी रचनात्मक कार्य करने लग जाता है।

वृद्धावस्था में जो कणिकाएं (Cells) मुरदा हो जाती हैं, उनमें लहसुन संजीवनी शक्ति भरता है। धीरे धीरे शरीर की मरम्मत करता हुआ उसे नया रूप देने लगता है। जो लोग बूढ़े हो जाते हैं, उनपर बाहर के सभी प्रकार के कीटाणु हमला कर देते है। क्योंकि बूढ़े शरीर में से बदबूदार माद्दा निकलने लगता है। जिसकी गंध पाकर आसपास के कीटाणु आंख, कान, नाक, मुख और गुदा द्वारा शरीर में प्रवेश करते हैं और उस बूढ़े शरीर को जल्दी जल्दी खाकर यमराज के घर भेज देते हैं।

बीमारी के कीटाणु, निरोग शरीर पर हमला नहीं कर सकते हैं। जैसे सीमेंट का बना सुदृढ़ मकान चूहा–दीमक–चींटी और पक्षी द्वारा काटा नहीं जा सकता। उसी तरह निरोग शरीर को कीटाणु चोट नहीं पहुंचा सकते हैं। जब मनोविकारों का मारा हुआ शरीर बूढ़ा हो जाता है, तब उसकी दशा उस घर के समान हो जाती है, जिसकी छत चूती हो, चूना जर्जर हो गया हो, और लकड़ी में घुन लग गया हो। ऐसे मकान में—चूहे, दीमक, पक्षी, चींटी अपना घर बना लेते है, ठीक उसी तरह से उस बूढ़े शरीर में कीटाणु निवास करने लगते हैं।

संसार में लहसुन के अलावा ऐसा कोई शक्ति पुंज पदार्थ नही जो जर्जर शरीरको नवीन बना सके। यही लहसुन का काया कल्प है। बाहरी कीटाणु तब हमला नहीं करते हैं जब शरीर के प्रत्येक सूराख से लहसुन की गंध आने लगे। जब इस प्रकार शरीर लहसुन की गंध में बस जाता है, तभी काया कल्प शुरू हो जाता है।

६ माह निरंतर सेवन करने से वह सब जर्जर अंगों को नया रूप दे देता है। इस प्रकार वृद्धापन दूर होने लगता है और तरुणाई आने लगती है।

काया कल्प करने वालों को यह याद रखना चाहिये कि लहसुन बड़ी कठोर दवा है। उसके साथ हंसी दिल्लगी नहीं की जा सकती। जो लोग संयम नहीं कर सकते, जो विषयी हैं, और जो जीभ के गुलाम हैं उनका काया कल्प कभी नहीं हो सकता। लहसुन भी उनके सिर में डंडा मार देता है। इस कारण ब्रह्मचर्य के साथ लहसुन का सेवन करके आप लोग पूरा लाभ प्राप्त करें।'

क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोगों का वास्तविक कारण और दोष

(लेखक—श्री० स्वामी हरिशरणानन्द जी)

हमारे दो मित्र हैं, उन दोनों को श्वास का रोग है अर्थात तमक श्वास का कष्ट है। यह रोग इन दोनों को २५-३० वर्ष से है। अर्थात् जब यह किशोरावस्था पार कर रहे थे, जवानी में पदार्पण किया था, तभी से इन्हें यह रोग लगा। हमारा सम्बन्ध इनके साथ तब हुआ जब रोग को हुए पांच-सात वर्ष व्यतीत हो चुके थे।

१९४७ में जब मैं आमसन्धिवात से पीड़ित हुआ उसके मध्य एक बार मुझे भी श्वास का दौरा हुआ और २६ घण्टे रहा। उसके बाद आज तक नहीं हुआ।

तमक श्वास उसे ही आयुर्वेदज्ञों ने माना है जिसका दो चार दिन में, दस बीस दिन में या महीना दो महीने में दौरा हो श्वास लेने में कष्ट होता हो। जिसको तमक श्वास होजाता है वह व्यक्ति जल्दी २ नहीं चल सकता, चले तो श्वास फूलने लगता है अर्थात श्वास लेने में उसे कष्ट होने लगता है इसे ही श्वास फूलना कहते हैं। सीढी पर, पहाड पर चढना हो तो चढाई चढना उसके लिए बडा कठिन होता है। दौड़ तो वह लगा सकता ही नहीं है दौड़ने का प्रयत्न करने पर श्वास लेना कठिन हो जाता है।

सम्प्राप्ति—शरीर के भीतर ऊष्मजन पहुँचाने के लिए प्रकृति ने जो प्रबन्ध किया है उस विभाग को ही श्वास प्रणाली कहते हैं। वह प्रणाली नासा मार्ग से प्रारम्भ होती है। वह प्रणाली नासा मार्ग से प्रारम्भ होती है, स्वरयन्त्र उसके कंठ स्थान में पडता है उसके मध्य से होकर एक नली उरोगुहा में उतरती है जो वक्षस्थल में जाकर दो भागों में विभक्त होजाती है एक दक्षिण वक्ष की ओर दूसरी बाम पक्ष की ओर। उसी शाखाओं में से फिर और शाखायें फूटती हैं और वृक्ष की टहनियों वत उसका विस्तार दोनों फुफ्फुसों के अन्दर सूक्ष्म प्रणालियों में विभक्त होता प्रशाखा परिशाखाओं में फैलकर फूफ्फुसके एक एक कोष्ठ में पहुंच उसका अन्त हो जाता है। इसी नाली व प्रणाली मार्ग से वायु अन्दर प्रवेश करता है, इसीलिए इसे श्वास प्रणाली कहते हैं।

और जिन कोष्ठोंमें जाकर वायु भरता है उन्हें कोष्ठ कहते हैं। इस रोग के आवर्त या दौरे के समय में वायु प्रणालियों में तो संकोचन होता है अर्थात वह सिकुड कर उनका रास्ता तंग हो जाता है जिससे वायु श्वास द्वारा लिया कठिनता से अन्दर प्रवेश करता है और वायु कोष्ठ जो सारे फुफ्फुस में व्याप्त होते हैं वह वायु प्राप्ति की इच्छा से फैलते हैं। जब वायु कठिनता से रुक रुककर प्रवेश करती है और उन तक वायु कम पहुँचता है उस समय वह अधिक फैलते हैं। अर्थात वायु न मिलने या कम मिलने पर उनके कोष्ठ वायु से अपूर्ण रहने के कारण उनकी वायु पिपासा बढ़ जाती है इसी से वह फैलते हैं। श्वासकष्ट वायुप्रणाली के सिकुड़ने से होता है, वायु अभाव से फुफ्फुस कोष्ठों की वायु पिपासा बनी रहती है इसी से वह फैलते हैं। और जब दौरा हटता है अर्थात वायु प्रणालियों का संकोच घटता है वायु के श्वास निःश्वास के समय कष्ट घटता है वह पूर्व स्थिति की ओर लौटती है वायु की मात्रा कोष्ठों तक पूर्णतया पहुँचने लगती है कोष्ठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी सिकुड़ कर अपनी पूर्व स्थिति में आजाते हैं। जैसे जैसे यह रोग पुराना होता जाता है वायु प्रणाली का संकोच होने की दशा अधिक काल तक स्थिर होने लगती है उसी तरह वायु कोष्ठों में प्रसार की स्थिति भी स्थिरता लेने लगती है। इसी कारणसे तमक श्वास के रोगों का वक्ष प्रसार बढ़ जाता है श्वास प्रणाली संकोच के कारण गर्दन के पास पीठ की ओर का झुकाव आगे आ जाता है वायु प्रणाली के संकुचित बने रहने से झुकाव ऐसा बन जाता है कि श्वास का रोगी बिलकुल सीधा तनकर खड़ा नहीं हो सकता। कन्धों के पास से उसकी गर्दन का झुकाव सदा ही आगे की ओर रहता है जैसे कुवड़ा रोग में। यह स्थायी विकृति बन जाती है। श्वास कष्ट और भी कई रोगों में हो जाता है जैसे योषापस्मार (हिस्टीरिया) में, हृदय के कई रोगों में, वृक्क के कई रोगों में, गले के कई स्थानिक रोगों में किन्तु उपरोक्त स्थिति इन सबों में नहीं पाई जाती।

लक्षण—आरम्भ में जिन नवयुवकों में तमक श्वास का आरम्भ होने वाला होता है उन्हें अक्सर जुकाम अधिक हुआ करता है छींके आती हैं, सुबह उठकर प्रायः जुकाम की सी स्थिति उत्पन्न होती है नासामार्ग की श्लेष्मकला फूली रहने से उन्हें नाक से श्वास लेने में कठिनाई होती है। रोग जैसे २ जीर्ण होता जाता है जुकाम आदिसे उनके दौरे का सम्बन्ध घटता जाता है। तमक श्वास में अब प्रायः श्लेष्म बहुत कम निकलता है यदि श्लेष्म आने लगे तो दौरा का कष्ट घट जाता है। रोगारम्भ में प्रायः कास नहीं होता। किन्तु यदि किसी के उपजिव्हा में विकार हो, वह बढ़ गई हो तो उस स्थिति में कास अवश्य होता है। तमक श्वास का सम्बन्ध कास से नहीं, कास वास्तव में भिन्न कारण से उत्पन्न होने वाला रोग है। किन्तु जीर्ण तमक श्वास के रोगी में स्वरयन्त्र, उपजिह्वा (तालु कंटक) या कव्वा का विकार, गले में श्लेष ग्रन्थियों का बढ़ जाना (एडीनाईटिस) आदि कष्ट जा रहने लग जाते हैं तो श्वास के साथ कास का सम्बन्ध बन जाता है। उस तरह स्वतन्त्र तमक श्वास में का नहीं होता।

जब श्वासावर्त के समय श्लेष्म बनकर निकल लगे तब श्वास के दौरे में कमी आने लगती है। प्रा तमक श्वासी को पानी सी पतली बलगम या नाक बह अवश्य देखी जाती है। जिसे बलगम या श्लेष्म आ लगता है उसके श्लेष्म का सूक्ष्म दर्शक यन्त्र पट रखकर देखा जाय तो श्लेष्म में एक विशेष प्रकार मणिभीय रवे से चमकते दिखाई देते हैं। यह तम श्वास के रोगी में ही मिलते हैं। अन्य किसी श्वास में नहीं देखे जाते।

दौरा का समय कोई निश्चित नहीं होता, कि प्रायः दौरा रात के समय अकस्मात सोते २ होते दे जाता है। कुछ ऐसे भी तमक श्वास के रोगी देखे हैं जिनको प्रभात में ही नित्य श्वास का दौरा उठता उनको बलगम बहुत जाता है और पकी हुई बल निकलती है। यह वास्तव में तमक श्वास के रोगी होते। यह तो अधिक तम्बाकू, सुलफा, चरस, सिग शराब पीने वाले व्यक्तियों का रोग है जिन्हें बु आने के समय उनकी वायुप्रणाली में तम्बाकू सिग के धुयें की कालख या मैलके जम जाने पर वायुप्रण विकृत होकर तंग हो जाती है और वायु प्रणाली श्लेष्मक कला में कुछ शोथ, प्रसेक बना रहता है से श्लेष्मोत्पत्ति होती रहती है।

इसमें वायु कोष्ठों का प्रसार इतना नहीं जितना तमक श्वास में होता है। वास्तव में य सुलफई आदि व्यसनी व्यक्तियों को होने वाले कष्ट को तो तमक श्वास के साथ कभी मिलाया ही जा सकता। क्योंकि इनको जो दौरा होता है वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुबह के समय जागने के साथ ही अधिक होता है अथवा अध्यशन किये हों या ज्यादा खाकर सो जायें तो फिर इन्हें सारी सारी रात ही सोना कठिन हो जाता है। इन लगों का कष्ट दैनिक होता है और इनको प्रायः खांसी की अधिक शिकायत रहती है और श्लेष्म भी कच्चा या कम पका हुआ पीला आया करता है, जिसका कारण वायु प्रणालीके किसी स्थानकी श्लेष्मक कला की विकृति को वह श्लेष्म सूचित करता है। यदि श्लेष्म के साथ पूय भी हो तो यह निश्चित समझा जाता है कि कहीं मार्ग में क्षत हो रहे हैं जिनमें पूयोत्पादक कीटाणुओं का निवास बन रहा है तभी पूय आता रहता है। ऐसे व्यक्तियों के मुंह से श्लेष्म से पूय की गन्ध सड़ी हुई गन्ध निकला करती है। इन रोगियों के श्लेष्म को सूक्ष्म दर्शक पट पर रखकर देखा जाय तो उसमें वह मणिभ श्लेष्म के कण नहीं पाये जाते जो तमकश्वास में मिलते हैं।

इसीलिए यह श्वास उससे भिन्न होता है। श्वास ही भिन्न नहीं होता। प्रत्युत इसका कारण भी भिन्न होता है। खैर! हम यहां इसके विवेचन मे न जाकर केवल तमक श्वास के सम्बन्ध में ही उसका विस्तृत विवेचन दे रहे हैं।

क्योंकि ऐसे ही मित्रों का मैं साथी रहा हूं जिन्हें आज ३०—३२ वर्ष से बराबर उनके दौरों के उत्पन्न होने के कारणों को देखने समझने का निरन्तर अवसर मिलता रहा है।

इस मध्य जब में स्वतः आक्रान्त हुआ, कैसे हुआ? किन कारणों से हुआ? उसको भी देखने समझने का अधिक अवसर हाथ आया। और स्वतः अपनी चिकित्सा करने पर जो सफलता मुझे अपने ऊपर प्राप्त हुई उसके अनुभव के आधार पर उन मित्रों की दिन चर्या जो बनाई उससे उन्हें भी इतना अधिक लाभ हुआ हैं कि उन्हें अब प्रायः दौरे नहीं होते। यदि होने की सम्भावना हो तो वह स्वतः उसके कष्ट से बच जाते हैं।

तमक श्वास का कारण—मेरे पिता को यह रोग था, उन्हें कभी २ इसका दौरा होता था। जब तक में अपनी चिकित्सा द्वारा रोगसे मुक्त नहीं हुआ था यह ख्याल बना रहता था कि मुझे भी दमा न हो जाय, पैत्रिक कारण की ओर ध्यान बना रहता था। इसमें कोई शक नहीं कि पुत्र को विरासत में जब शरीर मिलता है उसके गुण, धर्म, स्वभाव, प्रभाव मिलते हैं प्रकृति मिलती है संस्कार मिलते हैं तो रोगों का मिलना या आगे से आगे संस्कार रूप में आना कोई अघटित नहीं मानी जा सकती। किन्तु जब इसे निवारण करने में समर्थ हुआ और उसके बाद एक युग बीत गया किसी प्रकार का कोई चिन्ह भी प्रादुर्भूत नहीं हुआ तो यह विश्वास जाता रहा कि यह रोग कुलज या पैत्रिक है।

तब इसकी उत्पत्ति का कारण क्या—यह है यद्यपि श्वास प्रणाली की विकृति का रोग, किन्तु प्रयोगिक अनुभवों से ज्ञात हुआ है कि इसका उद्भव आमाशय के विकार से होता है। अर्थात पचन प्रक्रिया से होता है। अर्थात पचन प्रक्रिया में त्रुटि बने रहने पर श्वास के उखड़ने की नौबत आती है।

यदि पचन प्रक्रिया में विकार न आने दिया जाय, भोजन बहुत संयमपूर्वक लिया जाय। सायंकाल में सूर्य छिपने से पूर्व ही लघु आहार लिया जाय, रात्रि को कभी कुछ न खाया जाय। भोजन इतना करें कि पेट पर बिलकुल बोझ मालूम न दे, पूरी भूख लगने पर भोजन किया जाय तो ऐसे संयमशील व्यक्ति को तमक श्वास का दौरा नहीं होता। जब दौरा हो रहा हो लंघन किया जाय बादाम रोगन का रेचन लेकर पेट साफ कर लिया जाय तो दौरा शीघ्र ही रुक जाता है।

दोनों ही मित्रों ने आज कई वर्षों से भोजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवस्था को समझकर खानपान इतना व्यवस्थित कर लिया है कि उन्हें प्रायः दौरे का कष्ट होता ही नहीं। कई वर्षों से वह निरन्तर पथ्य के साथ रहने के कारण जब श्वास के दौरे से बचते चले आ रहे हैं तब इस प्रत्यक्ष प्रायोगिक प्रमाण को छोड़कर अन्य सिद्धान्तों के आधार पर रोग की व्याख्या करना या समझना मैं बुद्धिमानी की बात नहीं समझता।

मैं किसी और की बात न करके अपनी बीती का ही प्रमाण देता हूँ। १९४७ में मुझे श्राम सन्धि बात (रोमेटाइड आर्थरायटिस) नामक विशेष प्रकार की सन्धि पीडा आरम्भ हुई अनेक आयुर्वेदिक यूनानी औषधियों के सेवन से जब उसमें यत्किंचित भी लाभ नहीं हुआ प्रत्युत रोग बढ़ता ही चला गया। उन्हीं दिनों कुछ पाचन दोष भी अधिक बढ़ गये थे। जुकाम की शिकायत अक्सर हो जाया करती थी। कभी कभी— जब भूल से या स्वादिष्ट भोजन पदार्थ अधिक खालिया जाता था तब यत्किंचित श्वास कष्ट का अनुभव करता था। इस कष्ट का सिलसिला कई वर्ष से ऐसा चला आरहा था जो अधिक कष्टदायक कभी नहीं हुआ, इसीलिए उपेक्षित बना रहा। एकायक एक दिन अकस्मात् रात्रि को सोये हुए श्वास कष्ट इतना बढ़ा कि निद्रा खुल गई, कष्ट बढ़ता चला गया सारे दिन श्वास बड़े ही कष्ट से लिया जाता था, बड़ा परेशान हुआ। आखिर एक मित्र हैम्योपैथ डाक्टर मिलने आगये, दशा देखकर कहने लगे मैं एक मात्रा दवा भेजता हूं पानी से अभी खा लीजिये श्वास का कष्ट जाता रहेगा। मैंने पूछा क्या दे रहे हैं। कहने लगे आर्सेनिक तीस शक्ति का भेज रहा हूँ। उनकी वह मात्रा मैंने रात्रि को ११ बजे ली और चन्द मिनिट भी नहीं हुए होंगे कि मैं सो गया और फिर सुबह ५ बजे निद्रा खुली तो श्वास का कोई कष्ट नहीं था। बिलकुल जैसा एक दिन पहिले था वैसा ही ठीक अपने को पाया। किन्तु चिन्ता लग गई कि इसका दौरा फिर कभी न कभी अवश्य होगा।

क्योंकि अकसर सुबह उठते ही छींकें आया करती थीं और नाक से पानी जाया करता था। यह कष्ट रहता थोड़ी ही देर था किन्तु मैं इसे तमक श्वास का प्रागरूप मानता था।

खैर! आमसन्धिवात का कष्ट बढ़कर जब कई सन्धियोंमें व्याप्त होगया और किसी दवासे लाभ दिखाई नहीं दिया तो शरीर के शोधन का निश्चय किया। २ गोली वामी वटी पानी से निगल जाता था उससे थोड़े ही देर बाद वमन आना आरम्भ होजाता था ५–७ वमन दो तीन घण्टे के भीतर आ जाती थीं और एक आध रेचन भी। दूसरे दिन दूसरी बार लेने पर ५ वमन और २ रेचन हुए। तीसरे दिन ४ वमन ४ रेचन हुए, चौथे दिन ४ वमन ५ बार रेचन आये उस दिन कमजोरी अधिक हो गई इसलिए फिर वमन नहीं ली। इस वमन के लेने पर उस दिन से जुकाम नाक बहने आदि की जो शिकायत सुबह उठकर होती थी वह बिल्कुल जाती रही। तब से लेकर आज एक युग व्यतीत होगया तमक श्वास तो क्या कभी जुकाम तक नहीं हुआ।

उन मित्रों से हमने कई बार प्रार्थना की, आप भी दो चार दिन वमन लेकर आमाशय का संशोधन करलें, इससे आशा है आपका कष्ट जाता रहेगा किन्तु वह वमन लेने से डरते हैं। वह तो अब स्वल्प भोजन करते हैं, रात्रि को कभी कुछ नहीं खाते परहेज से रहते हैं इसी कारण उनको दौरा नहीं होता। आज कई वर्षों से वह इस व्यवस्था से चले आ रहे हैं इसलिए वह दौरे के कष्ट से बचे रहते हैं। उनका अनुभव सिद्ध करता है कि कष्ट का उत्पादक स्थान आमाशय है।

आयुर्वेद शास्त्र ने "दोषाः ह्यामाशयाश्रयाः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा है अर्थात् तीनों दोष आमाशय का आश्रय ग्रहण कर कुपित होते हैं इसका स्पष्ट अर्थ यही है कि खाद्य पेय की अव्यवस्था से रोग उत्पन्न होते हैं अर्थात् जब खाद्य पेय पदार्थों का पचन या रूप परिवर्तन ठीक तौर पर नहीं होता तभी उससे कष्ट प्रादुर्भूत होते हैं।

आधुनिक पाचन व्यवस्था से यह स्पष्ट हो गया है कि भुक्त पदार्थ पाची विकरों के प्रभाव में आकर घुलनशील बनते हैं और उनमें ऐसा रासायनिक परिवर्तन होता है जिसके कारण वह कुछ घंटों में कांदव बनकर प्रचूषण के योग्य हो जाता है। जब भुक्त द्रव्य की मात्रा अधिक हो उसके पचनकाल का समय अधिक हो जाय, आमाशय में उसे रुकना पड़े तब वह विकारी हो जाता है क्योंकि जब भुक्त द्रव्य की मात्रा अधिक होती है तो भुक्त पदार्थ जब तक विकर के प्रभाव में पूर्णतया नहीं आ पाता तब तक वह आगे नहीं बढ़ता, उसके अधिक समय तक रुकने पर उसमें अनुकूल रासायनिक परिवर्तनों से भिन्न कुछ और सन्धानी कारणों से सन्धान भी उठ खड़े होते हैं। यह परिवर्तन भी रासायनिक रूप के होते हैं किन्तु होते हैं अनुपयोगी, अग्राह्य, इसीलिए यह शरीरावयवों को दूषित व विकृत करते हैं, उनके क्रिया व्यापार में बाधा डालते हैं इसीलिये इन्हें दोष कहते हैं।

शरीरावयवों को दूषित करने वाले पदार्थों के या दोषों के उत्पत्ति का कोई स्थल है तो वह एक मात्र अन्न प्रणाली है। जो भी किसी वाह्य वस्तु को हम अन्दर लेते हैं उसके शरीर के भीतर जाने के दो ही मुख्य मार्ग हैं। एक मुख विवर, जिसके रास्ते से समस्त खाद्य, पेय वस्तुओं को हम उदरस्थ करते हैं। दूसरा है नासाविवर जिससे हम प्राण वायु (ऊष्मजन) लेने की इच्छा से श्वास द्वारा बाह्य वायु को खींचकर फुफ्फुस कोष्ठों तक पहुँचाते हैं। श्वास में ली जाने वाली वायु में भी धूलकण, जलकण थूककण उन पर चिपके जीवाणु, कीटाणु अग्राह्य वायव्य विषाक्त वायव्य भी उस वायु में मिले होते हैं जो श्वास द्वारा अन्दर पहुँच जाते हैं। किन्तु जितने प्रकार के अधिक विषाक्त द्रव्य व शरीर को दूषित करने वाले पदार्थ अन्न प्रणाली मार्ग में बनते हैं और रस में मिलकर रक्त पहुंच जाते हैं इतने किसी दूसरे मार्ग से नहीं पहुँचते।

उदरदरी में पचन व्यवस्था का क्रम कई स्थानों में बंट कर होने के कारण तथा भिन्न भिन्न पोष्य व सामर्थ्यदायक पदार्थों के अनेक रूप होने के कारण उन सबों का रूपान्तर न तो एक क्रम से होता है न एक अवधि के भीतर होता है। उनके परिवर्तनों में इतनी जटिलता होती है इतने उसके रूपान्तर बनते हैं जो बड़े गम्भीर अध्ययन के द्वारा ही समझने में आते हैं।

भुक्त द्रव्य पर भिन्न भिन्न पाचक रसों के विकर प्रभाव से ही रासायनिक परिवर्तन होता हो यह बात नहीं बल्कि मानव प्राणी का वृहान्त्र एक ऐसा विशेष परिवर्तन स्थल है जहां बीसों प्रकार के जीवाणुओं का इतना अधिक प्रमाण में निवास पाया जाता है जो अपरिपच्च कांदव पर अपना जीवन निर्वाह करता है। उसमें से वह अपने जीवन निर्वाह की सामग्री लेता ही है तथा अपनी लाला, आन्तरिक रस, विष और नष्ट विनष्ट उनका शव सब ही परिपच्य कांदव में मिलकर प्रचूषित हो जाता है। यही तो पदार्थ अग्राह्य होने से जब रक्तस्थ होकर शरीरावयवों तक पहुँचते हैं तो कोषों की क्षय पूर्ति व वृद्धि में बाधक बनते हैं, यही तो दोषों के दोष और विकारों के महा विकार रूप अनेक रोगों के कारण होते हैं।

आयुर्वेद दोष, धातु, मल को साम्यावस्था में रहने पर आरोग्य का मुख्य लक्षण कहता है। इनके विपरीत को रोग संज्ञा देता हैं। यह दोष, धातु, मल की साम्यावस्था व्यवस्थित खाद्य पेय से बनती है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी को ठीक बनाये रखने से न विकार (दोष) बढ़ते हैं न विक्रांनत धातु (पोषकरस) असन्तुलित दशा में शरीर के भीतर पहुँचते, न मलों (मल, मूत्र) का अधिक संचय होने पाता है। आधुनिक समय में इस साम्यावस्था का नाम सन्तुलन दिया गया है। जब भोजन सन्तुलित मात्रा में लिया जाता है तो उसके अनुरूप सन्तुलित पाचीरस (विकर) उसमें मिल जाते हैं और उस भुक्त द्रव्य में परिवर्तन भी अपने समय के भीतर हो जाता है उससे जो रस बनता है उसके रूप में भी उपयोगी और ग्राह्य ऐसे ठीक परिवर्तन होते है कि जिसे अचूषक प्ररोह प्रकृतस्थ रूप में ग्रहण कर लेते हैं इसीलिये रक्त का सन्तुलन भी ठीक बना रहता है शरीर के प्रत्येक क्रिया शील अंगों पर कार्य का अधिक भार भी नहीं पड़ता। यकृत, प्लीहा, हृदय, फुफ्फुस, वृक्क सब व्यवस्थित रूप से अपना अपना काम करते रहते हैं। यह आयुर्वेदीय साम्यावस्था है।

आयुर्वेद शास्त्र तीनों दोषों के मुख्य स्थान "हृदिप्राणो, साधंक हृदतं पित्त, उरो श्लेष्माणः स्थानम्" हृदय को कहता है यहां हृदय उर से शास्त्र का अभिप्राय उस उरो गुहा क्षेत्र से हैं जिसमें सर्व प्रथम हानिकर, अहितकर अग्राह्यभुक्त द्रव्यों का संचय होता है, जिसमें ही उचित अनुचित परिवर्तन आकर उससे शरीर की क्षय-पूर्ति वृद्धि होती है और उन्हीं में मिले अयोग्य अग्राह्य पदार्थों की उपस्थिति से वह भुक्त द्रव्य दूषित होकर रक्तस्थ हो जाता है उससे जो क्षय पूर्ति में बाधा आती है उन्हें दोष के नाम से अभिहित किया जाता है।

अर्थात् भुक्त पदार्थ से बनने वाला रस जब ऐसी अग्राह्य वस्तुओं के मिश्रण से युक्त हो जाता है तो वही ग्रियमान अंश दोष रूप होता है। जो धातुओं में पहुँचकर उन्हें दूषित कर देता है। पूर्व-काल में इनको चाहे तीन भेदों में बांटा गया हो किन्तु अब जब इनके प्रत्यक्ष तथा रूप रूपान्तरों को देखा समझा जाता है तब इन्हें तीन के अन्तर्गत न तो लाया जा सकता है न फिट बिठाया जा सकता है।

मुख के लालारस के लालीन की कमी से या उनकी निष्क्रिय शक्ति से शार्करी पदार्थों के रूप परिवर्तन में जो अन्तर आता है वह और प्रकार का होता है, आमाशय के ओफ़रीन विकर की कमी या निर्बलता से असजनीय भुक्त पदार्थों के रुपान्तर में और प्रकार का परिवर्तन आता है और उसमें जो त्रुटि पूर्ण असजनीय यौगिक बनते हैं वह भिन्न भिन्न प्रकार के होते हैं इसी तरह आमाशय अम्ल की कमी से या उसकी त्रुटि से भुक्त द्रव्यों के परिवर्तन में जो त्रुटि आती है और उसके जो रूपान्तर रूप बनते हैं वह और ही तरह के होते हैं, आमाशयिक श्लेष्मकला में एक श्लिष रस भी बनकर निकलता है वह भी भुक्त द्रव्य में मिलकर उसे स्निग्ध पिच्छल बनाता है, उसकी कमी से भी जो रसायनिक रूपान्तर होते हैं वह और ही प्रकार के होते हैं। इसी तरह क्लोम में कई रस विकर होते हैं, पित्त में भी स्नेही पदार्थों के कणों का साबुन बनाने तथा उसमें चलती रासायनिक प्रक्रिया में सहायता पहुँचाने का काम होता है यदि इसकी कमी हो जाय या त्रुटि पूर्ण हो तो फिर कांदव में अयोग्य सन्धान वेग से होने लगते हैं और उनसे कई ऐसे रासायनिक पदार्थ बन जाते हैं जो शरीरावयवों के लिये अग्राह्य होते हैं। एक एक की त्रुटि से जब ऐसे कई प्रकार के दूषित पदार्थों की सृष्टि हो सकती हो और उनके रासायनिक रूप भी एक दूसरे से बिलकुल भिन्न हों उनके गुण, स्वभाव, प्रभाव भी भिन्न हों तो उन्हें तीन ही रूपों में नहीं बांटा जा सकता।

बीसों वर्ष से इस सम्बन्ध में जो व्यवहार से अनुभव मिल रहा है वह यही हैं कि इन मित्रों को जब कभी कष्ट बढ़ता है, उसका कारण मुख्यतया खाद्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवस्था में अनियमित्तता होना पाया जाता है और जब उन्हें कष्ट बढ़ने की सम्भावना दिखाई देती है तभी वह उपवास का सहारा लेते हैं उपवास करते ही जो उदरदरी में विकार का कारण रुका होता है उप-वास काल में वह पचकर निकल जाता है इसी लिये उनका स्वास्थ्य फिर ठीक हो जाता है। जब हम व्यवहारी अनुभव की सत्यता एक दो बार नहीं पचासों बार देखते हों तब उसकी सत्यता में संशय नहीं रहता।

यही एक स्थल इसकी सचाई को जानने का है सो बात नहीं, प्रत्युत अनेक संचारी व्याधियों यथा न्यूमोनिया, मन्थर ज्वर, अर्धाङ्ग, आमवात आदि रोगियों की चिकित्सा में भी इसी उदर विकार के सिद्धान्त को सामाने रखकर बड़े २ जीर्ण रोगियों की चिकित्सा काल में उपवास लंघन कराकर अच्छी तरह से समझ लिया है कि रोगों का उत्पादक कारण कोई मुख्य स्थल है तो वह 'उदरं व्याधि मन्दिरम्' ही है। यही दोष, दूषण सभी का संगम एक साथ होता है और यहीं से उनके रूप रूपान्तर बनते हैं। जो रक्तस्थ होते ही कोई उसी क्षण, कोई कुछ समय के बाद संचय कोप का काल लेकर स्वतन्त्र रोग के रूप में प्रकट होते हैं। अथवा उनका आश्रय ग्रहण कर कई स्वतन्त्र रोग के कारण आगे आ जाते हैं और उनकी सहायता से वह शरीर के अवयवों पर आक्रमण कर उनके विकृत विनाश में लग जाते हैं। देखा गया है कि यह उदरस्थ दोष उन उपसर्गी कारणों की उसी तरह सहायता करते हैं जिस तरह लड़ने वाले योद्धाओं की शस्त्र सहायता करते हैं। शस्त्र रहित योद्धा जिस तरह लड़ने में समर्थ नहीं रहता। उसी तरह बढ़े हुए दोष दुष्टि को उपवास लंघन से यदि नष्ट कर दिया जाय तो जीवाणु कीटाणुओं की शक्ति बिना शस्त्र के योद्धा-वत हो जाती है। यह बात कई उपसर्गी रोगों में देखी जा चुकी है एक यक्ष्मा ही ऐसा उससर्गी रोग है जिसमें लंघन या उपवास अवश्य विपरीत पड़ता है। क्योंकि यक्ष्मा में पचन विकार नहीं होता न उसका विष पचन प्रक्रिया को बिगाड़ता है वह तो सीधे ही अवयवों का विनाश करता है इसलिये शरीर का क्षय होता चला जाता है।

रोग दूर करने वाले फल

फल केवल पथ्य के लिये ही नहीं हैं बल्कि इनमें रोगनाशिनी शक्ति औषधियों से बढ़कर है। कौनसा फल किस प्रकार सेवन करने से किस रोग को दूर कर सकता है यह सब आपको 'फलों से इलाज' पढ़ने से मालूम होगा, जिसमें ३० चोटीके फल चिकित्सकों के वह अनुभव प्रकाशित किये गये हैं-जिनसे नजला, जुकाम, दिमाग की कमजोरी, नींद न आना, दृष्टिमांद्य, पायोरिया, मधुमेह, मंदाग्नि, अजीर्ण, कब्ज, संग्रहणी, जिगर की खराबी, दमा, गठिया, ज्वर, क्षय, मोटापा, दुबलापन, हृदय की कमजोरी, प्रमेह, अशक्ति, स्नायुदौर्बल्य, आदि साधारण और कठिन रोगों का इलाज आप सर्वत्र मिलनेवाले स्वादिष्ट फलों द्वारा घरमें ही कर लिया करेंगे। इसी प्रकार स्त्रियों के प्रायः प्रचलित रोगों एवं बालकों के विभिन्न २० रोगोंकी चिकित्सा एवं कल्प तक फलों से करना भी बतलाया गया है। फल चिकित्सा में औषधोपचार से अधिक समय भी नहीं लगता और न खर्च ही अधिक पड़ता है। चिकित्सकों व सद्गृहस्थों के लिये समान उपयोगी है। मू० सजिल्द २।) डाक खर्च ।।=)

पता—रसायन फार्मेसी (३ दरियागंज) पो० बो० ११२५ देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी पसन्द के योग, मेरी खुफिया डायरी

मस्तिष्क रोग—(शिरशूल)

(लेखक—कविराज हरिकृष्ण सहगल, बागीची अलाउद्दीन, देहली)

(गतांक से आगे)

चिन्ताजन्य शिरशूल
(Ansciecty Headache)

परिचय—रोगी अपने शिर को भारी और फूटा हुआ अनुभव करता है। थकावट, बेचैनी, निद्रानाश होते हैं। क्षयज शिरशूल के भी यही लक्षण हैं।

१—मुर्गी के अर्ध उबले अंडे खाने से लाभ होता है।

२—१॥ माशा पीपल चूर्ण मधु के साथ चटावें शिर दर्द ५ मिनट में दूर होगा।

३—महा लक्ष्मी विलास रस-अभ्रक भस्म सहस्त्र पुटी, लोहा भस्म ५०० पुटी, शुद्ध मीठा तेलिया, शु० कृष्ण धतूर बीज, शु० भांग बीज, त्रिफला, त्रिकुटा विधारा बीज, नागरमोथा, छोटा गुखुरू, पीपलामूल समभाग लेकर धतूरे के रस की भावना देकर १—१ रत्ती की गोली बनालो और मधु के साथ दो। अगर इसकी १ गोली के साथ २ रत्ती स्प्रीन मिला दी जाय तो प्रभाव बढ़िया होता है। इसे प्रत्येक प्रकार के शिर दर्द में दे सकते हैं।

४—जवाहिर मोहरा-जहर मोहरा खताई पिष्टी २ तो०, माणिक भस्म, अकीक भस्म, मुक्ता पिष्टी (गुलाब जल से), प्रवाल पिष्टी, संगयशवभस्म, तृणकान्तमणि, कहरवापिष्टी १—१ तो०, वंशलोचन ६ मा०, रजतभस्म ६ माशा, स्वर्णभस्म ३ माशा, अर्क केवड़ा और अर्क गुलाब में ३ दिन खरल करें प्रातः सायं २-२ र० गाय के धारोष्ण दूध से दें। अथवा द्राक्षासव, दशमूलारिष्ट अश्वगंधारिष्ट कोई सेवन करावें।

अर्द्धावभेदक (Migraine)

परिचय—मन्या, भ्रू, शंख, कर्ण, आंखें और मस्तक आधे में तीव्र वेदना होती है। जिस पीड़ा में शस्त्र व आरी के काटने की सी पीड़ा हो, उसे अर्द्धावभेदक कहते हैं। इस पीड़ा में कभी २ वमन भी होने लगते हैं। बहुधा पीड़ा कनपटी में होती है।

१—गोदन्ती हरताल भस्म (घीकुवार स्वरस में तैयार) २ र०, कपर्दिका भस्म २ र० दोनों को मिलाकर पेड़े में रखकर खिलावें, ताजा खोया व कलाकन्द में भी दे सकते हैं। सब प्रकार का शूल अर्द्धावभेदक, सूर्यावर्त, शखक, चक्कर (भ्रम), उष्णताजन्य शिरपीडा दूर हो जाते हैं।

२—सूर्योदय से पूर्व ही घृत में पिप्पलीचूर्ण मिलाकर खडा होकर तीन दिन पियें।

३—एक रत्ती काफूर को खोया एक तोला में मिलाकर सूर्योदय से पूर्व खिलावें सूर्यावर्त में भी लाभ करता है।

४—लीमू के छिलकों को व कद्दू के गूदे को पानी में पीसकर लेप लगावें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५—कमलगट्टा को तोडने से जो अन्दर से श्वेतमींगी निकले उसे पानी से पीसकर सूर्य निकलने से एक घण्टा पूर्व जिस ओर पीडा हो लेप लगावे। दस मिनट में जब वह सूख जाये तो पोंछकर ऊपर से घृत लगादें पुराने से पुराना आधा शीशी का दर्द दूर होगा।

६—नौसादर २ माशा, देशी गुड १ माशा, जल ६ माशा, तीनों को घोलकर जिस ओर पीडा हो उसी ओर नाक में डालें।

७—अफीम, केशर, बबूल का गोंद, मुर्गी के अण्डे की सफेदी प्रत्येक समभाग मिलाकर कागज पर लेप करके जिस तरफ दर्द हो उस तरफ की कनपटी पर लगावें।

८—अशुद्ध हींग को जल में पीसकर माथे पर इसका लेप लगावें अथवा सुंघावें। आधे व सारे शिर का दर्द दूर हो।

९—बादाम, तिल काले, कच्ची हल्दी, आमला समभाग, प्रथम मस्तक पर शतधौत घृत की मालिश करे, इसके बाद इन औषधियों को जल में पीसकर मस्तक पर लेप करें। अर्धावभेदक और सब प्रकार के शिरशूल दूर हों।

१०—उपलों की राख को अर्क दुग्ध की भावना देकर सुखालें इसकी नस्य देना अर्धावभेदक में लाभ करता है।

११—काफूर देशी १ माशा, केशर असली १ माशा, गाय का घृत ६ माशा प्रत्येक घृत को गरम करके उसमें कपूर मिलायें इसके बाद उसे उतारकर उसमें पिसा केशर मिलादें। जिस ओर दर्द हो उसी ओर की नासा में डालें।

१२—नेत्र के अन्दर चलने वाला शूल—कंवार गन्दल के रससे तैयार की हुई गोदन्ती भस्म १ माशा, सोडासालीसलास या ऐस्प्रीन ४ रत्ती, लोहभस्म एक रत्ती मिलाकर गरम पानी से दें।

१३—भृकुटि के एक ओर की पीडा—अफीम, कपूर, रसौत, सौंफ, केशर, गोंद कीकर, समभाग लेकर बारीक पीसलें और पीडा के स्थान पर लगावें।

१४—भृकुटि के एक ओर की पीडा—तबाशीर केशर, अफीम, स्त्री का दुग्ध, रोगन गुल, रीठे के बीज की नस्वार सुंघावें।

१५—भृकुटि के एक ओर की पीडा—सूर्योदय से पूर्व १ माशा से २ माशा तक नौसादर को पानी में मिलाकर पिलावें।

१६—अर्धावभेदक—नये जौ के पत्तों का रस नाक में डालें।

अर्धावभेदक के रोगियों के लिए पथ्य—दूध और चावल की खीर में शकर डालकर दें।

सूर्यावर्त

परिचय—पीड़ा सारे शिर में होती है। सूर्य के चढने के साथ बढती जाती है, दोपहर को असह्य हो जाती है। सूर्य के डूबने के साथ कम होती जाती है। सूर्य के डूबने के साथ कम होती जाती है।

१—प्रातःकाल में ही दूध में जलेबियां डाल कर खिलायें।

२—मीठे तेल में गुड़ डालकर वेसन का हलुवा बनाकर खिलायें।

३—सूर्य निकलने से १ घण्टा पूर्व आक की शाखा की फूंगी तोड़ और गुड में लपेट निगलवा दें।

४—सूर्य निकलने १ घण्टा पूर्व गरम दूध में घृत डालकर पिलायें।

५—काली मिरच व जौ दोनों समभाग लेकर तवे पर भून लें। जब यह काली राखवत हो जाये तब पीसकर शीशी में भरलें। १-१ माशा की तीन मात्रायें, दर्द होने के चार घण्टा पूर्व से शीतल जल से देना आरम्भ करें। सूर्यावर्त और आधासीसीका दर्द दूर हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वात नाडी शूल

NEURALGIC HEADACHE

परिचय—आयुर्वेदिक मतानुसार इसे बातिक व पित्तज शिरशूल कहा जा सकता है। शिर की त्वचा तथा मांस में पीडा होती है, यह पीड़ा त्वचा को हिलाने से और भी बढ जाती है।

अगर सर्दी लगकर पीडा हुई तो गिरी बादाम, दालचीनी और सोंठ को जलमें घिसकर, कल्क करके किंचित उष्ण कर लेप करे। अथवा सोंठ की चाय के साथ ऐस्प्रीन दें।

२—पिप्पली मूल चूर्ण ३ माशा की मात्रा में उष्ण जल से दें।

३—महा विषगर्भ तेल ५ तोला, तारपीन का तेल ५ तोला, कपूर १ तोला, अफीम १ माशा, सबको एक शीशी में भरकर डाट लगाकर, ४-६ घण्टे धूप में रखें। इसके बाद इसे शिर के दर्दके स्थान पर लगावे।

४—सत अजवायन, सत पोदीना, काफूर इलायची का तेल समभाग मिलाकर एक शीशी में धूप में रखें। जब सब पिघलकर मिल जाये तो फोहे से पीड़ा स्थान पर लगावे।

५—मुश्क काफूर २ भाग, कार्बोलिक ऐसिड १ भाग, मिलाकर शीशी में, धूप में रखें। गल जाने पर, फाहे से पीड़ा स्थान पर लगावें।

अगर धूप व अग्नि की तीक्ष्णता के कारण बात नाड़ी शूल उत्पन्न हुआ हो तो—

६—चन्दन को घिसकर लेप लगावें।

७—लाइकर अमोनिया घोटकर सुघावें।

८—नौशादर और कलई चूना (गीला) मिला कर सूंघावे।

९—चाय के प्याले में नींबू की २—४ फांकें निचोड़ कर पिलावें।

१०—नौशादर १ पाव को १ पाव केले के रस में खरल करें। इसके बाद मकोय के रस में खरल करें। फिर १ पाव गिलोय के रस में खरल करें इसके बाद छोटी २ टिकियां बनालें। और उर्ध्वपातन यंत्र में जौहर उड़ालें। एक रत्ती की मात्रा में ताजा पानी से दे तो शिरोवेदना दूर हो।

११—सेंधा नमक, पीपल १—१ रत्ती पानी में घिसकर २—३ बूंद नाक में डालें।

१२—महा भृंगराज तैल की मालिश करें।

१३—गोदन्ती हरताल ८ तो०, देशी अजवायन ४ तोला, नौसादर १ तोला मिलाकर रखें और गरम पानी से १ माशा दें।

१४—गोदन्ती भस्म, नौशादर, गेरु और स्प्रीन समभाग पीसकर रखें। ६ रत्ती की मात्रा में उष्णजल से दें।

वायु कोटर जन्य शिर शूल

Sinus Headache

परिचय—नाक अस्थि बढ़ जाने से। पीव पड़ने से कृमि उत्पन्न होने से होती है। पीप व कीड़ों के निकल जाने से आराम होता है। यह पीड़ा दांतों की और मस्तक की ओर तथा कनपटियों की ओर चलती है।

१—तीक्ष्ण विरेचन देकर कड़वी तोरई के सूखे फलों के बीजों को तथा फलों के ऊपर की छाल को अलग करदो, अन्दर की जाली रहेगी, उसे १ तो० जल में ५-७ मिनट भिगोदें, फिर मसलकर जाली बाहर फेंकदें। इस पानी को नाक में चढ़ाने से छींकें आकर पीला पानी निकलेगा और आराम होगा।

२—काली तुलसी के पत्तों को पीसकर स्वरस निकालें और नाक में डालें छींकें आकर कृमि बाहर गिर जावेंगे। ऐसा ३ दिन करें।

३—पुराने जूते का तला जलाकर कोयला कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीसकर रखलें इसकी नस्य लेनेसे कीड़े निकल जावेंगे।

शुक्रजन्य शिर पीड़ा

परिचय—क्षीण वीर्य पुरुष को विशेष संभोग करने से शिर पीड़ा, श्रमादि कष्ट होने लगते हैं। क्योंकि शुक्र कीट शिराओं का मनुष्य के मस्तिष्क नाड़ी मण्डल पर विशेष प्रभाव पड़ता है। क्योंकि सारे शरीर में शिर मुख्य अंग है।

१—बादाम पाक-बादाम की छिली हुई गिरी १० तो०, पिस्ता, अखरोट, चिरौंजी, चिलगोजा, काजू, छुहारे का छिलका, खसखस २-२ तो०, विधि—इन सबको गाय के २ सेर दूध में पीसलें फिर इसको १ पाव घृत में भूनलें मिश्री २ सेर की चास की बनाकर उसे उतार कर उसमें पिट्ठी मिलादें और निम्न लिखित औषधियों का चूर्ण मिलावें। केशर, जावित्री, तज, जायफल, मुक्तापिष्टी (गुलाब जल में) ३-३ मा० काली मिरच, पीपर छोटी, छोटी इलायची के दाने, चांदी भस्म, प्रवाल चन्द्र पुटी ६-६ मा० वंशलोचन १ तो०, वर्क चांदी २० नग, स्वर्ण वर्क ११ नग, सबको भली प्रकार मिलावें मात्रा-२ से ४ तोला तक औटाये हुये दूध से दें। प्रत्येक प्रकार की निर्बलता दूर हो।

२—अंडे की जर्दी को चीनी में मिलाकर खाना चाहिये।

गर्भिणी का शिर शूल

१—श्वेत चन्दन ३ मा०, कपूर २ र०, केशर २ र० को गुलाब जल में घिसकर मस्तक पर लेप करें साथ में स्वर्णमाक्षिक भस्म १ र० आमले के मुरब्बे के साथ चटावें।

२—गुलकन्द खिलाकर कोष्ठ शुद्ध करें और शिर पर गुलरोगन मलें।

३—गुलबनफशा ३ माशा, केशर १ माशा, बादाम गिरी २ दाने जल में पीसकर माथे पर लेप लगावें।

विष की शिर पीड़ा

परिचय—विषैले जीव के काटने से व विष खाने से उत्पन्न होती है।

१—दूध, घृत व बिनौले घोटकर पिलावें पपीता और निर्विषी भी लाभप्रद है।

मद्यपान का शिर दर्द—सिकंजबीन को सोये के क्वाथ में मिलाकर पिलायें।

अधिक तेज सुगन्ध व दुर्गन्ध से उत्पन्न शिर पीड़ा (शम्मी) दुर्गन्ध से उत्पन्न हो तो सुगन्ध युक्त इत्र कपूर आदि सुंघावें जो कस्तूरी अम्बर आदि के सूंघने से उत्पन्न हो तो गुलरोगन में कपूर मिलाकर शिर पर मलें।

प्रसूता का शिर दर्द—प्रतापलंकेश्वर और बसन्तमालती का मिश्रण कर दें। अथवा काहू, कद्दू बादाम और गुलाब का तेल १—१ तो० लेकर मिला कर शिर पर मालिश करें।

सब शिर पीड़ाओं के लिये पेन बाम—तिल तेल ६ तो०, श्वेतमोम १ तो० दोनों को उष्णकर मिलालें। इसमें कपूर १ तोला, यूकेलिप्टस आइल ६० बूंद, तैल दालचीनी १६० बूंद, आइलमैंथा पिपरेटा १६० बूंद, मिलादें इसकी मालिश करने से प्रत्येक प्रकार की पीड़ा दूर होती है।

पेन बाम नम्बर २—तिल तैल ५ तोला, मोम १ तो०, यूकलिप्टस आइल २॥ तो०, तैल दालचीनी १। तो० मिलाकर लगावें।

जो शिर पीड़ा मैनिन जाइटिस, मस्तिष्क में अर्बुद उत्पत्ति, उपदंश, युरेमिया, रक्तभाराधिक्य धमनी काठिन्य, जीर्ण सीसक विष, तीव्रज्वर, गठिया, मधुमेह व रक्तन्यूनता व नेत्र रोगों से उत्पन्न हो वह उन रोगों की चिकित्सा से अच्छे होते हैं।

क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेष पृष्ठ २२२ का

ही प्रारंभ करे और निरन्तर ४० रोज सेवन करें ईश्वर की कृपा से निश्चय ही संतान होगी योग आज तक कभी व्यर्थ नहीं गया। शतशः अनुभूत।

नमूनिये पर अद्भुत चमत्कार

कौडिया लोबान में सरसों का तेल मिलाकर गर्म करलेवें और ७ बार मालिश करें ईश्वर की कृपा से १ घंटे में आराम होगा शतशः अनुभूत।

आतशक का योग

रस कपूर १ तो०, दारचिकना १ तो०, सिंगरफ ६ माशा श्वेत संखिया ४ रत्ती।

विधिः—सबको पीस खरल में डाल ८ दिन निरन्तर बकरी के दूध में खरल करे १ सेर दूध प्रविष्ट होने पर चने बराबर गोली बनावें १ गोली प्रातः घी के साथ मुख में रख निगल जावें अन्य कोई चीज न खावें, केवल बेसन की रोटी घी के साथ खावें ८ दिन तक आतशक निर्मूल हो जावेगा।

तिल्ली का १ दिन का इलाज

एक पोथिया लहसुन का रस ६ तोला (यह मात्रा युवा पुरुष के लिए है) एक दम पिलादें और उसके बाद गुड़ का हलवा खिलादें। खाते ही रोगी बेहोश हो जायगा किन्तु इसकी चिन्ता न करें १॥ घंटा बाद होश में आ जायगा और तिल्ली का विकार एक ही दिन में शान्त हो जायगा।

नोट—इस प्रयोग को दुर्बल व्यक्ति पर नहीं करना चाहिये और वैसे भी कुशल चिकित्सक की उपस्थिति में करना उचित है। (सम्पादक)

वैद्य यशवन्तकुमार मिश्र आयुर्वेदाचार्य छुर (मेरठ)

लहसुन प्याज

वानस्पतिक औषधियों में लहसुन सबसे अधिक प्रभावकारी दवा है जो तपेदिक (क्षय) की विभिन्न दुःसाध्य तथा असाध्य अवस्थाओं में सफलता के साथ प्रयोग किया जा सकता है। श्री वेदी ने डबलिन हास्पिटल से निराश लौटे हुए हड्डियों के क्षय के कुछ ऐसे उदाहरण दिये हैं जिनमें हड्डियां गल जाने से हाथ और टांग कटवाने की नौबत पहुंच गई थी परन्तु लहसुन के लगातार प्रयोग ने टांगों को काटे जाने से बचा लिया था। कई शहरों में, जहां बहुत अधिक घनी तथा गन्दी बस्तियों में भी क्षय से मृत्यु संख्या अधिक नहीं होती, वहां लोगों को लहसुन खाने की आदत उन्हें इस भयंकर रोग से बचाये रखती है।

श्रीयुत वेदी ने दो हजार साल पहले के एक बूढ़े का उदाहरण दिया है जिसकी लहसुन के सेवनसे कायापलट होगई थी और कुछ बांझ स्त्रियोंने भी मनोवांछित सन्तान प्राप्त की थी। पुरुषों और स्त्रियों दोनों ही के उत्पादक अंगों के रोगों को दूर करने की क्षमता इसमें है। निमोनिया, हिष्टीरिया, गठिया, वायु के रोग, पेट तथा आंतों के रोग आदि अनेक रोगों में इस सस्ते पदार्थ से लाभ उठाने के लिए हम इस पुस्तक को अवश्य पढ़ने की सिफारिश करेंगे। अपने देश के क्षय सम्बन्धी आंकड़ों को देखते हुए हम कह सकते हैं कि इस भयंकर रोग से लड़ने के लिए सस्ते और अत्यन्त प्रभावकारी हथियार लहसुन का अधिकाधिक प्रयोग जनता को बताने के लिए इस पुस्तक का प्रचार खूब होना चाहिए। तीसरा परिवर्द्धित संस्करण, मूल्य २।) रु० डाकखर्च ।।।−) आने।

पता—रसायन फार्मेसी, ३ दरियागंज पो० बो० ११२५ देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुधान

अधिक मानसिक परिश्रम, चिन्तन, अध्यापन, या किसी अकथनीय कारण से जिनका दिमग कमजोर होगया है, स्मरणशक्ति घट गई है, हृदय दुर्बल होगया है, सिर में हल्का २ दरद और थकावट रहती है उनके लिए 'बुधान' बहुत लाभदायक है। इसके सेवन से उपरोक्त दोष मिट जाते हैं। दिमाग पुष्ट होकर स्मरण-शक्ति तीव्र हो जाती है। इससे उन्माद तक के रोगियों को लाभ हुआ है। बुद्धिजीवी लोगों के लिए वरदान स्वरूप है। मूल्य ४) डाकखरच १।≈)

निद्राणी

स्वास्थ्य के लिए निद्रा उतनी ही आवश्यक है जितना कि भोजन, जल और शुद्ध वायु। भोजन के पचन और सात्म्यीकरण से शरीर की प्रत्येक सेल को अपनी स्थिती बनाये रखने की सामग्री मिलती है तो पूर्ण निद्रा से आराम मिलने के कारण घिसी हुई सेलों का पुनः निर्माण हो जाता है और खरच हुई शक्ति पुनः संचित हो जाती है। यदि युवा पुरुष को रात्रि में ६-७ घण्टे निरन्तर गहरी नींद नहीं आती या बीच २ में टूट जाती है तो यह मस्तिष्क धमनियों की कठोरता, पाचन सम्बन्धी रोग, विबन्ध, ब्लडप्रेशर (रक्तचाप) नाड़ी दौर्बल्य आदि व्याधियों का लक्षण है। 'निद्राणी' इन सब अवस्थाओं में अपना निश्चित प्रभाव दिखाती है। कुछ ही मात्राओं के सेवन से रात्रि भर खूब गहरी नींद आने लगती है और प्रातःकाल उठने पर देह में स्फूर्ति और मन प्रफुल्लित होता है। इसमें कोई मादक या विषैला द्रव्य नहीं है। मूल्य ४) आधाकोर्स २॥) डाकखरच १।≈)

नेत्राण

आंखों का दुखना, नेत्र पीडा, लाली, जलन, खुजली, सूजन, कीचड आना तथा अन्य नेत्र रोगों में परम लाभकारी है। दो बून्द नेत्रों में डालते ही ठंडक पड जाती है और २-४ दिन डालनेसे आराम होजाता है। वैसे ही कभी २ डालते रहने से नेत्र साफ रहते हैं और कोई रोग नहीं होने पाता मूल्य ॥)

नाग सुरमा

यह सुरमा रसायनिक प्रक्रिया द्वारा बनाया जाता है। यह सभी नेत्र रोगों में लाभकारी है। दृष्टिमन्दता, दूर या निकट कम दिखाई देना, तिमिर, धुन्ध, जाला, आंखों से पानी बहना आदि रोगों को नष्ट करके दृष्टि को तेज बना देता है। लगाते ही नेत्रों में ठंडक प्रतीत होती है। ६ माशा की शीशी १॥) तीन माशा १)

हनीक

इस दवा का प्रयोग आपको मोतियाबिन्दु के आपरेशन के कष्ट से बचा सकता है। प्रारम्भिक मोतिया इससे मिट ही जाता है किन्तु बढा हुआ मोतिया आगे बढने नहीं पाता तथा निरन्तर कई मांस लगाते रहने से आराम भी हो जाता है। मूल्य ५)

पायोगन

यह पायोरिया की सफल दवा है। इस दवा को दांतों पर मलकर ५ मिनट लगा रहने दो और फिर कुल्ला कर डालो। इस प्रकार प्रातःकाल, दोपहर और रात्रि को सोने से पहिले लगाने से मसूढों का गला हुआ मांस भरने लगेगा, पीप और रक्त का बहना बन्द होकर हिलते हुए दांत मजबूत हो जाते हैं। एक औंस का मूल्य २॥)

दन्तद्युति मंजन

यह मंजन मसूढे फूलना, दन्त पीडा, पानी लगना, मैल जमना, खून जाना, मुख में दुर्गन्ध आना आदि अनेकों रोगों को दूर करके दांतों को स्वच्छ चमकदार बनाता है। लगाने के बाद मुख से सुगन्धि आने लगती है। मूल्य ॥)

गठना

गठना-गठिया (Cout) सन्धि पीडा, सन्धि वात, रींघनवाय, लकवा, कटिपीडा, पार्श्वशूल तथा सम्पूर्ण वायु रोगों के लिए यह अकेली और बहुपरीक्षित दवा है। खाट में पडा रोगी भी ३ दिवस के सेवन से चलने फिरने लग जाता है। इससे हर प्रकार के वायु रोग नष्ट हो जाते हैं। एक शीशी की कीमत ३)

जी० एस० आयुर्वेदिक रीसर्च प्रॉडक्टस ३ दरियागंज, देहली ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रत्नों के साथ तुलनेवाली अनुपम पुस्तकें

४० से अधिक आयुर्वेदीय पुस्तकों के रचयिता प्रसिद्ध लेखक व चिकित्सक राजवैद्य डा० गणपतिसिंह बर्मा द्वारा रचित व प्रकाशित—यह वही पुस्तकें हैं जिनकी वैद्य, हकीम, डाक्टर और जनसाधारण मुक्तकंठ से प्रशंसा कर रहे हैं। जिनके विषय में देश के गणमान्य लोगों की सम्मति है कि इन पुस्तकों का प्रत्येक घर में होना अत्यावश्यक है। क्योंकि इनके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक स्थानमें सहसा होजाने वाले रोगों का सरलतापूर्वक इलाज कर सकता है। प्रत्येक पुस्तक के कई २ संस्करण हो चुके हैं जो कि इनकी लोकप्रियता का सबसे बड़ा प्रमाण है।

अनुभूत योग चिन्तामणि

इसके लेखक ने ५ वर्ष तक लम्बी २ यात्रायें करके संन्यासियों की कठिनतम सेवा और भ्रमण के अथक परिश्रम के अतिरिक्त ५४३५ रुपये खर्च करके जो ५३३ जादु असर अनुभूत नुस्खे प्राप्त किये थे वह निष्कपट भाव से इस पुस्तकमें प्रकाशित कर दिये हैं। भारतवर्ष के सैंकडों वैद्यों, हकीमों और डाक्टरों ने इन सब नुस्खों की पचासों बार परीक्षा करके शत प्रतिशत अनुभूत होनेके प्रमाणपत्र दिये हैं जिससे सिद्ध होगया है कि इसमें एक भी योग ऐसा नहीं जो अनुभूत सिद्ध न हो, सबके सब संन्यासियों के हृदयके गुप्तयोग हैं। भारत के गणमान्य हकीमों व वैद्यों का निर्णय है कि जिसके पास यह पुस्तक नहीं, निःसन्देह उसकी चिकित्सा और औषधालय अधूरा है। मूल्य प्रथम भाग पांचवीं आवृति ४।) द्वितीय भाग ४) डा० ख० जुदा।

१५ वर्ष के कठिन परिश्रम का फल

अनुभूत योग प्रकाश

आज से १५ वर्ष पूर्व जिस पुस्तक को प्रकाशित करने का आयोजन प्रकाशित किया गया था वह पुस्तक अब छपकर तैयार होगई है। इस पुस्तक के योगोंके विषय में केवल इतना बतला देना ही काफी होगा कि गत १५ वर्ष के सतत उद्योग से बड़े २ साधु, महात्मा, फकीरों भीलों से लेकर राजा, रईसों तथा ख्यातिवान प्रसिद्ध विद्वान वैद्यों, हकीमों और डाक्टरों के उन अनुभूत चमत्कारी योगों को इस पुस्तक के पृष्ठों पर अंकित कर दिया है–जिनको आज तक जमाने की हवा भी न लगी थी। फिर इसके लेखक डा०जी० एस० बर्मा का नामही बडी जमानत है कि पुस्तक कैसी है। इसमें सबसे बडी वह रीसर्च आपको मिलेगी जिसे आज तक आपने सुना भी न होगा अर्थात समुद्रीय द्रव्यों यथा मुक्ता शुक्ति, प्रवाल, शंख, कपर्दिका आदि का तेल बनाना। इन तेलों की तुलना में इन द्रव्यों की भस्में बहुत तुच्छ लाभ पहुँचाती हैं। इन तेलोंसे अनेक कष्टसाध्य कहे जाने वाले रोग शीघ्र मिट जाते हैं। दूसरी विशेषता यह है कि इन तेलों से उडने वाले सभी द्रव्य यथा पारद, हिंगुल (शिंगरफ) आदि स्थाई हो जाते हैं। इस पुस्तक में कोई ऐसा रोग नहीं छोडा जिस पर अनुभूत सिद्ध योग न छपा हो। मूल्य ६। डाकखर्च ।।।≡)

इन्जेक्शन बनाना व लगाना सीखो

इन्जेक्शन चिकित्सा तत्काल प्रभाव दिखाने वाली होने से आज लोकप्रिय हो रही है, किन्तु वैद्यों हकीमों को इसकी जानकारी न होने से उन्हें बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। इन्हीं भावों से प्रेरित होकर यह पुस्तक तैयार की गई है, जिसमें समस्त रोगों की चिकित्सा आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक और एलोपैथिक इन्जेक्शनों द्वारा ही करना बतलाया गया है। रोगशीर्षक के नीचे क्रमशः प्रत्येक रोग के तीनों प्रकार के इन्जेक्शन ऐसे ढंग से लिखे गये हैं कि जिससे चिकित्सक एक क्षण में निश्चय कर सकता है कि कौनसा इन्जेक्शन किस स्थान पर, कितनी मात्रा में, कितने अन्तर से, किस प्रकार लगाना चाहिये और साथ २ इन्जेक्शन बनाने की विधि भी लिखदी गई है। आयुर्वेदिक इन्जेक्शन जिन द्रव्यों से बनाये जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं वह तमाम आपके घर में, खेतों और जंगलों में सर्वत्र मिल सकते हैं। एक-एक रोग पर कई २ इन्जेक्शन बनाने के योग लिखे गये हैं। इसके अतिरिक्त सीरम, वैक्सिन, पेनिसीलीन, विटामिन्सके इन्जेक्शनों का वर्णन और उनको लगाने की सरल व निरापद सचित्र विधि भी खूब समझाकर लिखदी गई है। इस पुस्तक को पढने के बाद इन्जेक्शनोंके विषय में जानने को कुछ भी शेष न रहेगा और सब प्रकारके इन्जेक्शन तरल (लिक्विड) टेबलेट व पौडरादि रूप में बना व लगा सकेंगे। मूल्य ५) डाकखरच ।।।=)

सिद्ध रसायन

रस-रसायन की जिन कठिन क्रियाओं से वैद्य-बन्धु घबराकर उनके दिव्य गुणों से वंचित रह जाते हैं, उन क्रियाओं का लम्बा अनुभव करके विद्वान लेखक ने उनका सरल तरीका इस ग्रंथमें दर्शाया है और साथ ही महान रसायनाचार्य नागार्जुन और अन्य सिद्धों की संचिकाओं के अज्ञात योगों को उनकी गुत्थी सुलझाकर प्रकाशित किया है जिनसे पाठक न केवल काया (काया-कल्प) रंगने में ही सफल होंगे बल्कि स्थिर मति वाले माया (कीमिया) रंगने में भी सफल होंगे। इस प्रकार पाठकों को जहां आर्थिक संकट से मुक्ति मिलेगी वहां असाध्य समझकर छोड दिये जाने वाले रोगों के वे सिद्धहस्त चिकित्सक भी बन जावेंगे। इस पुस्तकके कुछेक योगों का दिग्दर्शन करा देने से आपको अनुमान हो जायगा कि यह कितना अपूर्व ग्रन्थ है। यथा–शुद्ध बद्ध और सिद्ध करनेवाली दिव्य औषधियां, औद्भिदाम्ल व बूटियां रस बन्धन, गन्धक को स्थाई करना, बद्ध पारद को सिद्ध बनाना, रजत रंजन (कीमिया) अभ्रक सत्व की द्रुति, द्रुतिसे पारद बन्धन, वंग स्तम्भन, पारद भस्म रक्तयोगेन ताम्रोद्धार (कीमिया) तांबा और रजत (चांदी) वेधी सिद्ध हरताल हरताल कल्प देह व लौह वेधी सिद्ध हरिताल तैल, सिद्ध कुचला कल्प, सर्वरोग हर फिटकडी रसायन (कल्प) पुरुषों के गुप्त रोगों पर रामबाण सिद्ध खादक, पारद गुटिका बगवेधी, सिंगरफ मोमिया बनाना, नौसादर तैल, सिद्ध गोरखी जलमुद्रा, सिद्ध गन्धक–एक गिरनारी महात्मा का योग जिसको बनाना अति सरल है और क्षय (T. B.) संग्रहणी जैसे अनेक भयंकर रोगों का सफल इलाज है आदि। इसमें अन्य पुस्तकों की भांति जोड़-तोड कर एकत्र की हुई सामग्री नहीं है बल्कि लेखक ने जीवन भर का अनुभव बन्द किया है। इसके पाठकों के लिए लेखक का सदुपरामर्श और सहायता भी सदैव प्रस्तुत रहेगी। मूल्य ५) डाकखरच ।।।=)

संन्यासियों की चमत्कारी गुप्त बूटियां

इस पुस्तक में सैंकड़ों ऐसी ही जड़ी-बूटियों के गुप्त रहस्य प्रकट किये गये हैं, जिनकी बदौलत संन्यासियों की धाक जमी हुई है। इनमें से अधिकांश बूटियां वही हैं, जो आपको जंगल, खेत, बागीचों और पंसारियों की दुकानों पर मिल जावेंगी जिनसे आवश्यकता पड़ने पर सिर से पांव तक के समस्त रोगों का इलाज हर जगह प्रत्येक आदमी आसानी से कर धन और यश कमा सकता है। इस पुस्तक के पढ़ लेने के बाद आपके पास रोगियों का तांता बंधा रहेगा। विषय सूची मुफ्त। ४५० पृष्ठ, २ भाग मूल्य ५॥) पो० ।।।=)

गुप्त योग रत्नावली

इस पुस्तक में डा० नेगी के व निज के बड़-बड़ गुप्त योग प्रकाशित किये गये हैं जिनको भारतवर्ष के कोने २ से तथा अरब, मिश्र और अफ्रीका आदि प्रदेशों के विभिन्न स्थानों में जाकर लेखक ने प्राप्त किये थे। मूल्य २॥) डा० ख० ।॥)

पेटेण्ट औषधियां व भारतवर्ष

संसार में सबसे अधिक लाभदायक व्यापार पेटेण्ट औषधियों का है। अमृतधारा और सुधासिंधु के मालिकों ने १—१ पेटेण्ट दवा के नुस्खे से लाखों रुपया कमाया है। विलायती फर्में एक-एक पेटेण्ट दवा से बेहद रुपया कमा रही हैं। यदि उनकी तरह आप भी भारतवर्ष, इग्लैंड, अमरीका की प्रसिद्ध और सर्वप्रिय प्रतिवर्ष करोड़ों रुपयों की बिकने वाली पेटेण्ट औषधियों के नुसखे बिना किसी कष्ट के घर बैठे सोख कर साधारण पूंजी से सैंकड़ों रुपये मासिक की स्थाई आमदनी पैदा करना चाहते हैं तो आज ही 'पेटेण्ट औषधियां और भारतवर्ष' नामक पुस्तक की एक प्रति मंगाकर पढें। १६७ योगवाली मू० ।।।=) डा०ख० ।॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यौवन के गुप्त रहस्य

लुटी हुई जवानी और बीता हुआ यौवन वापिस लाने के अनुपम उपाय-पुरुषत्व और जवानी के वह गुप्त रहस्य, जिनको जानने से अशक्ति के ऐसे रोगी जिन्हें किसी दवा से लाभ नहीं हुआ या सैंकड़ों रुपये की दवा खाकर भी निराश बैठे हैं निःसन्देह सशक्त बन सकते हैं। मनुष्य देह का वह केन्द्र जहां से स्वास्थ्य और यौवन का रस झरकर समस्त शरीर का पोषण करता है, उस केन्द्र को शक्ति प्रदान करने के अनूठे उपाय, जिससे लुटा हुई जवानी और बीता हुआ यौवन पुनः लौट आता है। पुरुषों के अकथनीय भयंकर रोग बिना दवा सेवन किये ही किस प्रकार नष्ट हो जाते हैं। ऊर्द्ध्वरेता होने का वह प्रयोग जिससे पुरुष की शक्ति में कमी नहीं आती। रसग्रंथियों से आश्चर्यजनक दवाइयां बनाने के प्रयोग। हजारों रुपये खर्च करके डा० वोरनाफ की बताई हुई बन्दर की रसग्रंथि लगवाने व आपरेशन का कष्ट सहन किये बिना ही सुगमता से प्रत्येक स्त्री-पुरुष वही शक्ति कैसे प्राप्त कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त पुरुषों के रोगों के सम्बन्ध में निदान व ऐसे २ गुप्त प्रयोग इस पुस्तक में दर्ज किये गए हैं, जिनको उपयोग करनेवाला पुरुषत्व पर गर्व कर सकता है। मूल्य ३) डाकखरच ।।।)

हिन्दी से अंग्रेजी मैट्रिक

विश्व के ज्ञान, विज्ञान और व्यापार तथा कला-कौशल को सीखने के लिए आज की विश्व-भाषा अंग्रेजी का सीखना सबके लिए जरूरी है। इसको सीखना कोई कठिन भी नहीं है। जिस प्रकार अंग्रेज मातायें अपने बालकों को अपने घरों में ही अंग्रेजी सिखा देती हैं ठीक उसी प्राकृतिक नियमानुसार यह ३२० पृष्ठोंकी पुस्तक तैयार की गई, जिसे २ घंटा प्रति दिन पढ़ने से केवल हिन्दी पढ़े-लिखे व्यक्ति को भी चार मास में भली प्रकार याद हो जाती है। इसमें ए० बी० सी० डी० से लेकर आवश्यक ग्रामर (व्याकरण) अनुवाद आदि इङ्गलिशकी मैट्रिक तक का सब ज्ञान हिन्दी से अंग्रेजी और अंग्रेजी से हिन्दी में ऐसे सरल और सुबोध ढंग से ४८ पाठों में छपा है कि जिससे केवल अंग्रेजी में मैट्रिक की परीक्षा देने वाले लड़के-लड़कियां निसन्देह पास हो जाते हैं। दसवां संस्करण अभी छपा है। मूल्य ३।।) डाकखरच ।।।=)

७८६ वर्ष का प्राचीन रस ग्रन्थ

बसवराजियम—हजारों वर्ष पहिले दक्षिण भारत में चालुक्यवंशीय राजाओं का राज्य था। उनके प्रधान मन्त्री रुद्र साम्प्रदायी महान रसतन्त्रज्ञ बसवराज ने सं० १२२५ में इस सिद्ध सम्प्रदायी अनुपम ग्रन्थ की रचना की थी, जिसमें भगवान रुद्र के अनुयायी बनों में विचरने वाले रसायनाचार्य नागार्जुन, नागबोधि नित्यनाथ, चर्पटी, कणेरी, पूज्यपाद आदि योगियों का रसज्ञान भरा पड़ा है, श्री गोविन्दपादाचार्य के कथना-नुसार शरीर को अजरामर करने में पारे की बराबरी करने वाली न तो कोई जड़ी बूटी है और न ही कोई रसायन और भस्म है। पारे में यह बड़े आश्चर्य की बात है कि वह स्वयं मूर्च्छित होकर रोगी के रोग को दूर करता है और बंधा हुआ होकर मुक्ति देता है तथा अच्छी तरह मरा हुआ दूसरों को जीवन देता है। आज मद्रास प्रान्तीय वैद्यों की जो प्रतिष्ठा, यश और कीर्ति सर्वत्र प्रसिद्ध हो रही है वह सब इसी ग्रन्थ के योगों का प्रताप है। यह ग्रन्थ तैलंग भाषा में ता[ड़]-पत्रों पर लिखा हुआ उपलब्ध हुआ था, जिससे अ[ब] तक तैलंग भाषा-भाषी वैद्य ही लाभ उठाते रहे, कि[न्तु] यह जानकर आप अतीव प्रसन्न होंगे कि अब आयुर्वे[द] वृहस्पति श्री गोवर्धन जी शर्मा छांगाणी के अतुल परि-श्रमके फलस्वरूप आज यह ७८६ वर्ष का प्राचीन तैलं[ग] हस्तलिखित दुर्लभ ग्रन्थ हिन्दी भाषा में भी हमारे द्वा[रा] प्रकाशित हो गया है। इस ग्रन्थ के विषय में कहा ग[या] है कि सतयुग में चरक, त्रेता में रसार्णव तथा द्वा[पर] में सिद्ध विद्याभू का महात्म्य है उसी प्रकार कलियु[ग] में बसवराजियम पूज्य ग्रन्थ है। इसमें जो निदा[न] लक्षण प्रत्येक रोग के बतलाए हैं। उनको समझ[कर] इसमें वर्णित योगों द्वारा जो चिकित्सा करेगा, भगव[ान] रुद्र की कृपा से निःसन्देह वह सर्वत्र यश और सि[द्धि] प्राप्त करेगा। २५ प्रकरणों वाले सम्पूर्ण ग्रन्थ का मू[ल्य] ८।।) डाकखरच १=)

पता—रसायन फार्मेसी (३ दरियागंज) पो० बो० ११२५ देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय अनुक्रमणिका

विषय	लेखक	पृष्ठ
तप का तेज (कविता)	श्री० स्वामी पारसनाथ सरस्वती	२४१
वर्ष की समाप्ति		२४२
एक लहसुन प्रेमी अंग्रेज	श्री० स्वामी पारसनाथ जी	२४३
हमारी आंखें	श्री० डा० एम० एस० अग्रवाल	२४७
रक्त चाप (ब्लडप्रेशर)	श्री० वैद्य पं० सभाकांत झा, शास्त्री	२५१
दोष विपरीत चिकित्सा पद्धति को आयुर्वेद कहा जाता है	श्री० धर्मदत्त वैद्य आयुर्वेदालंकार	२५६

रसायन फायलें

रसायन की निम्नलिखित वर्षों की थोड़ी सी फायलें स्टॉक में शेष हैं जिन्हें आवश्यकता हो मंगालें।

सन् १९४८—पूरे वर्ष की फायल जिसमें, फलों से इलाज ३।) का और मलेरिया विशेषांक ।।।) का शामिल है। मूल्य ६) डाकखरच १।=)

सन् १९५०—५१ पूरे साल की फायल इसमें बसवराजियम पूर्वार्द्ध ४) का विशेषांक शामिल है। मूल्य ६) डाकखर्च १।=)

सन् १९५१-५२ पूरे साल के सब अंक जिसमें बसवराजियम उत्तरार्द्ध शामिल है। मू० ६) पो० १।=)

सन् १९५३—५४ पूरे वर्ष के अब अंक जिनमें सिद्ध रसायन विशेषांक ५) मूल्य का सम्मिलित है। मूल्य ६) डाकखर्च १।=)

सन् १९५४—५५ पूरे वर्ष के सब अंक और 'अमर विद्या' ३) का विशेषांक शामिल है। मूल्य ६) डाकखरच १।=)

टंकरोल

दो दिन में इसकी ६ मात्राओं के सेवन से जुकाम (प्रतिश्याय) ठीक हो जाता है। दो खुराक खाने से ही शिर का भारीपन, छींकें आना, नाक से पानी बहना आदि दूर होजाता है। इसका प्रभाव श्लेष्मकला पर होता है। २४ मात्रा की शीशी का मूल्य एक रुपया छः मात्रा का नमूना ।=)

फ्लेशटोन

जब किसी रोग के कारण अथवा भय, शोक, चिन्ता, अधिक परिश्रम और अत्यन्त साहस का कार्य करने से मांस के सेलों की जीवनीय शक्ति क्षीण होकर शरीर सूखने लगता है तब ऐसी अवस्था में यह विशेष वनस्पतियों द्वारा निर्मित औषधि अत्यन्त सफल सिद्ध होती है। कृश शरीर को मोटा ताजा मांसल बनाने व वजन बढ़ाने तथा मस्तिष्क, हृदय और फेफड़ों की निर्बलता दूर करने की यह अनुपम औषधि है। किसी भी कारण से सूखे हुए शरीर को पुष्ट बनाती है। आने वाले रोगों को रोकती है। अन्य औषधि सेवन करते हुए भी शक्ति के लिए इसको अवश्य खाना चाहिये। सूखे हुए बच्चे, गर्भिणी स्त्री, तरुण वृद्ध सबके शरीर को मोटा ताजा मांसल और पुष्ट एवं सुन्दर बनाती है, चेहरे पर लालिमा आ जाती है। प्रत्येक प्रकृति वाले को प्रत्येक ऋतु में अनुकूल है। परहेज कोई नहीं। खाने में स्वादिष्ट। तपेदिक (क्षय) में जब मांस क्षीण होकर शरीर सूखता जा रहा हो और अन्य उपद्रव बढ रहे हों उस समय इसका सेवन नवजीवन प्रदान करता है। दिमागी काम करने वालों के लिए परमोपयोगी है। मूल्य एक पौंड ६) आधा पौंड ५) डाकखरच पैकिंग अलग।

पता—रसायन फ़ार्मेसी (३ दरियागंज) पो० बो० नं० ११२५ देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुधान

अधकि मानसिक परिश्रम, चिन्तन, अध्यापन, या किसी अकथनीय कारण से जिनका दिमाग कमजोर होगया है, स्मरणशक्ति घटगई है, हृदय दुर्बल होगया है, सिर में हल्का २ दरद और थकावट रहती है उनके लिए 'बुधान' बहुत लाभदायक है। इसके सेवन से उपरोक्त दोष मिट जाते हैं। दिमाग पुष्ट होकार स्मर्णशक्ति तीव्र हो जाती है। इससे उन्माद तक के रोगियों को लाभ हुआ है। बुद्धिजीवी लोगों के लिए वरदान स्वरूप है। मूल्य ४) डाकखरच १।≈)

निद्राणी

स्वास्थ्य के लिए निद्रा उतनी ही आवश्यक है जितना कि भोजन, जल और शुद्ध वायु। भोजन के पचन और सात्म्यीकरण से शरीर की प्रत्येक सेल को अपनी स्थिति बनाये रखने की सामग्री मिलती है तो पूर्ण निद्रा से आराम मिलने के कारण घिसी हुई सेलों का पुनः निर्माण होजाता है और खरच हुई शक्ति पुनः संचित हो जाती है। यदि युवा पुरुष को रात्रि में ६-७ घण्टे निरन्तर गहरी नींद नहीं आती या बीच २ में टूट जाती है तो यह मस्तिष्क धमनियों की कठोरता, पाचन सम्बन्धी रोग, विबन्ध, ब्लडप्रेशर (रक्तचाप) नाडी दौर्बल्य आदि व्याधिओं का लक्षण है। 'निद्राणी' इन सब अवस्थाओं में अपना निश्चित प्रभाव दिखाती है। कुछ ही मात्राओं के सेवन से रात्रि भर खूब गहरी नींद आने लगती है और प्रातःकाल उठने पर देह में स्फूर्ति और मन प्रफुल्लित होता है। इसमें कोई मादक या विषैला द्रव्य नहीं है। मूल्य ४) आधा कोर्स २॥) डाकखरच १।≈)

नेत्राण

आंखों का दुखना, नेत्र पीड़ा, लाली, जलन, खुजली, सूजन, कीचड़ आना तथा अन्य नेत्र रोगों में परम लाभकारी है। दो बून्द नेत्रों में डालते ही ठंडक पड़ जाती है और २-४ दिन डालनेसे आराम होजाता है। वैसे ही कभी २ डालते रहने से नेत्र साफ रहते हैं और कोई रोग नहीं होने पाता। मूल्य ॥)

नाग सुरमा

यह सुरमा रसायनिक प्रक्रिया द्वारा बनाया जा[illegible] है। यह सभी नेत्र रोगों में लाभकारी है दृष्टिमन्द[illegible] दूर या निकट कम दिखाई देना, तिमिर, धुन्ध, जा[illegible] आंखों से पानी बहना आदि रोगों को नष्ट करके [illegible] को तेज बना देता है। लगाते ही नेत्रों में ठंडक प्रती[illegible] होती है। ६ माशा की शीशी १॥।) तीन माशा १)

हनीक

इस दवा का प्रयोग आपको मोतियाबिन्दु [illegible] आपरेशन के कष्ट से बचा सकता है। प्रारम्भि[illegible] मोतिया इससे मिट ही जाता है किन्तु बढा हुआ मोतिया आगे बढ़ने नहीं पाता तथा निरन्तर कई मा[illegible] लगाते रहने से आराम भी हो जाता है। मूल्य ५)

पायोमन

यह पायोरिया की सफल दवा है। इस दवा [illegible] दांतों पर मलकर पांच मिनट लगा रहने दो और फि[illegible] कुल्ला कर डालो। इस प्रकार प्रातःकाल दोपहर औ[illegible] रात्रि को सोने से पहिले लगाने से मसूढ़ों का ग[illegible] हुआ मांस भरने लगेगा, पीप और रक्त का बहना ब[illegible] होकर हिलते हुये दांत मजबूत हो जाते हैं। एक औं[illegible] का मूल्य २॥) डाक खरच १।≈)

दन्तद्युति मंजन

यह मंजन मसूढ़े फूलना, दन्त पीड़ा, पानी लगन[illegible] मैल जमना, खून जाना, मुख में दुर्गन्ध आना आ[illegible] अनेकों रोगों को दूर करके दांतों को स्वच्छ चमकदा[illegible] बनाता है। लगाने के बाद मुख से सुगन्धि आ[illegible] लगती है। मूल्य ॥)

गठना

गठना-गठिया (Gout) सन्धि पीड़ा, स[illegible] वात, रींघनवाय, लकवा, कटिपीड़ा, पार्श्वशूल त[illegible] सम्पूर्ण वायु रोगों के लिए यह अकेली और बहुपरीक्षि[illegible] दवा है। खाट में पड़ा रोगी भी ३ दिवस के सेवन[illegible] चलने फिरने लग जाता है। इससे हर प्रकार के वा[illegible] रोग नष्ट हो जाते हैं। एक शीशी की कीमत ३)

जी० एस० आयुर्वेदिक रीसर्च प्रॉडक्टस ३ दरियागंज, देहली ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसायन फार्मेसी देहली का प्रमुख सचित्र मासिक पत्र

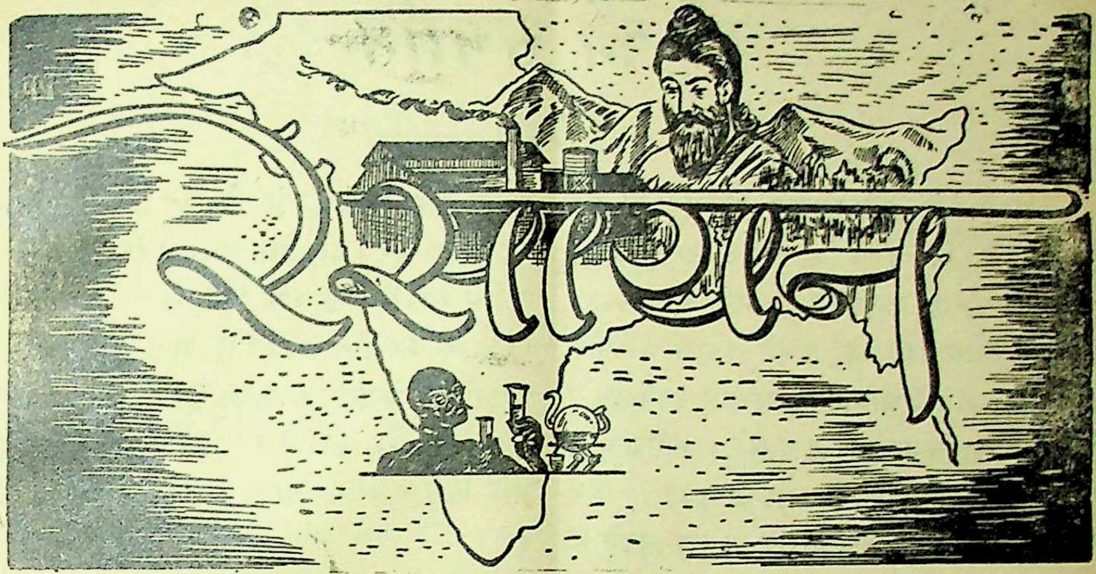

'सिद्ध रसे करिष्यामि, निर्दारिद्रय मयं जगत् ।'

वर्ष ८ | देहली जून १६५६ | अङ्क १२

❀ तप का तेज ❀

(स्वामी पारसनाथ सरस्वती)

लिया 'कोयला' उठा और हंसकर मैं बोला ।
ओ कलूटे-काल-कंस, काला क्यों चोला ?

कालिख-कपट-कुचाल, कालिमा कब जायगी ?
कभी 'सफेदी' नहीं-कहो-तुम पर आएगी ?

बोला—'तप के तेज से, बस कालिख धुल जायगी !
जल-भुन होऊं 'राख' जब, तभीं 'सफेदी' आयगी !!'

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष की समाप्ति

इस अंक के साथ रसायन अपना ८ वां वर्ष पूरा करता है। खेद है कि विशेषांक का सम्पादन पूरा न होने के कारण वह समय पर नहीं छप सका। विशेषांक के सम्पादक के सामने सहसा अनिवार्य कितनी ही समस्यायें आजानेके कारण वे उनमें उलझे रहे और सम्पादन कार्य को छू न सके। विशेषांक दो मास का एक अंक होता है और साधारण १० अंक प्रति वर्ष छपते हैं किन्तु विशेषांक न छप सकने के कारण रसायन को अनियमित नहीं होने दिया गया और प्रति मास समय पर अंक निकालकर १० की बजाय पूरे वर्षभर के १२ अंक ग्राहकों के भेजे गये हैं, तथापि विशेषांक तैयार होने पर दो अंकों के मूल्य मात्र में सब ग्राहकों को भेज दिया जायगा। विवशता के कारण जो विलम्ब हुआ है उसके लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं।

इस वर्ष से 'रसायन' का प्रकाशन स्थगित करनेका निश्चय किया गया है, कारण गत आठ वर्षों से निरन्तर घाटा उठाते चले आ रहे हैं और अब घाटा उठाने की क्षमता हमारे में नहीं रही है अतः इस अंकके बाद 'रसायन' छापने का विचार नहीं है। हां बुलेटिन के रूप में छपता रहेगा ऐसी आशा की जा सकती है।

यह निश्चित है कि जितने रसायन के ग्राहक हैं वे इसे जारी रखने का आग्रह अवश्य करेंगे और जिन ग्राहकों का ८ साल से रसायन के साथ सम्बन्ध रहा है उनको आग्रह करने का अधिकार भी प्राप्त है किन्तु इस आग्रह को मान्यता देना तभी संभव हो सकता है जबकि वे दो दो और नये ग्राहक बनाने का दृढ संकल्प करें। यदि ऐसा हुआ तो फिर उसी तत्परता से आपकी सेवा करने में मुझे हर्ष प्राप्त होगा। किन्तु वार्षिक मूल्य भेजने से पहले इस प्रकार का आश्वासन भेजना आवश्यक हैं। बिना आश्वासन प्राप्त हुए वार्षिक मूल्य के आए हुए मनीआर्डर वसूल नहीं किये जायेंगे। आशा है आप समुचित उत्तर देंगे।

आपका नम्र

गणपतिसिंह

सम्पादक रसायन

सामूहिक योजना

कुछ मास पूर्व जी० एस० आयुर्वेद रीसर्च प्राडक्टस के नामसे एक योजना रसायन में प्रकाशित हुई थी। उसे कार्य रूप में परिणित करने के लिये सामुहिक रूपसे आप सबका सहयोग वांछनीय है। इस योजना के अन्तर्गत प्रत्येक व्यक्ति अपनी कार्यक्षमता की योग्यता के अनुसार खरीदे हुए शेयरों की कीमत सालभर में कमा सकता है। इसकी पूरी जानकारी के लिये पत्र लिखकर मालूम करें।

पता—

जी० एस० आयुर्वेदिक रीसर्च प्राडक्टस विभाग

रसायन फार्मेसी

३ दरियागंज, पो० पो० ११२५ देहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक लहसुन प्रेमी अंग्रेज

मि० किंग का नारवियन क्लब में व्याख्यान

(लेखक—स्वामी पारसनाथ जी)

(गतांक से आगे)

३—लहसुन द्वारा ब्रह्मचर्य की सिद्धि

मेरे प्यारे बच्चो ! तुम ब्रह्मचर्य सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करना चाहते हो—यह जानकर हमें परम सन्तोष प्राप्त हुआ है। भारतवासी लोग Celibacy सेलीबेसी को ब्रह्मचर्य के नाम से पुकारते हैं। किन्तु उनका ब्रह्मचर्य शब्द बड़ा व्यापक, महा पुनीत और जीवन दाता है। हमारा पश्चमीय जगत तो प्राकृतिक पदार्थों से शिक्षा ग्रहण करनेका अभ्यासी है। परन्तु भारतीय विद्वान आत्माको प्रकृतिका स्वामी मानकर आध्यात्मिक अनुभवों द्वारा शिक्षा के सिद्धांतों को स्थिर करते हैं। हमारा यह पश्चमीय जगत भूख, प्यास को रोटी-पानी द्वारा शांत करने की सलाह देता है। सभी इन्द्रिय विकारोंको सन्तुष्ट करनेमें आरोग्यता की सिद्धि मानता है। परन्तु भारत ने इन्द्रियों के संयम को तप का नाम दिया है। भारत का कहना है कि मानव अपनी लाखों योनियों में इन्द्रिय बिकारों को ही भोगता चला आरहा है। उसने इन्द्रिय तृप्तिको ही जीवनका लक्ष बना लिया है। किसी योनि ने मानव को संयम की शिक्षा नहीं दी ऐसा ही पशु, पक्षी करते हैं। फिर मानव को जो विचार शक्ति दी गई है वह किस मर्ज की दवा है ? यदि भोग विलास में पशु और मानव समान कर्मी हैं, तो हम लोग 'पर-पशु' हुए या नहीं ? भारतीय विद्वानों ने संयम की महिमा समझाई है। इसी में ब्रह्मचर्य का आध्यात्मिक गौरव भरा हुआ है। प्राकृतिक जगत ने इन्द्रिय का सुख (भोग) सबसे अधिक आकर्षक और प्रिय माना है। आर्य संस्कृति कहती है कि यदि प्रिय वस्तु का बलिदान कर दिया जावे तो संसार का कोई कार्य हमारे लिये असाध्य न रहेगा। आर्ष संस्कृति के प्रेमी कहते हैं कि संसारको स्वर्ग बनाने के लिये संयम ही एकमात्र उपाय है।

तुम सब नवयुवक मुझसे यही पूछ रहे हो कि वीर्य का स्तम्भन कैसे किया जासकता है ? इस विषय में मेरा तजुरबा यह है कि सबसे पहिले जीभका संयम सीखना चाहिये। यह रसना, रसों की चटोरी है। यही हम 'नर-पशुओं' को मनमाना नाच नचाया करती है। पेट एक प्रकार की रसायन शाला है। जिसमें प्रत्येक खाद्य पदार्थ अपना २ रस तैयार करते हैं। अतः पेट का संतुलन बिगड़ने से, शरीर में तूफान उठते हैं और वही वीर्य विनाश के कारण बनते हैं। गरमागरम चीजें, बहुत मसाले वाले पदार्थ, बिल्कुल ठण्डी चीजें, बासी भोजन और मिर्च-खटाई का अधिक व्यवहार, वीर्य का नाश किया करता है। शरीर के तापमान के मुताबिक ही खाना पीना उचित है।

संसार की जातियों में अपने २ पक्षपात होते हैं। साधारण लोग, बुद्धि से काम नहीं लेते हैं। हम सब अपनी २ परम्पराओं के दास हैं। इस लिये जहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहीं भी हम अपने से भिन्न रस्मोरिवाज रखने वाले लोगों को पाते हैं, तुरन्त ही हम अपने और उनके मध्य में—भेद की अभेद्य लौह दीवार खड़ी करलेते हैं। जिन्होंने मनन शील बनकर विभिन्नताओं का अध्ययन नहीं किया, सहानुभूति के साथ उनको समझने की चेष्टा नहीं की वे 'कूपमण्डूक' कभी पदार्थ ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते।

वैदिक धर्म को समझना, हम लोगों के लिये, बहुत ही कठिन काम है। मुसलमान और ईसाई तो एक रस्सी में बंधे हुए, अपने एकांगी पक्ष के कारण, हिन्दू धर्म की विशालता को अनुभवमें ला नहीं सकते। हिन्दू धर्म है मानवीय विकास का इतिहास। हिन्दू धर्म ने मानव जीवन के चार विभाग किये हैं-(१) ब्रह्मचर्य (२) गृहस्थ, (३) वानप्रस्थ, और (४) सन्यास। वे म्लेच्छ और राक्षस शब्दों का व्यवहार उन्हीं लोगों के लिए करते थे, जो बिल्कुल नर-पशु होकर पशुओं जैसा जीवन व्यतीत करते थे। विचार भेद के कारण वे किसी को 'काफिर' नहीं कहते हैं।

प्यारे नौ जवानो अपनी जंघायें पुष्ट करो। उनकी नसों को कठोर बनाना सीखो। भारतीय दण्ड, बैठक वाला व्यायाम ही, जंघाओं को पुष्ट और कठोर बना सकता है। वही व्यायाम, ब्रह्मचर्य का सहायक बनता है। बैठने के लिये सिद्धासन और पद्मासन उत्तम आसन है। ये भी ब्रह्मचर्य में सहायक होते हैं। प्राणायाम की क्रिया भी ब्रह्मचर्य के लिए परम हितकारी हैं।

ब्रह्मचर्य के लिये 'आहार-विहार' को नियमवद्ध करना होगा। यूरोप वाले दिन में तीन-चार वार होटलों में जाकर मसाले दार खाने खाते हैं। भारतीय लोगों का सिद्धान्त है कि जब खूब भूख लगे तब भोजन करना चाहिये। भोजन को टाइम के नीचे बांधना मूर्खता है। वे लोग होटल के भोजनको त्यक्त अपवित्र तथा स्वादहीन समझते हैं। मुझे अनुभव है कि उच्च हिन्दू घरानों में जो भोजन चौके में बनाया जाता है वह वास्तव में पवित्र और दिव्य होता है। होटल का भोजन उसका पासंग भी नहीं।

मेरी तन्दुरुस्ती इसी लिये उत्तम है कि मैं खूब भूख लगने पर रूखा सूखा टुकड़ा खाता हूँ। खटाई मिठाई, मिर्च, तैल से बचता हूं। चाय भी बहुत कम लेता हूँ। जो स्वाद के लिये जीते हैं वे जल्दी खतम हो जाते हैं। ताजी और सादा खाद्य सामिग्री ही तन्दुरुस्ती की कुंजी है।

ब्रह्मचर्य साधन के लिये, लहसुन एक अपूर्व मित्र है। जिनको स्वप्नदोष हो जाता हो, वे रात में सोते समय, लहसुन की एक पूर्ति, छील कर चबा लिया करें। स्वप्नदोष एक दम बंद हो जायगा।

जिनका मन विषय करने के लिये वेताब रहता हो, वे भी एक पूर्ति प्रातः और एक पूर्ति सायंकाल चवाया करें। लहसुन की कृपा से मन में विकार ही पैदा न होगा। लहसुन में शारीरिक प्रभाव ही नहीं है उसमें मानसिक प्रभाव भी है।

गांधी जी ने ३५ साल की आयु से ब्रह्मचर्य की साधना की थी। वे ७० साल तक ब्रह्मचारी रहे थे परन्तु, यह बात बहुत कम लोग जानते हैं कि उन्होंने लहसुन के सेवन से ही ब्रह्मचर्य का समय पास किया था। लहसुन की मदद से ब्रह्मचर्य धारण करो और बिना ब्रह्मचर्य के लहसुन की साधना निरर्थक है।"

४—लहसुन को 'अमृता' क्यों कहते हैं ?

संस्कृत में लहसुन को 'अमृता' नाम से भी पुकारा जाता है। इसका कारण सुनिये।

जब सागर का मन्थन किया गया था, तब उसमें से १४ रतन निकाले गये थे। उनमें एक रतन था 'अमृत घट !' वह एक सोने का घड़ा था, जिसमें अमृत भरा हुआ था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक तरफ 'दैवी सम्प्रदाय' खड़ा होगया, दूसरी तरफ 'आसुरी सम्प्रदाय' खड़ा होगया। दोनों दल अमृत पी कर अमर होना चाहते थे! सागर मथने का पुरस्कार वह लोग यही चाहते थे।

विष्णु भगवान ने गरुड़जी को इशारा किया। एक पंजे से पकड़ गरुड़ जी अमृत घट ले उड़े। आसमान में वे दौड़ रहे थे और पृथ्वी पर उनके पीछे पीछे दोनों दल दौड़ रहे थे।

गरुड़ जी ने सात मरतबा पृथ्वी की प्रदक्षिणा की। परन्तु वे दोनों दल भला उनका पिण्ड कैसे छोड़ सकते थे? अमृत का लोभ थोड़ा नहीं होता।

आखिरकार घड़ा लिये उड़ते उड़ते गरुड़ जी थक गये।

उन्होंने सोचा कि थोड़ी देर के लिये जमीन पर कहीं अमृत घट रख दिया जावे और वे भी वहीं पृथ्वी पर बैठकर दम मार लेंगे।

गरुड़ जी ने देखा कि दोनों दल थक गये हैं और धीरे २ दौड़ने के कारण काफी पीछे रह गये हैं।

गरुड़ जी आकाश से पृथ्वी पर उतरे और उन्होंने एक खेत में वह घड़ा रख दिया। उस खेत में कुछ खड़ा था और उसके पत्ते लम्बे २ थे।

रखते समय भरा हुआ घड़ा जो छलका तो कुछ अमृत खेत में बिखर गया। गरुड़ जी अपने आप कहने लगे-'अमृत के प्रभाव से इस खेतकी जिन्स भी अमृत रूप हो जायगी। क्योंकि इस जिंस के बीज में अमृत का निवास होजायगा। फिर यह चीज जहां बोई जायगी अपने अमृत तत्व से खाली न होगी!'

इतना कहकर गरुड़ जी ने चन्द पत्ते चबाये और थूक दिया। बोले 'बदबू और तीक्ष्णता का घर है यह तो! अमृत रूप होजाने पर भी इसे कोई नहीं खायगा।

बाजार में वह चीज 'तीन पैसे छटांक' बिक रही है। हिन्दू लोग उसे नहीं खाते। क्योंकि अमृत से उन्हें क्या मतलब? मुसलमान और ईसाई उसे शौक से खाते हैं मगर बिगाड़कर। अमृत तत्व तो आग में पकाने से उड़ ही जाता है क्योंकि अमृत में भी पारा जैसा उड़नेवाला स्वभाव है। तो भी वे दोनों इतने बलवान होगये कि दोनोंने १०-१० करोड हिन्दुओं को मुसलमान और ईसाई बना लिया हिन्दुस्तान की १/३ जमीन भी छीन ली है। आगे भी उनकी उन्नति की आशा है!

और उस जिंस का नाम है—'लहसुन!'

५—महात्मा गांधी द्वारा लहसुन सेवन

ब्रह्मचर्य धारण करने के लिये, महात्मा गांधी ने, बड़े ध्यान से विवेचना की कि कौन २ से पदार्थ, ब्रह्मचर्य के मित्र हैं और कौन २ शत्रु हैं! आखिरकार विचारक गांधी जी ने, लहसुन को भी ब्रह्मचर्य का मित्र माना। खुद सेवन किया—अपने अनुयायियों को भी सेवन कराया।

सन् १९४३ ई० में एक सन्यासी ने गांधी जी से कहा-

"लहसुन जागृत करता है—पाशविक वृत्तियों को! जो लोग सात्विक वृत्ति से अपना जीवन बिताना चाहें—उनका कर्तव्य है कि लहसुन का नापाक नाम भी न लें। ब्रह्मचारी, सन्यासी, कुमारी, और विधवा को तो लहसुन छूना भी न चाहिये। हां विषयी गृहस्थी यदि चाहें तो लहसुन का व्यवहार कर सकते हैं।"

गांधी जी ने उत्तर दिया

"बहुत दिनों से मैं लहसुन की साधना कर रहा हूं। मुझे तो लहसुन में, ब्रह्मचर्य नाशक कोई गुण दिखलाई नहीं पड़ा। वह शक्ति दायक पदार्थ है। उस शक्ति को चाहे योग के काम में लगाया जावे, चाहे भोग के काम में व्यवहार किया जावे! यह तो व्यक्ति के दृष्टिकोण पर अवलम्बित है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुरंत ही श्रीविनोबाभावे बोले

"मुझे क्षय रोग हो गया था। लहसुन द्वारा ही मैंने क्षय से प्राण का क्षय होना, बचाया है!"

श्री बालकृष्ण ने अपना बयान दिया।

"मैंने ५ साल तक, पांच तोला कच्चा लहसुन, रोज खाया है। मेरे मन में जो काम विकार आया करता था, लहसुन से वह भी दूर हो गया है। लहसुन एक शक्तिशाली रसायन है। वह वीर्य को पुष्ट करता है। निरोग वीर्य कोई बुरी बात नहीं। उसका दुरुपयोग करना बुरा है। वीर्य को, अपनी इच्छाशक्ति द्वारा, अपने कमजोर अंगों की तरफ भेजना चाहिये। लहसुन की शक्ति, जब अन्तर्मुखी बन जाती है तब वह ओज पैदा करती है। वही ओज, साधक को प्रकाश देता है और उसके द्वारा संसार को भी प्रकाशित करता है!"

६—महात्मा रमण द्वारा लहसुन सेवन

रमण महात्मा के प्रधान शिष्य परांजपे शास्त्री ने कहा था—"गुरुदेव रमण महर्षि जी, लहसुन को अभक्ष्य नहीं मानते थे। वे उसे सात्विक भोजन बतलाते थे। वे ५ पूर्तियां छिलवाकर सिल पर बारीक पिसवाते थे। आधी छटांक पानी और अठन्नी भर शहद डलवाते थे। फिर मिलाकर शर्बत की तरह धीरे धीरे पी जाते थे। वे तो उसे ब्रह्मचर्य का ही सहायक न मानते थे, वरन समाधी का भी संरक्षक मानते थे। उसे तामसी कहना ढपोलशंखों का काम है।

७—स्वामी सत्यदेव परिव्राजक द्वारा लहसुन सेवन

हिन्दी साहित्य में, तपस्वी सत्यदेव जी का नाम अमर हो गया है। आपने नीचे लिखी पुस्तकें रचकर नवयुवकों में नवजीवन फूंका है—

(१) स्वाधीनता की खोज में, (२) विचार स्वातंत्र्य के प्रांगण में, (३) संजीवनी बूटी, (४) अनंत की ओर, (५) ज्ञान का उधान, (६) अमरेका पथ प्रदर्शक, (७) आश्चर्यजनक घंटी, इत्यादि, वही स्वामी सत्यदेवजी, अपनी एक पुस्तकमें प्रकाशित करते हैं—

"हमें विगत २४ वर्षों से, लहसुन के प्रयोग ने कई नये २ अनुभव सिखाये हैं। अपनी यात्रा में, मैं सदा लहसुन अपनी जेब में रखता हूँ। अवसर पाकर उपयोग करता हूं। यह 'टानिक' तो है ही, घाव को आराम करने की भी उसमें अद्भुत शक्ति है। कई बार नाखून काटते समय जब मुझसे मांस क[ट] जाता है और उंगली में दर्द होने लगता है तो [मैं] लहसुनका रस घावमें लगा देता हूँ। दो तीन बार ऐस[ा] करने से दर्द मिट जाता है और घाव भर जाता है। जब कभी शरीर में फुंसियां हो जाती हैं तो लहसु[न] का अर्क मलने से उनसे भी पिण्ड छूट जाता है। शाक तरकारी में लहसुन का बघार देना तो, उ[स] खाद्य पदार्थ को, स्वादिष्ट बना देता है, किन्तु उसक[ा] असली प्रभाव खाने वाले को नहीं मिलता है। छील कर लहसुन की तुरियां योंही चबाना चाहिये। उस[के] चरपरेपन से और तीक्ष्णपनसे घबडाना नहीं चाहिये कुछ मिनटों बाद ही तीक्ष्णता शांत होजाती है।

८—लंदन के प्रसिद्ध डाक्टर मिचीन द्वारा लहसुन की प्रशंसा

"मेरे पास एक दिन एक ऐसा नवयुवक आ[या] जिसके पैर के पंजे में क्षय रोग हो गया था। मे[री] राय लेने लगा। मैंने पंजा कटवाने की राय दे दी वह चुपचाप चला गया और छः महीने बाद वह मु[झे] फिरमिला। उसका रोग भाग गया था और उसके पै[र] का पंजा निरोगावस्था में था। मैंने आश्चर्य के सा[थ] इसका कारण पूछा। उसने कहा—'एक भारतीय मि[त्र] की राय से मैंने लहसुन की लुगदी चढ़ाई थी। ब[स] उसी से क्षय मिट गया। पहिले पहिल उसी दिन मु[झे] लहसुन का महत्व ज्ञात हुआ। फिर तो मैंने लहसुन [की] कृपा से, क्षय रोग के अनेक मरीज अच्छे किये लहसुन में 'अलील सल्फाइड' नामक एक तत्व पा[या] जाता है। यही तत्व, क्षय के कीटाणुओं को नष्ट कर[ता] है। अगर लहसुन की ५—७ पूर्तियां, छीलकर पी[सी] जावें और लुगदी बनाकर, उसे पैर के तलवे में बां[ध] दिया जावे, तो १५–२० मिनट बाद उस व्यक्ति [की] सांस से भी लहसुन की महंक आने लगेगी। सा[रे] शरीर की त्वचा, हड्डियों और नसों को भेदता हु[आ] वह 'अलील सल्फाइड' ही पैर से चलकर सिर त[क] पहुँचता है। यही व्यापकता का गुण उसमें है।"

क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी आंखें

[लेखक—डा० एम० एस० अग्रवाल]

नेत्रों की बनावट

हमारे नेत्र जिनसे हम प्रकृति के सौन्दर्य का दर्शन करते हैं—बड़े विचित्र से बने हुए हैं। इनकी व्याख्या दो शब्दों में करनी कठिन है लेकिन फिर भी थोड़े से शब्दों में इनकी रूप रेखा अवश्य कही जा सकती है।

मुख्यतर हमारे नेत्र छोटी गेंद के समान गोल होते हैं। प्रकृति ने इन्हें तीन विभागों में विभाजित किया है और तीन तरल पदार्थ ह्यूमर (Humor) इनमें भर दिये हैं। नेत्र का बाह्य भाग मोटा-सख्त और फुटबाल के बाह्य चमड़े की तरह रूप लिये हुए है और अन्दर के अन्य भागों की रक्षा करता है। इस भाग को श्वेता मंडल (Sclerotic) या नेत्र का श्वेत भाग कहते हैं। इसी भाग के साथ कानीनिका मंडल (Cornea) भी जुड़ा हुआ है जो पारदर्शक होता है। अगर नेत्रों को एक तरफ से देखा जाय तो यह भाग बिलकुल साफ दिखाई देता है।

श्वेता मंडल के बाद रक्त की नालियों से भरा कोरायड (Choroid) आता है। यह भाग सारे नेत्र को रक्त देता है। इस भाग से वह भाग भी जुड़ा हुआ है जो प्रकृति के प्रकाश को अपने ऊपर लेता है। मैडिकल पुस्तकोंमें चित्र लेने वाले भागको (Retina) छायापट कहते हैं।

हमारे नेत्रों का छायापट कैमरे की फिल्म की तरह चारों तरफ से सूक्ष्मग्राही नहीं होता। इसमें केन्द्र बिन्दु के पास का भाग अन्य भाग से अधिक सचेतन होता है। इस तरह की अवस्था का कारण कोन लेयर का केन्द्र बिन्दु के आस पास होना और रोड नामक लेयर का परिधी के भाग में होना।

जिस समय हम किसी वस्तु को देखते हैं, उस समय दीखने वाली वस्तु की छाया केन्द्र बिन्दु के भाग पर पड़ती है और वस्तु के आस पास की चीजें छाया-पट के अन्य भाग द्वारा दृष्टिगत होती है। वैज्ञानिकों ने अपनी खोज के बाद यह ज्ञान प्राप्त किया है कि केन्द्र बिन्दु का भाग प्रकाश में उत्तेजित होता है और अन्य भाग कम प्रकाश या अंधकार में।

कानीनिका मंडल के पीछे कृष्णमंडल (Iris) होता है। हालके विदेशी पैदा बच्चों में तो हलका नीला, भारतीय बच्चों में खाकी सा रंग लिये हुए होता है। आयु की बढ़ोतरी के साथ रंगमें तेजी आती चली जाती है।

कृष्णमंडल में एक सुराख होता है जिसे पुतली कहते हैं। जिस भी वस्तु को हम देखते हैं उसकी छाया इसी भाग को भेद कर अन्दर जाती है। प्रकृति ने इस भाग को कैमरे की तरह कार्य करने वाला बनाया है। जिस समय नेत्र अधिक प्रकाश को देखते हैं उस समय यह सुकुड़ जाती है। और प्रकाश की कमी के साथ यह बढ़ने लगती है।

कृष्ण मंडल और कोरायड के जोड़ पर कोमल मांस पेशियां होती है जिन्हें सीलियरी मांस पेशियां कहते हैं (Ciliary Muscles) यह भाग कांच से जुड़ा रहता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस समय प्रकृति पर रखी आकृति की छाया कानीनिका मंडल, पुतली को पार कर लेती है उस समय तीसरे भाग छायापट पर पड़ा अक्स आपटिक नर्व की सहायता से दिमाग तक जाता है।

प्रकृति के तीन तरल पदार्थ (Humors) एक्युअस, क्रिस्टालीन एवं विट्रियस बनाये है।

एक्युअस कानीनिका मंडल एवं कृष्णमंडल के मध्य में होता है। यह पदार्थ पानी की तरह तरल और कानीनिका मंडल के रूप बनाये रखने में सहायक होता है।

क्रिस्टालीन या कांच विट्रियस एवं एक्युअस के मध्य में होता है। यह भाग काफी सख्त होता है। इसका रूप वृहणयन्त्र (Magnifine glass) के समान होता है। आयु के साथ यह सख्त होता जाता है। इसकी सहायता से ही हम प्रकृति की वस्तुओं को देख पाते हैं।

विट्रियस नेत्र के तीन चौथाई भाग को अन्दर से घेरे हुए हैं। यह भाग कांच और छायापट के बीच में भरा हुआ है। इसका रूप अंडे की सफेदी की तरह और पारदर्शक है। विट्रियस की सहायता से नेत्र का रूप ठीक तरह बना रहता है। इसकी अधिकता एवं कमी से नेत्रों के रोग हो जाते हैं।

हमारी छोटी सी आंखें हड्डी के खोल में रहती हैं जिन्हें ओरबिट कहते हैं। ओरबिट का ऊपरी भाग पतला और दिमाग की हड्डियों से जुड़ा होता है।

हमारी भोयें हड्डी, मांसपेशियों एवं खाल से बनी हुई हैं। इसके ऊपर प्रकृति ने छोटे छोटे बालों को स्थान दिया है। इनकी सहायता से पानी, धूल आदि नेत्रों तक नहीं पहुंच पाते। ऊंट जैसे जानवरकी भोंयें काफी घनी होती हैं और यही कारण है कि वह रेगिस्तान के तूफानों में भी कोई अधिक कष्ट का अनुभव नहीं करता।

कानीनिका मंडल की चमक एवं सफाई हमा पलक झपकने से बनी रहती है। ओरबिट के ऊ की तरफ अंदर के भाग में एक ग्रंथी होती है जि अश्रु ग्रंथी कहते हैं। इसकी सहायता से ही हमा आंखें गीली रहती हैं। नेत्रों का गीला रहना ब आवश्यक है। अगर यह ग्रंथी ठीक प्रकार कार्य करे या पलकों के कार्य में कोई खराबी आ जाय नेत्रों में अनेक प्रकार के रोग हो जाते हैं।

पलकों के पिछले भाग के पास एक बहुत पत झिल्ली होती है और यह झिल्ली कानीनिका मंडल किनारों तक आ जाती है। इसे कंजंगटाईवा कहते हैं

जिस समय पलकों के झपकने से थोड़े अश्रु नेत्रों को गीला कर देते हैं उस समय पलकों कोनों में (नाक की तरफ) बने दो सुराख पानी सोखकर एक अश्रु थैली में भर लेते हैं। बाद में न के रास्ते बनी एक नली के रास्ते निकल कर सांस गति की सहायता से सूख जाते हैं।

हमारे नेत्र जिस समय दायें बायें या ऊ नीचे देखते हैं उस समय यह क्रिया नेत्रों को पक हुई मांस पेशियों रेकटाई और ओबलीक (Rec and Oblique) द्वारा होती है। जिस समय मांस पेशियों पर किसी प्रकार का दबाव पडता है समय नेत्रों की दृष्टि हीन हो जाती है। इन मां पेशियों की स्वाभाविक क्रिया होने से नेत्र स्वस्थ रहते हैं।

दूसरा अध्याय

हम कैसे देखते हैं ?

हम कैसे देखते हैं ? यह प्रश्न सदा से रहस्यम रहा है। भूतकाल के लोगों के लिये यह एक प्रश्न था। एस्ट्रोनोमर कैपलर ने मनुष्य के नेत्र तसवीर लेने वाले कैमरे के समान माना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञान से वैज्ञानिकों को देखने की क्रिया के जानने में काफी आसानी आ गई। हमारी आंख जिस समय किसी वस्तु को देखती हैं उस समय दिखाई देने वाली वस्तु की छाया आंख के छायापट (Retina) पर पड़ती है जो कैमरे की फिल्म के समान होता है। छायापट का अक्स दिमाग तक ओपटिक नर्व द्वारा जाता है।

नेत्र कैमरे के समान कैसे हैं ?

हमारे नेत्र बाह्य रूप में तो समान से दीखते हैं लेकिन इनमें भिन्नता भी है। जिस समय कैमरे द्वारा समीप या दूर का चित्र उसके शरीर के परिवर्तन से होता है उसी तरह नेत्रों के देखने की क्रिया प्रसिद्ध नेत्र ज्ञाता हेल्महोल्टस के विचार में कांच एवं सीलियसी मांस पेशियों की सहायता से होती है। लेकिन अमरीका के प्रसिद्ध नेत्र विशेषज्ञ डा० बेट्स ने अपनी काफी वर्षों की खोज के बाद यह ज्ञान प्राप्त किया कि नेत्र कैमरे की तरह अपने शरीर को परिवर्तित करते हैं। उन्होंने इस सत्य को अनेक जानवरों पर अजमाया और उन्होंने देखा कि नेत्रों को पकड़ने वाली मांस पेशियां की सहायता से देखने की क्रिया होती है।

नेत्र एवं कैमरे में सबसे बड़ा अंतर यह है कि छायापट एवं फिल्म पर चित्र लेने की विधियां भिन्न होती हैं। कैमरे पर जिस समय चित्र लेते हैं उस समय दीखने वाली सारी वस्तु उस पर समान रूप से उत्तर आती है लेकिन छायापट पर बने केन्द्र बिन्दु पर ही चित्र की छाया साफ दृष्टिगत होती है अन्य भाग पर वह धुंधली होती चली जाती है। आरोग्य नेत्र जिस समय किसी वस्तु को देखते है उस समय दीखने वाली वस्तु को वह भाग अधिक साफ दिखाई देता है जिस पर नेत्र केन्द्रित होते हैं।

देखा गया है जिस समय नेत्र के छायापट पर फोक्स ठीक नहीं पड़ता उस समय वह धुंधली छाया कैमरे की फिल्म पर बिगड़े फोक्स से भिन्न होता है। कैमरे में काली वस्तु बिगड़ने पर भूरी सी हो जाती है लेकिन नेत्र में बिगड़ी छाया समय समय पर रंग में परिवर्तन ला सकती हैं।

जिस समय नेत्र का फोकस बिगड़ा होता है उस समय बिगड़ी छाया वास्तविक वस्तु से बड़ी या अन्य किसी रूप को लिये हो सकती है लेकिन कैमरे से देखते समय वस्तु सदा कुछ बड़ी ही दिखाई देगी।

जिस समय नेत्र का फोकस बिगड़ा होता है उस समय वस्तु का जो बिगड़ा रूप होता है वह कुछ पल बाद अन्य रूप बना देता है। एक छाया के स्थान पर दो या तीन आदि रूप ले लेता है लेकिन इस तरह का परिवर्तन कैमरे द्वारा होना असंभव है।

वैज्ञानिक दृष्टि से देखने की क्रिया कैसे होती है

नेत्रों के ज्ञाता हेल्महोल्टस के विचार में कांच में परिवर्तन आने पर ही दूर या समीप देखने की क्रिया होती है।

(क) आंख के कांच के निकल जाने पर बीस फीट से कम दूरी की वस्तु दिखाई नहीं देती।

(ख) आयु के साथ दृष्टि भी क्षीण हो जाती है और साठ वर्ष के बाद दृष्टि नहीं रहती। देखने के इस सत्य को परकंजी की छाया पर आधारित किया है। अगर मोमबत्ती की रोशनी आंख के पास लाई जाय तो तीन प्रकार की छायायें दिखाई देंगी।

१—तेज और सीधीः-यह छाया कानीनिका मंडल के ऊपर होती है।

२—बड़ी कुछ प्रकाश लिये हुए और सीधीः-कांच के बाह्य भाग पर से दृष्टिगत होती है।

३—छोटी तेज एवं उल्टीः-कांच के पिछले भाग पर दिखाई देती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेंगेनबेक नामक नेत्र ज्ञाता ने अपनी आंखों से देखा कि कांच के बाह्य भागकी छाया समीप देखने पर छोटी हो जाती थी। दूर देखते समय कुछ बढ़ जाती थी। हेल्महोल्टस ने भी इन प्रयोगों को अन्य विधियों से किया और अंत में लेंगनवेग के नतीजे पर ही पहुंचे। इसी सत्य को संसार के सभी वैज्ञानिकों ने अपनी पुस्तकों में लिखा है।

हेल्महोल्टस के विचार में कांच के मोटे होने का मुख्य कारण सीलियरी मांस पेशियों का ढीला पड़ जाना और जिस समय दूर देखने की क्रिया होती उस समय सीलयरी मांस पेशियां खिंच जाती जिस से कांच कुछ पतला हो जता है।

अमरीका के प्रसिद्ध नेत्र विशेषज्ञ डा० वेट्स ने हेल्महोल्टस एवं लेंगेनबेक के प्रयोगों को किया उन्हें किसी प्रकार की सफलता प्राप्त नहीं हुई। तीस नं० के बल्ब से लेकर एक हजार के बल्ब से उन्होंने प्रयोग किये और किसी प्रकार के नतीजे पर नहीं पहुँच सके।

काफी समय के निष्फल परिश्रम के बाद एक हजार के बल्ब की सहायता और एक अन्य यंत्र की सहायता से उन्होंने अपने प्रयोग को किया और कानीनिका मंडल कृष्णमंडल एवं कांच के बाह्य भाग और श्वेता मंडल पर प्रकाश की छाया को देखा। समीप देखते समय कांच के बाह्य भाग पर पड़ने वाले अक्स में किसी प्रकार का परिवर्तन दृष्टिगत नहीं हुआ डा० वेट्स की पुस्तक 'परफेक्ट साईट विदाऊट ग्लासेज' में उनके सारे प्रयोगों का बहुत अच्छी तरह वर्णन किया गया है।

कानीनिका मंडल का अक्स डा० बेट्स को काफी आसानी से दृष्टिगत हुआ। बाद में वह अक्स पचास नं० के बल्ब से भी देखा जा सकता था। कानीनिका पर चार प्रकार की छायायें-अच्छी आंख होने पर, नेत्रों पर तनाव होने पर, समीप देखने प[र] एवं आराम की अवस्था में। जिस समय प्रयत्न कर[के] समीप की वस्तु को देखा गया उस समय छाया कु[छ] बड़ी प्रतीत होती थी। इससे यह होता था कि कानी[-] निक कोनवेक्सिरी में कमी आगई। जिस समय दू[र] देखने का प्रयत्न किया गया उस समय कुछ छोटी प्रतीत होती थी। उनके विचार में कानीनिका मंडल [...] कोनवेक्स या मोटे होने का मुख्य कारण नेत्रों [...] शरीर में परिवर्तन आना था। जिसे वह बाह्य मां[स] पेशियों द्वारा मानते थे।

१—समीप देखते समय नेत्रों का शरीर बढ़ जाता है
२—कांच देखने का प्रमुख साधन नहीं है।
३—दूर दृष्टि की कमजोरी दूर की वस्तुओं को प्रय[त्न] करके देखने से होती है।
४—समीप की कमजोरी नजदीककी वस्तुओं को प्रय[त्न] करके देखने से होती है।

१-देखने की क्रियायें कांच एवं सीलियरी मां[स] पेशियों से नहीं होती, देखने की क्रिया बाह्य मां[स] पेशियों द्वारा होती है।

२-दूर दृष्टिकी कमजोरी ओबलीक मांसपेशि[यों] पर तनाव पड़ने पर होती है। इनमें आराम पहुँच[ने] पर नेत्रों के देखने में परिवर्तन आजाता है।

३-समीप की कमजोरी दो या अधिक रेक्ट[स] पर तनाव पहुँचने पर ही होती है। इनमें आराम ला[ने] से रोग में कमी आजाती है।

४-ऐस्टिगमेटीज्म दोनों प्रकार की मांसपेशि[यों] में तनाव आने से होता है।

५-हर प्रकार की नेत्र दृष्टि एवं अन्य कमजो[-] रियां नेत्रों पर तनाव डालने से होती हैं। इन[में] आराम पहुँचाना प्रमुख इलाज है।

क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्तचाप (ब्लडप्रेशर)

(लेखक—वैद्य पं० सभाकांत झा, शास्त्री)

—()०()—

हमारे शरीर में रात-दिन रक्त का संचार हुआ करता है। वायु दोष से रक्त संचार में कमी या अधिकता से रक्त के स्वाभाविक दबाव में अन्तर आ जाता है। इससे या तो रक्त का प्रवाह मस्तिष्क की ओर विशेष होने लगता है या कम होने लगता है। इसे ही रक्त-विक्षेप या रक्तचाप कहते हैं। वैसे रक्त पर इसका परिणाम होने के कारण यह बीमारी रक्त सम्बन्धी है। किन्तु, रक्त विक्षेप करनेवाला वायु होता है। अतएव रक्त दोष होने के साथ ही यह वात रोग भी है। इस विक्षेप के कारण वात संस्थान या नाड़ी मण्डल पर असर पड़ता है और मस्तिष्क को इसके कारण परेशानी उठानी पड़ती है। अतएव इसकी गणना कोई-कोई शिरोरोग के अन्तर्गत भी करते हैं।

आयुर्वेद में इसका स्वतन्त्र वर्णन कहीं नहीं देखने में आता है। रक्त-विक्षेप में विकृति होने के कारण रक्तसंचार के वर्णन से ही उसका परिणाम निकाल लिया गया है। पहले जमानेमें इस बीमारीका इतना जोर भी नहीं था। यह बीमारी प्रायः वृद्धों को अधिक होती है। क्योंकि बूढ़ों के शरीर में स्वभावतः वायु की अधिकता हो जाती है और रक्त की कमी के कारण उसका रक्तचाप घट जाता है।

पहले लोगों का खान-पान विकृत नहीं होता था। प्रायः बुढ़ापे में तपस्या करने के लिए वन में जाकर वे तप किया करते थे और वहीं संयम से रहते थे। अतएव उनका रक्तचाप स्थिर रूप में रहता था। आजकल उसके विपरीत बुढ़ापे में भी चिन्ता और परिश्रम से परेशान रहना पड़ता है। खान-पान अनियमित और नियम-विरुद्ध हुआ करता है। अतएव यह बीमारी भी अधिक दिखाई पड़ने लगी है। अतएव इसका पृथक् स्वतन्त्र रूप से वर्णन करना आवश्यक है।

चिकित्साक्रम

रक्त-विक्षेप या ब्लडप्रेशर की चिकित्सा करने वालों को पहले यह निश्चय कर लेना चाहिए कि रोग यथार्थ में ब्लडप्रेशर है या नहीं। अनेक रोगों के उपसर्ग रक्त-विक्षेप के समान होते हैं। उचित निश्चत निदान न होने से समुचित चिकित्सा नहीं हो सकती है, बल्कि लाभ के बदले हानि ही होने की सम्भावना रहती है। चिकित्सा आरम्भ करने के पहले रोग के कारणों का पता लगाना चाहिए, क्योंकि जब तक रोगोत्पत्ति के कारणों का प्रतिकार न किया जायगा, तब तक रोग को जड़ से मिटाना मुश्किल है।

रक्तचाप के रोगी के दांतों की परीक्षा करनी चाहिए। यदि दांतोंसे मवाद या खून निकलता हो और साथ ही दांत हिलते हों तो दांत को उखड़वा देना ही अच्छा होगा या अच्छे दन्त-चिकित्सक की सलाह से चिकित्सा करावें।

यदि गले में गांठ हो तो काचनार गूगल आदि दवा के प्रयोग से उसे दूर करें। रोगी को रोग का विवरण सविस्तार बतलाने की आवश्यकता नहीं अन्यथा रोगी घबड़ा जायगा। रोगी को प्रथम देखकर बहुत स्पष्ट भाषा में रोग विवरण संक्षिप्त रूप से इस तरह समझा दें कि रोगी को विश्वास हो जाय और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घबराहट भी न हो। बारम्बार रक्तचाप मापक यन्त्र द्वारा रक्त की परीक्षा भी न करें। इसका बहुत बुरा असर रोगी पर पड़ता है। यदि रोगी की चर्बी ज्यादा बढ़ी हुई हो, तो उसकी खुराक क्रमशः घटा दें। ऐसे रोगी के भोजन में पुष्टिकारक पदार्थ तथा मांसादि का व्यवहार बहुत कम करें। पेशाब खूब साफ होना आवश्यक है। स्नान भी रोज कराया जाय, जिससे चमड़ा स्वच्छ रहे और यथावश्यक पसीना भी निकलता रहे।

यदि अनिद्रा का उपद्रव न हो, तो एकाएक रक्तचाप कम करने का प्रयत्न न करें, क्योंकि वृक्क विकार और मस्तिष्कगत धमनियों की कठोरता में रक्त की पूर्ति करने के लिए प्रकृति रक्तचाप बढ़ाकर स्वास्थ्य-साम्य लाने का प्रयत्न करती है। ऐसी दशा में यदि हठात् रक्तचाप घटाने का प्रयत्न किया जायगा तो शरीर में क्षीणता बढ़ेगी, पेशाब के द्वारा विषाक्त अंश बाहर न हो पायेगा और मस्तिष्कगत धमनियों में रक्त की गांठ बनने का भय रहेगा।

रोगी को आराम करने दें, किन्तु एकदम काम भी बन्द न करा दें अन्यथा नीचे रक्त-विक्षेप होने का भय रहता है। काम उतना ही करना चाहिए, जिसमें थकान न लगे। निद्रा में सहायता पहुँचाने के लिए और पाचन शक्ति ठीक रखने के लिए कुछ 'द्राक्षासव' और "सारस्वतारिष्ट" दिया जा सकता है। पाखाना साफ होता रहे इसके लिए भी कभी-कभी बस्ति अथवा मृदुविरेचन चूर्ण दें।

मृदुविरेचन चूर्ण

सनाय, सौंफ, शु० गन्धक, मुलेठी और मिश्री प्रत्येक समान भाग ले कर कूट कपड़छन चूर्ण बना ३ माशे की मात्रा में रात को सोते समय गर्म दूध या गर्म पानी के साथ दें। यह दवा प्रारम्भ में तीसरे दिन परदें, फिर सप्ताह में एक बार तब तक देते रहें, जब तक पेट खूब हल्का न हो जाय।

यदि रक्त की अधिक वृद्धि हो गई हो और रक्त के दबाव से हृदयगति बन्द होने (हार्टफेल) का भय हो अथवा मस्तिष्क पर रक्त का दबाव बढ़ने का भय हो, तो फस्त खोलकर रक्तमोक्षण करायें। आवश्यकतानुसार आधा सेर से १ सेर तक रक्त निकलवा दें।

वृद्ध मनुष्य में रक्त की गांठ न बने, इस लिए भी कभी-कभी फस्त खोलनी चाहिए। यह कार्य सिंगी या तुम्बी से अच्छी तरह हो जाता है।

रक्त-विक्षेप में दोष वायु प्रधान होता है, अतएव चिकित्सा करते समय वायु की शान्ति का ध्यान सर्वप्रथम रखना चाहिए। वायु की शान्ति के लिए 'रास्नादि पंचक क्वाथ' दें।

रास्नादि पंचक क्वाथ

औषधि और निर्माण-विधि—रास्ना, पुनर्नवा, सोंठ, गुडूची और एरण्डमूल समान भाग ले कर एकत्र यवकुट चूर्ण बनाकर रखलें।

मात्रा और उपयोग—इसमें से २ तोला की मात्रा में चूर्ण लेकर आधा सेर जल में क्वाथ करें, आध पाव जल शेष रहने पर उतार कर छान कर इसमें ३ माशा शहद डालकर प्रातः सायं पिलावें।

इसके सेवन से सप्तधातुगत वायु, आमयुक्त वायु तथा सर्वांगगत वात रोग अच्छे होते हैं।

रक्त विक्षेप रोग में वात व्याधि की प्रधानता रहती है। साथ ही इसमें आक्षेप आते हैं, पक्षाघात का भी उपद्रव होता है। शाखागत और शिरोगत विकार भी होते हैं। ऐसी स्थिति के लिए निरामिष महामाष तैल की मालिश करना लाभदायक है।

निरामिष-महामाष तैल

औषधि-निर्माण-विधि—तिल तैल ४ सेर को खूब औंटा कर संस्कार करलें, फिर असगन्ध, कपूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काचरी, देवदारु, खरेटी, (बला) रास्ना, प्रसारणी, कूठ, फालसा, भारंगी, कुम्हड़ा, पुनर्नवा, जम्बीरी नींबू, जीरा, स्याह जीरा, हींग, सौंफ, शतावरी, गोखरू, पीपलामूल, चित्रक, सेंधा नमक और जीवनीय गण। इन सब दवाओं को समभाग मिला कर १ सेर का कल्क करके तैल में डालें।

८ सेर दशमूल को ६४ सेर जल में पकाएं, जब १६ सेर पानी शेष रह जाए, तब उपर्युक्त तैल में डाल कर पकाएं। फिर बढ़िया माष (उड़द) ८ सेर को ६४ सेर जल में औटा कर १६ सेर जल शेष रहने पर तैल में उस जल को डालकर पकाएं। इसी प्रकार १६ सेर दूध भी तैल में डालकर पकाएं। पकते-पकते जब तैल मात्र शेष रह जाय, तब गर्म ही गर्म छानकर बोतलों में भरलो।

बहुत से वैद्य तैल ठण्डा होने पर छान करके भरते हैं, परन्तु ऐसा होने पर तैल कल्क में रह जाता है।

इस तैल की मालिश से पक्षाघात, हनुस्तम्भ, अपतन्त्रक अर्दित आदि कठिन से कठिन वात रोग अच्छे हो जाते हैं। इस तैल की मालिश से रक्तचाप में बहुत लाभ देखा गया है। कई बार का परीक्षित है।

रक्त-विक्षेप में यदि मन्दाग्नि, शूल, अरुचि, आमदोष, और कफ दोष की प्रबलता मालूम पड़े, तो "पंचकोलादि चूर्ण' का प्रयोग करें।

पंचकोलादि चूर्ण

औषधि-निर्माण-विधि—पीपर, पीपरामूल, चव्य चित्रक, सोंठ प्रत्येक समान भाग लेकर कूट कपड़छान चूर्ण बना सुरक्षित रखलें।

मात्रा और उपयोग—इसमें से ३ माशे की मात्रा में भोजन से पहले जल के साथ सेवन करें। इससे आमदोष का पाचन हो जाता, अरुचि नष्ट होती जठराग्नि की वृद्धि होती है और कफ विकार भी दूर हो जाता है।

रक्त-विक्षेप में पाण्डु और रक्तहीनता हो या बवासीर तथा वातरक्त जैसे लक्षण हों, तो "अपराजितादि चूर्ण" का सेवन करावें।

अपराजितादि चूर्ण

औषधि निर्माण विधि—अपराजिता (विष्णुक्रांता) सफेद, पीपल, गुर्च, काली निशोथ, बाराहीकंद, एरण्डमूल और सोंठ प्रत्येक समान भाग लेकर कूट कपड़छान चूर्ण बनाकर रखें।

मात्रा और उपयोग—इसमें से तीन माशे की मात्रा में प्रातः सायं जल के साथ सेवन करें।

इस चूर्ण में शुक्ति भस्म २ रत्ती और मण्डूर भस्म २ रत्ती और मिला लिया जाय तो अच्छा लाभ करता है।

रक्त-विक्षेप में हृदय विकार वात विकार, यकृत और प्लीहा के विकार, ग्रन्थी, शूल, पेट फूलना, दस्त में कब्जियत और उदर विकार प्रायः रहा ही करते हैं, ऐसी दशा में "वैश्वानर चूर्ण" बहुत लाभ करता है।

वैश्वानर चूर्ण

औषधि निर्माण विधि—सेंधा नमक, अजवायन प्रत्येक २-२ तोला, अजमोद ३ तोला, सोंठ ५ तोला और हर्ड १२ तोला लेकर सबका कूट कपड़छान महीन चूर्ण बनाकर रखें।

मात्रा और उपयोग—इस चूर्ण में से ३ माशे की मात्रा में प्रातः सायं दही के तोड़ या मट्ठा अथवा घी या गर्म जल के साथ सेवन करने से बहुत लाभ होता है।

रक्त-विक्षेप में (जिसमें पित्त की अधिकता रहती है) हाथ, पांव, आंख, गला आदि में जलन होती रहती है। कभी २ यह उपद्रव इतना बढ जाता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि रोगीको कहीं भी चैन नहीं लेने देता, रोगी शीतल पदार्थ का अन्वेषण करता रहता है। इस दाह की शांति के लिए "पटोलादि क्वाथ" का उपयोग अच्छा लाभ करता है।

पटोलादि क्वाथ

औषधि निर्माण विधि—परवर, कुटकी, शतावरी आंवला, हर्ड, बहेड़ा और गुर्च प्रत्येक समान भाग लेकर यवकुट चूर्ण बना रखलें।

मात्रा और उपयोग—इसमें से २ तोला चूर्ण लेकर आधा सेर जल में पकावें, आध पाव जल शेष रहने पर उतारकर छानलें, फिर इसमें ३ माशा मिश्री या शहद मिलाकर पिलादें।

इसके सेवन से पित्त जन्य प्रदाह शांत होकर शरीर में ठण्डापन आजाता है।

यदि शरीर में रक्ताधिक्य तथा रक्तकी उल्वणता अधिक हो, तो जलमें सौ बार धोए हुए घृतमें जरासा राल (धूमन सफेद) का महीन चूर्ण मिलाकर शरीर में लेप करने से रक्तकी उल्वणता (वृद्धि) कम होजाती है।

रक्ततित्तयुक्त रक्त विक्षेप में "सुधानिधि रस" बहुत लाभ करता है।

सुधानिधि रस

औषधि निर्माण विधि—धनिया, सुगन्धबाला, नागरमोथा, सोंठ, सेंधा नमक, प्रत्येक समान भाग लें और मण्डूर भस्म इन दवाओं से दूना लेकर मिलावें, फिर गौ-मूत्र, काला भांगरा, पुनर्नवा, भृंगराज, निर्गुण्डी और मण्डूकपर्णी और गाय के मट्ठेकी २-२ भावना देकर रखें।

मात्रा और उपयोग—इसमें से १ माशा की मात्रा में दवा लेकर प्रातः सायं मट्ठा या भृंगराज के रस के साथ दिया करें।

भोजन में नमक बन्द करदें और पानीके स्थान में मट्ठा ही पीने को दें। इस तरह ४० दिन तक इस कल्प का सेवन करने से रक्तपित्तयुक्त रक्त-विक्षेप तथ[ा] पाण्डु, कामला, शोथ और ज्वरयुक्त रक्त-विक्षेप दू[र] होता है। मन्दाग्नि ग्रहणी विकार नष्ट होता है।

यदि रक्त-विक्षेप के साथ रक्तपित्त अथव[ा] अम्लपित्त हो, तो "द्वितीय सुधानिधि रस" का प्रयो[ग] करें।

वाताधिक्य रक्त-विक्षेप में गुडूची, अडूस[ा] और अमलतास का गूदा प्रत्येक समान भाग लेक[र] यवकुट चूर्ण बना इसमें से २ तोले यवकुट चूर्ण [को] आध सेर जल में क्वाथ करें, आध पाव शेष रहने प[र] छान कर पी लें। अथवा परवर की पत्ती, कुटकी शतावर, आंवला, हर्रे बड़ी, बहेड़ा और गुडूची प्रत्ये[क] समान भाग लेकर जौ कुट चूर्ण बना इसमें से २ तोल[े] चूर्ण लेकर आधा सेर जल में औटावें और आध पा[व] जल शेष रहने पर छान करके पीवें।

गुण—इसके पीने से दाहयुक्त रक्त-विक्षे[प] नष्ट होता है। अथवा-दशमूल डालकर दूध का क्षी[र] पाक कर पिया करें, इससे शिरा, धमनी और शिरःशू[ल] आदि उपद्रव नष्ट होते हैं।

पित्तोल्वण रक्त-विक्षेप में मुनक्का, मुलेठ[ी] अमलतास का गूदा, लाल चन्दन, क्षीर काकोली प्रत्ये[क] समान भाग लेकर क्वाथ विधान से क्वाथ बना[कर] मधु और मिश्री के साथ पीवें और धारोष्ण दूध [के] साथ निशोथ का चूर्ण ४ माशा की मात्रा में लिया क[रें] विरेचन के लिए गर्म दूध में एरण्ड तैल मिला[कर] पिया करें। अथवा परवर की पत्ती, गुर्च, शताव[री] आंवला, हर्रे, बहेड़ा, आंवला और कुटकी का क्वा[थ] बनाकर पिया करें।

कफाधिक्य रक्त-विक्षेप में असगन्ध और ति[ल] पीसकर शरीर में उबटन की तरह लगावें, अथवा [जौ] के सत्तू, घी, जवाखार और कैथ की छाल पीस[कर] लेप करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घृतयोग

इस रोग में सादा घृत की अपेक्षा यदि औषध-सिद्ध घृत दिया जाय तो बहुत लाभ करता है। यथा—

शतावरी घृत

औषधि-निर्माण-विधि—शतावर का कल्क ऽ।, शतावर का रस तथा दूध ४-४ सेर और गौ-घृत १ सेर मिला मन्दाग्नि पर सिद्ध करें।

मात्रा और उपयोग—इसमें से १ तोला घृत भोजन के प्रारम्भ में या प्रातः सायं दूध में मिला कर पीवें। पित्त और रक्ताधिक्य रक्त-विक्षेप में इससे बहुत लाभ होता है।

गुडूच्यादि घृत

औषधि-निर्माण-विधि—गुर्च का स्वरस १ सेर दूध, घृत, मट्ठा (छाछ) प्रत्येक १-१ सेर ले घृत विधान से मन्दाग्नि पर घृत सिद्ध करें।

मात्रा और उपयोग—इसमें से १-१ तोला घृत को प्रातः सायं दूध में मिलाकर पिये। इसके सेवन से दूषित रक्तजन्य रक्त-विक्षेप दूर होता है।

रक्तचाप वाले रोगी के लिए "गुडूच्यादि तैल" की मालिश करना बहुत गुणकारी होता है।

गुडूच्यादि तैल

औषधि-निर्माण-विधि—६। सेर गिलोय (गुर्च) को यवकुट कर १६ सेर पानी में औटावें। ४ सेर जल शेष रहने पर उतार कर छान लें। फिर इस क्वाथ में १६ सेर दूध और ४ सेर तैल तथा निम्नलिखित कल्क द्रव्य सबको मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावें।

कल्क द्रव्य—मुलेठी, मजीठ, जीवनीयगण (जीवन्ती, काकोली, क्षीर काकोली, मेदा, महामेदा, माषपर्णी, मुद्गपर्णी, जीवक, ऋषभक और मुलेठी) कूठ, इलायची, अगर, मुनक्का, जटामांसी (बालछड़) नख, नखी, रेणुका, मुण्डी, सोंठ, मिर्च, पीपल, सोया, काकड़ासिंगी, सारिवा, दालचीनी, तेजपात, अर्जुन की छाल, शालपर्णी, भूमि आंवला, तगर, नेत्रबाला, नागकेशर, पद्माख, नीलोफर और लाल चन्दन प्रत्येक १—१ तोला लेकर सबको पानी के साथ पीसकर कल्क बना उपर्युक्त क्वाथ में तैल पकते समय डालें। सम्यक्तया तैल सिद्ध हो जाने पर छानकर सुरक्षित रखलें।

मात्रा और उपयोग—इसमें से १ तोला तैल लेकर आवश्यकतानुसार अनुवासन बस्ति, पान और मालिश के काम में लावें।

इसकी मालिश से धमनी, शिरा आदि स्रोतों के मुंह खुलते और साफ होते हैं। वात, पित्त और रक्त के दूषण दूर होते हैं। तथा व्रण विकार भी दूर होता है।

चन्द्रप्रभा वटी से भी इस रोग में बहुत आशा जनक लाभ होता देखा गया है।

चन्द्रप्रभा वटी

औषधि-निर्माण-विधि—कचूर, वच, निशोथ, नागरमोथा, चिरायता, गुर्च (गिलोय) देवदारु, हल्दी, अतीस, पीपलामूल, चित्रक, धनियां, हरड़, बहेड़ा, आंवला, चव्य, वायविडंग, गजपीपल, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, स्वर्णमाक्षिक भस्म, सज्जी खार, यवक्षार, सेंधा नमक, काला नमक, कांच नमक ये सब दवायें ३—३ माशा, दन्तीमूल, तेज पत्र, दाल चीनी, छोटी इलायची के दाने, वंसलोचन १-१ तोला, लौह भस्म २ तोला, मिश्री ४ तोला, शुद्ध शिलाजीत ८ तोला और शुद्ध गुगल ८ तोला लें। सबको बारीक कूट गूगल के जल में मिला, घी के साथ हाथ से चने के बराबर गोलियां बनाकर रखलें।

इसमें १ तोला मोती भस्म, अभ्र और १ तोला वंग भस्म और मिला दिया जाय, तो यह बहुत उत्तम दवा बनती है।

(शेष पृष्ठ २५८ पर पढ़ें)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोष विपरीत चिकित्सा पद्धति को आयुर्वेद कहा जाता है

(लेखक—श्री धर्मदत्त वैद्य आयुर्वेदालंकार, प्रिंसिपल, आयुर्वेद-महाविद्यालय, गुरुकुल, कांगड़ी)

आयुर्वेद विज्ञान ने शरीर की समग्र क्रियाओं का वर्गीकरण तीन प्रकार से किया है—स्थिति पंक्ति और गति । शरीर में जहां जहां स्थिति का भाव है, उसे कफ तत्व मूलक, जहां पंक्ति का भाव है उसे पित्त तत्व मूलक और जहां गति का भाव है, उसे वायु तत्व मूलक कहते हैं । उसे अदृश्य तथा उसके कार्यों को दृश्यमान माना जाता है । कफतत्व शरीर का संबर्धन कर उसकी स्थिति को स्थिर बनाता है । पित्ततत्व इसके विपरीत पचाकर क्षीणकाय बनाने का कार्य करता है इन दोनों कफ और पित्त के अतिरिक्त वायुतत्व अनेक स्वाभाविक चेष्टाओं को स्थिर रखता है जब तक यह तीनों तत्व अपनी 'सम'—उचित स्थिति में रहते हैं, तब तक शरीर स्वस्थ रहता है और जब कि इनमें से कोई तत्व विषम' या असाधारण स्थिति में होता है तब रोगोत्पत्ति का कारण बन जाता है ।

जब किसी अंग की उष्णता, स्निग्धता, पिच्छिलता आदि स्वाभाविक गुण जो उसके यथावत पोषण के सूचक होते हैं कम हो जाते हैं, तब उस अवयव की जीवनी शक्ति कम हो जाती है । इस प्रकार जब किसी अवयव की प्राण शक्ति अधिक निर्बल हो जाती है, तब उसमें एक निर्बलताजनित विष पदार्थ की उत्पत्ति हो जाना स्वाभाविक है । आवश्यकता से अधिक निर्बल हो जाने वाले अवयव में एक प्रकार के विषाक्त द्रव्य की मात्रा जिसे एलोपैथी में हिस्टामिन अथवा एकसवस्टन्स कहा जाता है—उत्पन्न होता है । प्रहार होने या चोट लगने से क्षत-विक्षत अवयव में भी यह विष द्रव्य उत्पन्न होता है । प्राणशक्ति घटने से अर्थात् दूसरे शब्दों में कहें, तो वायु बुद्धि से उत्पन्न इस विषद्रव्य को वायु-दोष कहा जाता है । वायु दोष का विषेला प्रभाव जब शरीर के कि[illegible] अवयव पर होता है तब उस अवयव की निर्बल [illegible] धातु-दूसरे शब्दों में कहा जाये तो उसकी प्राणश[illegible] अल्प होने के कारण सहसा कुपित अथवा उत्तेजित [illegible] जाता है । वायु धातु की यह प्रतिक्रिया वायु दोष [illegible] निवारण या प्रतिकार के कारण होता है । वायु [illegible] की इस प्रक्रिया को ही वायु प्रकोप कहा जाता है, [illegible] प्रकोप को ही वायु रोग कहते हैं । शरीर चेष्टा [illegible] उचित या साधारण से न्यूनाधिक हो जाना ही [illegible] रोग का प्रधान लक्षण है । इस प्रकार वायुवृद्धि [illegible] कारण वायु दोष उत्पन्न हो जाता है और वायु दो[illegible] कारण ही वायु प्रकोप और वायु रोग होता । इस [illegible] रोग की निवृत्ति के लिये वायु दोष का शरीर में शो[illegible] करना और प्रकुपित वायु धातु का प्रशमन कर[illegible] पुनः उसकी समया यथावत् अवस्था में लाना आवश[illegible] है । वायु दोष का शोधन वस्ति, मृदु विरेचन, [illegible] स्वेदन नस्यादि के द्वारा किया जाता है । ऐसा करते [illegible] रोगी की प्राणशक्ति अधिक निर्बल न होने पाये [illegible] प्रकुपित वायु धातु का प्रशमन भी किसी एक [illegible] द्वारा हो, जो शरीर में उष्णता स्निग्धता, पिच्छिल[illegible] आदि पोषण सूचक लक्षणों को बढाने वाला [illegible] उदाहरणस्वरूप एक लहसन के प्रयोग को सिद्ध कि[illegible] जाता है अथवा घी में सेंकी हुई सोंठ अथवा ए[illegible] बादाम, तिल का तेल, काडलीवर आयल अथवा गू[illegible] आदि किसी स्निग्ध उष्ण गुण बल्य औषधिके प्रयो[illegible] यह उद्देश्य सिद्ध किया जाता है । सतावरी घृत, जीव[illegible] घृत दशमूला आदि रोग शमनकी प्रसिद्ध औषधियां [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी प्रकार किसी अवयव में होनेवाला पचन कर्म अथवा पक्तिकर्म जब तीक्ष्ण हो जाता है अर्थात एक अवयव में उष्णता का गुण बढ़ जाता है, तब वहां अतिपाकजन्य कोई विषद्रव्य उत्पन्न हो जाता है जिसे आयुर्वेद में विषदोष कहते हैं। विष दोष के अधिक बढ़ जाने से ही पूयजनक कीटाणुओं का संक्रमण होता है। पित्त दोष की अनुपस्थिति में यह कीटाणु भले ही हों, किन्तु वे निष्क्रिय होते हैं। पित्त दोष के अस्तित्व में क्षत हुये अवयव तथा संक्रान्त कीटाणु-दोनों की विपरीत बढ़ी हुई विष धातु की जो प्रतिक्रिया होती है. उसे पित्तप्रकोप अथवा पित्तरोग के नाम से पुकारते हैं। एक अवयव अथवा समग्र शरीर में उष्णता बढ़ जाना पित्त रोग का प्रमुख लक्षण है। वह प्रति क्रिया शरीर में उत्पन्न पित्त-प्रकोप का निवारण करने के लिये होती है। पित्त दोष की चिकित्सा का लक्ष्य भी पित्तदोष का शोधन और कुपित पित्त धातु का शमन कर पुनः उसे अपनी सामान्य अर्थात् सम अवस्था पर ला बैठाना उचित है। पित्त दोष का शोधन विरेचन रक्तावषेचन आदि अनेक विधियों से किया जा सकता है और पित्त धातु के प्रशमन तथा उसे सम स्थिति में लाने के लिये त्रिफला, हरड़ शीत देश, शीतजल आदि शीतशामक गुण द्रव्य के प्रयोग किये जाते हैं।

इसी प्रकार जब किसी अवयव की स्वाभाविक पचन क्रिया अर्थात् पक्ति कर्म मन्द हो जाता है, दूसरे शब्दों में कहें, तो उसकी उष्णता घटती जाती है और उसमें स्निग्धता, पिच्छिलता गुरुता आदि पोषण सूचक लक्षण बढ़ जाते हैं। तब उसमें पचन की हीनता के परिणामस्वरूप उत्पन्न किसी विष द्रव्य को 'आमदोष' अथवा कफदोष कहा जाता है। इस दोष के उत्पन्न होने से उस अवयव में शोथजनक कीटाणु का संक्रमण होता है। कफदोषकी अनुपस्थिति में ये कीटाणु क्रियाहीन ही रहते हैं। कफ दोष के निवारण के लिये तथा कफदोष के कारण संक्रान्त कीटाणुओं के उस अवयव की कफधातु में एक प्रति क्रिया होती है, जिसे कफ प्रकोप अथवा कफ रोग कहते हैं। किसी एक अवयव में अथवा शरीर में उष्णता का साधारण से अधिक कम हो जाना, स्निग्धता, पिच्छलता आदि का बढ़ जाना कफ रोग का लक्षण है। इस कफ रोग की निवृत्ति के लिये आवश्यक यह है कि कफ दोष का शोधन और प्रकुपित कफधातु का शमन किया जाय और तद्पश्चात उसे सम अवस्था में लाया जाय कफदोष के शोधन के लिये नस्य, वमन, स्वेदन, विरेचन आदि प्रत्येक प्रकार का प्रयोग किया जाता है। उपवास और रूक्ष भोजन से भी उसका शोधन हो सकता है और कफ धातु के प्रशमन के लिये शरीर में उष्णता, रूक्षता, लघुता आदि गुण बढ़ाने वाले द्रव्य-जैसे पञ्चकोल, क्षार मधु, मद्य, गोमूत्र साधित मण्डूर, गोमूत्र साधित हरड़ का चूर्ण, उष्णोदक आदि का उपयोग किया जाता है।

आयुर्वेद के मतानुसार शरीर में वातादि धातु में कौन विषम और कौन असम हो जाती है, यह जान लेने पर रोग का कारण पकड़ में आ जाता है। असम हो जाने से तीनों दोषों का शोधन और प्रकोप का प्रशमन कर उन्हें पुनः अपनी 'सम' उचित-स्थिति पर स्थापित करना ही रोग की वास्तविक चिकित्सा है। रोग-निदान की यह पद्धति बात पित्त-कफ दोष की वृद्धि रोग का प्रमुख कारण है। फिर भी कीटाणु आदि अन्य रोग कारणों से भी आयुर्वेद चिकित्सा इनकार नहीं करती। रोग-चिकित्सा में दोष शोधन और प्रकुपित या विषम हो जाने वाले वात-पित्त-कफ आदि को पुनः सम अवस्था में स्थापित करने पर आयुर्वेद अत्यधिक बल देता है। यह उद्देश्य जिन औषधियों से सिद्ध होता है उनमें से सब का प्रयोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया जाता है। आयुर्वेद तो त्रिदोष चिकित्सा पद्धति ही है। दोष को रोग का कारण माना जाता है और दोष का निवारण या शोधन कर विषम धातु को सम स्थिति में लाने के प्रयत्न को दोष विपरीत-चिकित्सा या दोष-प्रत्यनीक चिकित्सा कहा जाता है। आयुर्वेद का कथन है कि दोष उत्पन्न होने पर ही रोग की उत्पत्ति होती है। निर्दोष अवयव में रोग की उत्पत्ति कदापि सम्भव नहीं। आयुर्वेद की स्पष्ट घोषणा है कि दोष को उत्पन्न करने वाले कारण, उन कारणों से उत्पन्न दोष, उस दोष से उत्पन्न रक्त मांसादि शारीरिक धातुओं की विकृति, इन तीनों को मिटाने का उपाय भली भांति सोच विचारकर किया जाय तो रोग निस्सन्देह दूर हो जायगा।

पाश्चात्य चिकित्सा-विज्ञान 'कीटाणुविपरीत' अथवा 'लक्षण विपरीत' चिकित्सा पर जोर देता है। फलतः तात्कालिक लाभ तो महान होता है किन्तु स्थायी लाभ बिलकुल होता ही नहीं। इससे विपरीत आयुर्वेद शरीर में एकत्रित हुये दोष के निवारण अथवा शोधन पर तथा विषम हुये दोष के निवारण अथवा शोधन पर तथा विषम हुये वायु पित्त कफ को पुनः सम अवस्था में पहुँचा देने पर जोर डालता है, फलतः रोग का समूलोन्मूलन हो जाता है, अर्थात् रोग की जड़ ही कट जाती है। यहां तक कहने का आशय नहीं, कि कौन सी चिकित्सा-पद्धति अत्युत्तम है दोनों ही पद्धतियां-आयुर्वेद और पाश्चात्य उत्तम है। किन्तु आयुर्वेद चिकित्सा-पद्धति तो रोग को शरीरजन्य मानती है और शरीर में उत्पन्न दोष के निवारण पर जोर देती है। पाश्चात्य चिकित्सा-पद्धत्ति मुख्य रूप से रोग को बाहर से आया हुआ मानती है और कीटाणु आदि कारणों का प्रतिकार करने में अधिक वजन डालती है। जो पद्धति शरीर को निर्दोष बनाने की ओर विशेष ध्यान देती है, वहीं रोग के मूल को उखाड़ फेंकने में समर्थ होती है। इसी लिये आयु[र्वेद] चिकित्सा पद्धति अधिक पूर्ण चिकित्सा मालूम पड़[ती] है। आभ्यन्तर रोग अथवा निज रोग की चिकित्सा [के] लिये आयुर्वेद 'दोष विपरीत' चिकित्सा का विध[ान] करता है, किन्तु बाह्य रोगों तथा आगन्तुक रोगों [के] सम्बन्ध में पाश्चात्य चिकित्सा के समान 'विष विपरी[त]' चिकित्सा का ही विधान करती है, इसी लिये फि[रंग] रोग के लिये पारद, सोमल आदि का व्यवहार कि[या] जाता है, जो 'विष विपरीत' है। आयुर्वेद 'विष वि[प]रीत' चिकित्सा को गौण तथा दोष विपरीत' चिकि[त्सा] को प्रधान मानता है।

'दोष-विपरीत' चिकित्सा का ही नाम आयु[र्वेद] है। त्रिदोष दृष्टि से ही शरीर क्रिया विज्ञान [व] पेथोलोजी अर्थात् 'शरीर प्रकृति-विज्ञान ठीक स[मझ] में आयेगा। आयुर्वेद तो शरीर की सम प्राकृ[तिक] अथवा प्रकृतिक चेष्टाओं की व्याख्या वातपित्त क[फ] इन तीनों धातुओं को समावस्था में स्थापित करने [की] व्यवस्था विधान के अनुसार करता है। —

(शेष पृष्ठ २५५ का)

मात्रा और उपयोग—इसमें से १—१ गो[ली] दूध या त्रिफला के काढ़े अथवा गुडूचीके हिम या [...] से लिया करें। हाई ब्लडप्रेशर में इससे बहुत [लाभ] होता है। क्योंकि हाई ब्लडप्रेशर की उत्पत्ति बृह[दन्त्र] में आम विष संगृहीत होने से होती है। जिनकी आ[दत] दिन भर कुछ न कुछ खाने की रहती है, उनके [...] में आम विष का संचय होता है। उस हेतु से [...] बार-बार अपचन होता रहता है। बाद में पचन [क्रिया] में गड़बड़ी होने की वजह से रस दूषित हो रक्त[की] दुष्टि करता है, जिससे रक्त दबाव की वृद्धि होती [है।] ऐसी स्थिति में चन्द्रप्रभा वटी के सेवन से रक्त द[बाव] कम हो जाता है। यदि साथ में कब्ज हो तो साथ [में] जुलाब की एक-दो गोली दे देने से कब्जियत भी [दूर] हो जाती है।

क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुधान

अधिक मानसिक परिश्रम, चिन्तन, अध्यापन, या किसी अकथनीय कारण से जिनका दिमग कमजोर होगया है, स्मरणशक्ति घट गई है, हृदय दुर्बल होगया है, सिर में हल्का २ दरद और थकावट रहती है उनके लिए 'बुधान' बहुत लाभदायक है । इसके सेवन से अनेक दोष मिट जाते हैं । दिमाग पुष्ट होकर स्मरण-शक्ति तीव्र हो जाती है । इससे उन्माद तक के रोगियों को लाभ हुआ है । बुद्धिजीवी लोगों के लिए वरदान स्वरूप है । मूल्य ४) डाकखर्च १।≈)

निद्राणी

स्वास्थ्य के लिए निद्रा उतनी ही आवश्यक है जितना कि भोजन, जल और शुद्ध वायु । भोजन के पचन और आत्मीकरण से शरीर की प्रत्येक सेल को अपनी स्थिति बनाये रखने की सामग्री मिलती है तो पूर्ण निद्रा से आराम मिलने के कारण घिसी हुई सेलों का पुनः निर्माण हो जाता है और खरच हुई शक्ति पुनः संचित हो जाती है । यदि युवा पुरुष को रात्रि में ६–७ घण्टे निरन्तर गहरी नींद नहीं आती या बीच २ में टूट जाती है तो यह मस्तिष्क धमनियों की कठोरता, पाचन सम्बन्धी रोग, विबन्ध, ब्लडप्रेशर (रक्तचाप) नाड़ी दौर्बल्य आदि व्याधियों का लक्षण है । 'निद्राणी' इन सब अवस्थाओं में अपना निश्चित प्रभाव दिखाती है । कुछ ही मात्राओं के सेवन से रात्रि भर खूब गहरी नींद आने लगती है और प्रातःकाल उठने पर देह में स्फूर्ति और मन प्रफुल्लित होता है । इसमें कोई मादक या विषैला द्रव्य नहीं है । मूल्य ४) आधाकोर्स २॥) डाकखरच १।≈)

नेत्राण

आंखों का दुखना, नेत्र पीडा, लाली, जलन, खुजली, सूजन, कीचड आना तथा अन्य नेत्र रोगों में परम लाभकारी है । दो बून्द नेत्रों में डालते ही ठंडक पड जाती है और २-४ दिन डालनेसे आराम होजाता है । वैसे ही कभी २ डालते रहने से नेत्र साफ रहते हैं और कोई रोग नहीं होने पाता मूल्य ॥)

नाग सुरमा

यह सुरमा रसायनिक प्रक्रिया द्वारा बनाया जाता है । यह सभी नेत्र रोगों में लाभकारी है । दृष्टिमन्दता, दूर या निकट कम दिखाई देना, तिमिर, धुन्ध, जाला, आंखों से पानी बहना आदि रोगों को नष्ट करके दृष्टि को तेज बना देता है । लगाते ही नेत्रों में ठंडक प्रतीत होती है । ६ माशा की शीशी १॥) तीन माशा १)

हनीक

इस दवा का प्रयोग आपको मोतियाबिन्दु के आपरेशन के कष्ट से बचा सकता है । प्रारम्भिक मोतिया इससे मिट ही जाता है किन्तु बढा हुआ मोतिया आगे बढने नहीं पाता तथा निरन्तर कई मांस लगाते रहने से आराम भी हो जाता है । मूल्य ५)

पायोगन

यह पायोरिया की सफल दवा है । इस दवा को दांतों पर मलकर ५ मिनट लगा रहने दो और फिर कुल्ला कर डालो । इस प्रकार प्रातःकाल, दोपहर और रात्रि को सोने से पहिले लगाने से मसूढों का गला हुआ मांस भरने लगेगा, पीप और रक्त का बहना बन्द होकर हिलते हुए दांत मजबूत हो जाते हैं । एक औंस का मूल्य २॥)

दन्तद्युति मंजन

यह मंजन मसूढे फूलना, दन्त पीडा, पानी लगना, मैल जमना, खून जाना, मुख में दुर्गन्ध आना आदि अनेकों रोगों को दूर करके दांतों को स्वच्छ चमकदार बनाता है । लगाने के बाद मुख से सुगन्धि आने लगती है । मूल्य ॥)

गठना

गठना–गठिया (Gout) सन्धि पीडा, सन्धि वात, रींघनवाय, लकवा, कटिपीडा, पार्श्वशूल तथा सम्पूर्ण वायु रोगों के लिए यह अकेली और बहुपरीक्षित दवा है । खाट में पडा रोगी भी ३ दिवस के सेवन से चलने फिरने लग जाता है । इससे हर प्रकार के वायु रोग नष्ट हो जाते हैं । एक शीशी की कीमत ३)

जी० एस० आयुर्वेदिक रीसर्च प्रॉडक्टस ३ दरियागंज, देहली ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रत्नों के साथ तुलनेवाली अनुपम पुस्तकें

४० से अधिक आयुर्वेदीय पुस्तकों के रचयिता प्रसिद्ध लेखक व चिकित्सक राजवैद्य डा० गणपतिसिंह बर्मा द्वारा रचित व प्रकाशित—यह वही पुस्तकें हैं जिनकी वैद्य, हकीम, डाक्टर और जनसाधारण मुक्तकंठ से प्रशंसा कर रहे हैं। जिनके विषय में देश के गणमान्य लोगों की सम्मति है कि इन पुस्तकों का प्रत्येक घर में होना अत्यावश्यक है। क्योंकि इनके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक स्थानमें सहसा होजाने वाले रोगों का सरलतापूर्वक इलाज कर सकता है। प्रत्येक पुस्तक के कई २ संस्करण हो चुके हैं जो कि इनकी लोकप्रियता का सबसे बड़ा प्रमाण है।

अनुभूत योग चिन्तामणि

इसके लेखक ने ५ वर्ष तक लम्बी २ यात्रायें करके संन्यासियों की कठिनतम सेवा और भ्रमण के अथक परिश्रम के अतिरिक्त ५४३५ रुपये खर्च करके जो ५३३ जादु असर अनुभूत नुस्खे प्राप्त किये थे वह निष्कपट भाव से इस पुस्तकमें प्रकाशित कर दिये हैं। भारतवर्ष के सैंकडों वैद्यों, हकीमों और डाक्टरों ने इन सब नुस्खों की पचासों बार परीक्षा करके शत प्रतिशत अनुभूत होनेके प्रमाणपत्र दिये हैं जिससे सिद्ध होगया है कि इसमें एक भी योग ऐसा नहीं जो अनुभूत सिद्ध न हो, सबके सब संन्यासियों के हृदयके गुप्तयोग हैं। भारत के गणमान्य हकीमों व वैद्यों का निर्णय है कि जिसके पास यह पुस्तक नहीं, निःसन्देह उसकी चिकित्सा और औषधालय अधूरा है। मूल्य प्रथम भाग पांचवीं आवृति ४।) द्वितीय भाग ४) डा० ख० जुदा।

१५ वर्ष के कठिन परिश्रम का फल

अनुभूत योग प्रकाश

आज से १५ वर्ष पूर्व जिस पुस्तक को प्रकाशित करने का आयोजन प्रकाशित किया गया था वह पुस्तक अब छपकर तैयार होगई है। इस पुस्तक के योगोंके विषय में केवल इतना बतला देना ही काफी होगा कि गत १५ वर्ष के सतत उद्योग से बड़े २ साधु, महात्मा, फकीरों भीलों से लेकर राजा, रईसों तथा ख्यातिवान प्रसिद्ध विद्वान वैद्यों, हकीमों और डाक्टरों के उन अनुभूत चमत्कारी योगों को इस पुस्तक के पृष्ठों पर अंकित कर दिया है-जिनको आज तक जमाने की हवा भी न लगी थी। फिर इसके लेखक डा०जी० एस० वर्मा का नामही बडी जमानत है कि पुस्तक कैसी है। इसमें सबसे बडी वह रीसर्च आपको मिलेगी जि[illegible] आज तक आपने सुना भी न होगा अर्थात समुद्री द्रव्यों यथा मुक्ता शुक्ति, प्रवाल, शंख, कपर्दिका आ[illegible] का तेल बनाना। इन तेलों की तुलना में इन द्रव्यों [illegible] भस्में बहुत तुच्छ लाभ पहुँचाती हैं। इन तेलोंसे अने[illegible] कष्टसाध्य कहे जाने वाले रोग शीघ्र मिट जाते हैं। दूसरी विशेषता यह है कि इन तेलों से उडने वा[illegible] सभी द्रव्य यथा पारद, हिंगुल (शिंगरफ) आदि स्थि[illegible] हो जाते हैं। इस पुस्तक में कोई ऐसा रोग नहीं छो[illegible] जिस पर अनुभूत सिद्ध योग न छपा हो। मूल्य [illegible] डाकखर्च ।।।≡)

इन्जेक्शन बनाना व लगाना सीखो

इन्जेक्शन चिकित्सा तत्काल प्रभाव दिखा[illegible] वाली होने से आज लोकप्रिय हो रही है, किन्तु वैद्[illegible] हकीमों को इसकी जानकारी न होने से उन्हें ब[illegible] कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। इन्हीं भा[illegible] से प्रेरित होकर यह पुस्तक तैयार की गई है, जिस[illegible] समस्त रोगों की चिकित्सा आयुर्वेदिक, होम्योपैथि[illegible] और एलोपैथिक इन्जेक्शनों द्वारा ही करना बतला[illegible] गया है। रोगशीर्षक के नीचे क्रमशः प्रत्येक रोग[illegible] तीनों प्रकार के इन्जेक्शन ऐसे ढंग से लिखे गये हैं जिससे चिकित्सक एक क्षण में निश्चय कर सकता कि कौनसा इन्जेक्शन किस स्थान पर, कितनी मा[illegible] में, कितने अन्तर से, किस प्रकार लगाना चाहिये [illegible] साथ २ इन्जेक्शन बनाने की विधि भी लिखदी [illegible] है। आयुर्वेदिक इन्जेक्शन जिन द्रव्यों से बनाये ज[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं वह तमाम आपके घर में, खेतों और जंगलों में सर्वत्र मिल सकते हैं। एक-एक रोग पर कई २ इन्जेक्शन बनाने के योग लिखे गये हैं। इसके अतिरिक्त सीरम, वैक्सिन, पेनिसीलीन, विटामिन्सके इन्जेक्शनों का वर्णन और उनको लगाने की सरल व निरापद सचित्र विधि भी खूब समझाकर लिखदी गई है। इस पुस्तक को पढने के बाद इन्जेक्शनोंके विषय में जानने को कुछ भी शेष न रहेगा और सब प्रकारके इन्जेक्शन तरल (लिक्विड) टेबलेट व पौडरादि रूप में बना व लगा सकेंगे। मूल्य ५) डाकखरच ।।।≈)

सिद्ध रसायन

रस-रसायन की जिन कठिन क्रियाओं से वैद्य-बन्धु घबराकर उनके दिव्य गुणों से वंचित रह जाते हैं, उन क्रियाओं का लम्बा अनुभव करके विद्वान लेखक ने उनका सरल तरीका इस ग्रंथमें दर्शाया है और साथ ही महान रसायनाचार्य नागार्जुन और अन्य सिद्धों की संचिकाओं के अज्ञात योगों को उनकी गुत्थी सुलझाकर प्रकाशित किया है जिनसे पाठक न केवल काया (काया-कल्प) रंगने में ही सफल होंगे बल्कि स्थिर मति वाले माया (कीमिया) रंगने में भी सफल होंगे। इस प्रकार पाठकों को जहां आर्थिक संकट से मुक्ति मिलेगी वहां असाध्य समझकर छोड दिये जाने वाले रोगों के वे सिद्धहस्त चिकित्सक भी बन जावेंगे। इस पुस्तकके कुछेक योगों का दिग्दर्शन करा देने से आपको अनुमान हो जायगा कि यह कितना अपूर्व ग्रन्थ है। यथा—शुद्ध बद्ध और सिद्ध करनेवाली दिव्य औषधियां, औद्भिदाम्ल व बूटियां रस बन्धन, गन्धक को स्थाई करना, बद्ध पारद को सिद्ध बनाना, रजत रंजन (कीमिया) अभ्रक सत्व की द्रुति, द्रुतिसे पारद बन्धन, बंग स्तम्भन, पारद भस्म रक्तयोगेन ताम्रोद्धार (कीमिया) तांबा और रजत (चांदी) वेधी सिद्ध हरताल हरताल कल्प देह व लौह वेधी सिद्ध हरिताल तैल, सिद्ध कुचला कल्प, सर्वरोग हर फिटकडी रसायन (कल्प) पुरुषों के गुप्त रोगों पर रामबाण सिद्ध खादक, पारद गुटिका बगवेधी, सिंगरफ मोमिया बनाना, नौसादर तैल, सिद्ध गोरखी जलमुद्रा, सिद्ध गन्धक—एक गिरनारी महात्मा का योग जिसको बनाना अति सरल है और क्षय (T. B.) संग्रहणी जैसे अनेक भयंकर रोगों का सफल इलाज है आदि। इसमें अन्य पुस्तकों की भांति जोड़-तोड कर एकत्र की हुई सामग्री नहीं है बल्कि लेखक ने जीवन भर का अनुभव बन्द किया है। इसके पाठकों के लिए लेखक का सद्परामर्श और सहायता भी सदैव प्रस्तुत रहेगी। मूल्य ५) डाकखरच ।।।≈)

संन्यासियों की चमत्कारी गुप्त बूटियां

इस पुस्तक में सैंकड़ों ऐसी ही जड़ी-बूटियों के गुप्त रहस्य प्रकट किये गये हैं, जिनकी बदौलत संन्यासियों की धाक जमी हुई है। इनमें से अधिकांश बूटियां वही हैं, जो आपको जंगल, खेत, बागीचों और पंसारियों की दुकानों पर मिल जावेंगी जिनसे आवश्यकता पड़ने पर सिर से पांव तक के समस्त रोगों का इलाज हर जगह प्रत्येक आदमी आसानी से कर धन और यश कमा सकता है। इस पुस्तक के पढ़ लेने के बाद आपके पास रोगियों का तांता बंधा रहेगा। विषय सूची मुफ्त। ४५० पृष्ठ, २ भाग मूल्य ५।।) पो० ।।।≈)

गुप्त योग रत्नावली

इस पुस्तक में डा० नेगी के व निज के बड़-बड़ गुप्त योग प्रकाशित किये गये हैं जिनको भारतवर्ष के कोने २ से तथा अरब, मिश्र और अफ्रीका आदि प्रदेशों के विभिन्न स्थानों में जाकर लेखक ने प्राप्त किये थे। मूल्य २।।) डा० ख० ।।।)

पेटेण्ट औषधियां व भारतवर्ष

संसार में सबसे अधिक लाभदायक व्यापार पेटेण्ट औषधियों का है। अमृतधारा और सुधासिंधु के मालिकों ने १—१ पेटेण्ट दवा के नुस्खे से लाखों रुपया कमाया है। विलायती फर्में एक-एक पेटेण्ट दवा से बेहद रुपया कमा रही हैं। यदि उनकी तरह आप भी भारतवर्ष, इग्लैंड, अमरीका की प्रसिद्ध और सर्वप्रिय प्रतिवर्ष करोड़ों रुपयों की बिकने वाली पेटेण्ट औषधियों के नुसखे बिना किसी कष्ट के घर बैठे सीख कर साधारण पूंजी से सैंकड़ों रुपये मासिक की स्थाई आमदनी पैदा करना चाहते हैं तो आज ही 'पेटेण्ट औषधियां और भारतवर्ष' नामक पुस्तक की एक प्रति मंगाकर पढें। १६७ योगवाली मू० ।।।≈) डा०ख० ।।।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यौवन के गुप्त रहस्य

लुटी हुई जवानी और बीता हुआ यौवन वापिस लाने के अनुपम उपाय–पुरुषत्व और जवानी के वह गुप्त रहस्य, जिनको जानने से अशक्ति के ऐसे रोगी जिन्हें किसी दवा से लाभ नहीं हुआ या सैंकड़ों रुपये की दवा खाकर भी निराश बैठे है निःसन्देह सशक्त बन सकते हैं। मनुष्य देह का वह केन्द्र जहां से स्वास्थ्य और यौवन का रस झरकर समस्त शरीर का पोषण करता है, उस केन्द्र को शक्ति प्रदान करने के अनूठे उपाय, जिससे लुटो हुई जवानी और बीता हुआ यौवन पुनः लौट आता है। पुरुषों के अकथनीय भयंकर रोग बिना दवा सेवन किये ही किस प्रकार नष्ट हो जाते हैं। ऊर्द्ध्वरेता होने का वह प्रयोग जिससे पुरुष की शक्ति में कमी नहीं आती। रसग्रंथियों से आश्चर्यजनक दवाइयां बनाने के प्रयोग। हजारों रुपये खर्च करके डा० वोरनाफ की बताई हुई बन्दर की रसग्रंथि लगवाने व आपरेशन का कष्ट सहन किये बिना ही सुगमता से प्रत्येक स्त्री-पुरुष वही शक्ति कैसे प्राप्त कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त पुरुषों के रोगों के सम्बन्ध में निदान व ऐसे २ गुप्त प्रयोग इस पुस्तक में दर्ज किये गए हैं, जिनको उपयोग करनेवाला पुरुषत्व पर गर्व कर सकता है। मूल्य ३) डाकखरच ।।।)

हिन्दी से अंग्रेजी मैट्रिक

विश्व के ज्ञान, विज्ञान और व्यापार तथा कला-कौशल को सीखने के लिए आज की विश्व-भाषा अंग्रेजी का सीखना सबके लिए जरूरी है। इसको सीखना कोई कठिन भी नहीं है। जिस प्रकार अंग्रेज मातायें अपने बालकों को अपने घरों में ही अंग्रेजी सिखा देती हैं ठीक उसी प्राकृतिक नियमानुसार यह ३२० पृष्ठोंकी पुस्तक तैयार की गई, जिसे २ घंटा प्रति दिन पढ़ने से केवल हिन्दी पढ़े-लिखे व्यक्ति को भी चार मास में भली प्रकार याद हो जाती है। इसमें ए० बी० सी० डी० से लेकर आवश्यक ग्रामर (व्याकरण) अनुवाद आदि इङ्गलिशकी मैट्रिक तक का सब ज्ञान हिन्दी से अंग्रेजी और अंग्रेजी से हिन्दी में ऐसे सरल और सुबोध ढंग से ४८ पाठों में छपा है कि जिससे केवल अंग्रेजी में मैट्रिक की परीक्षा देने वाले लड़के-लड़कि[याँ] निसन्देह पास हो जाते हैं। दसवां संस्करण अ[भी] छपा है। मूल्य ३।।) डाकखरच ।।।=)

७८६ वर्ष का प्राचीन रस ग्रन्थ

बसवराजियम—हजारों वर्ष पहिले दक्षिण भार[त] में चालुक्यवंशीय राजाओं का राज्य था। उनके प्रधा[न] मन्त्री रुद्र साम्प्रदायी महान रसतन्त्रज्ञ बसवराज [ने] सं० १२२५ में इस सिद्ध सम्प्रदायी अनुपम ग्रन्थ [की] रचना की थी, जिसमें भगवान रुद्र के अनुयायी व[न] में विचरने वाले रसायनाचार्य नागार्जुन, नागबोधि, नित्यनाथ, चर्पटी, कपोरी, पूज्यपाद आदि योगियों [का] रसज्ञान भरा पड़ा है, श्री गोविन्दपादाचार्य के कथना[]नुसार शरीर को अजरामर करने में पारे की बराब[र] करने वाली न तो कोई जड़ी बूटी है और न ही को[ई] रसायन और भस्म है। पारे में यह बड़े आश्चर्य [की] बात है कि वह स्वयं मूर्च्छित होकर रोगी के रोग [को] दूर करता है और बंधा हुआ होकर मुक्ति देता है त[था] अच्छी तरह मरा हुआ दूसरों को जीवन देता है। आज मद्रास प्रान्तीय वैद्यों की जो प्रतिष्ठा, यश औ[र] कीर्ति सर्वत्र प्रसिद्ध हो रही है वह सब इसी ग्रन्थ [के] योगों का प्रताप है। यह ग्रन्थ तैलंग भाषा में ता[ड़] पत्रों पर लिखा हुआ उपलब्ध हुआ था, जिससे अ[ब] तक तैलंग भाषा-भाषी वैद्य ही लाभ उठाते रहे, कि[न्तु] यह जानकर आप अतीव प्रसन्न होंगे कि अब आयुर्वे[द] वृहस्पति श्री गोवर्धन जी शर्मा छांगाणी के अतुल प[रि]श्रमके फलस्वरूप आज यह ७८६ वर्ष का प्राचीन तैलं[ग] हस्तलिखित दुर्लभ ग्रन्थ हिन्दी भाषा में भी हमारे द्वा[रा] प्रकाशित हो गया है। इस ग्रन्थ के विषय में कहा ग[या] है कि सतयुग में चरक, त्रेता में रसार्णव तथा द्वा[पर] में सिद्ध विद्याभू का महात्म्य है उसी प्रकार कलियु[ग] में बसवराजियम पूज्य ग्रन्थ है। इसमें जो निदा[न] लक्षण प्रत्येक रोग के बतलाए हैं। उनको समझ[कर] इसमें वर्णित योगों द्वारा जो चिकित्सा करेगा, भगव[ान] रुद्र की कृपा से निःसन्देह वह सर्वत्र यश और सि[द्धि] प्राप्त करेगा। २५ प्रकरणों वाले सम्पूर्ण ग्रन्थ का मू[ल्य] ८।।) डाकखरच १=)

पता—रसायन फार्मेसी (३ दरियागंज) पो० बो० ११२५ देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

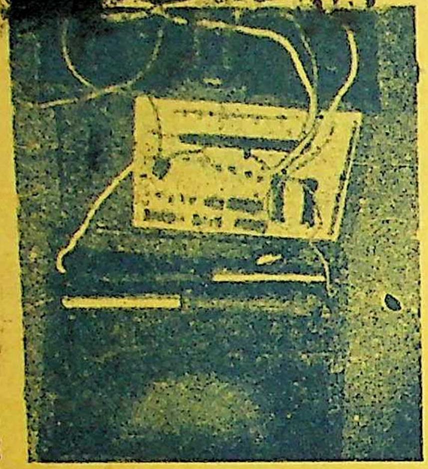

सेल्फ एक्टिंग
इलेक्ट्रो मेग्नेटिक

यह बेटरी सेल पर चलने वाली बिजली के इलाज की मशीन है। इसके द्वारा गठिया, आमवात आदि सभी वातरोगों, पक्षाघात, लकवा, अर्श, मधुमेह, अनेक प्रकार की शारीरिक पीड़ाओं व शोथ आदि ३३ रोगों का इलाज किया जा सकता है। किस रोग पर इस मशीन द्वारा बिजली का किस प्रकार प्रयोग किया जाय इसके लिए पुस्तिका साथ भेजी जाती है। मूल्य २५) डाक व्यय २।।।=)

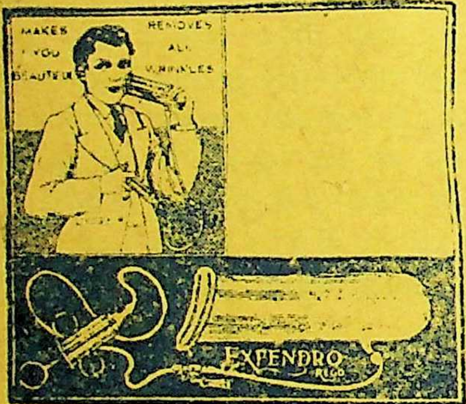

एक्सपैंडरो

इस यन्त्र की उपयोगिता प्रायः सभी जानते हैं। नसों और मांसपेशियों की शिथिलता में जहां प्राकृतिक रूप से रक्त का परिभ्रमण सम्यकरूपेण नहीं होता वहां इसके प्रयोग से आशातीत लाभ होता है। नसों और मांसपेशियों को सशक्त बनाने के लिए इसका प्रयोग करना उत्तम उपाय है। मूल्य १५) बढ़िया १८) डाक खरच पै० २।।)

वर्मा एलोपैथिक चिकित्सा

'एलोपैथिक चिकित्सा' की उपयोगिता ही इस लोकप्रियता का सबसे बड़ा कारण है। घर बैठे डाक्टर बना देने वाली इस पुस्तक में स्त्रियों, पुरुषों तथा बच्चोंको होने वाले हर रोग की अनुभव सिद्ध एलोपैथिक (डाक्टरी) चिकित्सा दी गई है। जिससे हर बीमारी का इलाज आसानी से किया जा सकता है। हर रोग के कारण, लक्षण, चिकित्सा—जहां पेटेण्ट मेडिसन देना ही ठीक है वहां पेटेण्ट मेडिसन, जिस हालत में जो योग देना उचित है वह, जहां इन्जेकशन देना आवश्यक है वहां इंजेक्शन और जहां पर नवीन औषधियों का देना ठीक है वहां नवीन औषधियें अर्थात रोग को हर प्रकार से ठीक करने के उपाय दे दिये हैं और जहां सर्जिकल प्रयोग ही उचित है वहां वह भी दे दिया गया है। पथ्य आदि का भी पूरा वर्णन है। ४०० रोगों का निदान व चिकित्सा आदि सब कुछ दिया है। ४०० पृष्ट मूल्य १२) डाकखरच १=)

पता—रसायन फार्मेसी ३, दरियागंज, पो० बो० ११२५ देहली

वा० मी० एस० वर्मा मुद्रक व प्रकाशक द्वारा क्लासिक प्रिंटिंग प्रेस, देहली में छपकर प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसायन

जौलाई १९५६

वर्ष ९ वार्षिक ३)

अंक १ इस अंक का ।=)

गुरुकुल पत्रिका

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी
26/7/56

सम्पादक
साहित्य मनीषी
डा. गणपति सिंह वर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसायन फार्मेसी देहली का प्रमुख सचित्र मासिक पत्र

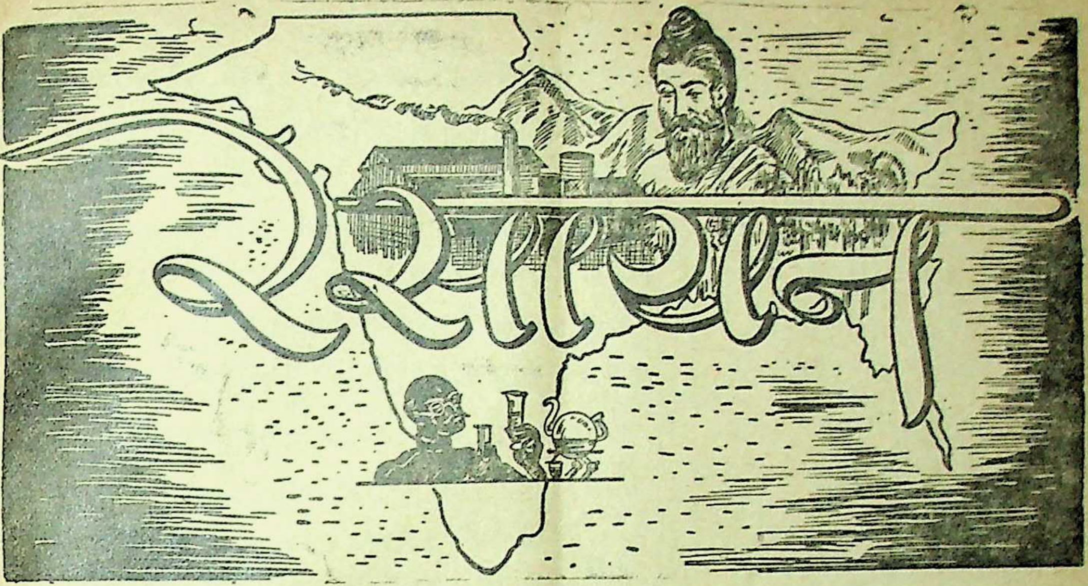

'सिद्ध रसे करिष्यामि, निर्दारिद्र्य मयं जगत् ।'

वर्ष ६ | देहली जोलाई १९५६ | अङ्क १

हमारी आंखें

(लेखक—डा० एम० एस० अग्रवाल)

तीसरा अध्याय

नेत्रों की परीक्षा के साधन

रेटिनस्कोप

इस यन्त्र की सहायता से नेत्रों की कमजोरी की जांच की जाती है । यन्त्र से रोशनी की किरण जो इसमें लगे दर्पण की सहायता से आंख की पुतली पर गिरती है । वह एक प्रकारकी छाया प्रगट करती है, यह यन्त्र काले कमरे (Dark room) में २५ या कुछ अधिक नम्बरके बल्बकी सहायतासे काममें लाया जाता है । रेटिनस्कोप के नये यन्त्र में बेटरी का भी प्रबन्ध है । यन्त्र के छोटे छिद्र में से पुतली ज्योतित दीखती है । आरोग्य नेत्रों में यह लाल या पीली दृष्टिगति होती है जिस समय रोशनी की किरण ठीक प्रकार से केन्द्रित हो जाती है उस समय पुतली के पास एक परछांई दृष्टिगत होती है । जो यन्त्र के हिलाने पर अपना स्थान बदलती है । जिस समय यन्त्र ६ फीट की दूरी पर हो और छाया यन्त्र के दायें बायें हिलाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर विपरीत दिशा चलती हो तो दूर की कमजोरी या मायोपिया का ज्ञान होता है। जिस समय छाया यन्त्र के साथ चलती मालूम हो उस समय समीप की कमजोरी या हाईपरमेट्रोपिया का रोग जाना जाता है। जिस समय दायें बायें हिलाने पर एक दिशा और ऊपर नीचे हिलाने पर छाया गति में तेजी या कमी हो तो एस्टिगमेटीजम का रोग होता है। अगर दोनों दिशाओं में विभिन्न गति दृष्टिगत हो तो मिक्सड ऐसटिगमेटीजम जाना जाता है।

आज के युग में यह यन्त्र बड़ा ही लाभकारी सिद्ध हुआ है लेकिन यह देखने में आया है कि बहुत से नेत्र विशेषज्ञ दूर दृष्टि चार्ट पर ही परीक्षा लेकर ऐनक का नम्बर दे देते हैं। इसकी सहायता से ऐनक का नम्बर देना सदा लाभकारी सिद्ध हुआ है।

ओपथलमोस्कोप

प्राचीन काल में नेत्रों के छायापट एवं अन्य रोगों की ठीक जानकारी के लिए कोई ऐसा यन्त्र नहीं था जो भीतरी ज्ञान विशेषज्ञ को दे सके। १८५१ ई० में हैल्महोल्टस ने इस यन्त्र को आविष्कृत किया।

इस यन्त्र में एक अजीब तरीके से शीशे को लगाया है जो अन्दर लगी बेटरी के प्रकाश को अन्दर फेंकता है। जिस समय प्रकाश कानीनिका मण्डल, पुतली एवं विट्रियस को भेद कर छायापट पर पहुंचता है उस समय आंखों की फिल्म देखने में आ जाती है। इस यन्त्र की सहायता से किसी भी अवस्था में नेत्रों की परीक्षा की जा सकती है। कम प्रकाश या अंधेरे कमरे में इस यन्त्र का प्रयोग ठीक प्रकार से होता है। इस यन्त्र से कानीनिका मण्डल, कृष्णमण्डल, कांच, विट्रियस, छायापट, ओपटिक नर्व एवं केन्द्र बिन्दु के रोगों को ठीक प्रकार से जाना जा सकता है।

चश्मे का बक्स

चश्मे के बक्स में नेत्र परीक्षा के हरेक तरह के नम्बर के शीशे होते हैं। जिस रोगी को दूर की वस्तुयें साफ दृष्टिगत नहीं होतीं उस समय कोनकेव एवं समीप के रोगी को कोनवेक्स के शीशों को प्रयोग में लाया जाता है। जिस समय मोतियाबिन्द की चीरा फाडी में प्राकृतिक कांच निकाल लिया जाता है उस समय इसी बक्स की सहायता से ठीक नम्बर दिया जाता है। ऐसटिगमेटिजम एवं प्रीजम के रोगियों को ऐनक का नम्बर इसी की सहायता से दिया जाता है।

दूर दृष्टि चार्ट

इस चार्ट की सहायता से रोगी की नेत्र परीक्षा की जाती है। उदाहरण रूपमें कोई बीस फीट से चार्ट के पहले अक्षर को पढ पाता है तो लिखा जायगा २०।२०० या ६।६०। इसी चार्ट की सहायता से दूर की ऐनक का नम्बर दिया जाता है।

कुछ विशेष बातें

चार्ट पर नेत्र परीक्षा के समय रोगी को २० फीट यानी ६ मीटरकी दूरीपर बैठाना चाहिये। आराम से कुरसी पर बैठ जाने पर पहले दोनों आंखों से और बाद में एक एक नेत्र से चार्ट को पढाना चाहिये।

नजदीक दृष्टि चार्ट

यह चार्ट समीप के नेत्र परीक्षा के लिए प्रयोग में लाया जाता है। युवाकाल में ८ इंच से १० इंच की दूरी से परीक्षा करनी चाहिये। आयु अधिक होने पर रोगी कुछ अधिक दूरी से इस चार्ट को पढता है।

प्लेसीडो डिस्क

इस यन्त्र से कानीनिका मण्डल की ठीक अवस्था का ज्ञान होता है। जिस समय किसी प्रकार की चोट या अन्य नेत्र रोग से कानीनिका में विकृति आ जाती है उस समय इस यन्त्र की सहायता से कानीनिका की ठीक अवस्था का ज्ञान होजाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ विशेष बातें

१—जिस समय नेत्र ठीक होते हैं उस समय इस यन्त्र की छाया बिल्कुल ठीक प्रकार से कानीनिका पर पड़ती है।

२—विकृति आने पर इस यन्त्र में बने गोल दायरे टेढे मेढे दृष्टिगत होते हैं।

स्लिट लैंप

यह यन्त्र कानीनिका की ठीक जांच के लिए कार्य में लाया जाता है। यन्त्र से प्रकाश जिस समय आंख पर पडता है तो कानीनिका का रूप कुछ बढा हुआ मालूम होता है। इसी कारण इस भाग की बारीकी से परीक्षा करने में कोई तकलीफ नहीं होती।

बायोफोटोमीटर

इस यन्त्र से दोनों आंखों की सूक्ष्मता का ज्ञान हो जाता है। जिस समय अधिक प्रकाश को देखकर कम प्रकाश में आते हैं, उस समय नेत्रों की अवस्था क्या होती है? वह इस यन्त्र द्वारा जानी जाती है। विटेमिन ए की कमी का ज्ञान इस यन्त्र द्वारा जाना जा सकता है।

मेडोक्स विंग टैस्ट

इस यन्त्र से भैंगेपन की ठीक अवस्था का ज्ञान होजाता है।

ऐम्बलियसकोप

इस यन्त्र द्वारा दोनों आंखों से एक वस्तु देखने की शक्ति की जांच की जाती है। यह यन्त्र भैंगेपन को दूर करने के लिए बडा ही लाभकारी है।

स्टेरेस्कोप

इस यन्त्र पर अनेक प्रकार की तसवीरें प्रयोग में लाई जाती हैं जो दोनों आंखों से देखते समय एक दिखाई देती हैं। यह यन्त्र भैंगे रोगियों के लिए उपयोगी है।

भैंगेपन दूर करने के चश्मे

इन चश्मों के प्रयोग से भैंगे रोगियों को अपने रोग दूर करने में बडी सहायता मिलती है।

पेरीमीटर

इस यन्त्र द्वारा नेत्रों के आसपास की दृष्टि का ठीक ज्ञान होजाता है। जिस समय नीला मोतिया या कोई छायापट का रोग हो जाता है उस समय नेत्र की दृष्टि की परिधि कम दृष्टिगत होती है।

रंग पहचानने की किताब

[ISHIARA COLOUR BOOK]

इस पुस्तक में अनेक रंगों को मिलाकर गिनतियां लिखी हुई हैं। जो रोगी इन्हें नहीं पढ पाते उन्हें रंगों का अन्धा कहा जाता है।

रंग पहचानने का बक्स

यह एक छोटा सा डिब्बा होता है जिसके चारों तरफ सुराख होते हैं। इन सुराखों के पीछे रंगीन बल्ब या रंगीन शीशा होता है। अंधेरे कमरेमें रोगीको रंग पहचाननेको कहा जाता है। जो रोगी ठीक तरहसे रंग नहीं बता पाते उन्हें रंगोंका अन्धा कहा जाता है।

आई शील्ड

यह एक आंख को बन्द करने के लिए कार्य में लाई जाती है। जिस समय किसी रोगी के एक नेत्र पर बांधकर नेत्र परीक्षा की जाती है।

चौथा अध्याय

नेत्र परीक्षा कैसे करनी चाहिये

नेत्र परीक्षा करनेसे पहले रोगीके रोगके विषयमें जान लेना आवश्यक है। ध्यान रहे बात करते समय विषय से बाहर की बातें नहीं करनी चाहिये। रोगी से निम्नलिखित तरहके प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने पर अन्य नेत्र परीक्षा के साधनों को कार्यमें लाना चाहिए।

क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक लहसुन प्रेमी अंग्रेज

मि० किंग का नारविचन क्लब में व्याख्यान

(लेखक—स्वामी पारसनाथ जी)

[गतांक से आगे]

६—महर्षियों द्वारा लहसुन की प्रशंसा

महात्मा चरक जी ने चरक सू० अध्याय ४ में लिखा है—

'वायुगोला, लाल कोढ, सफेद कोढ आदि समस्त चर्म रोगों में और रक्त के कीटाणुओं को मारने में लहसुन गुणकारी है। यह कटु, स्निग्ध, गरम, गुरु, वायुनाशक और पुन्सत्व शक्ति वर्द्धक रसायन है।'

महात्मा सुश्रुत जी ने सु० सू० अध्याय ४६ व ३४–३५ में लिखा है—

'लहसुन तीक्ष्ण, लेसदार, हल्का, दस्तावर, बलकारक, बुद्धि, स्वर, रंग तथा आंखोंके लिए लाभदायक है। टूटी हड्डी को जोडने वाला है। हृदय के रोग, पुराना बुखार, शरीर का सूखना, कोख का दर्द, कब्ज, अरुचि, मेदे की अग्नि का मन्द होना, खांसी, दमा, कफ के रोग आदि में लाभदायक रसायन है।

श्री भाव मिश्र जी ने–भाव प्रकाश हरीतक्यादि निघण्टु २२१–२२३ में लिखा है—

'लहसुन पाचक है। गले के रोगों के लिए हितकारी है। रसायन है। हिचकी, बुखार मूत्रस्थानके रोग, पुराना जुकाम, बवासीर, शूल में लाभकारी है। बालों को बढाता है।'

भगवान धन्वन्तरि, नरहरि पण्डित, हारीत, राजवल्लभ और मदनपाल ने भी लहसुन की भूरि २ प्रशंसा लिखी है।

श्री कश्यप जी ने अपनी संहितामें 'लशुन कल्प' को ११५ श्लोकों वाले अध्याय से पूरा किया है। वे लिखते हैं—

'ग्रहणी, विदाह, खुजली, फोडा, त्वचा की विवर्णता, चमडे के सब रोग, रतोंधी, अंग का मारा जाना, पथरी, कष्टकारी पेशाब, स्त्रियोंके मासिक स्राव सम्बन्धी रोग, तिल्ली और वातरक्त में लहसुन परम लाभदायक पदार्थ है।'

महात्मा मारीच ने महर्षि कश्यप जी से कहा था-'समस्त स्त्री रोगों में लहसुन हितकर है। रोज लहसुन खाने वाली स्त्री के स्तन, ढीले नहीं होते। सौंदर्य, सन्तान, बल और आयु में कमी नहीं आती। उनका सुहाग बढता है। यौवन स्थिर रहता है। मैथुन वाले रोग नहीं सताते। नितम्ब पतले रहते हैं। वे बांझ नहीं होतीं। बदसूरत नहीं होने पातीं। उनकी सन्तान मजबूत, बुद्धिमान, दीर्घजीवी और खूबसूरत होती है। लहसुन में तेल मिलाकर मृगी रोग का उपचार किया जाता है। योषापस्मार में लहसुन सिद्ध दूध पिलाना चाहिये। मूर्च्छा रोग में लहसुन का नस्य लाभकारी है।

भगवान शिवने माता पार्वती से एक बार कहा था— देखो का० सं० ल० क० १०७—११२)

'सन्तान की इच्छा से ये जो ऋषि पत्नियां यहां आई हैं। उनको तुम लहसन सेवन करने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा दो। सब रोगों को दूर करने वाले लहसन के गुण उनको समझा दो!'

लहसुन के विषय में

(विज्ञानवेत्ता प्रोफेसर फुशर का व्याख्यान न्यूयार्क यूनीवरस्टीमें

'सज्जनो! लहसन की एक गांठ का प्रयोग २४ घण्टेमें तीन बार करना चाहिये। प्रातः, दोपहर और सायंकाल। एक सप्ताह बाद आप देखेंगे कि लहसुन अपना जादू आप पर चलाने लगा है। मोटी मोटी तुरियों वाला लहसुन उपयोगी होता है। जब लहसुन खाया जाता है तब वह खून के साथ मिलकर अपनी शक्ति उसे दे देता है। रक्त की गति अंग प्रत्यंग के कौने २ में जा पहुँचती है। लहसुन शरीर की सर्व प्रकार की गन्दगी बाहर कर देता है और खून को साफ कर देता है। बीमारियों की उत्पत्ति भूमि, पेट ही है। ६५ फीसदी रोग पेट से ही पैदा होते हैं। पेट में जो मल बच रहता है वह शरीर के भिन्न २ भागों में फैलकर दुर्गन्धयुक्त गैस पैदा करता है। यही गैस भयंकर रोगों को पैदा करती है। लहसुन धक्का दे देकर उस नाशकारी गैस को गुदामार्ग से बाहर कर देता है। जब भीतर की गैस निकल जाती है तो शरीर के जोडों में दर्द होने की आशंका नहीं रहती है। नेचरमें क्रिया प्रतिक्रिया नामक दो हरकतें सदैव हुआ करती हैं। हम जो काम करेंगे उसकी प्रतिक्रिया अवश्य होगी। नेचर तुमसे पूछती है कि क्या तुम में मेरा धक्का सहन करने की शक्ति है? अगर नहीं तो वह तुमको शीघ्र खतम कर डालेगी। इसी कारण प्राचीन काल के भारतीय साधक, शक्तिसागर वीर्य की पूजा किया करते थे। उस व्यक्ति को उच्च स्थान दिया जाता था जो वीर्य का सम्मान कर लेता था। क्योंकि वह नेचर के धक्कों से लड सकता था। बहुधा देखने में आता है कि एक व्यक्ति देखने में हृष्ट पुष्ट है। चेहरा भी लाल है। वह घी, दूध, बादाम भली प्रकार खा सकता है। फिर एक दिन सुनाई पडता है कि वही आरोग्य पुरुष—दिल की धडकन रुक जाने से चल बसा। इस समाचार को सुनकर अवाक् हो जाने की आवश्यकता नहीं है। खून में जब कोई ऐसी चीज मिल जाती है जो रक्त प्रवाह में रुकावट पैदा कर सके तब हृदय की गति मन्द पडने लगती है और 'हार्ट फेल' हो जाता है। हरएक को अपनी नाडी देखने का अभ्यास होना चाहिये। जब नाडी ठहर ठहर कर चलती हुई अनुभव हो, तब फौरन लहसुन की चार पांच पूतियां छीलकर चबा जाना चाहिये। नाडी की गति ठीक हो जायगी और हार्ट फेल होने की आशंका दूर हो जायगी।

मैंने एक भारतीय योगी को लहसुन द्वारा 'काया कल्प' करते देखा था। उस स्वामी पूर्णानन्द की उमर उस समय ७० वर्ष की थी। उन्होंने पूर्णमासी से प्रार्थना करना शुरू किया और तीन दिन तक निराहार रहकर गायत्री मन्त्र का जाप करते रहे थे। चौथे दिन से उन्होंने ३-३ घण्टा बाद शाम तक लहसुन सेवन किया। वह इस प्रकार कि मोटी २ पांच तुरियां छीलकर पिसवाकर जल मिलाकर पीते रहे। शाम को एक छटांक मक्खन खाया। यह नित्य का कार्यक्रम चालू किया गया। लहसुन का सर्वश्रेष्ठ साथी मक्खन है जो उसकी भीषण उष्णता को शान्त करता है। यदि ताजा घी मिल जाये तो भी कोई बात नहीं। शरीर में नवीन कणिकायें बनाने के लिए जब लहसुन का व्यवहार किया जाता है तब वह पुरानी निकम्मी कणिकाओं को बड़े जोर से अपना प्रभाव दिखलाता है। वे पुरानी कणिकायें शीघ्रतापूर्वक बदलनी शुरू होजाती हैं। ज्यों ज्यों उनको ताजा मक्खन या निर्दोष घी मिलता जाता है त्यों त्यों उनकी संख्या बढ़ती जाती है। पहिला सप्ताह उस योगी ने इसी प्रकार लहसुन और मक्खन खाकर व्यतीत किया था। यह घटना हरिद्वार के पास एक पहाडी पर घटित हुई थी। मैं कई साल भारतीय पहाडों में जडी बूटी तलाश करता हुआ घूमता रहा था।

क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्तचाप (ब्लडप्रेशर)

(लेखक—वैद्य पं० सभाकांत झा, शास्त्री)

[गतांक से आगे]

इसमें डालने के पहले गुग्गुल, शिलाजीत और लौह भस्म को गुडूची स्वरस, भृंगराज स्वरस, धनियां का काढ़ा, त्रिफला का रस और परवर की पत्ती के स्वरस से १-१ भावना देकर अधिक गुणयुक्त बना लेना चाहिये।

रक्त-विक्षेप में वात के साथ रक्त भी दूषित होता है। कभी-कभी उपदंशजन्य विकार भी इसमें कारणीभूत होते हैं। अतएव वात और रक्त दोनों की शुद्धि करने वाले योग इसमें विशेष लाभदायक होते हैं। इस कार्य के लिए "कैशोर गूगल" सर्वोत्तम है।

गुग्गुलु वात-नाशक, रसायन और रोपण गुण वाला है। गूगल में आयोडीन का गुण वर्तमान है। यह रूक्षता लानेवाला तथा अनुपयुक्त कफ और मलदोष धमनी, सिरा तथा आशयों को शोधन करता है।

कैशोर गूगल

औषधि-निर्माण-विधि—त्रिफला ३ सेर और गिलोय १ सेर को कूटकर लोहे की कढ़ाई में ८ सेर जल मिलाकर काढ़ा बनाएं। ४ सेर जल शेष रहने पर उतार कर छान लें। उस काढ़े में १ सेर उत्तम गूगल डालकर मन्द आग से पकावें, जब गूगल गल कर द्रव हो जाय, तब छानकर उसको फिर चूल्हे पर चढ़ा कर औंटाएं और करछुली (कोंचा) से चलाते रहें, जिससे जलने या लगने न पावे। जब गूगल गाढ़ा हो जाय, याने गुड़ के पाक के समान हो जाय, तब कड़ाही से निकाल लें, फिर त्रिफला १० तोले, गिलोय ५ तोले, सोंठ, काली मिर्च और पीपल प्रत्येक २—२ तोले, वायविडंग २॥ तोले, जमालगोटे की जड़ १। तोले, निशोथ १। तोला, इन सब दवाओं का चूर्ण करके ऊपर वाली गूगल में मिला दें और १-१ माशा की गोलियां बना लें।

मात्रा और उपयोग—इसमें से १-१ गोली प्रातः सायं दूध या मंजिष्ठादि क्वाथ अथवा गर्म जल के साथ लें। इसके सेवन से वात रक्त, रक्त दूषितजन्य रक्त-विक्षेप, कोढ़ रक्त विकार, फोड़े-फुन्सियां आदि नष्ट होते हैं।

इसके सेवन से मनुष्य में किशोरावस्था के समान सौन्दर्य और स्फूर्ति आती है। अतः इसका नाम कैशोर गूगल पड़ा है। इस गोली को गुड़ और घृत के साथ भी ले सकते हैं। डाक्टर लोग एट्रोपीन देकर जो गुण प्राप्त करने की आशा करते हैं, वह इसके द्वारा होता है। क्योंकि यह इड़ानाड़ी से मिले हुए कफ प्रधान तन्तुओं को शुद्ध करता तथा उन्हें साम्यावस्था में लाता है। एट्रोपीन का गुणधर्म धतूरा के समान है, उससे वात शमन होता है, किन्तु संकोचक गुण होने के कारण धमनियों में उसका असर नहीं होता है। गुडूची क्वाथ के अनुपान के कैशोर गूगल अच्छा काम करता है। कफ नाड़ी की शक्ति बढ़ाने और उसकी उत्तेजना घटाने के लिए डाक्टर लोग "एसीटीकल कोलीन" दिया करते हैं। वैद्य लोग गुडूची घृत तथा वसा-मज्जा आदि के उपयोग से कफ पोषक गुण उत्पन्न कर सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि रक्त दोष अधिक हो और फिरंग या उपदंश का विष शरीर में मौजूद हो, तो किशोर गूगल के साथ महामंजिष्ठादि काथ या सारिवाद्यरिष्ट लेवें।

शरीर में पोषण तत्त्व के अभाव से अथवा भय, शोक, क्रोध, मानसिक चिन्ता के अतिरिक्त मानसिक परिश्रम से पोषण शक्ति क्षीण हो जाने से नीचेः विक्षेप अर्थात् लो ब्लडप्रेशर की शिकायत होती है। इसके लिये आवश्यक है कि "चन्द्रप्रभा वटी" लेवें अथवा मुक्ता भस्म, या शौक्तिक भस्म, प्रवाल भस्म, शंख भस्म, मण्डूर भस्म मिलाकर त्रिफला और घी के साथ लेवें।

योगसारामृत चूर्ण

औषधि-निर्माण-विधि—शतावरी, गंगेरन, विधारा, दूध में शोधी हुई और छिलका निकाली हुई सफेद घुंघची, गुडूची, पुनर्नवा पीपर, असगन्ध, गोखुरू, प्रत्येक १०-१० तोला लेकर चूर्ण करें। फिर सब दवाओं की आधी अर्थात् ४५ तोला मिश्री लेवें और सबको मिलाकर घोटें और एक अमृतवान में रख उसमें ३२ तोला मधु और १६ तोला घी तथा तजकल्मी, तेजपात तथा इलायची के दानों का सम्मिलित चूर्ण ४ तोले डालकर रख दें।

मात्रा और उपयोग—इसमें से ३ माशे की मात्रा में दूध के साथ प्रातः सायं सेवन करें।

यह योग ब्लडप्रेशर के लिए सर्वोत्तम है। विशेषता यह है कि यह हाई ब्लडप्रेशर को भी साम्यावस्था में लाता है। इसके अतिरिक्त वातरक्त, शरीर का दुबलापन, रक्त और वात, पित्त या कफ दोष जन्य विकार सब दूर हो जाते हैं, इसके सेवन करने वालों को यथेष्ट बल प्राप्ति होती है।

यदि रक्त-विक्षेप के साथ शिर में दर्द भी होता हो, तो "महालक्ष्मी विलास रस" का सेवन करने से बहुत लाभ होता है अथवा स्वर्णमाक्षिक, मौक्तिक, प्रवाल और यशद भस्म घृत या मधुके साथ सेवन करें।

महालक्ष्मी विलास रस

औषधि-निर्माण-विधि—लौह भस्म, अभ्रक भस्म वच्छनाग (मीठा विष) नागरमोथा, हर्रे, बहेड़ा, आंवला, सोंठ, मिर्च, पीपल, धतूरे के बीज, बिधारा के बीज, भांग के बीज, छोटा गोखरू, बड़ा गोखरू और पीपरामूल समान भाग लेकर सबको एक दिन धतूरे के रस में घोंट कर २-२ रत्ती की गोलियां बना छाया में सुखाकर रख लें।

मात्रा और उपयोग—इसमें से १-१ गोली प्रातः सायं २ माशे सोंठ के चूर्ण में मिला अदरक रस के साथ लें।

इसके सेवन से वात-कफज शिर रोग दूर होता है। सन्धिवातके समान जोडोंमें दर्द हो तो बकरी दूध में अलसी पीसकर थोडा गरम करके लेप करें। अथवा महुआ की गिरी (गुठली) पीसकर गरम करके बांधें।

शुद्ध गन्धक २ रत्ती, मिश्री २ रत्ती में मिलाकर गोघृत के साथ चाटें तो वृक्क(मूत्राशय) के विकार नष्ट होता है। आंतें साफ रखने के लिए बीच-बीच में वस्ति लिया करें। रक्तशोधन के लिए अनन्तमूल, राल, मुलेठी, और मुण्डी का काथ या अर्क लिया करें। इसी तरह पद्माख, सुगन्ध वाला, मुलेठी, लाल चन्दन, हल्दी का काढा पीने से वात, पित्त जनित दोष शान्त होते हैं। ऐसे काढ़े में यदि एरण्ड तैल मिलाकर लें तो अधिक लाभदायक होगा क्योंकि स्रोतोंसे क्लेद निकाल कर यह आंतों में ले आता है। अपने स्निग्ध गुण के कारण यह रूक्षता की जगह चिकनाई ले आता है।

कफ, पित्त विकार के लिए तिल का तेल उपयोगी है। वह अपने स्निग्ध गुण के कारण कफ का पोषण करता है। उष्ण वीर्य होने के कारण वायु का शमन होता है और कफ संचय नहीं हो सकता। स्निग्धता के कारण पित्त का प्रकोप नहीं हो पाता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्वाथ में प्रक्षेप के लिए अथवा किसी औषधि के अनुपान के लिए यदि कफ की अधिकता हो तो मधु लेवें, पित्त की अधिकता हो तो घी लेवें और वात का प्रकोप हो तो एरण्ड तैल या औषधि सिद्ध कोई तेल लेवें।

यदि शरीर में ओज की कमी हो और मस्तिष्क तथा ज्ञानतंतुओंमें क्षीणता आगई हो तो चन्द्र प्रभावटी अतिरिक्त वृ० वात चिन्तामणि या चिन्तामणि चतुर्मुख रस घी के साथ या 'सारस्वतारिष्ट' के साथ दें। पाखाना साफ लाने के लिए कभी २ 'आरोग्यवर्धनी' वटी दूध के साथ दें, अथवा अभयादि क्वाथ के साथ दें। चन्द्रप्रभा के साथ मोती भस्म, प्रवाल भस्म और गुर्च का सत्व मिलाकर देवें। इसमें स्वर्ण मालती वसन्त देने से जीर्ण ज्वर क्षीणता और रक्तगम का भय नहीं रहता, मधुमेह यदि हो, तो बसन्त कुसमाकर भी दे सकते हैं, च्यवनप्राश भी लेना अच्छा है।

ताम्र योग

ताम्रभस्म १॥ रत्ती और शुद्ध गन्धक १ माशा मिलाकर मधु के साथ दिन में दो बार चटाने से रक्त शुद्ध होता है तथा रक्त-विक्षेप भी घटता है।

रक्त विक्षेप में रुद्राक्ष का प्रभाव

दिव्यौषधि का प्रभाव अनन्त होता है, उनके धारण करने से भी लाभ होते देखा जाता है। जैसे हृद्रोग में हरा पत्थर (मादली) पहनने से दिल की धड़कन कम होती है उसी प्रकार ब्लडप्रेशर में रुद्राक्ष की माला पहनने से रक्तचाप घटता है।

गुलाबजल में रुद्राक्ष घिसकर दिन भर में २-४ बार पिलाने से भी लाभ होता है।

सर्पगन्धा योग

सर्पगन्धा का प्रयोग इसकी प्रत्येक अवस्था में अमूल्य सिद्ध हुआ है। किसी भी कारण से रक्तभार की वृद्धि हुई हो, यह निर्भयता पूर्वक दे सकते हैं।

जब रक्तभार वृद्धि के कारण निद्रानाश और शिर में दर्द हो तो सर्पगन्धा का प्रयोग जादू के समान प्रभाव दिखलाता है। प्रयोग विधान निम्नलिखित है।

औषधि निर्माण विधि—७ सेर सर्पगन्धा के चूर्ण को २ गुने जल में क्वाथ करें, अष्टमांश जल शेष रहने पर वस्त्र से छान लेवें, फिर उसमें चौगुना जल डालकर दूसरी बार क्वाथ करें, चतुर्थांश शेष रहने पर छानकर दोनों क्वाथों को एकत्र करें, फिर उसे मन्दाग्नि पर पका कर गाढा करें, गाढा करने पर इसका घनसत्व लगभग ४० तोला (ऽ॥ सेर) बैठेगा, फिर खुरासानी अजवायन का भी इसी तरह घनसत्व बनालें।

अब सर्पगन्धा घनसत्व ४० तोला, खुरासानी अजवायन घनसत्व ५ तोला, पीपलामूल ५ तोला, चरस २॥ तोला, मिलाकर २-२ रत्ती की गोलियां बनालें।

मात्रा और उपयोग—रात को सोने के समय १ से २ गोली जल या दूध के साथ दें।

इसके सेवन से मस्तिष्क को आराम मिलता है, निद्रा अच्छी तरह आती है। डाक्टर लोग भी 'सर्पिना टेबलेट' के नाम से इसकी गोलियों का प्रयोग करते हैं।

क्रमशः

वार्षिक मूल्य भेजिये

गतांक के साथ सब ग्राहकों का वार्षिक मूल्य समाप्त हो गया था। रसायन बन्द करने के विचार से वार्षिक मूल्य नहीं मगाया था, किन्तु ग्राहकों के विशेष अनुरोध पर रसायन को जारी रखने का निश्चय कर लिया है अतः वार्षिक मूल्य शीघ्र भेजदें।

प्रकाशक रसायन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुधान

अधिक मानसिक परिश्रम, चिन्तन, अध्यापन या किसी अकथनीय कारण से जिनका दिमाग कमजोर हो गया है, स्मरणशक्ति घट गई है, हृदय दुर्बल हो गया है, सिर में हल्का २ दरद और थकावट रहती है उनके लिए 'बुधान' बहुत लाभदायक है। इसके सेवन से उपरोक्त दोष मिट जाते हैं। दिमाग पुष्ट होकर स्मरणशक्ति तीव्र हो जाती है। इससे उन्माद तक के रोगियों को लाभ हुआ है। बुद्धिजीवी लोगों के लिए वरदान स्वरूप है। मूल्य ४) डाकखरच १।≈)

टंकरोल

दो दिनमें इसकी ६ मात्राओंके सेवनसे जुकाम (प्रतिश्याय) ठीक हो जाता है। दो खुराक खाने से ही शिर का भारीपन, छींकें आना, नाकसे पानी बहना आदि दूर होजाता है। इसका प्रभाव श्लेष्मकला पर होता है। २४ मात्रा की शीशी का मूल्य १) छः मात्रा का ।≈)

निद्राणी

स्वास्थ्य के लिए निद्रा उतनी ही आवश्यक है जितना कि भोजन, जल और शुद्ध वायु। भोजन के पचन और सात्म्यीकरण से शरीर की प्रत्येक सेल को अपनी स्थिति बनाये रखने की सामग्री मिलती है तो पूर्ण निद्रासे आराम मिलने के कारण घिसी हुई सेलों का पुनः निर्माण हो जाता है और खरच हुई शक्ति पुनः संचित हो जाती है। यदि युवा पुरुष को रात्रि में ६—७ घण्टे निरन्तर गहरी नींद नहीं आती या बीच बीच में टूट जाती है तो यह मस्तिष्क धमनियों की कठोरता, पाचन सम्बन्धी रोग, विबन्ध, ब्लडप्रेशर (रक्तचाप) नाडी दौर्बल्य आदि व्याधियों का लक्षण है। निद्राणी' इन सब अवस्थाओं में अपना निश्चित प्रभाव दिखाती है। कुछ ही मात्राओं के सेवन से रात्रिभर खूब गहरी नींद आने लगती है और प्रातः काल उठने पर देह में स्फूर्ति और मन प्रफुल्लित होता है। इसमें कोई मादक या विषैला द्रव्य नहीं है। मूल्य ४) आधाकोर्स २॥) पो० १।≈)

चवसोमला

दमा के लिए यह परीक्षित दवा है। इसका प्रभाव श्वास प्रणाली और स्वरयंत्र पर होता है। इसके सेवन से नाडी मण्डल की उत्तेजना शान्त होकर श्वास नलिकाओं का प्रसार होता है जिससे रोगी सुख का सांस लेता है और उसका कष्ट दूर हो जाता है। पूरा कोर्स समाप्त हो जाने के बाद श्वासनलिकायें पूर्ण स्वच्छ और फेफड़े पुष्ट हो जाते हैं। फिर कभी दमा का दौरा पड़ने का भय नहीं रहता। मूल्य ५)

नाग सुरमा

यह सुरमा रसायनिक प्रक्रिया द्वारा बनाया जाता है। यह सभी नेत्र रोगों में लाभकारी है। दृष्टिमन्दता, दूर या निकट कम दिखाई देना, तिमिर, धुन्ध, जाला, आंखों से पानी बहना आदि रोगों को नष्ट करके दृष्टि को तेज बना देता है। लगाते ही नेत्रों में ठंडक प्रतीत होती है। ६ माशा की शीशी १॥) तीन माशा १)

अमोनिरी

यह हमारी नव अनुसन्धानित विशेष वनस्पतियों द्वारा निर्मित और दो वनस्पतियों द्वारा भावित योग है जिसे दीर्घ परीक्षण के बाद अब प्रकाश में ला रहे हैं। यह औषधि आजकल के बहुप्रचलित पेट रोगों और उनके उपसर्गों तथा आंत की सूजन व शूल, व्रण, वायु विकार, मल की सड़न से उत्पन्न होनेवाले विष दोष, गैस चढ़ना, अम्लपित्त, आंव, जीर्ण कब्ज, भूख न लगना, खून की कमी, नींद न आना, बुढ़ापा लाने वाली अम्लता, जोड़ों का दर्द व खांसी, जुकाम आदि के लिए अद्भुत गुणकारी सिद्ध हुई है। आमाशय और आन्तें बलवान होकर भूख खूब लगती है। स्वच्छ रक्त बनने से शरीर पुष्ट हो जाता है। मूल्य एक कोर्स ४) डाकखरच १।≈)

कोलरास—हैजा की प्रत्येक दशा में इसके सेवन से लाभ होजाता है। अब तक के परीक्षण में अद्भुत लाभकारी सिद्ध हुई है। प्रति वर्ष हजारों रोगी इसके सेवन से स्वास्थ्य लाभ करते हैं। मूल्य १।) मात्र।

जी० एस० आयुर्वेदिक रीसर्च प्रॉडक्टस ३ दरियागंज, देहली ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रत्नों के साथ तुलनेवाली अनुपम पुस्तकें

४० से अधिक आयुर्वेदीय पुस्तकों के रचयिता प्रसिद्ध लेखक व चिकित्सक राजवैद्य डा० गणपतिसिंह वर्मा द्वारा रचित व प्रकाशित—यह वही पुस्तकें हैं जिनकी वैद्य, हकीम, डाक्टर और जनसाधारण मुक्तकंठ से प्रशंसा कर रहे हैं। जिनके विषय में देश के गणमान्य लोगों की सम्मति है कि इन पुस्तकों का प्रत्येक घर में होना अत्यावश्यक है। क्योंकि इनके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक स्थानमें सहसा होजाने वाले रोगों का सरलतापूर्वक इलाज कर सकता है। प्रत्येक पुस्तक के कई २ संस्करण हो चुके हैं जो कि इनकी लोकप्रियता का सबसे बड़ा प्रमाण है।

अनुभूत योग चिन्तामणि

इसके लेखक ने ५ वर्ष तक लम्बी २ यात्रायें करके संन्यासियों की कठिनतम सेवा और भ्रमण के अथक परिश्रम के अतिरिक्त ५४३५ रुपये खर्च करके जो ५३३ जादुअसर अनुभूत नुस्खे प्राप्त किये थे वह निष्कपट भाव से इस पुस्तकमें प्रकाशित कर दिए हैं। भारतवर्ष के सैंकडों वैद्यों, हकीमों और डाक्टरों ने इन सब नुस्खों की पचासों बार परीक्षा करके शत प्रतिशत अनुभूत होने के प्रमाणपत्र दिये हैं जिससे सिद्ध होगया है कि इसमें एक भी ऐसा योग नहीं—जो अनुभूत सिद्ध न हो, सबके सब संन्यासियों के हृदय के गुप्त योग हैं। भारत के गणमान्य हकीमों व वैद्यों का निर्णय है कि जिसके पास यह पुस्तक नहीं, निःसन्देह उसकी चिकित्सा और औषधालय अधूरा है। मूल्य प्रथम भाग पांचवीं आवृति ४।) द्वितीय भाग ४) डाकखरच जुदा।

१५ वर्ष के कठिन परिश्रम का फल

अनुभूत योग प्रकाश

आज से १५ वर्ष पूर्व जिस पुस्तक को प्रकाशित करने का आयोजन प्रकाशित किया गया था वह पुस्तक अब छपकर तैयार होगई है। इस पुस्तक के योगों के विषय में केवल इतना बतला देना ही काफी होगा कि गत १५ वर्ष के सतत उद्योग से बड़े २ साधु, महात्मा, फकीरों भीलों से लेकर राजा, रईसों तथा ख्यातिवान प्रसिद्ध विद्वान वैद्यों, हकीमों और डाक्टरों के उन अनुभूत चमत्कारी योगों को इस पुस्तक के पृष्ठों पर अंकित कर दिया है—जिनको आज तक जमाने की हवा भी न लगी थी। फिर इसके लेखक डा० जी० एस० वर्मा का नाम ही बड़ी जमानत है कि पुस्तक कैसी है। इसमें सबसे बड़ी वह रीसर्च आपको मिलेगी जिसे आजतक आपने सुना भी न होगा अर्थात समुद्रीय द्रव्यों यथा मुक्ता शुक्ति, प्रवाल, शंख, कपर्दिका आदि का तेल बनाना। इन तेलों की तुलना में इन द्रव्यों की भस्में बहुत तुच्छ लाभ पहुँचाती हैं। इन तेलों से अनेक कष्टसाध्य कहे जाने वाले रोग शीघ्र मिट जाते हैं। दूसरी विशेषता यह है कि इन तेलों से उड़ने वाले सभी द्रव्य यथा पारद, हिंगुल (शिंगरफ) आदि स्थाई होजाते हैं। इस पुस्तक में कोई ऐसा रोग नहीं छोड़ा जिस पर अनुभूत सिद्ध योग न छपा हो। मूल्य ६।) डाकखर्च ।।।≈)

इन्जेक्शन बनाना व लगाना सीखो

इंजेक्शन चिकित्सा तत्काल प्रभाव दिखाने वाली होने से आज लोकप्रिय हो रही है, किन्तु वैद्यों हकीमों को इसकी जानकारी न होने से उन्हें बडी कठिनाइयों का सामना करना पड रहा है। इन्हीं भावों से प्रेरित होकर यह पुस्तक तैयार की गई है, जिसमें समस्त रोगों की चिकित्सा आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक और एलोपैथिक इन्जेक्शनों द्वारा ही करना बतलाया गया है। रोगशीर्षक के नीचे क्रमशः प्रत्येक रोग के तीनों प्रकार के इन्जेक्शन ऐसे ढंग से लिखे गये हैं कि जिससे चिकित्सक एक क्षण में निश्चय कर सकता है कि कौनसा इन्जेक्शन किस स्थान पर, कितनी मात्रा में कितने अन्तर से, किस प्रकार लगाना चाहिये और साथ २ इन्जेक्शन बनाने की विधि भी लिखदी गई है। आयुर्वेदिक इंजेक्शन जिन द्रव्यों से बनाये जाते हैं वह तमाम आपके घर में, खेतों और जंगलों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वत्र मिल सकते हैं। एक-एक रोग पर कई २ इन्जेक्शन बनाने के योग लिखे गये हैं। इसके अतिरिक्त सीरम, वैक्सिम, पेनिसीलीन, विटामिन्स के इंजेक्शनों का वर्णन और उनको लगाने की सरल व निरापद सचित्र विधि भी खूब समझा कर लिखदी गई है। इस पुस्तकको पढ़ने के बाद इन्जेक्शनों के विषय में जानने का कुछ भी शेष न रहेगा और सब प्रकार के इंजेक्शन तरल (लिक्विड) टेबलेट व पौडरादि रूप में बना व लगा सकेंगे। मूल्य ५) डाकखरच ।।।=)

सिद्ध रसायन

रस-रसायन की जिन कठिन क्रियाओं से वैद्य बन्धु घबराकर उनके दिव्य गुणों से वंचित रह जाते हैं, उन क्रियाओं का लम्बा अनुभव करके विद्वान लेखक ने उनका सरल तरीका इस ग्रंथमें दर्शाया है और साथ ही महान रसायनाचार्य नागार्जुन और अन्य सिद्धों की संचिकाओं के अज्ञात योगों को उनकी गुत्थी सुलझाकर प्रकाशित किया है जिनसे पाठक न केवल काया (काया-कल्प) रंगने में ही सफल होंगे बल्कि स्थिर मति वाले माया (कीमिया) रंगने में भी सफल होंगे। इस प्रकार पाठकों को जहां आर्थिक संकट से मुक्ति मिलेगी वहां असाध्य समझ कर छोड दिये जाने वाले रोगों के वे सिद्धहस्त चिकित्सक भी बन जावेंगे। इस पुस्तकके कुछेक योगों का दिग्दर्शन करा देने से आपको अनुमान हो जायगा कि यह कितना अपूर्व ग्रन्थ है। यथा–शुद्ध बद्ध और सिद्ध करने वाली दिव्य औषधियां, औद्भिदाम्ल व बूटियां, रस बन्धन, गन्धक को स्थाई करना, बद्ध पारद को सिद्ध बनाना, रजत रंजन कीमिया) अभ्रक सत्व की द्रुति, द्रुति से पारद बन्धन, वंग स्तम्भन, पारद भस्म रक्तयोगेन ताम्रोद्धार (कीमिया) तांबा और रजत (चांदी) वेधी सिद्ध हरिताल, हरिताल कल्प देह व लौह वेधी सिद्ध हरिताल तैल, सिद्ध कुचला कल्प, सर्व रोग हर फिटकडी रसायन (कल्प) पुरुषों के गुप्त रोगों पर रामबाण सिद्ध खादक, पारद गुटिका बंगवेधी, शिंगरफ मोमियां बनाना, नौसादर तैल, सिद्ध गोरखी जलमुद्रा, सिद्ध गन्धक–एक गिरनारी महात्मा का योग जिसको बनाना अति सरल है और क्षय (T. B.) संग्रहणी जैसे अनेक भयंकर रोगों का सफल इलाज है आदि। इसमें अन्य पुस्तकों की भांति जोड-तोडकर एकत्र की हुई सामग्री नहीं है बल्कि लेखक के जीवन भर का अनुभव बन्द किया है। इसके पाठकों के लिए लेखक का सद्परामर्श और सहायता भी सदैव प्रस्तुत रहेगी। मूल्य ५) पो० ।।।=)

संन्यासियों की चमत्कारी गुप्त बूटियां

इस पुस्तक में सैंकडों ऐसी ही जडी-बूटियों के गुप्त रहस्य प्रकट किये गये हैं, जिनकी बदौलत संन्यासियोंकी धाक जमी हुई है। इनमें से अधिकांश बूटियां वही हैं, जो आपको जंगल, खेत, बागीचों और पंसारियों की दूकानों पर मिल जावेंगी जिनसे आवश्यकता पडने पर सिरसे पांव तकके समस्त रोगों का इलाज हर जगह प्रत्येक आदमी आसानी से कर धन और यश कमा सकता है। इस पुस्तक को पढ़ लेने के बाद आप के पास रोगियों का तांता बंधा रहेगा। विषय सूची मुफ्त। ४५० पृष्ठ, २ भाग मूल्य ५।।) डा० ख० ।।।=)

गुप्त योग रत्नावली

इस पुस्तक में डा० नेगी के व निज के बड़-बड़ गुप्त योग प्रकाशित किये गये हैं जिनको भारतवर्ष के कोने २ से तथा अरब, मिश्र और अफ्रीका आदि प्रदेशों के विभिन्न स्थानों में जाकर लेखक ने प्राप्त किये थे। मूल्य २।।) डा० ख० ।।)

पेटेण्ट औषधियां व भारतवर्ष

संसार में सबसे अधिक लाभदायक व्यापार पेटेण्ट औषधियों का है। अमृतधारा और सुधासिन्धु के मालिकों ने १–१ पेटेण्ट दवा के नुस्खे से लाखों रुपया कमाया है। विलायती फर्में एक-एक पेटेण्ट दवा से बेहद रुपया कमा रही हैं। यदि उनकी तरह आप भी भारतवर्ष, इंग्लैंड, अमरीका की प्रसिद्ध और सर्वप्रिय प्रतिवर्ष करोडों रुपये की बिकने वाली पेटेण्ट औषधियों के नुसखे बिना किसी कष्ट के घर बैठे सीख कर साधारण पूंजी से सैंकडों रुपये मासिक की स्थाई आमदनी पैदा करना चाहते हैं तो आज ही 'पेटेण्ट औषधियां और भारतवर्ष' नामक पुस्तक की एक प्रति मंगाकर पढें। १६७ योगवाली मूल्य ।।।=) डा०ख० ।।।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यौवन के गुप्त रहस्य

लुटी हुई जवानी और बीता हुआ यौवन वापिस लाने के अनुपम उपाय—पुरुषत्व और जवानी के वह गुप्त रहस्य, जिनको जानने से अशक्ति के ऐसे रोगी जिन्हें किसी दवा से लाभ नहीं हुआ या सैंकडों रुपये की दवा खाकर भी निराश बैठे हैं निःसन्देह सशक्त बन सकते हैं। मनुष्य देह का वह केन्द्र जहां से स्वास्थ्य और यौवन का रस झरकर समस्त शरीर का पोषण करता है, उस केन्द्र को शक्ति प्रदान करने के अनूठे उपाय, जिससे लुटी हुई जवानी और बीता हुआ यौवन पुनः लौट आता है। पुरुषों के अकथनीय भयंकर रोग बिना दवा सेवन किये ही किस प्रकार नष्ट हो जाते हैं। उद्धवरेता होने का वह प्रयोग जिससे पुरुष की शक्ति में कमी नहीं आती। रसग्रंथियों से आश्चर्यजनक दवाइयां बनाने के प्रयोग। हजारों रुपये खर्च करके डा० वोरनाफ की बताई हुई बन्दर की रसग्रन्थि लगवाने व आपरेशन का कष्ट सहन किये बिना ही सुगमता से प्रत्येक स्त्री पुरुष वही शक्ति कैसे प्राप्त कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त पुरुषों के रोगों के सम्बन्ध में निदान व ऐसे २ गुप्त प्रयोग इस पुस्तक में दर्ज किये गये हैं, जिनको उपयोग करने वाला पुरुषत्व पर गर्व कर सकता है। मूल्य ३) डाकखरच ॥।)

हिन्दी से अंग्रेजी मैट्रिक

विश्व के ज्ञान, विज्ञान और व्यापार तथा कला-कौशल को सीखने के लिए आज की विश्व भाषा अंग्रेजी का सीखना सबके लिए जरूरी है। इसको सीखना कोई कठिन भी नहीं है। जिस प्रकार अंग्रेज मातायें अपने बालकों को अपने घरों में ही अंग्रेजी सिखा देती हैं ठीक उसी प्राकृतिक नियमानुसार यह ३२० पृष्टोंकी पुस्तक तैयार की गई, जिसे २ घण्टा प्रति दिन पढ़नेसे केवल हिन्दी पढ़े-लिखे व्यक्ति को भी चार मास में भली प्रकार याद होजाती है। इसमें ए० बी० सी० डी० से लेकर आवश्यक ग्रामर (व्याकरण) अनुवाद आदि इङ्गलिश की मैट्रिक तक का सब ज्ञान हिन्दी से अंग्रेजी और अंग्रेजी से हिन्दी में ऐसे सरल और सुबोध ढंग से ४८ पाठों में छपा है कि जिससे केवल अंग्रेजी में मैट्रिक की परीक्षा देनेवाले लडके-लडकियां निःसन्देह पास हो जाते हैं। दसवां संस्करण अभी छपा है। मूल्य ३॥) डाकखरच ॥।≈)

७८६ वर्ष का प्राचीन रस ग्रन्थ

वसवराजियम—हजारों वर्ष पहिले दक्षिण भारत में चालुक्यवंशीय राजाओं का राज्य था। उनके प्रधान मन्त्री रुद्र साम्प्रदायी महान रसतन्त्रज्ञ बसवराज ने सं० १२२५ में इस सिद्ध साम्प्रदायी अनुपम ग्रन्थ की रचना की थी, जिसमें भगवान रुद्र के अनुयायी बनों में विचरने वाले रसायनाचार्य नागार्जुन, नागबोधि, नित्यनाथ, चर्पटी, कणेरी, पूज्यपाद आदि योगियों का रसज्ञान भरा पडा है, श्री गोविन्दपादाचार्य के कथनानुसार शरीर को अजरामर करने में पारे की बराबरी करने वाली न तो कोई जडी बूटी है और न ही कोई रसायन और भस्म है। पारे में यह बड़े आश्चर्य की बात है कि वह स्वयं मूर्छित होकर रोगी के रोग को दूर करता है और बंधा हुआ होकर मुक्ति देता है तथा अच्छी तरह मरा हुआ दूसरों को जीवन देता है। आज मद्रास प्रान्तीय वैद्यों की जो प्रतिष्ठा, यश और कीर्ति सर्वत्र प्रसिद्ध हो रही है वह सब इसी ग्रन्थ के योगों का प्रताप है। यह ग्रन्थ तैलंग भाषा में ताड़ पत्रों पर लिखा हुआ उपलब्ध हुआ था, जिससे अब तक तैलंग भाषा भाषी वैद्य ही लाभ उठाते रहे, किन्तु यह जानकर आप अतीव प्रसन्न होंगे कि अब आयुर्वेद बृहस्पति श्री गोवर्धन जी शर्मा छांगाणी के अतुल परिश्रमके फलस्वरूप आज यह ७८६ वर्ष का प्राचीन तैलंग हस्तलिखित दुर्लभ ग्रन्थ हिन्दी भाषा में भी हमारे द्वारा प्रकाशित होगया है। इस ग्रन्थ के विषय में कहा गया है कि सतयुग में चरक, त्रेता में रसार्णव तथा द्वापर में सिद्ध विद्याभू का महात्म्य है उसी प्रकार कलियुग में बसवराजयम पूज्य ग्रन्थ है। इसमें जो निदान लक्षण प्रत्येक रोग के बतलाये हैं। उनको समझकर इसमें वर्णित योगों द्वारा जो चिकित्सा करेगा, भगवान रुद्र की कृपा से निःसन्देह वह सर्वत्र यश और सिद्धि प्राप्त करेगा। २५ प्रकरणों वाले सम्पूर्ण ग्रन्थ का मूल्य ८॥) डाकखरच १≈)

पता—रसायन फार्मेसी (३ दरियागंज) पो० बो० नं० ११२५ देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

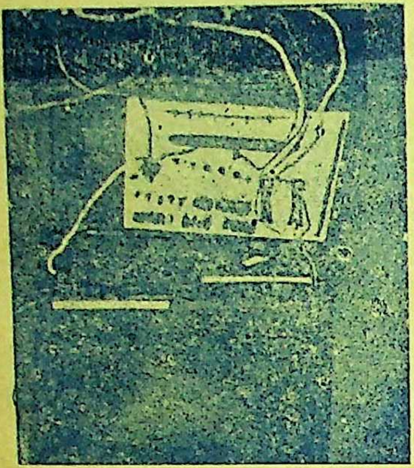

सेल्फ एक्टिंग
इलेक्ट्रो मेग्नेटिक

यह बेटरी सेल पर चलने वाली बिजली के इलाज की मशीन है। इसके द्वारा गठिया, आमवात आदि सभी वातरोगों, पक्षाघात, लकवा, अर्श, मधुमेह, अनेक प्रकार की शारीरिक पीड़ाओं व शोथ आदि ३३ रोगों का इलाज किया जा सकता है। किस रोग पर इस मशीन द्वारा बिजली का किस प्रकार प्रयोग किया जाय इसके लिए पुस्तिका साथ भेजी जाती है। मूल्य २५) डाक व्यय २॥≡)

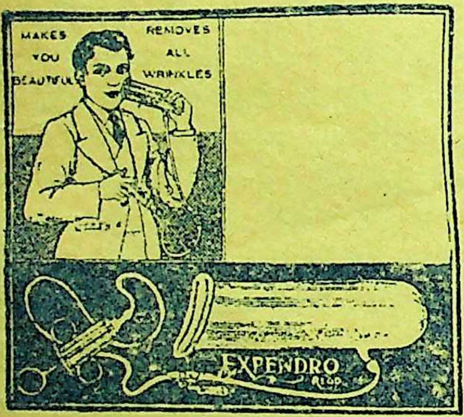

एक्सपैंडरो

इस यन्त्र की उपयोगिता प्रायः सभी जानते हैं। नसों और मांसपेशियों की शिथिलता में जहां प्राकृतिक रूप से रक्त का परिभ्रमण सम्यकरूपेण नहीं होता वहां इसके प्रयोग से आशातीत लाभ होता है। नसों और मांसपेशियों को सशक्त बनाने के लिए इसका प्रयोग करना उत्तम उपाय है। मूल्य १५) बढ़िया १८) डाक खरच पै० २॥)

हमारा गुण विधान सीरीज

दूध गुण विधान	१)	नीबू गुण विधान	॥)
घृत गुण विधान	॥)	इन्द्रायण गुण विधान	॥)
अरिष्टक (रीठा) गुण विधान	॥)	पीपल गुण विधान	॥)
बबूल (कीकर) गुण विधान	॥)	आम गुण विधान	१)
फिटकड़ी गुण विधान	१॥)	पलांडु गुण विधान	॥)
एकौषधि गुण विधान	१॥।–)	मधु (शहद) गुण विधान	१॥)
स्वर्णक्षीरी गुण विधान	॥।)	संतरा गुण विधान	।)
अर्क (आक) गुण विधान	१॥)	नीम गुण विधान	॥।≡)
धतूरा गुण विधान	॥।)	नमक चिकित्सा	।)

पता—रसायन फार्मेसी ३, दरियागंज, पो० बो० ११२५ देहली

डा० जी० एस० वर्मा मुद्रक व प्रकाशक द्वारा स्वस्तिक प्रिंटिंग प्रेस, देहली में छपकर प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसायन

अगस्त १९५६

वर्ष ९ वार्षिक ३)

अंक २ इस अंक का ।≈)

गुरुकुल पत्रिका

पुस्तकालय गुरुकुल काँगड़ी
22-8-56

सम्पादक
साहित्य मनीषी
डा. गणपति सिंह वर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय अनुक्रमणिका

विषय	लेखक	पृष्ट
स्त्रियों की स्थूलता कम करने के उपाय	कुमारी चन्द्रज्योत्सना	१५
रक्तचाप (ब्लडप्रेशर)	वैद्य पं० सभाकांत झा, शास्त्री	१७
हमारी आंखें	डा० आर० एस० अग्रवाल	१६
एक लहसुन प्रेमी अंग्रेज	स्वामी पारसनाथ जी	२३
पारद का महत्व	कविराज महेन्द्रनाथ पाण्डेय	२६

वार्षिक मूल्य भेजिये

'रसायन' के अधिकांश ग्राहकों का दो दो नये ग्राहक बनाने का आश्वासन आने पर रसायन को जारी रखने का निश्चय किया गया है इसकी सूचना गतांक में छप चुकी है और वह अंक सभी ग्राहकों के पास भेजा भी जा चुका है परन्तु सबकी ओर से अभी तक वार्षिक मूल्य प्राप्त नहीं हुआ अतः सानुरोध निवेदन है कि जिन २ स्थाई ग्राहकों ने वार्षिक शुल्क ३) अभी तक नहीं भेजा है, वे तुरंत भेज दें और नये ग्राहकों से भी चन्दा शीघ्र भिजवादें । इस मास में जिनका वार्षिक मूल्य प्राप्त नहीं होगा उनको आगामी मास का अंक वी० पी० द्वारा भेजा जायगा जिसको छुडाना उनका नैतिक कर्तव्य होगा ।

जिन २ महानुभावों ने दो दो नये ग्राहक बनाने का अश्वासन दिया है हम उन सबको धन्यवाद देते हैं । उन्होंने क्या २ लिखा, उन सबका रसायन के प्रति कितना अनुराग है वह सब स्थानाभाव से यहां छापने में असमर्थ हैं । तथापि एक पत्र हम यहां छाप रहे हैं जो हमें आज ही प्राप्त हुआ है जिसे पढ़-कर आप 'रसायन' के महत्व और आवश्यकता को भली भान्ति समझ लेंगे ।

श्री० सतीशकुमार कोड़ा बी० ए०, बी० टी०, आयुर्वेदाचार्य जगन्नाथपुर से अपने पत्र न० १२७ में लिखते हैं कि—प्रिय डाक्टर साहिब, सादर प्रणाम । आप पत्र बन्द न करें । यह हम आयुर्वेद भक्तों के लिये एक लान्छन होगा । हम लोग पत्र को चलाने के लिये यथा शक्ति सहायता देने को दृढ़ संकल्प हैं । मैं स्वयं दो नये ग्राहकों को प्रवेश कराने की जिम्मेदारी ले रहा हूँ । आपका पत्रोत्तर पाने पर मनीआर्डर से अग्रिम मूल्य भी प्रेषित होगा । अत्यन्त प्रेम से

आपका सतीश

आशा है सभी ग्राहकगण श्री० सतीश जी का अनुकरण कर हमें सहयोग प्रदान करेंगे ।

विनीत
सम्पादक

लीवर शर

यह दवा यकृत सम्बन्धी सभी रोगों के लिये हितकर है । लीवर सारयुक्त इस दवा के सेवन से शारीरिक मानसिक कमजोरी, यकृत दुर्बलता, श्याम और पीत पाण्डुरोग, हाथ पांव की सूजन, सांस फूलना आदि विकार मिटते हैं । मूल्य २।।)

ल्युकोआयर

इस दवाके सेवन से नया श्वेत और रक्त प्रदर ६ दिन में ही मिट जाता है, साथ ही हडफूटन, कमर का दरद, उदासी आदि व्याधियां दूर होकर रुग्णा स्त्री स्वस्थ और पुष्ट बन जाती है । ६ दिनकी दवा का मूल्य २) यदि रोग पुराना हो तो ४ शीशी सेवन करना चाहिये । एक शीशी से चार शीशी तक का पो० १।)

स्वर्ण जल

संग्रहणी रोग की यह सर्वश्रेष्ठ अव्यर्थ अमीरी दवा है । यह स्वर्ण योग है जिसमें स्वर्ण को परमाणु रूप में लाकर जल में घुलनशील बनाया जाता है । १० दिन की ३० मात्रा का मूल्य १५)

जी० एस० आयुर्वेदिक रीसर्च प्रॉडक्टस
३ दरियागंज देहली ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आमाशयम

दिनभर कुर्सी या गद्दी पर बैठकर काम करने वालों का आमाशय (मेदा) प्रायः दुर्बल हो जाता है; कारण झुककर बैठने से आमाशय पर दबाव पड़ता है जिससे उसके क्रिया संचालक में बाधा पड़ती है और धीरे २ वह निष्क्रिय सा होता चला जाता है। फिर भोजन पचन उचित रूपसे नहीं होता और भांति २ की उदर सम्बन्धी व्याधियां उत्पन्न हो जाती हैं। यदि आमाशय कठोर हो जाये तो खाने की औषधियां बहुत कम लाभ पहुँचाती हैं। 'आमाशयम' आमाशय पर मालिश करने की दवा है जो लगाते ही त्वचा में प्रविष्ठ हो जाती है। यह खाने की दवाइयों की अपेक्षा शीघ्र लाभप्रद है। इसके प्रयोग से आमाशय सबल होकर अपना काम सुचारु रूप से करने लगता है। मूल्य एक औंस का ४) डाकखरच सवा रुपया।

पीताम्बर (एक महान टॉनिक)

यह दवा पर्वतों पर बर्फ में पाई जाने वाली एक अत्यन्त शक्ति वर्धक बूटी के योग से बनी है। इसके सेवन से स्त्री-पुरुषों में किसी भी कारण से उत्पन्न हुई अशक्ति, दुर्बलता, शरीर का दुबलापन, वजन घट जाना, खून की कमी, गहरी नींद न आना, उत्साह और स्फूर्ति का अभाव आदि विकार मिटकर शरीर पुष्ट, शक्ति सम्पन्न और कान्तिमय हो जाता है, क्योंकि इसके सेवन से खून में श्वेत और लाल अणु खूब बढते हैं। मूल्य एक मास की दवा का १०) पो० १।)

नोट–निरामिष भोजी, अविवाहित और विद्यार्थी इसके लिए आवेदन न करें।

बवासीर का सरल इलाज (अंकुरना)

बवासीर चाहे खूनी हो या बादी–दोनों को ही ५ दिन में पूरा आराम होजाता है। इस दवा में खाने या लेप करने का कोई झंझट नहीं। केवल थोड़ी सी देर इस दवा का धुवां मस्सों को स्पर्श कराना होता है जिससे किसी प्रकार का किंचित भी कष्ट नहीं होता। दवा का नाम अंकूरना है। मूल्य ५) डाकखरच १।)

डायबोडीन

इक्षुमेह, मधुमेह (डायबीटीज) प्रसिद्ध और भयंकर रोग है और इस रोग की यह दवा विश्वास-जनक चिकित्सा है। डाक्टरीमें इन्सुलीन के इन्जेक्शन काम चलाऊ इलाज है इससे रोग नहीं मिटता। जब रोग बहुत बढ़ गया हो तो इससे सहायता ली जासकती है किन्तु रोगको निर्मूल करनेके लिए 'डायबोडीन' का सेवन परमावश्यक है। यह दवा १० दिन में अपना असर दिखा देती है और २० दिन के सेवन से शुगर नार्मल के बराबर होजाती है। दो मास सेवन से रोग समूल नष्ट हो जाता है। यह नवीन खोज को गई वन-स्पतियों के परीक्षण का सफल परिणाम है। मूल्य पूरा कोर्स २४) परीक्षार्थ आधा कोर्स १२) डकखरच जुदा।

अग्निस्थाई पारद गुटी

अग्निस्थाई पारे के दिव्य गुणों को प्रायः सभी जानते हैं किन्तु यह दुर्लभ वस्तु है, वर्षों के सतत प्रयास से अब हम इसको बनाने में सफल हो चुके हैं। इस पारद को चाहे जितनी तेज आग पर रखो, न उड़ेगा और न वजन कम होगा। इसकी गोली को मुख में रखकर चाहे जितना शारीरिक, मानसिक परिश्रम करो थकावट बिल्कुल न होगी। २–योगाभ्यास करनेवालों को समाधिस्थ अवस्था प्राप्त होती है। ३—भजन पूजन में मन एकाग्र होता है। ४–दूधमें गोलीको उबालकर पीने से अत्यन्त बल और पराक्रम प्राप्त होता है। अन्य गोप-नीय गुण सेवन विधिमें पढें। अनेक चिकित्सकों और महात्माओं द्वारा परीक्षित मूल्य २१) डाकखरच १।)

पायोगन

यह पायोरिया की सफल दवा है। इस दवा को दांतों पर मलकर ५ मिनट लगा रहने दो और फिर कुल्ला कर डालो। इस प्रकार प्रातःकाल, दोपहर और रात्रि को सोने से पहिले लगाने से मसूढ़ों का गला हुआ मांस भरने लग जाता है, पीप और रक्त का बहना बन्द होकर हिलते हुए दांत मजबूत हो जाते हैं। मूल्य २।।) डा० ख० १।)

जी० एस० आयुर्वेदिक रीसर्च प्रॉडक्टस ३ दरियागंज, देहली ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसायन फार्मेसी देहली का प्रमुख सचित्र मासिक पत्र

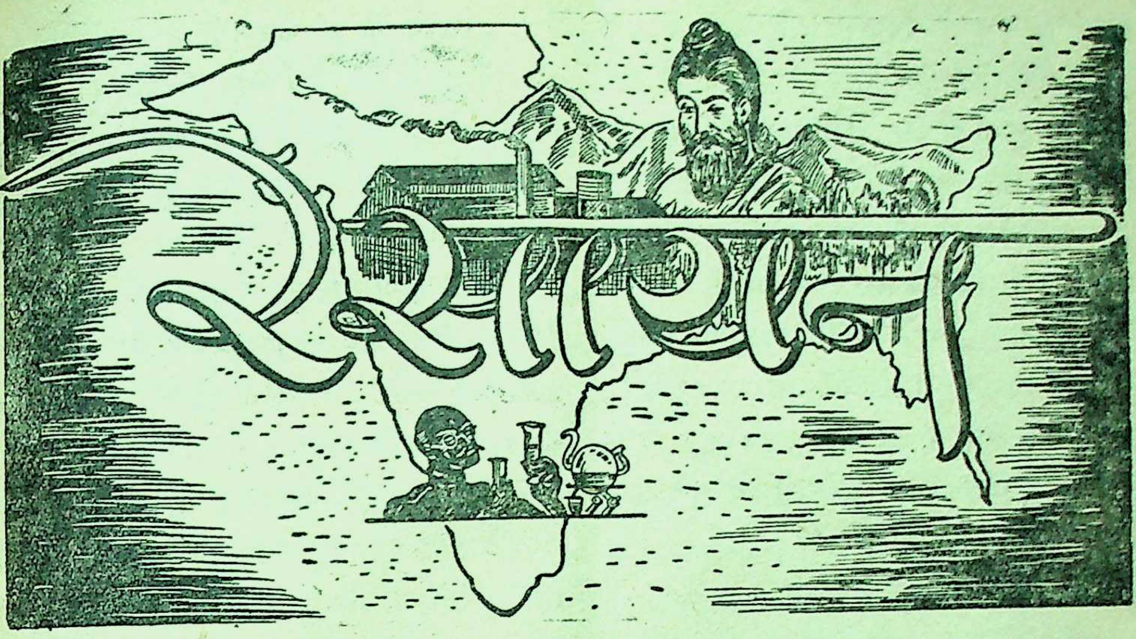

'सिद्ध रसे करिष्यामि, निर्दारिद्रय मयं जगत् ।'

वर्ष ९ | देहली अगस्त १९५६ | अङ्क २

स्त्रियों की स्थूलता कम करने के उपाय

(लेखक—कुमारी चन्द्रज्योत्सना)

स्थूलता स्त्रियों के सौन्दर्य के लिए अभिशाप है। इससे शरीर बेडौल हो जाता है तथा विविध अंग प्रत्यंग काफी सुन्दर होते हुये भी असुन्दर दीखते हैं। मैंने बहुत सी ऐसी बहनों को देखा है जो इस डर से कि कहीं शरीर स्थूल न हो जाय न तो भर पेट भोजन ही करती हैं और न आवश्यक विश्राम ही लेती हैं। बराबर काम में लगे रहने से उनका विश्वास है कि यदि स्थूलता बढती है तो भी नहीं बढने पायेगी। इस बात से मैं इन्कार नहीं करती कि पतलापन स्त्रियों के सौन्दर्य वृद्धि में सहायक होता है। पर इसके लिये दिन रात काम में लगे रहने और आवश्यक भोजन तक न करने का मैं समर्थन नहीं कर सकती, आवश्यकता से अधिक स्थूल होना निश्चय ही उचित नहीं है पर स्थूलता न बढने देने के लिए और भी बहुत से उपाय हैं। इस सम्बन्ध में निम्न बातें स्मरणीय हैं।

स्थूलता न बढना अच्छे स्वास्थ्य पर निर्भर है। कृत्रिम उपायों से इसे रोका नहीं जा सकता। अधिक भार सौन्दर्य वृद्धि में और जीवन के वर्ष घटाने में सहायक होता है क्योंकि इससे शरीर पर बोझ पड़ता है पर स्थूलता किसी रोग को आमन्त्रित नहीं करती वरन उसे तीव्र करती है।

स्थूलता, स्थूलता को आमन्त्रण देती है। जैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिल्ली अपने पूंछ को पीछा करती है। शरीर में चर्बी की तह जितनी मोटी होती जाती है अवयवों के कार्य की गति भी उतनी ही धीमी होती जाती है। शरीर की चर्बी जितनी कम जलती है उतनी ही ऐसी वस्तुयें मिठाई या चीनी खाने की इच्छा होती है, जिससे भीतर की चर्बी जल सके तथा शक्ति प्राप्त हो सके।

स्थूलता कम करने के लिये आपको इच्छानुसार भोजन करना चाहिये भूखे नहीं रहना चाहिये। भोजन हमारे शरीर में पहुँचकर प्रधान रूप से दो कार्य करता है (अ) शक्ति (कैलोरी) की पूर्ति (ब) प्रोटीन विटामिन आदि की पूर्ति।

कम करने के लिये

कैलोरी वजन पर और प्रोटीन आदि स्वास्थ्य पर नियन्त्रण रखते हैं अतः स्थूलता कम करने के लिये आपको भूखी रहने की अपेक्षा ऐसा आहार लेना चाहिये जिसमें विटामिन प्रोटीन आदि अधिक हों और कैलोरी को मात्रा आपकी शारीरिक शक्ति की आवश्यकता से कम हैं तो आपके शरीर की अतिरिक्त चर्बी नष्ट होकर आपकी काम करने की शक्ति बढ़ेगी।

आवश्यक खुराक में कमी से आपका स्वास्थ्य दिन पर दिन गिरता जायेगा। आवश्यक भोजन करने की आवश्यकता इसलिए भी है कि यदि आप भोजन करना बन्द कर देंगी तो शरीर के हर यन्त्र के विभिन्न अंग काम करना बन्द कर देंगे। अतः शरीर यन्त्र नियमित रूप से काम करता रहे इसके लिए आवश्यक है कि भोजन पर्याप्त मात्रा में किया जाय।

शारीरिक मामलों में जल्दी फल प्राप्ति की आशा नहीं करना चाहिए। कृत्रिम उपायों का प्रभाव जल्द प्रकट होता है पर वह स्थायी नहीं होता। उसका प्रभाव जड़ तक नहीं पहुँचता अतः स्थायी लाभ के लिए धैर्य के साथ स्वाभाविक उपायों का आश्रय लेना चाहिए।

स्थूलता के कई कारण हैं पर प्रमुख कारण है आवश्यकता से अधिक कैलोरी की वृद्धि। परिश्रम के अनुपात में उचित आहार लेना आप न भूलें। जो बहिनें घर में चौबीसों घंटे रहती हैं, वे इस बात में अक्सर भूल करती हैं। वे दिन भर तो जीजान से काम करती हैं और खाना आवश्यकता से कम खाती हैं। दिन में दो बार जलपान अवश्य करना चाहिए। बाहर काम करने वाली बहिनों को बीच में एक बार लंच अवश्य लेना चाहिए।

सात आवश्यक बातें

समय समय पर अपने वजन की जांच करती रहने के साथ ही वास्तविक वजन के चार्ट किसी भी डाक्टर के यहां देखने को मिल सकते हैं। इनसे यह पता चल सकता है कि कितनी ऊंचाई के व्यक्ति का वजन कितना होना चाहिये। इस प्रकार की जांच से आपको यह पता चल जायगा कि आपको अपना कितना वजन घटाना है।

यदि आपका अधिक भार पंद्रह पौंड से अधिक हो तो अपने चिकित्सक से परामर्श लें।

दिन में तीन बार भोजन करें। भोजन करने सोने नहाने आदि का एक निश्चित कार्य क्रम बनायें और उसी के अनुसार कार्य करें।

सप्ताह में एक बार अपना वजन अवश्य करायें। प्रत्येक बार एक ही प्रकार की पोशाक पहिन कर और एक ही समय (सुबह का समय सबसे अच्छा होगा)। वजन करायें।

प्रत्येक सप्ताह वजन घटाने की गति का भी हिसाब रखें। प्रति सप्ताह औसतन दो पौंड वजन घटना चाहिये। यदि आपका शारीरिक दृष्टि से स्वास्थ्य सबल है तो अधिक यदि स्वास्थ सबल नहीं हैं तो कम भी हो सकता है।

शेष पृष्ठ २८ पर पढ़ें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्तचाप (ब्लडप्रेशर)

(लेखक—वैद्य प० सभाकांत झा, शास्त्री)

(गतांक से आगे)

यह खाने में कटु और उष्णवीर्य होती है। पित्त प्रकृति वालों को इसके सेवन से पसीना छूटने लगता है। कभी २ मूर्छा भी आ जाती है। किन्तु वातानुलोमन करने में इसका अच्छा उपयोग होता है। अतएव यह हाई ब्लडप्रेशर को घटाती और अच्छी निद्रा लाती है। यह स्वेदन गुण विशिष्ट होने से स्रोतसों को खोलती और नरम करती है। यदि सर्पगंधा की जड का महीन चूर्ण बना १ माशा की मात्रा में दूध के साथ सेवन किया जाय तो इसकी उष्णता कम होकर यह पित्त प्रकृति के लिए भी विशेष गुणकारी होता है।

निद्रा लाने के लिए—दूसरा प्रयोग निम्न प्रकार है—

सर्पगन्धा १ माशा, जवासा की जड १ माशा, कालीमिर्च ५ दाने, गुलकन्द १ तोला लेकर सबको पीस १ तोला मिश्री मिला, १ छटांक पानी में शर्बत बनाकर पीवें।

निम्न विक्षेप में रस सिंदूर २ रत्ती, मोती भस्म २ रत्ती, प्रवाल भस्म २ रत्ती, लौह भस्म १ रत्ती लेकर रखें। इन सबकी दो मात्रा (पुड़िया) बनावें।

मात्रा और उपयोग—१-१ मात्रा प्रातः सायं मधु के साथ दें।

नोट—रस सिंदूर के बदले मकरध्वज या चन्द्रोदय भी ले सकते हैं।

अनेक रोगियों में सिर्फ अजीर्ण रोग के कारण रक्तभार बढ़ जाता है, इस अवस्था में आमाशय के पाचक रस को सबल बनाने का प्रयत्न करना चाहिये।

"वृ० क्रव्याद रस, और चौसठ प्रहरी पीपल" २ रत्ती दिन भर में दो बार शहद व भुना जीरा के साथ देने से लाभ हो जाता है। हिंग्वाष्टक चूर्ण या धनंजय वटी से भी लाभ होता है।

सावधानी और पथ्यापथ्य

पूर्वोक्त विस्तृत विवेचन से ज्ञात हो जायगा कि यदि उचित सावधानी रखी जाय, तो इस रोग से छुटकारा मिल सकता है। रक्त सर्वदा शुद्ध रहे, इसकी सावधानी रखी जाय तो इस रोग का आक्रमण ही नहीं हो सकता है। शुद्ध रक्त भी पचन क्रिया में सहायक होता है।

चिकित्सक का कर्तव्य है कि रक्तचाप रोगी की दिनचर्या का पता लगाकर उसे अधिक शारीरिक और मानसिक परिश्रम से रोक दे। चिन्ता, शोक और क्रोध से सदा बचता रहे। आराम करना इस रोग में हजार दवा की एक दवा है। प्रातः सूर्योदय से पूर्व हवा में नित्य चहल कदमी करना अच्छा है। स्वच्छ जलवायु वाले स्थान में या निर्मल झरने वाले स्थान में कुछ दिन तक रहना अच्छा है। भोजन दिन में ही सिर्फ एक बार करें, रात को दूधमात्र ले लिया करें। दूध लेना अच्छा और सुपाच्य आहार है. उससे आंतों की पाचन क्रिया में बोझा नहीं पड़ता है। दूध से धमनियों की क्रिया में तेजी आती है। क्योंकि उन्हें पोषण मिलता है। दूध से सम्पूर्ण शरीर में नवचेतन आता है। वृक्क दोष भी इससे मिटता है। रोगीकी शारीरिक शक्ति बढ़ाकर रोग की शक्ति को घटा देता है।

पिट्ठी बनी हुई चीजें थोड़ी मात्रा में लें। भोजन इतना ही करना चाहिये, जो सुखपूर्वक पच जाये। क्योंकि अजीर्ण होना ही इस रोग को बुलाना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मांस, मछली, अण्डे, चाय, काफी जहां तक बन पड़े नहीं लेना चाहिये। यदि आवश्यकता ही हो जाय, तो बहुत थोड़ी मात्रा में लें। शराब तो एकदम बन्द ही करदें। क्योंकि यह बहुत उत्तेजना पैदा करती है, अतः इससे खूब बचना चाहिये।

अंगूर, अनार, सेब, नासपाती, केला [कम] साधारणतया ले सकते हैं। स्वच्छ झरने का अथवा तीव्र प्रवाह वाली नदियों का अथवा नहर-कुओं का जल खूब पान करना चाहिये। दाल यद्यपि वायुकारक होती है, फिर भी मूंग की दाल और अरहर की पतली दाल भी जीरे से छोंककर हानिकारक नहीं होगी।

नमक शरीर में उष्णता पैदा करता और रक्त में क्षार भी बढ़ाता है, अतः अन्दाज से सेंधा नमक लेना चाहिये। थोड़ा २ गर्म जल से स्नान करें, इस बात की कोशिश में रहें कि प्रातः सायं दस्त [पाखाना] खूब साफ होवे। मल, मूत्रादि के वेगों को कभी नहीं रोकना चाहिये।

यदि बद्धकोष्ट [कब्जियत] की बीमारी हो, तो सप्ताह में दो बार बस्ति क्रिया करें, शिरदर्द, चक्कर, बेचैनी दूर करने के लिए मक्खन-मिश्री या फल लेवें। धमनी नरम और फैली हुई रहें। इसके लिए जल का यथेच्छ प्रयोग करें। नीबू, सन्तरा, मुसम्बी आदि कुछ अम्ल पदार्थ तथा कटु पदार्थ अल्प मात्रा में लें।

सम्भोग मैथुन) से रक्त-विक्षेप बढ़ता हैं। अतएव यथासम्भव इससे बचता रहे। बीच-बीच में उपवास करना लाभदायक है। भोजनके साथ कागजी नीबू और मट्ठे का उपयोग करना लाभदायक है। रहने के लिए सम शीतोष्ण स्थान (जहां अधिक गर्मी और न सर्दी पड़े) में रहना अच्छा है। दिन में सोना और रात में जागना बहुत हानिकारक है। धूप में घूमना, ऊंचे-नीचे चढना उतना व्यायाम करना और उष्ण पदार्थों से बचते रहना चाहिये।

पुराने गेहूँ और जौ की रोटी, चावल हितक[र] हैं। मूंग और अरहर की दाल, चने और कुल्थी [की] दाल तथा घी हितकर है।

चौपतिया, मकोय, पुनर्नवा, बथुआ, लौ[की], नेनुआ, मूली, टमाटर, परवर आदि शाक अधि[क] लाभदायक हैं। लहसुन खानेवालों के लिए जभी क[भी] लहसुन खा लेना अच्छा है। क्योंकि यह पेट में वा[यु] गैस उत्पन्न करने के कारणों को दूर करता है। इस[में] रोगनाशक शक्ति भी है, आंतों के कीटाणुओं [की] उत्पत्ति भी इससे रुकती है, किन्तु यह उत्तेजक है अतएव यदि रक्तसंचार की उत्तेजना बढ़कर हानि हो[ने] की सम्भावना हो, तो इसका सेवन कतई न करें।

भोजन खूब चबाकर धीरे २ करना चाहिये जल्दी २ भोजन करने से उसका परिपाक अच्छा न[हीं] होता, अच्छा रस भी नहीं बन पाता है। यदि प्रात[ः] जलपान करने की इच्छा हो, तो आंवले या सेब क[ा] मुरब्बा लें। गर्म पदार्थ बिलकुल न लें। गर्म पदार्थ [के] सेवन से रक्त भी गर्म होता है। उष्णता पाकर र[क्त] सूखने लगता है और आंतों में भी रूक्षता आती और मल सूखता है। सूखा मल आंतों में लिपटा रहता है निकलने नहीं पाता। मल संचित होने से अपान वा[यु] ऊपर की ओर बढ़ता है, जिससे रक्त का दबाव बढ़[ता] है। ऐसी गर्मी धातु को भी उष्ण करती और सुखा[ती] है। रक्त सूखने से धमनी और सिराओं का पोष[ण] ठीक से नहीं हो पाता है। अतएव धमनियां सूख[ने] लगती और कड़ी पड़ जाती हैं।

लाल मिर्च किसी भी हालत में न लें। तेल चाहे सरसों का हो या तिल का बन्द ही कर देना चाहिये। वनस्पति घी से तो बराबर सावधान रहें। गुड़ का भी सेवन न करें।

शाक में बैंगन, मूली, करेला, सूरण, खेकसा,

शेष पृष्ठ २५ पर पढ़ें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी आंखें

(लेखक—डा० आर० एस० अग्रवाल)

[गतांक से आगे]

१—रोग कब से हो रहा है ?

२—रोग होने का कारण क्या था ?

३—क्या पहले भी यह रोग आपको हुआ है ?

४—आपके परिवार में इस तरह का रोग अन्य किसी को तो नहीं हुआ ?

५—अभी तक आप क्या इलाज कर रहे हैं आदि आदि...

समय के अनुसार अन्य भी प्रश्न किये जा सकते हैं लेकिन चिकित्सक को अपनी परिधि से बाहर नहीं जाना चाहिए। मानसिक अवस्था पर भी प्रकाश मनोवैज्ञानिक तरीके से डाला जा सकता है।

मुख्यतर रोगियों को वार्तालाप के बाद अंधेरे कमरे में ले जाकर बल्ब के प्रकाश में मैगनीफाईन शीशे से नेत्रों की परीक्षा की जाती है। परीक्षा काल में नेत्रों की पलकों, कंजंगटाईवा, कानीनिका, कृष्ण मंडल एवं पुतली की अवस्था का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इस तरह की परीक्षा से पलकों के रोग कुकरे एवं अन्य नेत्र रोगों का ज्ञान हो जाता है परीक्षा काल में चिकित्सक को काफी संचेत रहना अति आवश्यक रहता है।

नेत्रों की बाह्य परीक्षा के बाद रोगी को २० फीट की दूरी पर रखे दूर दृष्टि चार्ट को पहले दोनों और बाद में एक एक आंख से पढ़ना चाहिये। एक नेत्र से पढ़ते समय दूसरे नेत्र को हलके से हथेली की सहायता से ढक लेना चाहिये। जो व्यक्ति दूर दृष्टि चार्ट को पढ़ने योग्य न हो सकें उन्हें पौट हुक चार्ट या जन्तुओं के चार्ट पर परीक्षा लेनी चाहिये। अगर रोगी २० फीट या ६ मीटर से प्रथम अक्षर पढ़ने योग्य हो तो २०/२०० या ./६० लिखना चाहिये। (२०/२०० या ६/६० लिखने का अर्थ है कि रोगी २० फीट या ६ मीटर की दूरी से २०० फीट या ६० मीटर की दूरी के अक्षर पढ पाता है।) इसी तरह दूसरी या तीसरी पंक्ति पढ़ने पर चार्ट की लाईन के ऊपर लिखी गिनती लिखनी चाहिये, जो रोगी ६ मीटर या २० फीट की दूरी से चार्ट को पढ़ने योग्य नहीं होता उसे इतनी दूरी से पढ़ना चाहिये जहां से वह ठीक तरह देखने योग्य हो।

दूर दृष्टि की परीक्षा के बाद समीप के टेस्ट टाईप को ८ या १० इञ्च की दूरी से नेत्रों की परीक्षा करनी चाहिये। पढ़ते समय जिस नंबर के टेस्ट टाईप को वह पढ़ सके उसे नोट कर लेना चाहिये। उदाहरण रूप अगर तीसरे नंबर के टेस्ट टाईप को पढ़ने योग्य हो तो हि० ३—८ या १२ इञ्च लिखना चाहिए।

नेत्रों की चार्ट आदि पर परीक्षा कर लेने के बाद रेटिनसकोप द्वारा नेत्रों का निरीक्षण करना चाहिए। रेटिनसकोप की सहायता से रोगी के रोग का शीघ्र ज्ञान हो जाता है। मायोपिया (दूर दृष्टि का रोग), हाईपरमेट्रोपिया (समीप की दृष्टि में क्षति), एस्टिगमेटीजम एवं मिक्सड एस्टिगमेटीजम के रोग इस यंत्र द्वारा ज्ञात हो जाते हैं इस यंत्र एवं चश्मे की परीक्षा वाले बक्स के सहयोग से रोगी के ठीक नंबर के चश्मे के देने में किसी प्रकार की तकलीफ का सामना नहीं करना पड़ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेटिनसकोप द्वारा परीक्षा लेने की विधि

पहले रोगी को अंधेरे कमरे में बैठा दिया जाता है और गर्दन के पीछे लगे बल्ब के प्रकाश के सहयोग से शीशा लगे रेटिनस्कोप द्वारा परीक्षा की जाती है। आजकल बैटरी के सहयोग से रेटिनसकोप का आविष्कार हो गया है जिसे किसी भी अवस्था में प्रयोग किया जा सकता है।

जिस समय यन्त्र द्वारा नेत्रों की पुतली पर हल्का सा प्रकाश यन्त्र द्वारा फेंका जाता है उस समय पुतली के पास एक प्रकार की छाया दृष्टिगत होती है। यन्त्र को दायें बायें एवं ऊपर नीचे हिलाने पर अगर छाया विपरीत दिशामें हिलती दृष्टिगत हो तो मायोपिया और अगर साथ हिलती हो तो हाईपरमेट्रोपिया। जिस समय यन्त्र को ऊपर नीचे हिलाने पर छाया कुछ तेज और दायें बायें हिलाने पर कुछ हलकी हिलती दृष्टिगत हो तो एस्टिगमैटीजम का रोग माना जाता है। एस्टिगमैटीजम, मायोपिया एवं हाईपरमेट्रोपिया के रोगियों में देखने को मिलता है। जिस समय ऊपर नीचे हिलाने पर छाया विपरीत चले और दायें बायें हिलाने पर साथ चलती दृष्टिगत हो तो मिक्स एस्टिग-मेटीजम का रोग समझा जाता है।

ठीक तरह रोग को जान लेने पर ऐनक के शीशे को नेत्रों के सामने लगाकर देखा जाता है। (माईनस) मायोपिया के रोगियों पर। (पल्स) हाईपर-मेट्रोपिया के रोगियों पर एवं सिलिंड्रीकल चश्मे एस्टिगमेटीजम के रोगियों पर लगाये जाते हैं।

उदाहरण

जिस समय आंखों के सामने −२.० का नम्बर लगाने पर छाया स्थिर हो जाय तो दूरदृष्टि चार्ट की परीक्षा के समय −३.० या उसके समीप के नम्बर को प्रयोग में लाना चाहिए। अगर आसपास का नम्बर ठीक प्रतीत न होता हो तो रोगी को नेत्र के किसी अन्य रोग का रोगी समझना चाहिये।

प्रश्न −२.० निकाले नम्बर में −१.० जोडने का कारण ?

उत्तर नेत्रों की परीक्षा ५ या ६ फीट की दूरी से की जाती है। इसी दूरी को −१.० का नम्बर मान लिया जाता है। अतः जो नम्बर रेटिनसकोप द्वारा निकाला जाता है उसमें यह जोड दिया जाता है।

ओपथलमोस्कोप की विधि

रेटिनसकोप की परीक्षा के बाद इस यन्त्र को प्रयोग में लाया जाता है। यह यन्त्र बिलकुल अंधेरे कमरे में रोगी के नेत्र से ६ इंच की कम दूरी पर लाकर प्रयोग किया जाता है। इस यन्त्र की बैट्री के प्रकाश से नेत्रों के कानीनिका, कांच, विट्रिमस एवं छायापट की परीक्षा की जाती है। छायापट को प्रत्येक दिशाओं से देखने के बाद रक्त की नालियों, डिस्क एवं केन्द्र विन्दु की परीक्षा की जाती है। ऊपर कहे स्थलोंके रोग इस यन्त्रसे आसानीसे ज्ञात होजाते हैं।

स्लिट लेंप

जिन रोगियों के कानीनिका मंडल में खराबी होती है उन्हें इस यंत्र की सहायता से देखा जाता है। यंत्र की बैट्री के प्रकाश के सहयोग से कानीनिका का प्रत्येक भाग साफ दृष्टिगत हो जाता है। इस भाग में जख्मों के चिन्ह और अन्य बारीक खराबी कुछ बड़े रूप में दृष्टिगत हो जाते हैं।

पैरिमीटर

नेत्रों की परीक्षा के बाद नीला मोतिया या छायापट के रोगियों को इस यंत्र से निरीक्षण किया जाता है। इस यंत्र से रोगी के एक स्थान पर दृष्टि केन्द्रिय होने के समय दायें बायें एवं ऊपर नीचे देखने की क्षमता का ज्ञान हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बायोफोटो मीटर

नेत्रों की कम से कम रोशनी में देखने की क्षमता के लिये यह यंत्र प्रयोग में लाया जाता है। विटेमिन ए की कमी का ज्ञान भी इसी यंत्र के सहयोग से हो जाता है।

एम्बलियसकोप

एम्बलियोलिया के रोगियों की नेत्र अवस्था का ज्ञान इस यंत्र द्वारा आसानी से जाना जासकता है।

मेडोक्स विंग टेस्ट

यह यंत्र भेंगे रोगियों के नेत्र अवस्था के ज्ञान के लिये प्रयोग में लाया जाता है।

नेत्रों की परीक्षा के समय यंत्र वास्तव में अपना स्थान रखते हैं लेकिन इसके साथ चिकित्सक की चतुर बुद्धि का भी होना बड़ा आवश्यक है। बहुत से ऐसे रोगी होते हैं जिन्हें यन्त्रों द्वारा ठीक तरह नहीं जाना जा सकता लेकिन चिकित्सक की चतुर बुद्धि उसके नेत्रों का ज्ञान जान लेती है। बहुत बार नीला मोतिया या मोतिया बिन्द के रोगी को उसके रोग का गल्त ज्ञान करा देने से उसके मानसिक संतुलन में खराबी आ जाती है और बाद में वही रोग उसे हो जाता है। अतः चिकित्सक को चाहिये कि वह ऐसे रोगी को काफी बार निरीक्षण करे या अन्य दूसरे चिकित्सक से निरीक्षण कराये और बादमें अपनी राय को प्रगट करें।

पांचवां भाग

पलकों के रोग और उपाय

हमारे पलक त्वचा, कोमल मांस पेशियों, मुलायम हड्डी और पतली झिल्ली कंजंगटाईवा से बने हैं। इनके अन्दर बहुत से ग्लैंड, रक्त की नालियां, लिम्फेटिक्स एवं नसें होती हैं।

पलकों के किनारे बहुत ही कोमल होते हैं और इनके पास ही छोटे छोटे बाल होते हैं। यह बाल दो या तीन तह में होते हैं और इनकी जड़े मांस पेशियों में होती हैं। पलक के कोने के अंत में जो भाग होता है; नाक की तरफ उसे केंथल कहते हैं। इसी भाग में छोटासा कोमल मांस का टुकड़ा होता है उसे करंकल कहते हैं।

लेवेटर नामक नसकी ओर बिट से सदी हुई है जो पलकों को ऊपर उठानेमें सहायक होती है ओरबोकुलिस नामक नस पलकों को भींचने में सहायक होती हैं। पलकों के मध्य भाग में एक पतली कोमल हड्डी होती है जिसे टारसस कहते हैं। टारसस के निचले भाग में मेबोमियन ग्लेंड नामक ग्रंथियां होती है। ऊपर के पलक में ३० या ४० और नीचे के पलक में २० या ३० होती है। इन ग्रंथियों में से पतला गाढ़ा पानी सा निकलता है।

टारसस के पिछले भाग से एक पतली झिल्ली लगी हुई है जिसे कंजंगटाईवा कहते हैं।

पलकों को रक्त ओपथलमिक नामक रक्त नली से मिलता है और बाद में रक्त कनपटी और चहरे की नालियों में गिरता है।

तीसरी नस लेवेटर, चहरे और ओरबीक्युलोरिस नस को सूचना देता है और सिम्पेथेटिक पलकों के मांस को सूचना देता है।

हमारे पलक तेज धूप, धूल और बाह्य पदार्थ से रक्षा करते हैं। इनकी सहायता से अश्रु ग्रंथी का कार्य ठीक प्रकार से हो पाता है और इनके झपकने की गति से नेत्रों को शक्ति प्राप्त होती है।

पलकों में अनेक प्रकार के रोग होते हैं जो निम्नलिखित है।

ब्लेफेराईटिसः कुंभिका

यह रोग पलकों के कोमल किनारों पर होता है। रोग काल में छोटे छोटे सूखे पवरे इस भाग पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृष्टिगत होते हैं। यह रोग दो रूपों में होता है।

(क) लालिमा लिये हुए

(ख) बिना लालिमा के

जिस समय कुंभिका रोग लालिमा लिये हुये होता है उस समय पलकों के किनारे सूजे और हलके लाल हो जाते हैं। रोग काल में पलकों के बालों के साथ छोटे छोटे पतरे लग जाते हैं और कुछ समय बाद गिर जाते हैं। अधिक गोरे व्यक्तियों में यह रोग अधिक देखने में मिलता है।

इस अवस्था में नेत्रों में चिपचिपाहट आ जाती है। कभी कभी अवस्था खराब होने पर रक्त भी निकल आता है। पलकों के बाल टेढे, जल्दी गिरने वाले हो जाते हैं। कुछ रोगियों में एक बार बाल निकल जाने पर फिर से बाल नहीं उगते। ऐसी अवस्था में नेत्र लाल, खुजलाहट, सूजन, पानी आना और पलकों का कोमल हो जाना दृष्टिगत होता है।

परिमाण

इस रोग के बुरे परिणाम लालिमा होने पर ही होते हैं। पलकों का फिर से न उगना या अन्दर की तरफ मुड़ जाना हो जाता है।

कारण

आस पास के वायु मंडल में खराबी, शारीरिक कमजोरी, मुहासों का अधिक होना, शीतल रोग (Measer), तेज धूप, धुंआ, धूल आदि। कम नींद दृष्टि की कमजोरी मुख्यतर समीप की या ऐस्टिगमेटीजम का रोग, आंसुओं का ठीक न बनना, कम सफाई इस रोग के कारण माने जाते हैं, यह रोग किसी भी आयु में हो सकता है लेकिन छोटे बच्चों में अधिक देखने को मिलता है।

चिकित्सा

यह रोग बढ जाने पर असाध्य हो ही जाता है। रोग के कारण को दूर करना प्रमुख चिकित्सा होनी चाहिये। नेत्रों को साफ रखना, दृष्टि दोष में कमी आने पर रोग पर असर पड़ता है। पलकों के किनारों को अच्छी तरह साबुन के पानी से साफ करना चाहिए। पतरों के ठीक तरह साफ होजाने पर कुछ देर सूर्य की किरणों के सामने ले आना चाहिये। नेत्रों की इस बन्द अवस्था के बाद रोगी कुछ देर भाप देकर नेत्रों को फिर से साफ कर देना चाहिये। बाद में पलकों के किनारों पर पैनीसिलीन का मरहम १००० यूनिट या पीला मरहम लगा देना चाहिये। नेत्रों को बोरक्स के पानी से दिन में तीन या चार बार अवश्य धोना चाहिये। धोने के समय ठण्डे जल के स्थान पर गुनगुने पानी को कार्य में लाना नेत्रों के लिए लाभदायक रहता है। कभी २ सिलवर नाईट्रेट की एक परसेंट की बून्दें नेत्रों में डाली जा सकती हैं। कुंभिका रोग अधिक खराब होगया हो तो पलकों के सारे बालों को निकालकर ऊपर कही चिकित्सा को करना चाहिए।

गुहरी या अंजननामिका (STYE)

गुहरी पलकों के कोमल किनारों पर दाने के रूप में हो जाती है।

चिह्न

पलकों के किनारों पर हलकी लाली, सूजन और कोमलता आ जाती है। इस कोमलता के कारण थोड़ा छू लेने से रोगी को पीडा का अनुभव होता है। कुछ समय बाद पीले दाने फूटते भी दिखाई देते हैं।

यह रोग किसी भी अवस्था में हो सकता है लेकिन युवा व्यक्तियों में अधिक देखने को मिलता है। अकसर यह रोग नेत्रों का गन्दा होना, धूल, धूप या अन्य अस्वस्थ कारणों में रहना, कब्ज और दृष्टि दोष भी इसके कारण माने जाते हैं।

क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक लहसुन प्रेमी अंग्रेज

(लेखक—स्वामी पारसनाथ जी)

(गतांक से आगे)

दूसरे सप्ताह में—लहसुन के साथ शहद लिया गया। पहाड में ताजा शहद मिलना कोई कठिन बात नहीं। अतः वह दूसरा सप्ताह भी योगी का आनन्द-पूर्वक व्यतीत होगया। वे दिन में ५-५ मोटी तुरियां लहसुन की पिसवाते थे। उसमें आधी छटांक शहद तथा कुछ गंगाजल मिलाकर उसे दिन में चार बार पीते थे।

तीसरे सप्ताहसे मुनक्के को संगी बनाया गया। पांच तुरिया लहसुन के साथ, दस दाने मुनक्के के लेकर पीसे जाते और एक गिलास पानी के साथ शर्बत बनाया जाता था। यह क्रिया भी दिन में चार बार चलती थी। एक सप्ताह यही चला और अब काया कल्प की क्रिया को तीन सप्ताह बीत गये थे।

चौथा सप्ताह शुरू हुआ। आंवले के रस में लहसुन को घोटा जाने लगा। यह प्रयोग भी नियम-पूर्वक एक सप्ताह चला और एक महीना समाप्त हो गया।

योगीराज जी रात में बहुत कम सोते थे। अधिकांश समाधी में रहते थे। एक महीना बाद हमने देखा कि स्वामी जी के शरीर का चमड़ा फटने लगा है। यह भी जान पड़ता था कि पुराने चमड़े के स्थान पर नवीन चमड़ा जन्म धारण करता आरहा है। दूसरे महीनेमें उन्होंने सरसोंके तेलमें लहसुनका रस मिलाकर अपने दो चेलों द्वारा अपने शरीर में मालिश कराना आरम्भ किया। भूख लगनेपर दूध पीने लगे। मालिश द्वारा पुरानी चमड़ी उधड़ने लगी और नवीन चमड़ी आने लगी। पहले जो बुढ़ापे का जला सा शरीर था, वह बदलने लगा। अब समस्त अंगोंमें नवीनता प्रकट होने लगी।

एक महीना गाय का दूध पीकर, स्वामी ने कायाकल्प के दो मास पूरे किये। तीसरा महीना शुरू हुआ। इस महीने प्रतिदिन ४ छटांक लहसुन सेवन करना चाहिये। प्रातः ६ से ९ तक एक खुराक, ९ से १२ तक दूसरी खुराक, १२ से ३ बजे तक तीसरी खुराक, ३ से ६ बजे तक चौथी खुराक लेनी चाहिये। दस तुरियां लहसुन की एक तोला शहद, एक तोला बीज रहित मुनक्का, ३ तोले मीठे आंवले, इन सबको मिलाकर पीस लेने के बाद उसे चम्मच से खाना पडता था। यह क्रिया भी एक महीना चालू रही। इस प्रकार ९१-वें दिन कायाकल्प की पूरी क्रिया समाप्त हुई थी।

और वह ७० साल का जर्जर २७ वर्ष जैसा नवयुवक होगया। अतः लहसुन को अमृत तक कहा जा सकता है। यह सर्वरोग शोकहारी रसायन है।

सन १९१४ से १९१९ ई० तक यूरोप में हर हिटलर ने जो दूसरा महाभारत लडा था उस समय की बात है। आरमी सर्जन मि० पिट ने अखबारों में एक अद्भुत समाचार प्रकाशित कराया था। लिखा था कि लहसुन के रस में थोडा गरम करके ठण्डा पानी मिला कर उस पानी को चाहे जैसे जेप लगे हुए घाव पर पर लगाने से या उस पानी से घाव को धोने से या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस पानी में तर किया हुआ कपडा घाव पर बांधने से सडान पैदा करने वाली चेपी के कीटाणुओं का सर्व-नाश हो जाता है। घाव स्वयं शीघ्र भर जाता है। घाव कितना ही बडा हो, कितना ही हठीला हो, लहसुन का रस जादू का प्रभाव दिखलाता है। मैंने यूरोप के समस्त मोरचों पर लहसुन के इस प्रयोग का प्रचार कर दिया था। परन्तु यह आविष्कार मैंने स्वयं नहीं किया था। एक किसान स्त्री घायलों की घाव पीडा लहसुन द्वारा दूर कर रही थी। मैंने उसे देख लिया। मैंने उसे डांटा और कहा कि जो व्यक्ति सर्जनी पास नहीं वह सरकारी घायलों की चिकित्सा नहीं कर सकता है—हां, ऊपरी सेवा अवश्य कर सकता है। सुनकर वह स्त्री हंसी। बोली—"घावों की जो सफल चिकित्सा मैं कर रही हूँ वह आप सर्जन लोग स्वप्न में भी नहीं कर सकते। डाक्टर और सर्जन लोग जानते ही नहीं हैं कि लहसुन में घाव पूरक, कितनी जबरदस्त शक्ति है। वही प्रयोग मैंने भी अनेक घायलों पर किया और बात सच पाई। इस लिए संसार के लाभार्थ आज मैं यह प्रयोग प्रचारित कर रहा हूं। इसके बाद मैंने लहसुन पर और भी रिसर्च की है। एक तोला छिला हुआ लहसन लो, उसे एक तोला सेंधा नमक के साथ बारीक पीस डालो। उसे अवलेह जैसा बनालो। उसमें से ६ माशा अवलेह, ६ माशा जमा हुआ घी के साथ, जरा सी हींग मिलाकर—प्रातः, मध्याह्न, शाम को चाटने से प्रथम स्टेज का क्षय, मन्दाग्नि, अजीर्ण, अफारा, ज्वरशूल, खांसी, इनफ्लयूंजा, नासूर, संधि वात, इत्यादि रोग नष्ट हो जाते हैं। इसका यदि टिंचर बनाना हो तो, लहसुन को पीसकर, चार गुना रेक्टि-फाइड स्पिरिट में डालकर, तीन दिन तक पड़ा रहने दो। फिर उसे छान लो। स्टेपर्ड बोतल में भर दो। इसकी मात्रा २ ड्राम तक है।

१२—'इंडियन एण्ड ईस्टर्न ड्रगिस्ट' में लहसुन का ज़िक्र

मई १९२२ के अंक में, उक्त मासिक पत्र ने, प्रकाशित किया था—'लहसुन, उत्तेजक और चर्म दाहक होता है। एक शान्ति दायक और पाकस्थली को उत्तेजित करने वाले द्रव्य की तरह, लहसुन पाचन क्रिया की सहायता करता है। अन्न को रस बनाने में मदद देता है। कोष्ठ वायु को वह नष्ट कर डालता है। एक कफ निवारक द्रव्य की तरह, वायु नालियों पर तथा फुफ्फुस पर विशेष प्रभाव डालता है। जिससे वह ऐसे केसों में—जिनमें वायु प्रणाली फैली हुई होती है और दुर्गंधयुक्त कफ गिरता रहता है लहसुन महा उपकारी होता है। फेफड़े के क्षय में, लहसुन का उपयोग करने से, कफ गिरना कम हो जाता है। रात के पसीने को भी रोकता है। भूख को बढ़ाता है। नींद सुखदायक लाता है। एक ऋतु स्राव-नियामक पदार्थ की तरह-लहसुन-मासिक धर्म के प्रभाव को बढ़ाता है। शक्ति देता है। त्वचा और गुरदे को उत्तेजना देता है। शान्ति भी प्रदान करता है। मूत्र की तादाद बढ़ाता है। इस लिये लहसुन का प्रयोग-जलोदर में किया जाता है। हिस्टीरिया रोग में, मूर्च्छित लड़कियों की नाक में, लहसुन के रस को सुंघाने से उनकी मूर्च्छा भंग हो जाती है। लहसुन को नमक के साथ देने से, उदरशूल और स्नायविक मस्तक शूल को दूर करता है। छाती के ऊपर पुल्टिस की तरह लहसुन का लेप किया जाता है। इसी प्रकार बच्चों के आक्षेप रोग में, उनकी पीठ की रीढ़ में, लहसुन के रस की मालिश की जाती है। पेट और हृदय के बीच में लहसुन का लेप किया जावे तो, पाकस्थली की खराबी वाले जुकाम से, छुटकारा मिल जाता है। पेट की कृमियों को नष्ट करने में लहसुन अद्वितीय है। समस्त रोगों के कीटाणुओं को नष्ट करता है। क्षय के जन्तुओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को मारता है। सूजन को पटकाता है। आर्द्रता का शोषण कर लेता है। लहसुन की गांठों को तेल में भूनकर-उस तैल की मालिश करने से जोड़ों का दर्द और जोड़ों की सूजन दूर होती है। उस तैल को कान में टपकाने से कर्ण शूल दूर होता है।

जो लोग खाद्य पदार्थों के साथ नित्य लहसुन का उपयोग करते हैं, वे इन्फ्ल्यूएंजा और बेरीबेरी जैसे भयंकर रोगों से बचे रहते हैं।

प्रसव काल में, प्रसूता स्त्रियों को, लहसुन खिलानें का आम रिवाज सारे देशों में है। उससे बहुत लाभ होता भी है। छूत वाले रोग, लहसुन से भागते हैं। क्षय की चिकित्सा में लहसुन का एक महत्व पूर्ण अंश है।

पानी मिला लहसुन का रस, प्रत्येक बीमारी में प्रयोग किया जा सकता है। कामोद्दीपन के लिये भी लहसुन एक बहु मूल्य वस्तु है। बुढ़ापे के प्रारम्भ में, जब मनुष्य की काम शक्तियां जीर्ण होने लगती हैं, तब अगर लहसुन की कलियों को घी में तलकर उनका सेवन नियम पूर्वक किया जावे, तो मनुष्य की वाजीकरण शक्ति पुनः स्थापित करता है।

मतलब यह कि लहसुन में-क्षय कीटाणु नाशक कफनिस्सारक, वाजीकरण, उत्तेजक, वात नाशक, घाव पूरक, मासिक धर्म संशोधन आदि अनगिनती गुण विद्यमान हैं। भूलोक का अमृत यही है!"

लहसुन के प्रयोग

१३—खांसी

खांसी के लिए लहसुन एक प्रसिद्ध देहाती दवा है। बच्चों की खांसी के लिये, माताएं, सुई की नोंक में, एक छिली हुई लहसुन की तुरीयां लगा लेती हैं। उसे दीपक की लौ में सेंकती हैं। फिर उसे पीसकर, शहद में मिलाकर, बच्चों को खांसी में देती हैं। उस कली को जलालेना चाहिये। पुरुषों की पुरानी या नई खांसी में, लहसुन को अजवाइन के साथ पीसकर खिलाया जाता है। पुरानी खांसी के रोग में, लहसुन के रस की तीनबूंदें नाक में डालना चाहिये।

१४—दमा

लहसुन के पत्तों को सुखाकर चिलम द्वारा, तमाखू की तरह पीने से, दमा दूर होता है। त्रिफला के पानी में-लहसुन का रस डालकर पिलाने से भी दमा जाता है। लहसुन अकेला भी दिया जाता है और कफ निस्सारक मिश्रण में भी मिलाया जा सकता है।

क्रमशः

शेष पृष्ठ २२ का

कुम्हड़ा और मेथी नहीं लेना चाहिये। खट्टी चीजें विशेषकर आम की खटाई और सिरका नहीं खाना चाहिये। क्योंकि खट्टी वस्तुओं से पित्त बढ़ता है, यदि सन्धिगत दोष में चूने का अंश बढ़ गया हो, तो आंवला, खट्टा अनार और सन्तरा ले सकते हैं। उड़द मटर, सेम, कटहर, अरुई आदि आदि वायु को बढ़ाने वाले हैं। अतएव ये सब रक्तचाप को भी बढ़ाने वाले हैं।

जहां तक बने दाल का पानी विशेष लेना चाहिये। खोवे की मिठाई, मैदा के पकवान जहां तक बने नहीं लेना चाहिये। तेल की मालिश करना लाभदायक है। उससे रक्त की उष्णता घटती है, किन्तु यदि रक्त में उष्णता की कमी हो, तो तेल उसकी पूर्ति करता है। शरीरमें स्फूर्ति बढ़ती है और रूक्षता घटती है। मालिश के लिए महामाषादि तेल, गुडूच्यादि तेल, लाक्षादि तेल, चन्दनादि तेल, नारायण तेल और बादाम का तेल यथावश्यक लगाना चाहिये।

(सचित्र आयुर्वेद के सौजन्य से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पारद का महत्व

(लेखक—कविराज महेन्द्रनाथ पाण्डेय, सम्पादक-घरेलू चिकित्सा, इलाहाबाद)

पारद एक तरल धातु है जो सृष्टि के आदि काल से खनिज के रूप में उपलब्ध है। अनेक प्रकार के इसके योगिक भी मिलते हैं जिनसे पारा अलग किया जा सकता है। पारा की उत्पत्ति के सम्बन्ध में रस-रत्नसमुच्चय में एक पौराणिक कथा को आधार मान कर लिखा है कि पारद शिवजी का वीर्य है। इस विषय पर कोई अन्य विद्वान् प्रकाश डालेंगे। पारदकी उत्पत्ति पर कुछ लिखना प्रस्तुत विषय के बाहर होगा।

पारद हिमालय के खोहों में और विदेशों के पर्वतों पर मिलता है। बहुत सा पारद विदेशों से आता है। पारद के सम्बन्ध में लोगों को जानकारी कब हुई यह ऐतिहासिक रूप से ज्ञात नहीं है। परन्तु इतना अवश्य है कि नागार्जुन के समय में लोग पारद के गुणों से उतने ही अवगत थे जितना आजकल लोग जानते हैं।

हिंगुल या सिंगरफ पारद का एक यौगिक है। इससे भी पारा निकाला जाता है। आयुर्वेदज्ञों का मत है कि हिंगुल से निकाला हुआ पारद शुद्ध रूप में होता है और बिना शुद्धि के भी वह औषधि रूप में प्रयोग किया जा सकता है। हमारी राय में हिंगुल से निकले हुए पारद को भी नीबू के रस में घोंटकर शुद्ध कर लेना अधिक अच्छा होता है। अधिक अच्छा यह होता है कि उसका भी उर्ध्व और अधः पातन कर लिया जाय अथवा स्वेदन कर लिया जाय।

बाजार में बिकने वाले पारद में अनेक धातुएं जैसे सीसा, रांगा, जस्ता, विस्मथ आदि मिली रहती हैं, इनके अतिरिक्त अन्य और भी अशुद्धियां रहती हैं। जब तक पारद से इन सब अशुद्धियों को अलग न किया जाय वह औषधि रूप में व्यवहार के योग्य नहीं होता। पश्चिमी ढंग के विद्वान् धातुओं को अलग करने के लिए केन्वायस लेदर (एक विशेष प्रकार से बनाया पतला चमड़ा) से छानते हैं और अशुद्धियों को दूर करने के लिए शोरे के तेजाब से विशेष रीति द्वारा एवं ऊर्ध्व पातन और अधः पातन करते हैं जिसे डिस्टिलेशन कहते हैं। आयुर्वेदीय मत से मोटे और गाढ़े ४ तह कपड़े में पारद छाना जाता है और ऊर्ध्व पातन और अधः पातन किया जाता है। परन्तु इतने से ही यह औषधि के काम लायक नहीं समझा जाता। औषधि के योग्य बनाने के लिए और भी अनेक संस्कार किये जाते हैं। संस्कार का अर्थ शोधन समझना चाहिए।

आयुर्वेद के मत से पारद में निम्न लिखित दोष होते हैं—

> नागो बंगो मलो बह्निश्चाञ्चल्यं च विषं गिरिम्।
> असह्याग्निर्महादोषा निसगात्पारदे स्थिता; ॥

अर्थात् सीसा, बंग, मल, अग्निगुण, चंचलता, विष गिरि, और असह्याग्नि ये आठ महा दोष पारद में स्वभाव से ही एक ही खानि में इन सबके उत्पन्न होने के कारण होते हैं। इन दोषों के अतिरिक्त पारद में सप्त-कंचुकी होती है। आयुर्वेद के मत से इन कंचुकियों को अलग करना भी आवश्यक है तभी यह औषधि प्रयोग के योग्य होता है पाश्चात्य ढंग के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्वान सप्त कंचुकियों का वर्णन नहीं करते। पता नहीं उन्हें इसकी शोध लगाने में सफलता मिली है या नहीं।

यदि इन आठ दोषों युक्त पारदको खानेके काम में लाया जाय तो सीसा के दोष से शरीर में व्रण उत्पन्न होते हैं, वंग दोष से कुष्ठ होता है, मल दोष से जड़ता आती है, अग्नि दोष से दाह होता है, चंचलता दोष से वीर्य नाश होता है, विष दोष से मृत्यु होती है, गिरिदोष से जड़ता आती है और असह्याग्नि दोष से फोड़े आदि होते हैं। इसीलिए प्राचीन आचार्यों ने कहा है—

दोष हीनो यदा सूत स्तदा मृत्यु ज्वरापहः।
शुद्धोऽयममृतः साक्षाद् दोष युक्तो रसो विषम् ॥

अर्थात् जब पारद सब दोषों से रहित अर्थात् शुद्ध होता है तब मृत्यु और ज्वर को दूर करता है। (यहां ज्वर शब्द कहकर शरीर में होने वाले सम्पूर्ण रोगों का बोध कराया गया है। क्योंकि आयुर्वेद में रोगों की गणना ज्वर से ही आरंभ की जाती है।) शुद्ध पारद साक्षात् अमृत है और अशुद्ध पारद साक्षात् विष।

पारद सामान्य उष्णता पर तरलावस्था में रहता है और चांदी या रजत की तरह स्वच्छ होता है। इसीलिए अङ्ग्रेजी में लिकड सिलवर (तरल चांदी) कहते हैं। यह ३९° डिग्री सेंटीग्रेड पर जम जाता है। और ३५७ २५° सेंटिग्रेड पर खौलने लगता है। परन्तु सामान्य गरमी पर भी यह वाष्प रूप में परिवर्तित होता है। अब तक की ज्ञात समस्त धातुओं की अपेक्षा सामान्य उष्णता पर यह सबसे भारी धातु है। इसी कारण प्रायः सब धातुएं इसमें तैरती हैं। इसमें न कोई स्वाद होता है और न कोई गन्ध।

पारद चितकवरा, पीले रंग का और धुआं जैसे काले रंग का भी होता है परन्तु वह पारद की अशुद्ध अवस्था है। अयुर्वेद में स्पष्ट उल्लेख है—

अन्तः सुनीलो बहिरुज्ज्वलो,
यो मध्याह्नसूर्यो प्रतिय प्रकाशः।
शस्तोऽथ धूम्रः परिपाण्डुरश्च,
चित्रो न यो ज्यो रस कर्म सिद्धो ॥

अन्दर से सुन्दर (आकर्षक) नीली आभा वाला और बाहर से उज्ज्वल और सूर्य के समान दीप्तिमान (चमकता हुआ) पारद उत्तम होता है इसे रस कर्म (औषधि और कीमियागीरी) के लिए उत्तम समझना चाहिये। जो पारा धुआं के रंगवाला सर्वतः पीलापन लिए श्वेत या चितकबरे रंग का हो वह रस कर्म में नहीं काम में लाना चाहिए।

पारद का उपयोग अनेक प्रकार से होता है। इससे भौतिक और रासायनिक यन्त्र बनते हैं जैसे थर्मामीटर, बैरोमीटर आदि; शीशे आदि में कलई की जाती है। सोना चांदी निकलने में इसका प्रयोग होता है और अनेक प्रकार के यौगिक बनाये जाते हैं। अनेक स्थलों पर ऐसा उद्धरण मिलता है कि राजा भोज के समय में हवाई जहाज उड़ाने के लिए किसी प्रकार इसका प्रयोग होता था और पेट्रोल की आवश्यकता का निवारण किया जाता था।

यह एक बड़ी विशेषता है कि पारद का प्रयोग सोना और चांदी बनाने में होता है। अष्टादश संस्कारित पारद विशेषतः स्वर्ण बनाने के उपयोग में आता है। कुछ औषधियों के उपयोग से भी सोना चांदी बनाये जाते हैं। इस राजवती और हेमवती विद्या का उल्लेख हमारे रस ग्रन्थों में है परन्तु आज एक भी ऐसा रसायन शास्त्री नहीं है जो अपनी इस विद्या का, जो अधोगति में पड़ी हुई है, उद्धार करे। रसायन विद्या के प्रथम आचार्य नागार्जुन ने भी अपने ग्रंथ में उस विद्या का उल्लेख किया है। बनारस के प्रसिद्ध रसायनाचार्य स्वर्गीय श्यामसुन्दरा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार्य केवल तांबे को पीतवर्ण में पलट सके परन्तु उनके जीवन काल में सोना नहीं बना । यों आज भी अनेक साधु और रसायनी ऐसे हैं जो सोना बनाते हैं परन्तु इस विद्या का कोई प्रचार नहीं करता ।

हमारे प्राचीन शास्त्रों में स्वर्ण ग्रास चांदी ग्रास आदि का उल्लेख है और ऐसा भी लिखा है कि पारद बुभुक्षित बनता है जो धातुओं को खा जाता है और पारद का वजन नहीं बढ़ता । परन्तु इस विद्या को करके दिखाने वाला एक भी रसायन शास्त्री नहीं है । इस क्रिया में व्यय और परिश्रम अधिक है । बड़ी बड़ी फार्मेसियां यदि चाहें तो उद्धार हो सकता है । एक दो वैतनिक विद्वान इस कार्य पर लगा दिये जांय और १०००, २०००, रुपये व्यय कर दिये जांय तो बुभुक्षित पारद तैयार कर लेना कठिन नहीं है परन्तु इस ओर कोई आकर्षित नहीं होता ।

पारद एक ऐसी औषधी है कि इसका प्रयोग अकेले नहीं हो सकता इसमें कुछ अन्य औषधियों का सहयोग करना आवश्यक होता है । एलोपैथी चिकित्सा पद्धति में भी यह अनेक योगिकों के रूप में व्यवहार में आता है जिनमें रसकपूर (कोरोसिव सब्लियेट) केलोमेल (क्लोराइड आफ मर्करी) सलफेट आफ मर्करी और सलफाइड आफ मर्करी आदि मुख्य हैं । कार्बोनेट आफ मर्करी भी बनता है, रसकपूर केलोमेल और सलफेट आफ मर्करी सफेद रंग के होते हैं । सलफाइड आफ मर्करी लाल बनता है । वैसे ही कार्बोनेट आफ मर्करी पीले रंग का चूर्ण होता है और प्रकाश के पड़ने से काला पड़ जाता है । विषों के संयोग से भी पारे की औषधियां बनती हैं जैसे बाई–साइनाइड आफ मर्करी, मर्क्यूरियस आयोडेट्स इत्यादि ।

आयुर्वेद की विधि से पारे की चार प्रकार की भस्में बनती हैं । श्वेत भस्म रसकपूर है । परन्तु एलोपैथी के केलोमेल कोरोसिव सब्लिमेट और सलफाइड आफ मर्करी में और आयुर्वेदीय रसकपूर में क्या अन्तर होगा यह हमें ज्ञान नहीं है । पारे की लाल भस्म रससिंदूर है । स्वर्णसिंदूर ताम्रसिंदूर शिलासिंदूर, मल्लसिंदूर, तालसिंदूर आदि अनेक भस्में लाल बनती हैं । पारे की पीत भस्म सर्वाङ्ग सुन्दर के नाम से विख्यात है । वैसे ही पारे की कृष्ण भस्म भी बनती है । इन भस्मों के गुण के सम्बन्ध में आयुर्वेद का मत निम्न प्रकार है—

श्वेत पीतं तथा रक्तं कृष्णञ्चेति चतुर्विधं ।
लक्षणं भस्म सूतानां श्रेष्ठं स्याद उत्तरोत्तरम् ॥

अर्थात् गुण में स्वेत भस्म से पीली भस्म, पीली से लाल भस्म, लाल से काली भस्म श्रेष्ठ है ।

इन भस्मों की विधि रस की पुस्तकों में मिलती हैं, यहां इनको लिखने से विस्तार बढ़ेगा इस लिये हमने इनको छोड़ दिया है । पारद को विषों के साथ घोटने से उसमें मुख हो जाता है अनेक धातुओं के खा जाने की शक्ति हो जाती है । इस क्रिया के करने के बाद जो पारद की भस्म बनेगी वह अधिक गुणशाली बनेगी और उग्र वीर्य भी होगी । मकरध्वज भी पारे की एक प्रकारकी भस्म ही है जिसके मुकाबले की औषधियां अभी तक बहुत कम निकल पाई हैं ।

क्रमशः

शेष पृष्ट १६ का

जब तक आपका वास्तविक वजन नहीं हो जाता तब तक आप हठी बन जाइये । इस विषय में ढिलाई न करें । जब औसत वजन हो जाय तब डा० के परामर्श से उचित एवं आवश्यक भोजन करना शुरू कीजिए और बाद में नियम पूर्वक भोजन करने में आलसी न बनें अन्यथा फिर वजन बढ़ने की संभावना रहेगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुधान

अधिक मानसिक परिश्रम, चिन्तन, अध्यापन या किसी अकथनीय कारण से जिनका दिमाग कमजोर हो गया है, स्मरणशक्ति घट गई है, हृदय दुर्बल हो गया है, सिर में हल्का २ दरद और थकावट रहती है उनके लिए 'बुधान' बहुत लाभदायक है। इसके सेवन से उपरोक्त दोष मिट जाते हैं। दिमाग पुष्ट होकर स्मरणशक्ति तीव्र हो जाती है। इससे उन्माद तक के रोगियों को लाभ हुआ है। बुद्धिजीवी लोगों के लिए वरदान स्वरूप है। मूल्य ४) डाकखरच १।≈)

टंकरोल

दो दिनमें इसकी ६ मात्राओंके सेवनसे जुकाम (प्रतिश्याय) ठीक हो जाता है। दो खुराक खाने से ही शिर का भारीपन, छींकें आना, नाकसे पानी बहना आदि दूरहोजाता है। इसका प्रभाव श्लेष्मकला पर होता है। २४ मात्रा की शीशी का मूल्य १) छः मात्रा का ।≈)

निद्राणी

स्वास्थ्य के लिए निद्रा उतनी ही आवश्यक है जितना कि भोजन, जल और शुद्ध वायु। भोजन के पचन और सात्म्यीकरण से शरीर की प्रत्येक सेल को अपनी स्थिति बनाये रखने की सामग्री मिलती है तो पूर्ण निद्रासे आराम मिलने के कारण घिसी हुई सेलों का पुनः निर्माण हो जाता है और खरच हुई शक्ति पुनः संचित हो जाती है। यदि युवा पुरुष को रात्रि में ६—७ घण्टे निरन्तर गहरी नींद नहीं आती या बीच बीच में टूट जाती है तो यह मस्तिष्क धमनियों की कठोरता, पाचन सम्बन्धी रोग, विबन्ध, ब्लडप्रेशर (रक्तचाप) नाडी दौर्बल्य आदि व्याधियों का लक्षण है। निद्राणी' इन सब अवस्थाओं में अपना निश्चित प्रभाव दिखाती है। कुछ ही मात्राओं के सेवन से रात्रिभर खूब गहरी नींद आने लगती है और प्रातः काल उठने पर देह में स्फूर्ति और मन प्रफुल्लित होता है। इसमें कोई मादक या विषैला द्रव्य नहीं है। मूल्य ४) आधाकोर्स २॥) पो० १।≈)

चवसोमला

दमा के लिए यह परीक्षित दवा है। इसका प्रभाव श्वास प्रणाली और स्वरयंत्र पर होता है। इसके सेवन से नाडी मण्डल की उत्तेजना शान्त होकर श्वास नलिकाओं का प्रसार होता है जिससे रोगी सुख का सांस लेता है और उसका कष्ट दूर हो जाता है। पूरा कोर्स समाप्त हो जाने के बाद श्वासनलिकायें पूर्ण स्वच्छ और फेफड़े पुष्ट हो जाते हैं। फिर कभी दमा का दौरा पड़ने का भय नहीं रहता। मूल्य ५)

नाग सुरमा

यह सुरमा रसायनिक प्रक्रिया द्वारा बनाया जाता है। यह सभी नेत्र रोगों में लाभकारी है। दृष्टिमन्दता, दूर या निकट कम दिखाई देना, तिमिर, धुन्ध, जाला, आंखों से पानी बहना आदि रोगों को नष्ट करके दृष्टि को तेज बना देता है। लगाते ही नेत्रों में ठंडक प्रतीत होती है। ६ माशा की शीशी १॥) तीन माशा १)

अमोनिरो

यह हमारी नव अनुसन्धानित विशेष वनस्पतियों द्वारा निर्मित और दो वनस्पतियों द्वारा भावित योग है जिसे दीर्घ परीक्षण के बाद अब प्रकाश में ला रहे हैं। यह औषधि आजकल के बहुप्रचलित पेट रोगों और उनके उपसर्गों तथा आंत की सूजन व शूल, व्रण, वायु विकार, मल की सड़न से उत्पन्न होनेवाले विष दोष, गैस चढ़ना, अम्लपित्त, आंव, जीर्ण कब्ज, भूख न लगना, खून की कमी, नींद न आना, बुढ़ापा लाने वाली अम्लता, जोड़ों का दर्द व खांसी, जुकाम आदि के लिए अद्भुत गुणकारी सिद्ध हुई है। आमाशय और आन्तें बलवान होकर भूख खूब लगती है। स्वच्छ रक्त बनने से शरीर पुष्ट हो जाता है। मूल्य एक कोर्स ४) डाकखरच १।≈)

कोलरास—हैजा की प्रत्येक दशा में इसके सेवन से लाभ होजाता है। अब तक के परीक्षण में अद्भुत लाभकारी सिद्ध हुई है। प्रति वर्ष हजारों रोगी इसके सेवन से स्वास्थ्य लाभ करते हैं। मूल्य १।) मात्र।

जी० एस० आयुर्वेदिक रीसर्च प्रॉडक्टस ३ दरियागंज, देहली ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रत्नों के साथ तुलनेवाली अनुपम पुस्तकें

४० से अधिक आयुर्वेदीय पुस्तकों के रचयिता प्रसिद्ध लेखक व चिकित्सक राजवैद्य डा० गणपतिसिंह वर्मा द्वारा रचित व प्रकाशित—यह वही पुस्तकें हैं जिनकी वैद्य, हकीम, डाक्टर और जनसाधारण मुक्तकंठ से प्रशंसा कर रहे हैं। जिनके विषय में देश के गणमान्य लोगों की सम्मति है कि इन पुस्तकों का प्रत्येक घर में होना अत्यावश्यक है। क्योंकि इनके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक स्थानमें सहसा होजाने वाले रोगों का सरलतापूर्वक इलाज कर सकता है। प्रत्येक पुस्तक के कई २ संस्करण हो चुके हैं जो कि इनकी लोकप्रियता का सबसे बड़ा प्रमाण है।

अनुभूत योग चिन्तामणि

इसके लेखक ने ५ वर्ष तक लम्बी २ यात्रायें करके संन्यासियों की कठिनतम सेवा और भ्रमण के अथक परिश्रम के अतिरिक्त ५४३५ रुपये खर्च करके जो ५३३ जादुअसर अनुभूत नुस्खे प्राप्त किये थे वह निष्कपट भाव से इस पुस्तकमें प्रकाशित कर दिए हैं। भारतवर्ष के सैंकडों वैद्यों, हकीमों और डाक्टरों ने इन सब नुस्खों की पचासों बार परीक्षा करके शत प्रतिशत अनुभूत होने के प्रमाणपत्र दिये हैं जिससे सिद्ध होगया है कि इसमें एक भी ऐसा योग नहीं—जो अनुभूत सिद्ध न हो, सबके सब संन्यासियों के हृदय के गुप्त योग हैं। भारत के गणमान्य हकीमों व वैद्यों का निर्णय है कि जिसके पास यह पुस्तक नहीं, निःसन्देह उसकी चिकित्सा और औषधालय अधूरा है। मूल्य प्रथम भाग पांचवीं आवृति ४।) द्वितीय भाग ४) डाकखरच जुदा।

१५ वर्ष के कठिन परिश्रम का फल

अनुभूत योग प्रकाश

आज से १५ वर्ष पूर्व जिस पुस्तक को प्रकाशित करने का आयोजन प्रकाशित किया गया था वह पुस्तक अब छपकर तैयार होगई है। इस पुस्तक के योगों के विषय में केवल इतना बतला देना ही काफी होगा कि गत १५ वर्ष के सतत उद्योग से बड़े २ साधु, महात्मा, फकीरों भीलों से लेकर राजा, रईसों तथा ख्यातिवान प्रसिद्ध विद्वान वैद्यों, हकीमों और डाक्टरों के उन अनुभूत चमत्कारी योगों को इस पुस्तक के पृष्ठों पर अंकित कर दिया है—जिनको आज तक जमाने की हवा भी न लगी थी। फिर इसके लेखक डा० जी० एस० वर्मा का नाम ही बड़ी जमानत है कि पुस्तक कैसी है। इसमें सबसे बड़ी वह रीसर्च आपको मिलेगी जिसे आजतक आपने सुना भी न होगा अर्थात समुद्रीय द्रव्यों यथा मुक्ता शुक्ति, प्रवाल, शंख, कपर्दिका आदि का तेल बनाना। इन तेलों की तुलना में इन द्रव्यों की भस्में बहुत तुच्छ लाभ पहुँचाती हैं। इन तेलों से अनेक कष्टसाध्य कहे जाने वाले रोग शीघ्र मिट जाते हैं। दूसरी विशेषता यह है कि इन तेलों से उड़ने वाले सभी द्रव्य यथा पारद, हिंगुल (शिंगरफ) आदि स्थाई होजाते हैं। इस पुस्तक में कोई ऐसा रोग नहीं छोड़ा जिस पर अनुभूत सिद्ध योग न छपा हो। मूल्य ६।) डाकखर्च ।।।≡)

इन्जेक्शन बनाना व लगाना सीखो

इंजेक्शन चिकित्सा तत्काल प्रभाव दिखाने वाली होने से आज लोकप्रिय हो रही है, किन्तु वैद्यों. हकीमों को इसकी जानकारी न होने से उन्हें बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड रहा है। इन्हीं भावों से प्रेरित होकर यह पुस्तक तैयार की गई है, जिसमें समस्त रोगों की चिकित्सा आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक और एलोपैथिक इन्जेक्शनों द्वारा ही करना बतलाया गया है। रोगशीर्षक के नीचे क्रमशः प्रत्येक रोग के तीनों प्रकार के इन्जेक्शन ऐसे ढंग से लिखे गये हैं कि जिससे चिकित्सक एक क्षण में निश्चय कर सकता है कि कौनसा इन्जेक्शन किस स्थान पर, किननी मात्रा में. कितने अन्तर से, किस प्रकार लगाना चाहिये और साथ २ इन्जेक्शन बनाने की विधि भी लिखदी गई है। आयुर्वेदिक इंजेक्शन जिन द्रव्यों से बनाये जाते हैं वह तमाम आपके घर में, खेतों और जंगलों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वत्र मिल सकते हैं। एक-एक रोग पर कई २ इन्जेक्शन बनाने के योग लिखे गये हैं। इसके अतिरिक्त सीरम, वैक्सिम, पेनिसीलीन, विटामिन्स के इंजेक्शनों का वर्णन और उनको लगाने की सरल व निरापद सचित्र विधि भी खूब समझा कर लिखदी गई है। इस पुस्तकको पढ़ने के बाद इन्जेक्शनों के विषय में जानने को कुछ भी शेष न रहेगा और सब प्रकार के इंजेक्शन तरल (लिक्विड) टेबलेट व पौडरादि रूप में बना व लगा सकेंगे। मूल्य ५) डाकखरच ।||≡)

सिद्ध रसायन

रस-रसायन की जिन कठिन क्रियाओं से वैद्य बन्धु घबराकर उनके दिव्य गुणों से वंचित रह जाते हैं, उन क्रियाओं का लम्बा अनुभव करके विद्वान लेखक ने उनका सरल तरीका इस ग्रंथमें दर्शाया है और साथ ही महान रसायनाचार्य नागार्जुन और अन्य सिद्धों की संचिकाओं के अज्ञात योगों को उनकी गुत्थी सुलझाकर प्रकाशित किया है जिनसे पाठक न केवल काया (काया-कल्प) रंगने में ही सफल होंगे बल्कि स्थिर मति वाले माया (कीमिया) रंगने में भी सफल होंगे। इस प्रकार पाठकों को जहां आर्थिक संकट से मुक्ति मिलेगी वहां असाध्य समझ कर छोड दिये जाने वाले रोगों के वे सिद्धहस्त चिकित्सक भी बन जावेंगे। इस पुस्तकके कुछेक योगों का दिग्दर्शन करा देने से आपको अनुमान हो जायगा कि यह कितना अपूर्व ग्रन्थ है। यथा–शुद्ध बद्ध और सिद्ध करने वाली दिव्य औषधियां, औद्भिदाम्ल व बूटियां, रस बन्धन, गन्धक को स्थाई करना, बद्ध पारद को सिद्ध बनाना, रजत रंजन कीमिया) अभ्रक सत्व की द्रुति, द्रुति से पारद बन्धन, वंग स्तम्भन, पारद भस्म रक्तयोगेन ताम्रोद्धार (कीमिया) तांबा और रजत (चांदी) वेधी सिद्ध हरिताल, हरिताल कल्प देह व लौह वेधी सिद्ध हरिताल तैल, सिद्ध कुचला कल्प, सर्व रोग हर फिटकडी रसायन (कल्प) पुरुषों के गुप्त रोगों पर रामबाण सिद्ध खादक, पारद गुटिका बंगवेधी, शिंगरफ मोमियां बनाना, नौसादर तैल, सिद्ध गोरखी जलमुद्रा, सिद्ध गन्धक–एक गिरनारी महात्मा का योग जिसको बनाना अति सरल है और क्षय (T. B.) संग्रहणी जैसे अनेक भयंकर रोगों का सफल इलाज है आदि। इसमें अन्य पुस्तकों की भांति जोड-तोडकर एकत्र की हुई सामग्री नहीं है बल्कि लेखक के जीवन भर का अनुभव बन्द किया है। इसके पाठकों के लिए लेखक का सदूपरामर्श और सहायता भी सदैव प्रस्तुत रहेगी। मूल्य ५) पो० ।||≈)

संन्यासियों की चमत्कारी गुप्त बूटियां

इस पुस्तक में सैंकडों ऐसी ही जडी-बूटियों के गुप्त रहस्य प्रकट किये गये हैं, जिनकी बदौलत संन्यासियोंकी धाक जमी हुई है। इनमें से अधिकांश बूटियां वही हैं, जो आपको जंगल, खेत, बागीचों और पंसारियों की दूकानों पर मिल जावेंगी जिनसे आवश्यकता पडने पर सिरसे पांव तकके समस्त रोगों का इलाज हर जगह प्रत्येक आदमी आसानी से कर धन और यश कमा सकता है। इस पुस्तक को पढ़ लेने के बाद आप के पास रोगियों का तांता बंधा रहेगा। विषय सूची मुफ्त। ४५० पृष्ठ, २ भाग मूल्य ५।।) डा० ख० ।||≡)

गुप्त योग रत्नावली

इस पुस्तक में डा० नेगी के व निज के बड़-बड़ गुप्त योग प्रकाशित किये गये हैं जिनको भारतवर्ष के कोने २ से तथा अरब, मिश्र और अफ्रीका आदि प्रदेशों के विभिन्न स्थानों में जाकर लेखक ने प्राप्त किये थे। मूल्य २।।) डा० ख० ।|।)

पेटेण्ट औषधियां व भारतवर्ष

संसार में सबसे अधिक लाभदायक व्यापार पेटेण्ट औषधियों का है। अमृतधारा और सुधासिन्धु के मालिकों ने १-१ पेटेण्ट दवा के नुस्खे से लाखों रुपया कमाया है। विलायती फर्में एक-एक पेटेण्ट दवा से बेहद रुपया कमा रही हैं। यदि उनकी तरह आप भी भारतवर्ष, इंग्लैंड, अमरीका की प्रसिद्ध और सर्वप्रिय प्रतिवर्ष करोडों रुपये की बिकने वाली पेटेण्ट औषधियों के नुसखे बिना किसी कष्ट के घर बैठे सीख कर साधारण पूंजी से सैंकडों रुपये मासिक की स्थाई आमदनी पैदा करना चाहते हैं तो आज ही 'पेटेण्ट औषधियां और भारतवर्ष' नामक पुस्तक की एक प्रति मंगाकर पढें। १६७ योगवाली मूल्य।||≡) डा०ख० ।||)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यौवन के गुप्त रहस्य

लुटी हुई जवानी और बीता हुआ यौवन वापिस लाने के अनुपम उपाय—पुरुषत्व और जवानी के वह गुप्त रहस्य, जिनको जानने से अशक्ति के ऐसे रोगी जिन्हें किसी दवा से लाभ नहीं हुआ या सैंकडों रुपये की दवा खाकर भी निराश बैठे हैं निःसन्देह सशक्त बन सकते हैं। मनुष्य देह का वह केन्द्र जहां से स्वास्थ्य और यौवन का रस झरकर समस्त शरीर का पोषण करता है, उस केन्द्र को शक्ति प्रदान करने के अनूठे उपाय, जिससे लुटी हुई जवानी और बीता हुआ यौवन पुनः लौट आता है। पुरुषों के अकथनीय भयंकर रोग बिना दवा सेवन किये ही किस प्रकार नष्ट हो जाते हैं। उर्द्ध्वरेता होने का वह प्रयोग जिससे पुरुष की शक्ति में कमी नहीं आती। रसग्रंथियों से आश्चर्यजनक दवाइयां बनाने के प्रयोग। हजारों रुपये खर्च करके डा० वोरनाफ की बताई हुई बन्दर की रसग्रन्थि लगवाने व आपरेशन का कष्ट सहन किये बिना ही सुगमता से प्रत्येक स्त्री पुरुष वही शक्ति कैसे प्राप्त कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त पुरुषों के रोगों के सम्बन्ध में निदान व ऐसे २ गुप्त प्रयोग इस पुस्तक में दर्ज किये गये हैं, जिनको उपयोग करने वाला पुरुषत्व पर गर्व कर सकता है। मूल्य ३) डाकखरच ।।।)

हिन्दी से अंग्रेजी मैट्रिक

विश्व के ज्ञान, विज्ञान और व्यापार तथा कला-कौशल को सीखने के लिए आज की विश्व भाषा अंग्रेजी का सीखना सबके लिए जरूरी है। इसको सीखना कोई कठिन भी नहीं है। जिस प्रकार अंग्रेज मातायें अपने बालकों को अपने घरों में ही अंग्रेजी सिखा देती हैं ठीक उसी प्राकृतिक नियमानुसार यह ३२० पृष्ठोंकी पुस्तक तैयार की गई, जिसे २ घण्टा प्रति दिन पढ़नेसे केवल हिन्दी पढ़े-लिखे व्यक्ति को भी चार मास में भली प्रकार याद होजाती है। इसमें ए० बी० सी० डी० से लेकर आवश्यक ग्रामर (व्याकरण) अनुवाद आदि इङ्गलिश की मैट्रिक तक का सब ज्ञान हिन्दी से अंग्रेजी और अंग्रेजी से हिन्दी में ऐसे सरल और सुबोध ढंग से ४८ पाठों में छपा है कि जिससे केवल अंग्रेजी में मैट्रिक की परीक्षा देनेवाले लडके-लडकियां निःसन्देह पास हो जाते हैं। दसवां संस्करण अभी छपा है। मूल्य ३।।) डाकखरच ।।।=)

७८६ वर्ष का प्राचीन रस ग्रन्थ

वसवराजियम—हजारों वर्ष पहिले दक्षिण भारत में चालुक्यवंशीय राजाओं का राज्य था। उनके प्रधान मन्त्री रुद्र साम्प्रदायी महान रसतन्त्रज्ञ बसवराज ने सं० १२२५ में इस सिद्ध साम्प्रदायी अनुपम ग्रन्थ की रचना की थी, जिसमें भगवान रुद्र के अनुयायी बनों में विचरने वाले रसायनाचार्य नागार्जुन, नागबोधि, नित्यनाथ, चर्पटी, कणेरी, पूज्यपाद आदि योगियों का रसज्ञान भरा पडा है, श्री गोविन्दपादाचार्य के कथनानुसार शरीर को अजरामर करने में पारे की बराबरी करने वाली न तो कोई जडी बूटी है और न ही कोई रसायन और भस्म है। पारे में यह बड़े आश्चर्य की बात है कि वह स्वयं मूर्छित होकर रोगी के रोग को दूर करता है और बंधा हुआ होकर मुक्ति देता है तथा अच्छी तरह मरा हुआ दूसरों को जीवन देता है। आज मद्रास प्रान्तीय वैद्यों की जो प्रतिष्ठा, यश और कीर्ति सर्वत्र प्रसिद्ध हो रही है वह सब इसी ग्रन्थ के योगों का प्रताप है। यह ग्रन्थ तैलंग भाषा में ताड पत्रों पर लिखा हुआ उपलब्ध हुआ था, जिससे अब तक तैलंग भाषा भाषी वैद्य ही लाभ उठाते रहे, किन्तु यह जानकर आप अतीव प्रसन्न होंगे कि अब आयुर्वेद बृहस्पति श्री गोवर्धन जी शर्मा छांगाणी के अतुल परिश्रमके फलस्वरूप आज यह ७८६ वर्ष का प्राचीन तैलंग हस्तलिखित दुर्लभ ग्रन्थ हिन्दी भाषा में भी हमारे द्वारा प्रकाशित होगया है। इस ग्रन्थ के विषय में कहा गया है कि सतयुग में चरक, त्रेता में रसार्णव तथा द्वापर में सिद्ध विद्याभू का महात्म्य है उसी प्रकार कलियुग में बसवराजियम पूज्य ग्रन्थ है। इसमें जो निदान लक्षण प्रत्येक रोग के बतलाये हैं। उनको समझकर इसमें वर्णित योगों द्वारा जो चिकित्सा करेगा, भगवान रुद्र की कृपा से निःसन्देह वह सर्वत्र यश और सिद्धि प्राप्त करेगा। २५ प्रकरणों वाले सम्पूर्ण ग्रन्थ का मूल्य ८।।) डाकखरच १=)

पता—रसायन फार्मेसी (३ दरियागंज) पो० बो० नं० ११२५ देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेल्फ एक्टिंग

इलेक्ट्रो मेग्नेटिक

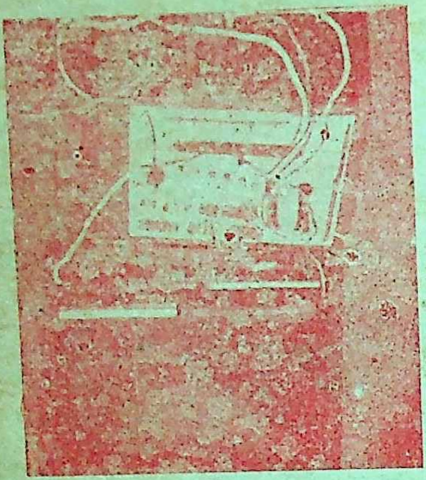

यह बेटरी सेल पर चलने वाली बिजली के इलाज की मशीन है। इसके द्वारा गठिया, आमवात आदि सभी वातरोगों, पक्षाघात, लकवा, अर्श, मधुमेह, अनेक प्रकार की शारीरिक पीड़ाओं व शोथ आदि ३३ रोगों का इलाज किया जा सकता है। किस रोग पर इस मशीन द्वारा बिजली का किस प्रकार प्रयोग किया जाय इसके लिए पुस्तक साथ भेजी जाती है। मूल्य २५) डाक व्यय २।।।≡)

एक्सपैंडरो

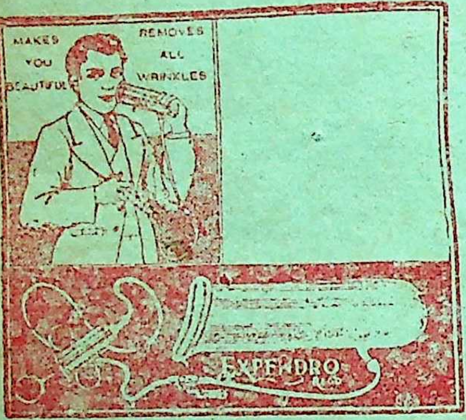

इस यन्त्र की उपयोगिता प्रायः सभी जानते हैं। नसों और मांसपेशियों की शिथिलता में जहां प्राकृतिक रूप से रक्त का परिभ्रमण सम्यकरूपेण नहीं होता वहां इसके प्रयोग से आशातीत लाभ होता है। नसों और मांसपेशियों को सशक्त बनाने के लिए इसका प्रयोग करना उत्तम उपाय है। मूल्य १५) बढ़िया १८) डाक खरच पै० २।।)

हमारा गुण विधान सीरीज

दूध गुण विधान	१)	नीबू गुण विधान	।।।)
घृत गुण विधान	।।)	इन्द्रायण गुण विधान	।।)
आरिष्टक (रीठा) गुण विधान	।।)	पीपल गुण विधान	।।)
बबूल (कीकर) गुण विधान	।।)	आम गुण विधान	१।)
फिटकड़ी गुण विधान	१।।)	पलांडु गुण विधान	।।)
एकौषधि गुण विधान	१।।।≈)	मधु (शहद) गुण विधान	१।।)
स्वर्णक्षीरी गुण विधान	।।।)	संतरा गुण विधान	।)
अर्क (आक) गुण विधान	१।।)	नीम गुण विधान	।।।≡)
धतूरा गुण विधान	।।।)	नमक चिकित्सा	।)

पता—रसायन फार्मेसी ३, दरियागंज, पो० बो० ११२५ देहली

डा० जी० एस० वर्मा मुद्रक व प्रकाशक द्वारा स्वस्तिक प्रिंटिंग प्रेस, देहली में छपकर प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसायन

सितम्बर १९५[illegible]

वर्ष ९ वार्षिक ३)

अंक ३ इस अंक का ।≈)

1-9-56

सम्पादक
साहित्य मनीषी
डा. गणपति सिंह वर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय अनुक्रमणिका

विषय	लेखक	पृष्ट
आयुर्वेद और यूनानी पद्धतियां पूर्ण समृद्ध हैं	श्री० जवाहरलाल नेहरु प्रधान मंत्री	३१
पागल कुत्ते के विष का उपचार	श्री० चूनीलाल रामचन्द्र शेलावत	३२
हमारी आंखें	डा० आर० एस० अग्रवाल	३३
एक लहसुन प्रेमी अंग्रेज	स्वामी पारसनाथ जी	३७
घीग्वार गुण विधान	,,	४१

मासिक पत्र 'धर्मदूत'

का

रजत-जयन्ती अङ्क

आगामी नवम्बर मास में सारनाथ के मूलगन्ध कुटी विहार की रजत जयन्ती मनाई जायेगी । उस अवसर पर 'धर्मदूत' का एक सुन्दर विशेषांक प्रकाशित होगा जिसमें बौद्धधर्म, संस्कृति, कला, इतिहास, पुरातत्त्व आदि से सम्बन्धित विषयों पर विद्वानों के लेख रहेंगे । उच्चकोटि की कविता, कहानी, रूपक एवं एकांकी भी इस अंक में सजधज के साथ छपेंगे । अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध समाचारों, प्रकाशनों एवं सभा-समितियों के परिचय से समन्वित यह अंक १७ नवम्बर को प्रकाशित होगा ।

इस अंक का मूल्य १) होगा, किन्तु जो सज्जन 'धर्मदूत' का वार्षिक मूल्य ४) भेजकर धर्मदूत के ग्राहक हो जायेंगे, उनसे इसका अतिरिक्त मूल्य नहीं लिया जायेगा । विज्ञापन-दाताओं के लिए भी यह एक सुन्दर अवसर है । कृपया लिखें:—

व्यवस्थापक—

'धर्मदूत', सारनाथ, बनारस

नई खोज की कुछ औषधियां

गत २१ वर्ष में हमने जिन अनुभूत योगों और नगीन वनस्पतियों तथा उनके विशेष गुणों की खोज की है उनपर किये गये अनुसंधान के फल स्वरूप हमने बहुत ही प्रभावशाली कुछ औषधियां तैयार करली हैं जिनसे दमा, कृशता (मांसक्षय) फेफड़े के दाग, मधुमेह, बवासीर, अशक्ति, संग्रहणी तथा कतिपय संक्रामक तथा स्त्री रोगोंका सफलता पूर्वक इलाज किया जाता है, यह औषधियां हमारे चिकित्सालय में आने वाले रोगियों को ही सेवन कराई जाती हैं। बाहिर केवल उनही चिकित्सकों को भेजी जाती हैं जो अपने रोगी का पूरा हाल लिखकर रोगी के चिकित्सा काल की रोजाना की पूरी रिपोर्ट लिखकर भेजना स्वीकार करे । प्रत्येक दवा का पूरा विवरण साल के अंत में हम सप्रमाण प्रकाशित किया करेंगे जिससे इन औषधियों की उपयोगिता सिद्ध की जा सके ।

ल्युकोआयर

इस दवाके सेवन से नया श्वेत और रक्त प्रदर ६ दिन में ही मिट जाता है, साथ ही हडफूटन, कमर का दरद उदासी आदि व्याधियां दूर होकर रुग्णा स्त्री स्वस्थ और पुष्ट बन जाती है । ६ दिनकी दवा का मूल्य २) यदि रोग पुराना हो तो ४ शीशी सेवन करना चाहिये । एक शीशी से चार शीशी तक का पो० १)

पता—रसायन फार्मेसी, ३ दरियागंज देहली ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आमाशयम

दिनभर कुर्सी या गद्दी पर बैठकर काम करने वालों का आमाशय (मेदा) प्रायः दुर्बल हो जाता है; कारण झुककर बैठने से आमाशय पर दबाव पड़ता है जिससे उसके क्रिया संचालन में बाधा पड़ती है और धीरे २ वह निष्क्रिय सा होता चला जाता है। फिर भोजन पचन उचित रूपसे नहीं होता और भांति-भांति की उदर सम्बन्धी व्याधियां उत्पन्न हो जाती हैं। यदि आमाशय कठोर हो जाये तो खाने की औषधियां बहुत कम लाभ पहुँचाती हैं। 'आमाशयम' आमाशय पर मालिश करने की दवा है जो लगाते ही त्वचा में प्रविष्ठ हो जाती है। यह खाने की दवाइयों की अपेक्षा शीघ्र लाभप्रद है। इसके प्रयोग से आमाशय सबल होकर अपना काम सुचारु रूप से करने लगता है। मूल्य एक औंस का ४) डाकखरच सवा रुपया।

पीताम्बर (एक महान टॉनिक)

यह दवा पर्वतों पर बर्फ में पाई जाने वाली एक अत्यन्त शक्ति वर्धक बूटी के योग से बनी है। इसके सेवन से स्त्री-पुरुषों में किसी भी कारण से उत्पन्न हुई अशक्ति, दुर्बलता, शरीर का दुबलापन, वजन घट जाना, खून की कमी, गहरी नींद न आना, उत्साह और स्फूर्ति का अभाव आदि विकार मिटकर शरीर पुष्ट, शक्ति सम्पन्न और कान्तिमय हो जाता है, क्योंकि इसके सेवन से खून में श्वेत और लाल अणु खूब बढ़ते हैं। मूल्य एक मास की दवा का १०) पो० १।) नोट-निरामिष भोजी, अविवाहित और विद्यार्थी इसके लिए आवेदन न करें।

बवासीर का सरल इलाज (अंकुरना)

बवासीर चाहे खूनी हो या बादी-दोनों को ही ५ दिन में आराम हो जाता है। इस दवा में खाने या लेप करने का कोई झंझट नहीं। केवल थोड़ी सी देर इस दवा का धुवां मस्सों को स्पर्श कराना होता है जिससे किसी प्रकार का किंचित भी कष्ट नहीं होता। दवा का नाम अंकुरना है। मूल्य ५) डाकखरच १।)

डायबोडीन

इक्षुमेह, मधुमेह (डायबीटीज) प्रसिद्ध और भयंकर रोग है और इस रोग की यह दवा विश्वास-जनक चिकित्सा है। डाक्टरी में इन्सुलीन के इन्जेक्शन काम चलाऊ इलाज है इससे रोग नहीं मिटता। जब रोग बहुल बढ़ गया हो तो इससे सहायता ली जासकती है किन्तु रोग को निर्मूल करने के लिये 'डायबोडीन' का सेवन परमावश्यक है। यह दवा १० दिन में अपना असर दिखा देती है और २० दिन के सेवनसे सुगर नार्मल के बराबर होजाती है। दो मास सेवन से रोग समूल नष्ट हो जाता है। यह नवीन खोज की गई वनस्पतियों के परीक्षण का सफल परिणाम है। मूल्य पूरा कोर्स २४) परीक्षार्थ आधा कोर्स १२) डाकखरच अलग।

अग्निस्थाई पारद गुटी

अग्निस्थाई पारे के दिव्य गुणों को प्रायः सभी जानते हैं किन्तु यह दुर्लभ वस्तु है, वर्षों के सतत प्रयास से अब हम इसको बनाने में सफल हो चुके हैं। इस पारद को चाहे जितनी तेज आग पर रखो, न उड़ेगा और न वजन कम होगा। इसकी गोली को मुख में रखकर चाहे जितना शारीरिक, मानसिक परिश्रम करो थकावट बिल्कुल न होगी। २-योगाभ्यास करने वालों को समाधिस्थ अवस्था प्राप्त होती है। ३—भजन पूजन में मन एकाग्र होता है। ४—दूध में गोली को उबाल कर पीने से अत्यन्त बल और पराक्रम प्राप्त होता है। अन्य गोपनीय गुण सेवन विधिमें पढ़ें। अनेक चिकित्सकों और महात्माओं द्वारा परीक्षित मूल्य २१) डाकखरच १।)

पायोगन

यह पायोरिया की सफल दवा है। इस दवा को दांतों पर मलकर ५ मिनट लगा रहने दो और फिर कुल्ला कर डालो। इस प्रकार प्रातःकाल, दोपहर और रात्रि को सोने से पहिले लगाने से मसूढ़ों का गला हुआ मांस भरने लग जाता है, पीप और रक्त का बहना बन्द होकर हिलते हुए दांत मजबूत हो जाते हैं। मूल्य २।।) डा० ख० १।)

जी० एस० आयुर्वेदिक रीसर्च प्रॉडक्टस ३ दरियागंज, देहली ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसायन फार्मेसी देहली का प्रमुख सचित्र मासिक पत्र

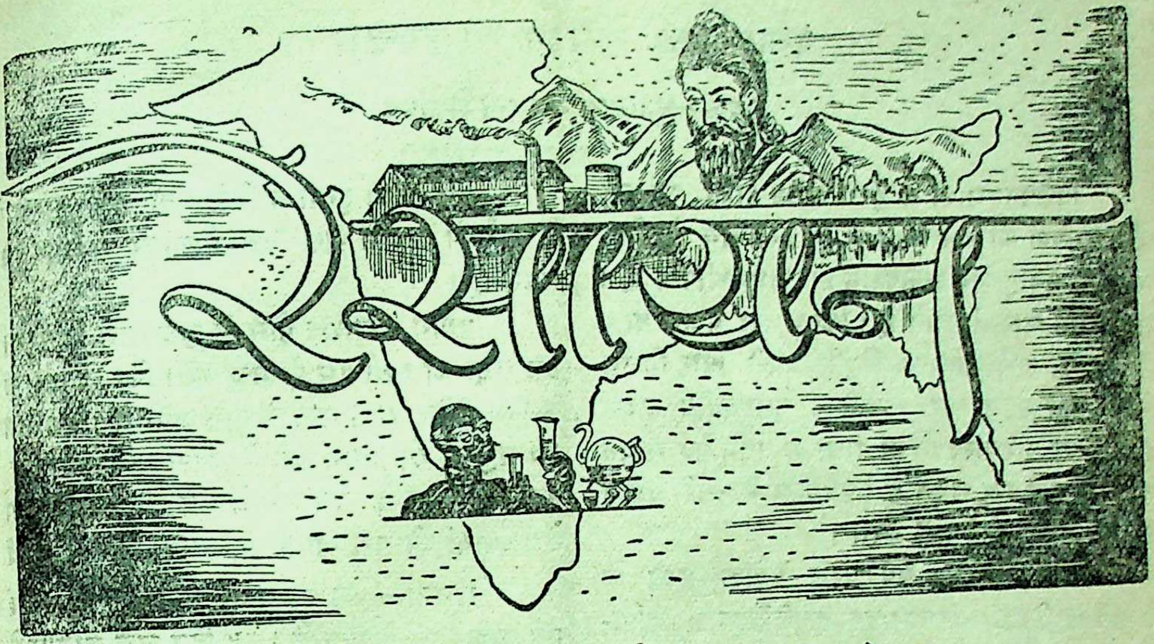

'सिद्ध रसे करिष्यामि, निर्दारिद्र्य मयं जगत्।'

वर्ष ६	देहली सितम्बर १९५९	अङ्क ३

❀ आयुर्वेद और यूनानी पद्धतियां पूर्ण समृद्ध हैं ❀

एक समय भारत की आयुर्वेदीय चिकित्सा पद्धति संसार की सब चिकित्सा-प्रणालियों से अधिक उन्नत और विकसित थी। भारतीय वैद्य शल्य-चिकित्सा में परम-प्राचीन-काल से कुशल थे। आयुर्वेद-वेत्ता ऋषि 'तक्षशिला विश्वविद्यालय' में शल्य चिकित्सा सिखाया करते थे। किन्तु बाद में यह प्रगति रुक गई और संसार की दूसरी चिकित्सा-पद्धतियां प्रयोग और अनुभव से आगे बढ़ गई। तथपि आयुर्वेद और यूनानी पद्धतियां रोगोपशम एवं रोगोन्मूलन के अपार गुणों से पूर्ण समृद्ध हैं और भारत जैसे देश में इन पद्धतियों की विशेष उपयोगिता है। मेरा मत यह है कि ये पद्धतियां वैज्ञानिक प्रयोग और अनुसंधान करें तो बढ़ सकती हैं।

श्री जवाहरलाल नेहरु प्रधान मंत्री—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पागल कुत्ते के विष का उपचार

(लेखक—चुनीलला रामचन्द्र शेलावत

विशेषतः ग्रामों में कुत्ता पागल होकर कई पशु और मनुष्यों को काट लेता है। इस रोग के लिए एलोपैथी मतानुसार इन्जेक्शन ही सच्ची औषधि है। प्रायः रोगी कसौली जाते हैं। किन्तु इस प्रवास और उपचार का खर्च सामान्य स्थिति वाली और निर्धन जनता नहीं सहन कर सकती। आयुर्वेदीय सरल उपचार पर पाश्चात्य शिक्षा दीक्षा से विभूषित सज्जन विश्वास नहीं रख सकते हैं। परिणाम में उसके प्रयोग का स्मरण भी कोई नहीं करते।

करीब ४०-४५ वर्ष पहले बड़ोदा राज्य के विद्याधिकारी स्व० रावबहादुर हरगोविंददास कांटावालेने बम्बई के सुप्रसिद्ध दैनिक पत्र "सांझ" के पटेटी अंक में प्रकाशित कराया था। उस समय बड़ौदा राज्य के नवसारी प्रान्तके सुबा रूपसे स्व० श्री० विठ्ठलराव गायकवाड़ कार्य करते थे। उस प्रान्त में एक वयोवृद्धा निष्काम भाव से पागल कुत्ते का उपचार करती रहती थी। उससे शत प्रतिशत लाभ हो जाता था। इस हेतु से उस माता की ख्याति चारों ओर फैली थी। इस प्रकार का सफल इलाज वयोवृद्धा की मृत्यु के साथ नष्ट हो जायगा, ऐसा सोचकर सुबा विठ्ठलराव ने प्रयोग प्राप्त करने के लिए साम, दान, भेद जैसी युक्ति का अवलम्बन लिया था। किन्तु वह माता किसी को प्रयोग नहीं कहती थी। अनेक जाति वाले और स्नेही सम्बन्धियों द्वारा समझाने पर उसने प्रयोग कहा। किन्तु जब तक वह वृद्धा जीवित रहे, तब तक सुबा साहिब किसी व्यक्ति पर प्रयोग नहीं करें, यह अभिवचन ले लिया था। प्रयोग निम्नानुसार है:—

कड़वी तुम्बी के गर्भ का जल (रस) ५ तोले से १० तोले तक रोगी की शक्ति अनुसार पिलावें। जिससे रोगी को वमन विरेचन होंगे। यदि आध घण्टे या १ घण्टे में वमन विरेचन न होने लगे, तो पुनः पिलावें, इस तरह आवश्यकता पर तीसरी बार देवें। जब तक वमन विरेचन न हो, तब तक पिला सकते हैं। इस प्रयोग से सर्व विष दूर होकर रोगी के जीवन की रक्षा हो जाती है।

यदि ताजी तुम्बी न मिले, तो सूखी तुम्बी के गर्भ को जल में पीस जल मिलाकर उपचार कर सकते हैं।

प्रयोग प्रकाशित होने के कुछ मास के पश्चात् उस वृद्धा का स्वर्गवास हो गया था। फिर पागल कुत्ते के विष-पीड़ित रोगी सुबा के पास जाते थे। एक समय १० मनुष्यों को पागल कुत्ते ने काटा था। उनमें से ९ उपचारार्थ सुबा के पास गये थे। वे सब स्वस्थ हो गये थे। दशवां जो नहीं आया था, उसकी मृत्यु हो गई थी।

सूचना—(१) यह प्रयोग विष प्रकोप नया हो, तब तक किया जाता है। १५ दिन चले जानेपर रोग विष समस्त धातुओं में पहुँच जाता है। फिर लाभ होने की आशा कम हो जाती है।

(२) उक्त उपचार के समय वमन विरेचन हो जाने पर गोघृत ५-५ तोले पिलाया जाता है। एवं कुछ दिनों तक रोज सुबह शक्ति अनुसार गौ घृत का सेवन कराया जाता है। एवं गौ घृत पचन हो जाने के पश्चात् ही भोजन कराया जाता है।

(स्वास्थ्य से साभार)

शोक समाचार

प्राणाचार्य मासिक के संस्थापक व सम्पादक, प्राणाचार्य भवन लिमिटेड के प्रबन्ध व्यवस्थापक (Managing Director) अखिल भारतीय पत्रकार सम्मेलन के उप प्रधान, महामण्डल के संरक्षक सदस्य

वैद्यराज बांकेलाल गुप्त "प्राणाचार्य"

का एक मास की रुग्णता के पश्चात् शुक्रवार दिनांक ३ अगस्त १९५६ को शाम के ३—२० पर स्वर्गवास हो गया। आपने दो पुत्र वैद्य श्रीगोपाल गुप्त एवं वैद्य कृष्णगोपाल गुप्त B. I. M. S. एवं चार पुत्रियां एवं विधवा पत्नी छोड़ी है। आपकी आयुर्वेद सेवाओं से आयुर्वेद जगत अच्छी तरह परिचित है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी आंखें

(लेखक- डा० आर० एस० अग्रवाल)

[गतांक से आगे]

चिकित्सा

कुछ रोगियों में ठण्डे जल की पट्टी बांध देने से लाभ हो जाता है। हरेक रोगी में यह साधन लाभदायक सिद्ध नहीं हो सकता। गरम भाप या गरम सेंक काफी लाभदायक सिद्ध हुआ हैं। पीले दानों के दीखने पर इनमें भरा मवाद निकाल देना चाहिये। कभी २ एक दो बालों को भी मवाद निकालने के लिए उखाड देना पड़ना है। रोगीके स्वास्थ्य पर ध्यान देना आवश्यक है। कब्ज की शिकायत या दृष्टि दोष के समय ठीक चिकित्सा करनी चाहिये।

लक्षण (CHALAZION)

इस रोग में पलकों के अन्दर गांठ पैदा हो जाती है। यह रोग मेबोमियन ग्रन्थी के मुख में रुकावट आने पर होती है यह टारस्स के काफी समय तक दुखते रहने से हो जाती है। यह रोग काफी आयु के व्यक्तियों में अधिक देखने को मिलती है। दृष्टि दोष या शारीरिक दोष इस रोग के कारण हो सकते हैं।

चिह्न

यह रोग बहुत हलके बढ़ता है और सप्ताह या महीनों में बढ़ जाता है। इसका रूप छोटे चने के समान हो जाता है। रोग के बढ़ने पर पलकों में सूजन और उलटने पर रोग का स्थान दिखाई दे जाता है। हो सकता है रोग के साथ लालिमा और कुकरे भी हो जायें। कुछ रोगियों में स्वास्थ की खराबी से यह रोग हो जाता है।

चिकित्सा

प्रथम अवस्था में गरम सेक, पेनीसिलीन, मरकरी की बूंदें या मरहम, बोरिक से धोना आदि लाभदाय पाया गया है। नेत्रों की सफाई और स्वास्थ पर ध्यान देना बड़ा आवश्यक है।

गांठ के काफी बढ़ने पर चीरा फाड़ी ही श्रेष्ठ इलाज रहता है।

पक्ष्मकोप या परवाल (Tricaisis)

इस रोग में पलकों के कुछ या अधिक बाल अन्दर की तरफ मुड़ कर कानीनिका मंडल पर रगड़ते हैं।

मुड़े बालों के कारण कानीनिका पर वरम एवं नेत्र में लालिमा आ जाती है। नेत्रों में खुजली, दर्द, पानी आना, चौंध, फूला या कानीनिका की खराबी हो जाती है।

कारण

पुराने कुकरे या कुंभिका के पुराने रोग हो जाने पर। जलने, पलकों को चोट लगने से या पलकों की चीरा फाड़ी के बाद।

चिकित्सा

जिस समय बाल कम संख्या में अन्दर की तरफ मुड़े हों तो चिमटी की सहायता से निकाल देना चाहिये। समय समय पर इन्हें निकालते रहना इनका इलाज है। नेत्रों की सफाई एवं स्वास्थ रक्षा के साधनों को कार्य में लाना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगर बाल काफी मात्रा में अन्दर की तरफ मुड़े हों तो ओपरेशन या चीरा फाड़ी करानी चाहिये।

पक्ष्मकोप

इस रोग में पूरा पलक अन्दर की तरफ मुड़ जाता है। यह रोग दो कारणों से होता है।

(क) टारस्स और कजंगटाईवा नामक झिल्ली में खराबी आने से।

(ख) ओरव्युक्योलोरिस नामक मांस पेशी में खराबी आने से।

कुछ रोगियों में यह रोग मांस पेशियों में शक्ति न होने से यह रोग हो जाता है।

चिह्न

हमेशा पलक के रगड़ने से कानीनिका में वरम आ जाता है। खुजली, दर्द, पानी की शिकायत, चौंध या फूला पड़ जाता है।

कारण

काफी पुराने कुकरे, पलकों को चोट या जल जाने से या पलकों के गलत ओपरेशन होने से यह रोग हो जाता है। काफी समय तक सख्त पट्टी बांधने से भी यह रोग हो जाता है।

चिकित्सा

अगर यह रोग काफी समय पट्टी द्वारा हुआ हो तो पलास्टर के छोटे टुकड़े को पलक ठीक करके लगाने से लाभ होता है। कुछ समय पलक को उलटा रखने से भी लाभ होता है। अगर ऊपर कहे प्रयोगों से किसी प्रकार का लाभ न हो तो ओपरेशन कराना चाहिये।

पक्ष्मकोप

इस रोग में पलक बाहर की तरफ मुड़ जाता है। अक्सर ऊपर के पलक में यह रोग होता है लेकिन नीचे की भी पलक में देखने को मिलता है।

चिह्न

पानी का अधिक आना और खुजली इसका प्रथम चिह्न है। बाहर की तरफ निकली हुई पई पतली झिल्ली : कंजंटाईवा : अधिक लाल और फूल सी जाती है। कुछ रोगियों में कानीनिका पर भी बुरा असर पड़ता है।

चिकित्सा

काफी समय तक पलक को ठीक अवस्था में करके पट्टी बांध देनी चाहिये। आरंभ की अवस्था में यह साधन साध्य पाया गया है। रोग के काफी बढ़े होने पर चीरा फाड़ी ही लाभदायक पाई गई है।

निमेष

इस रोग में नेत्रों के पलक बार बार तेजी से झपकने लगते हैं। यह अवस्था नेत्र में किसी चीज के गिर जाने, शुक्ररोगः कनीनिका का वरमः आदि के होने पर होती है। कब्ज की शिकायत या दृष्टि दोष के रोगियों में यह रोग देखने में आया है।

चिकित्सा

नेत्रों को पहले अच्छी तरह साफ करना चाहिये। बाद में पलकों को उलटा करके रुई की फुरेरी द्वारा बाह्य कण गिरा हो तो निकाल देना चाहिये। बाद में पेनीसिलीन या अन्य कोई मरहम का प्रयोग में लाना चाहिये। दृष्टि दोष हो तो प्राकृतिक या अन्य साधनों द्वारा दोष को दूर कर देना चाहिये। पलकों को किसी कारण से बार बार झपकने की आदत पड़ गई हो तो ठीक झपकने की आदत डालनी चाहिये। भोजन आदि पर भी काफी ध्यान देना चाहिये। पेट की सफाई के लिये गुलकंद या ईशवगोल की भूसी प्रेयोग में लानी चहिये।

वातहतवर्त्म

इस रोग में नेत्रों के पलक गिरी अवस्था में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदा रहते हैं। रोगी में इन्हें ऊपर उठाने की शक्ति नहीं होती। वातहतवर्त्म रोग के कारण रोगी की दृष्टि पर भी असर पड़ता है।

चिन्ह

यह रोग दो प्रकार का होता है जन्म से यह अपने आप ग्रहण हो जाता है। जिस समय रोग जन्म से होता है उस समय दोनों में होता है। इस रोग का कारण लेवेटर नामक नस में शक्ति की कमी ही पाया गया है।

जिस समय यह रोग कुछ समय बाद अपने आप होता है उस समय यह मुख्यतर एक नेत्र में होता है। ऐसी अवस्था में तीसरी नस में पक्षाघात होना ही माना गया है।

अन्य कारणों द्वारा

(१) पलकों का कुकरों के कारण भारी हो जाना या मांस की गांठ हो जाना।

(२) पलकों का शिथिल हो जाना। अक्सर वृद्ध अवस्था में।

(३) त्वचा और लेवेटर में ठीक सम्बन्ध न रहना।

चिकित्सा

जिस समय रोग अपने आप हो जाता है उस समय तीसरी नस को बिजली द्वारा उत्तेजित करने से रोगी को लाभ होता है। कुछ रोगियों में निम्नलिखित साधन लाभदायक पाये गये हैं।

(क) पलकों की मालिश।

(ख) ताकतवर दवाओं का सेवन।

(ग) चीरा फाड़ी की चिकित्सा।

टयूमर

पलकों के अन्दर के मांस में सख्त गांठ को कहते हैं। यह गांठ कुछ रोगियों में बढ़ती मालूम होती है लेकिन मुख्यतर यह एक ही रूप लिये हुए रहती है।

टयूमर की चिकित्सा प्रारम्भिक अवस्था में बिजली द्वारा की जा सकती है लेकिन बढ़ोत्री होने पर चीरा फाड़ी ही श्रेष्ठ रहता है।

पलकों की चोट या जन्तुका काटना

काली आंख

यह अवस्था आंख पर किसी चोट लगने से होती है। कुछ रोगियों में नेत्र की अवस्था सप्ताह में ही ठीक हो जाती है लेकिन कुछों में महीने से भी अधिक लग जाता है। ऐसे रोगियों को सेक या भाप की चिकित्सा लाभदायक रहती है।

जन्तु का काटना

किसी भी छोटे या बड़े जन्तु के काटने से नेत्र के ऊपर सूजन आ जाती है। ऐसी अवस्था में सेक या भाप का प्रयोग करना चाहिये। दिन में चार या पांच वार मरकरी की बूंदें डालनी चाहिये। पैनीसिलीन के मरहम को सोने से पहले प्रयोग किया जा सकता है।

जली अवस्था में

जले स्थान को बोरिक के पानी से धोकर पैनीसिलीन के मरहम को लगाकर पट्टी बांध देनी चाहिये।

छठा अध्याय

आंखों में पानी आने की तकलीफ और उपाय

अश्रु ग्रन्थी

अश्रु ग्रंथी का शरीर छोटा और स्थान आंख के खोल के ऊपरी भाग में होता है। इसका रूप बदाम के बराबर होता है और यह कान की तरफ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखा रहता है। इस ग्रंथी के छै या कुछ अधिक मुंख होते हैं जिनकी सहायता से अश्रु नीचे फरनिकस के पास गिरते हैं।

जिस समय नेत्र पलक झपकते हैं उस समय अश्रु का जल नीचे की तरफ आ जाता है और नेत्र को धो देता है। बाद में पंकटा नामक नाक के पास छिद्रों द्वारा चूस लिया जाता है। बाद में अश्रु की थैली में ज़मा होकर छोटी एक नली द्वारा एक एक करके नाक में गिरता है और सांस की गति के साथ सूख जाता है।

अश्रु जल हलका नमकीन होता है और इसमें नमक की मात्रा अधिक होती है। मुख्यतर अश्रु ग्रंथी उतना ही जल बनाती है जितना नेत्रों को गीला रखने में आसानी हो। जिस समय किसी प्रकार की बाह्य वस्तु या मानसिक भावों में तेज आ जाता है उस समय अश्रु ग्रंथी अधिक जल बनाने लगती है।

पूयालसः (Dacryocystitis)

यह रोग अश्रु थैली में खराबी आ जाने से हो जाता है।

चिह्न

इस रोग में हमेशा आंसू नेत्रों से गिरते हैं। जिस समय रोगी तेज हवा, धूल, धुंआं या तेज रोशनी में देखता है तो अश्रु का संचालन अधिक मात्रा में होने लगता है। जिस समय बाहर से अश्रु थैली को दबाया जाता है उस समय पतला पीला मवाद पंकटा से निकल आता है। कभी कभी दबाने से नाक के रास्ते पतला मवाद भी निकल आता है। यह रोग अक्सर काफी समय रहता है और इसके कारण नेत्रों में लाली दृष्टिगत होने लगती है।

कारण

बहुत से रोगियों में नाक की ठीक बनावट या थैली के छोटे होने से हो जाता है। थैली की बनावट में खराबी आने से रोग बढ़ता जाता है और मवाद निकलने तक की अवस्था तक आ जाती है। नाक के कोने के पास सूज और हलका लाल हो जाता है। चोट आदि भी इस रोग का कारण हो सकती है।

चिकित्सा

रोग के कारणों को दूर करना पहला काम होना चाहिये। पंकटा के रास्ते पिचकारी द्वारा थैली की सफाई करानी चहिये। बाद में जिंक या पीला मरहम प्रयोग में लाया जा सकता है। नित्य हलकी भाप और सूर्य व्यायाम की चिकित्सा काफी लाभदायक सिद्ध हुई है। दिन में दो तीन बार थैली की सफाई होती रहनी चाहिये और दवा का प्रयोग होना चाहिये। अगर रोग काफी बढ़ गया हो तो ओप्रेशन द्वारा थैली को निकाल देना चाहिये। पानी आने की शिकायत के सिवाय अन्य तकलीफ दूर हो जाती हैं।

पानी आने के अन्य कारण

(१) नेत्रों द्वारा प्रयत्न करके देखना। ऐसे रोगियों को अपने पलकों को ठीक अवस्था में रखकर पलक झपकना चाहिये।

(२) लिखने पढ़ने के गलत तरीके।

(३) सिनेमा गलत तरीके से देखने से।

(४) सीने पिरोने में गलत विधि का प्रयोग करना।

ठीक तरीके

(१) जिस समय नेत्र किसी वस्तु को देखें तो उन्हें फाड़ कर नहीं देखना चाहिये। पहले ढोडी को थोड़ा ऊपर करके दूसरे पलकों को थोड़ा झुका कर और तीसरे हलके २ झपकते हुए वस्तु को देखना चाहिये। क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक लहसुन प्रेमी अंग्रेज

(लेखक—स्वामी पारसनाथ जी)

[गतांक से आगे]

१५—काली खांसी

लहसुन को कुचल दो। एक प्याली में रख दो। काली खांसी वाले रोगी को चाहिये कि वह उसे सूंघा करे। २०-२५ बूंद लहसुन का रस, शर्बत में मिला-कर पिलाने से भी काली खांसी नष्ट होती है। बच्चों के लिए ५ से १० बूंदें काफी हैं। लहसुन को पीस कर उसकी लुगदी पैरों के तलवों में बांध कर रात को सो जाने से, काली खांसी का काल आ जाता है। काली खांसी, कुकर खांसी आदि हठीली खांसी—इस प्रयोग से नष्ट हो जाती है। जैतून के तैल में-लहसुन के रस की बूंदें मिला कर--बच्चों की छाती पर मालिश करने से काली खांसी दूर होती है। लहसुन की छिली हुई कलियों को बारीक काट लो। बच्चों को पतले मोजे पहना कर, पैर के तलवों पर, कटी हुई कलियों को बिछा दो। ऊपर से दूसरे मोजे पहना दो। दो मोजों के मध्य लहसुन इसलिये रखना चाहिये, ताकि बच्चों की कोमल चमड़ी को लहसुन जला न दे। लहसुन धारण कराने के आधा घन्टा बाद पिसा हुआ लहसुन भी बच्चे को सुंघाना चाहिये। यदि एक सप्ताह तक यह प्रयोग किया जावे तो हमेशा के लिये काली खांसी चली जावे गी। छिली हुई कलियों को दूध में पकालो। बच्चों को वह दूध पिलाना चाहिये। रोटी के भीतर छिली हुई कलियां रखकर भी बच्चों को खिलाना चाहिये। आटे में पिसा हुआ लहसुन गूंध कर रोटी बनाना चाहिये। यदि बच्चों को छिली हुई कलियां दांतों से चबाने का अभ्यास कराया जाये —तो काली खांसी पर यह प्रयोग सर्वोत्तम होगा। जो प्रयोग, बच्चों के लिए हैं—वही जवानों और वृद्ध नर-नारियों के लिये भी हैं। केवल मात्रा शक्ति अनुसार कम-ज्यादा कर लेनी चाहिये।

१६—क्षय

कश्यप, चरक आदि प्राचीन श्रेष्ठतम चिकित्सक लोग भी लहसुन का उपयोग क्षय रोग में करते कराते आये हैं। आधुनिक समय में भी डाक्टर मूरे डाक्टर कावाजानी और डाक्टर पिसचीन ने क्षय में लहसुन की सिफारिश की है। मानव शरीर के भीतर रोगों के कीटाणुओं के मरने के कारण ही लहसुन उपयोगी नहीं है, किन्तु शरीर के तन्तुओं के लिये निरापद भी है। प्रकृति का सबसे अच्छा कृमिहर—लहसुन ही है। क्योंकि यह भीतर और बाहर दोनों तरफ से व्यवहृत होता है। शरीर के प्रत्येक अंग में घुस कर लहसुन' फेंफड़े, त्वचा, जिगर, गुरदे दूध और लार द्वारा बाहर निकल जाता है। लहसुन में जो उड़न शील तेल है, वह प्रबल कृमि-नाशक होने के कारण, क्षय के कृमियों को मारने में आश्चर्यजनक रूप से प्रभावकारी होता है। खून में मिल कर वह तेल, फेंफड़े, जिगर, त्वचा और गुर्दों में दौरा करता है और शरीर की धातुओं में गहराई तक जा पहुँचता है। इस प्रकार लहसुन, समस्त शरीर में क्षय का उपद्रव रोकता है। लहसुन द्वारा, हड्डी तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का क्षय आराम हो जाता है। क्षय ग्रस्त जवान आदमी ५ तुरियां चबानी शुरू करके एक दिन में ५ तोले तक पहुँच जाता है। दूध, दही, शहद मक्खन के साथ उसका प्रयोग करना चाहिये। एक तुरी को चबाकर एक घूंट दूध पीकर उसे निगलना उत्तम है। तेजी के कारण उसे खाली मुंह नहीं चबाना चाहिये। क्योंकि मुंह पक सकता है। सिल पर चटनी की तरह पीस कर खाना सुगम है। उस चटनी को दूध, दही, शहद, मक्खन में मिलाकर खाना चाहिये। तब तेजी नहीं अनुभव होगी। बिनोवा भावे के भाई बालकृष्ण जी को क्षय होगया था। वह धीरे २ दिनमें तीन बार करके पांच तोला लहसुन खाने लगे थे। उन दिनों उनकी रोजाना पौष्टिक खुराक यह थी–चार पाव दूध, चार तोला मक्खन, ढाई तोला शहद, और दो पाव दही। यदि स्निग्ध खुराक न ली जायगी तो लहसुन हानि करेगा। शरीर में गर्मी अधिक अनुभव होगी। वे गरमी में भी एक छटांक लहसुन रोजाना खाते रहे थे, परन्तु पौष्टिक खुराक के कारण उनको कोई कष्ट नहीं हुआ था।

यक्ष्मा में लहसुन की साधना करते समय घी और दूध का खूब उपयोग करना चाहिये। घी में पका कर लहसुन खिलाना चाहिये। कुछ दूध भी डालना हितकर है।

लहसुन में 'अलोल सल्फाइड' नामक एक उड़नशील तेल रहता है। यही तेल, लहसुन में रहने वाले व्याधि-नाशक गुणों का जनक है। यह तेल, प्रबल जन्तु विनाशक होता है। क्षय के कीटाणुओं को मारने और रोकने की अपूर्व क्षमता, इस तेल में विद्यमान है। शरीर के भीतर जाकर लहसुन, आक्सीजन वायु में मिल जाता है। फिर वह सल्फ्यूरिक एसिड नामक अम्ल को पैदा करता है।

इंग्लेंड के प्रसिद्ध डाक्टर एम० डबलू० मेकडाफ साहब का कथन है कि वनस्पति वर्ग का लहसुन, तथा खनिज वर्ग का पारा–क्षय रोग के लिये आश्चर्य जनक प्रभाव रखते हैं।

१७—चेचक

चेचक की बीमारी में लहसुन पिसवाकर लुगदी का लेप पैरों में कराना चाहिये। यह सलाह डाक्टर सिडनहैम ने दी है।

१८—टाईफ़ाईड

डाक्टर मिनचिन लिखते हैं कि टाइफाइड और टाईफाइड रोगों के लिए लहसुन लाभदायक सिद्ध हुआ है। इन रोगों के लिए लहसुन का ६० बूंद रस निकालो। ६—६ घंटे के अन्तर से उसे पिलाना चाहिये। शबत में मिलाकर देना चाहिये। बारह साल से छोटे बच्चों के लिये ३० बूंद रस काफी है।

१६—निमोनिया

श्वास ज्वर (निमोनिया) में अदरक के रस में लहसुन का रस डालो और पिलादो। ३० बूंद रस लहसुन, ३० बूंद अदरक रस में मिलाकर चार-चार घंटे बाद पिलाना चाहिये। कृमिसंचारित श्वास ज्वर (सेप्टिक निमोनियां) में भी यही प्रयोग किया जा सकता है। श्लेष्मा को नाश करना हो तो लहसुन और काली मिर्च को मिलाकर घोंटो और नस्य दो। इनफ्लुएंजा के रोग का भी यही प्रयोग है।

२०—सिरदर्द

नमक के साथ पीसकर लहसुन की ५ कलियां खिलाने से शिरोवेदना दूर होती है।

२१—आधासीसी

लहसुन पीसकर कनपटी के भाग में लेप करो। लेप अधिक देर तक न लगना चाहिये। लेप करने से रक्त का प्रवाह उधर हो जायगा जिधर दर्द होता है और दर्द बन्द हो जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२२—बवासीर

कुड़े की छाल के साथ लहसुन खिलाने से बवासीर के मस्से सूख जाते हैं।

२३—पेट के कीड़े

जिसके पेट में कीड़े हों तो कृमिनाशक औषधि के साथ लहसुन भी खिलाना चाहिये। पेट में यदि गोल और धागे जैसे कीड़े हों, तो लहसुन का रस देने से वे मर जाते हैं। गुदा में या बड़ी आंतों के निचले हिस्से में कीड़े हों तो अन्य द्रव्यों के साथ लहसुन के काढ़े का एनीमा देना चाहिये। यह काढ़ा रोगी को कुछ देर अंदर रोके रखना चाहिये। गिलोय के साथ लहसुन का उपयोग—पेट के कीड़ों को मारता है। विरेचन के लिये काली मिर्च और घी ग्वार के साथ लहसुन देना चाहिये।

२४—गुल्म

सरसों के तैल के साथ लहसुन का रस खिलाने से गुल्म रोग नष्ट होता है। वात ल्म यानी वायु-गोला में लहसुन से पकाया हुआ दूध पिलाना चाहिये। वायु गुल्म के समस्त विकारों में, लशुनादि घृत देना चाहिये। घृत बनाने का नुसखा यों है—

लहसुन की छिली कलियां १० सेर, दशमूल की प्रत्येक वस्तु १० छटांक पानी २॥ मन, पकाकर २५ सेर पानी रख छोड़ो। उसमें नीचे लिखी चीजें मिलादो—

अनार का रस, शराब, धान की कांजी, दही, प्रत्येक ३ सेर, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, हर्र, बहेरा, आंवला, हींग, अजवायन, चव्य, चित्रक, अम्लवेत, सेंधा नमक, देवदारू प्रत्येक चार तोला, घी ३। सेर विधि पूर्वक पकालो।

२५—जुकाम

लहसुन, मूंग का आटा, त्रिकटु, जवाखार को एक साथ पीसकर घी में मिलाकर खिलाना चाहिये।

२६—मलेरिया

लहसुन खाने वाले के शरीर से लहसुन की तीव्र गंध निकला करती है। वह गंध, मलेरिया के मच्छरों को दूर रखती है। इस प्रकार अनजाने ही लहसुन मलेरिया से रक्षा किया करता है। इन विषम ज्वरों में लहसुन के साथ पकाया हुआ दूध पिलाना चाहिये। मलेरिया में, भोजन से पहिले, तिलके तैल के साथ लसुन का सेवन प्रति दिन करना चाहिये। सरदी लगकर बहुत कप कपी से चढ़ने वाले बुखार की कंप कपी लहसुन रोकता है। प्रातः काल घी के साथ लहसुन खिला देने से बुखार रुक जाता है। भाव मिश्रने लिखा है कि तिल तैल और नमक के साथ लहसुन मिलाकर मलेरिया में खिलाना चाहिए। तीसरे तथा चौथे दिन आने वाले—इकतरा, तिजारी, चौथिया में भी लहसुन का यह प्रयोग लाभकारी सिद्ध होता है।

२७—चर्म रोग

त्वचा के रोगों में, आक्रान्त स्थान पर, लहसुन के रस का लेप करना चाहिये। खैर के काढ़े के साथ लहसुन खिलाना भी चाहिये। दाद पर छिली हुई कली रगड़ना चाहिये। खुजली आदि पर सरसों या नारियल के तैल में लहसुन का कल्क डालकर पकाकर व्यवहार में लाना चाहिए। दूषित व्रण, शय्या व्रण और वे घाव जिनमें तंतुओं के सड़ने की बात हो, लहसुन के रस की पट्टियों से शीघ्र आराम मिलता है। चार ओंस पातित जल में, एक ओंस लहसुन का रस मिलाकर व्यवहार में लाना चाहिए। या वैसलीन में ५० फीसदी लहसुन का रस मिलाकर लगाना चाहिये।

२८—विषनाश

कई स्थानों पर लोग लहसुन को घर में इसी कारण रखते हैं, कि इसकी तीव्र गंध के कारण सांप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या दूसरे जहरीले जीव घर में नहीं आते। दक्षिण में कायदा है कि घर के किसी सूराख में सांप घुसने की आशंका होने पर, लहसुन पीसकर पानी में मिलाते हैं और उसका छिड़काव घर भर में कराते हैं। उसकी तेज़ गंध से सांप बाहर भाग जाते हैं। बिल से सांप को निकालने के लिए, सपेरे लोग भी लहसुन की सहायता लेते हैं। लहसन के रस में बिनौले भिगोकर सांप के बिल पर रखदो तो तुरन्त सांप बाहर निकल-कर भाग जायेगा। चरक संहिता में सर्प विष को नष्ट करने वाले पदार्थों में लहसुन भी शामिल किया है। बम्बई की तरफ किनइंस्टीटयुट के डाक्टर म्हस्कर और केयस ने लहसन द्वारा, सर्प विष की चिकित्सा करने के परीक्षण भी किये हैं। उन्होंने एक कुत्ते के शरीर में सर्प विष का इंजेक्शन दिया था। फिर जहां विष प्रवेश किया गया था, उस स्थान पर, लहसुन के रस का लेप किया गया था। गौ मूत्र में कुछ लहसुन रस मिलाकर कुछ बूंदें, कुत्ते की नाक में डाली गई थीं। साथ ही कुत्ते को ६ माशा लहसन रस पिलाया भी था।

जब किसी स्त्री के सिर में जुंए पैदा हो जाती हैं तब वह पानी में मिलाकर लहसन का रस सिर में मलती हैं। उससे लीख जूं आदि नष्ट हो जाती हैं।

अन्यान्य जहरीले कीड़े के काटने पर लहसुन का रस लगाया जाता है।

२६—हड्डी टूटना

हड्डी टूट जाने पर लहसुन, शहद, लाख, घी और खांड़ को पीस कर खाने से हड्डी जल्द जुड़ जाती है। शरीर में ताकत भी आती है। रसोत तेल भी हड्डी टूटने पर पिलाया जाता है।

हड्डी टूटना, हड्डी कटजाना, या हड्डी का अपने स्थान से हट जाने की अवस्था में लहसन पीस कर खिलाना चाहिये।

शोथ में लहसुन के साथ दूध पिलाया जाता है।

चोट लगने पर हल्दी और लहसुन को सिल पर रगड़ कर सरसों के तेल में मिला कर गरम करके बांधने से सूजन और पीड़ा शान्त हो जाती है।

मोच आने पर लहसुन के रस में थोड़ा नमक मिलाकर लगाना चाहिये।

३०—गले के रोग

कुछ बच्चों की नाक सदा बहती रहती है। बदबूदार स्राव के साथ छिछड़े भी नाक से निकला करते हैं। एक तोला लहसुन के रस को ६ तोला पानी में मिला कर दिन में तीन चार वार फुरेरी से नाक के भीतर लगाना चाहिये।

स्वरभंग में मुलेठी के साथ लहसुन को चबाते हुए रस निगलना चाहिये।

३१—कान के रोग

चक्रपाणि और वृन्द माधव ने बतलाया है कि कान के दर्द में लहसुन का रस गरम करके कान में डालना चाहिये।

बहरे पन में हींग के साथ लहसुन का रस गरम कर के कान में डालना चाहिये।

अगर कान से पीप बहती हो तो छटांक भर तिल के तेल में थोड़ासा लहसुन और दो तीन लौंग उबाल कर कान में सहता-सहता वह तेल डालना चाहिये। कान के दर्द में और बहरेपन में भी यह प्रयोग लाभदायक सिद्ध हुआ है।

३२—बाल नहीं पकते

अगर सिर के बाल असमय श्वेत होने लगे हों तो लहसुन का रस सिर पर मलना चाहिये। बालों का पकना बन्द हो जायगा। डाक्टर पावेल ने लिखा है कि लहसुन के रस की मालिश से सिर के बाल लम्बे भी हो जाते हैं।

क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घीग्वार गुण विधान

(लेखक—स्वामी पारसनाथ जी)

१—घीग्वार का परिचय

सब जगह सुगमता से मिल जाता है। लम्बे लम्बे मोटे-मोटे हरे रंग के पत्ते होते हैं। यह पौदा अत्यंत सुन्दर होता है। पत्ता नुकीला होता है और दोनो तरफ छोटे २ कांटे होते हैं। पत्ते मोटे दलदार होते हैं। भीतर गूदा होता है।

नाम

संस्कृत–घृतकुमारी, दीर्घ पत्रिका, हिन्दी–घीग्वार, कुंआर-गंदल, ग्वारपाठा। गुजराती–कडवी-कुंवार। अरबी-मुसव्वर। बंगाली–कोमारी, घृतकोमारी। मराठी–कोरफल। फारसी–दरख्ते सिना। तामिल–अंगनिकटलई, चिरूकतारे। तेलगू-चिकल बंदा, कलबंद। लेटिन—Aloe Indica. अंग्रेजी—Indian Aloes.

स्वभाव

गरम और खुश्क। गरम मिजाज वालों को अधिक व्यवहार में नहीं लाना चाहिये।

२—खांसी पर

घीग्वार के पत्तों को चीरकर गूदा निकाल लें और गूदे को कुचलकर साफ कपड़े में से छानकर उसका रस निकालो। सबका सब लुआब बनकर निकल आवेगा। कलई दार देगची में उसे डालकर धीमी २ आंच में पकाओ। जब आधा लुआब जल जावे (अगर रस एक सेर गूदे से निकाला गया हो) तब नमक लाहौरी ३ तोला बारीक पीसकर मिलादो। जब सारा पानी जल जावे और सफूफ बन जावे तब उतार लो। २ रत्ती से ४ रत्ती तक खांड में रखकर खिलाना चाहिये। पुरानी से पुरानी खांसी, काली खांसी. प्रारम्भिक दमा तक को लाभ पहुंचाता है। परीक्षित प्रयोग है।

३—दुखती हुई आंखों पर

घी ग्वार का गूदा—३ तोला।

अफीम—२ रत्ती।

मिलाकर गुनगुना करो। पोटली बनाकर दुखती आंखों पर वार वार फिराना चाहिये। अवश्य आराम होगा।

दुखती हुई आंखों पर घी ग्वार का दूसरा प्रयोग इस प्रकार है—

रात को सोते समय घीग्वार के अर्क की एक, २ बूंद दोनों आंखों में टपकादो।

तीसरा प्रयोग इस प्रकार है—

घी ग्वार के पत्ते को एक तरफ से छील डालो। फिर उसे गरम करलो। फिर रोगी की जिस ओर की आंख में तकलीफ हो. उसी तरफ के पैर के अंगूठे के नीचे पैर में उसे बांध दो।

४—नेत्र रक्षक अर्क

घी ग्वार का अर्क—१ तोला।

फिटकरी—१ रत्ती।

फिटकरी पीसकर अर्क में रात भर पड़ी रहने दो। प्रातः छानकर शीशी में भरदो। प्रातः सायं दो-दो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बूंदें दोनों आंखों में डालने से--आंखों की सुरखी, कुकरे, सूजन और धुंध दूर होती है। आजमूदा है।

५--गले के रोगों पर

घी ग्वार के एक पत्ते को एक तरफ से छीलडालो। हल्दी और नरकचूर को बारीक पीसकर, चाकू से छिले हुए पत्ते पर मलदो ताकि वह दवा पत्ते में व्यापत हो जाए। फिर उस पत्ते के दो टुकड़े करो और मरीज के दोनों तलवों पर बांध दो। बड़ी ही मुफीद चीज है।

६--दमा पर

यह एक प्रसिद्ध और भयानक रोग है। कहा जाता है कि—'दमा दम के साथ जाता है'। यानी—लाइलाज मर्ज है। परन्तु, ऐसा कोई रोग नहीं जिसका इलाज न हो। हम एक प्रयोग लिखते हैं कि जो एक सन्यासी जी ने बतलाया था। वारम्बार परीक्षित किया हुआ है।

घी ग्वार का गूदा—१ पाव।
नमक लाहौरी—२ तोला।
मिट्टी का प्याला—१ अदद।
जंगली कण्डी—४ सेर।

नमक को बारीक पीसो। घी ग्वार के गूदे में डालदो। फिर उसे मिट्टी के प्याले में बंद करो। उपलों में हवा से बचाकर आग लगादो। आग ठण्डी हो जाने पर वह नमक निकालो। वह काला होगा। पीसकर स्वरक्षित रखलो।

सेवन विधि—२ माशा प्रातः, २ माशा शाम, मुनक्का या बताशे में रखकर खिलाना चाहिये।

लाभ—बलगमी खांसी, पुरानी खांसी, दमा को जड़ से खो देता है।

७--उदर पीड़ा पर

घी ग्वार का गूदा पावभर लेकर कपड़े से निचोड़ उसका अर्क एक बोतल में भरो। फिर ढाई तोला लाहौरी नमक बारीक पीसकर उसमें डालदो और धूप में रखदो। तीसरे दिन उसमें अदरक का अर्क एक पाव और एक तोला नौशादर, एक तोला सुहागा भुना हुआ उसी बोतल में डालदो। बोतल में मजबूत डाट लगादो।

बोतल को खूब हिलादो ताकि सब चीजें मिल जावें।

मात्रा—३ माशा सुबह, शाम, दोपहर।

लाभ—उदर पीड़ा, शूल, अजीर्ण को दूर करता है।

८--उदर पीड़ा पर अजवायन

घी ग्वार का गूदा—४ सेर।
अजवायन देशी—२ सेर।
नमक लाहौरी—१ पाव।

चीनी या मिट्टी के खुले मुंह वाले पात्र में यह सब सामान भर दो। छाया में रखदो। दिन में तीन चार बार हिला दिया करो। कुछ ही दिनों में वह सब सामान अजवायन में सूख जावेगा। केवल अजवायन शेष रह जावेगी। उसे पीसकर डिबों में बन्द करदो।

मात्रा—३ माशा से ४ माशा तक गरम पानी के साथ पिलादें।

लाभ—उदर पीड़ा, अजीर्ण, शूल, क्षुधा क्षीणता और कब्ज दूर होगा।

९--पाचक अर्क

घी ग्वार का एक पत्ता लम्बाई में चीर लो। दो टुकड़े करलो। एक पर नौशादर और दूसरे पर मिश्री पीसकर छिड़कदो। दोनों को आपस में मिलादो। ऊपर से धागा लपेट दो। धूप में लटका दो। नीचे चीनी का कोई बर्तन रखदो। टपक-टपक कर सारा अर्क उस बर्तन में जमा हो जायगा। जब सब अर्क टपक जाय तब उसे शीशी में रखदो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मात्रा—१ माशासे तीन माशा तक बताशा में।

लाभ—अजीर्ण नाश करता है।

१०—हिचकी पर

यों तो यह रोग मामूली है। परन्तु कभी कभी भयानकता भी धारण कर लेता है। मरीज को बात करने से भी लाचार कर देता है।

घी ग्वार का अर्क १ तोला।

सोंठ का सफूफ़ १ माशा।

मिलाकर मरीज को पिलादो। तुरंत हिचकी बंद हो जाती है।

११—तिल्ली रोग पर

इस रोग के रोगी की भूख बंद हो जाती है। शरीर और चेहरा रक्त हीन होने लगता है। जरा ही चलने फिरने से दम फूल उठता है। जोर का कोई काम हो ही नहीं सकता। इस रोग को भी कठिन रोग समझा जाता है। इस रोग पर घी ग्वार के चंद प्रयोग नीचे लिखे जाते हैं—

प्रथम प्रयोग

घी ग्वार का एक पत्ता लम्बाई में चीर डालो। फिर दो तोला नौशादर पीस डालो। आधा इस टुकड़े पर और आधा उस टुकड़े पर मल दो। उन दोनों टुकड़ों को किसी खुले मुंह वाली चीनी की प्लेट में रखदो। नौशादर वाली तरफ सूरज की ओर रहनी चाहिये। तीन घंटे में सारा अर्क निकलकर प्लेट में जमा हो जायगा। उसे शीशी में बन्द करो।

विधि—चार बूंदें प्रातः और चार बूंदें शाम को बताशा या मिश्री में डालकर खिलादिया करो।

परहेज—खटाई, तैल, दही, मिर्च और बासी भोजन। यह प्लीहा की हुक्मी दवा है।

द्वितीय प्रयोग

घी ग्वार का गूदा—१ पाव।

गाय का दूध —आधा सेर।

दाल चीनी —६ माशा।

घी —५ तोला।

खांड —२ तोला।

घी ग्वार का गूदा कपड़े से छानकर दूध में मिलादो। कलईदार देगची में रख आग पर चढ़ा दो। धीमी-धीमी आंच पर उस दूध का खोया तैयार करलो। फिर घी से उस खोये को भून डालो। फिर खांड और दाल चीनी का सफूफ डाल उतार लो। हलवा तैयार हो गया।

मात्रा-कम ज्यादा उमर के अनुसार खिलाना चाहिये।

तृतीय प्रयोग

घी ग्वार का अर्क—२ तोला।

हल्दी पिसी हुई —१ माशा।

दोनों को मिलाकर पिलाना चाहिये। यह एक खुराक है। सुबह-शाम पिलाना चाहिये।

१२—कब्ज पर

कब्ज से अनेक रोग उठ खड़े होते हैं। जैसे-सिर दर्द, अजीर्ण, भूख न लगना, बवासीर, शरीर टूटना आदि। सत घी ग्वार ३ रत्ती सोते समय दूध के साथ लेना लाभदायक है। दूसरा प्रयोग यह है कि सोंफ का छिलका दूर करके ५ तोला सोंफ तैयार करो। तमाम दिन घी ग्वार के अर्क में उसे खरल करो। रत्ती-रत्ती भर की गोलियां बनालो। रात के समय दो गोली से चार गोली तक गरम दूध के साथ देना चाहिये।

१३—प्रमेह पर

यह रोग ८० प्रकार का होता है और ६० फी सदी लोग इस दुखदाई रोग से पीड़ित रहते हैं। इस पर घी ग्वार के चंद प्रयोग दिये जाते हैं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम प्रयोग

घी ग्वार के दो तोला गूदे को ६ माशा घी में भून डालो। फिर उसमें थोड़ा सा संधानमक और लाल मिर्च थोड़ी सी मिलादें। देखने में सादा हैं, गुण में आला है।

द्वितीय प्रयोग

घी ग्वार का ४० तोला गूदा, गाय के आधा र घी में भून डालो। जब सुर्ख हो जावे, उतार कर अलग रखदो। फिर उसी घी में गेहूँ का पाव भर नशास्ता भून लो। फिर उसमें भुना हुआ गूदा और आधा सेर खांड डालदो। दो दो तोले के लड्डू बनालो।

विधि--प्रातः सायं बिना कुछ खाये एक या दो लड्डू खिलाकर ऊपर से दूध पिला दो। दो हफ्ते में पुराने से पुराना प्रमेह रफा होता है।

तृतीय प्रयोग

गेंहूँ का आटा आधा सेर घी ग्वार के रस से गूंद डालो। मोटी-मोटी रोटियां सेक लो। गरमागरम ही उन रोटियों का चूरमा बना लो। आधा सेर खांड मिलादो फिर उसमें निम्नलिखित औषधियां पीसकर छानकर मिलादो--

गोखरू खुरासानी १ पाव।
मूसली सफेद १ पाव।
पिस्ता के बीज १० तोला।
बादाम छिले हुये छिलका उतरे हुये १० तो०

व्यवहार-प्रातः दो तोला दूध के साथ खिलाना चाहिये, प्रमेह नाशक है।

१४—आतशक पर

आतशक यानी गरमी वाली स्त्री के सहयोग से यह रोग पैदा होता है। वेश्याओं द्वारा इस रोग का प्रचार तथा प्रसार हो रहा है। इस रोग के रोगी का पहिला कर्तव्य यह है कि बद चलनी त्याग दें।

समुलफार (संखिया सफेद) १ तोला और नीलाथोथा १ तोला, दोनों को खरल करो। घी ग्वार का अर्क डालते रहो और खरल करते रहो। इस प्रकार आधा सेर अर्क उसमें सुखादो। फिर उसे दो प्यालों में बंद करके जौहर उड़ालो। मलाई में लपेट कर एक या दो चावल दवा खिलानी चाहिये। दवा के पूर्व जुलाब देकर पेट साफ कर देना जरूरी है।

लाभ--केवल सात दिन में आतशक का नाश हो जाता है।

पथ्य-बेसनी रोटी, घी के साथ खानी चाहिये।

द्वितीय प्रयोग

एक तोला रसकपूर तमाम दिन घी ग्वार के गूदे के साथ खरल करके काली मिर्च बराबर गोलियां बनालों। सुखाकर शीशी में रखदो।

व्यवहार--पानी या अर्क चोबचीनी चार तोला के साथ प्रातः सायं एक २ गोली खिलानी चाहिये। सात दिन में आराम होगा। घी के साथ बेसनी रोटी खिलानी चाहिये।

१५—बगल का फोड़ा

घी ग्वार का गूदा गरम करके बांधा करो। बैठ जायगा या फूट जायगा। सारा मवाद निकल जायगा।

१६—चन्द्रा रोग पर

उंगली के पोरों पर जो फुंसी निकलती है उसे चंद्रा कहते हैं। यह सारी उंगली को भी बेकार कर सकती है। घी ग्वार को गरम करके दो तीन दिन बांधने से आराम हो जाता है। या घी ग्वार के गूदे में थोड़ा सा शहद मिलाकर उस फुंसी के ऊपर लेप कर देना चाहिये। पांच मिनट में तकलीफ दूर हो जायगी।

क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुधान

अधिक मानसिक परिश्रम, चिन्तन, अध्यापन या किसी अकथनीय कारण से जिनका दिमाग कमजोर हो गया है, स्मरणशक्ति घट गई है, हृदय दुर्बल हो गया है, सिर में हल्का २ दरद और थकावट रहती है उनके लिए 'बुधान' बहुत लाभदायक है। इसके सेवन से उपरोक्त दोष मिट जाते हैं। दिमाग पुष्ट होकर स्मरणशक्ति तीव्र हो जाती है। इससे उन्माद तक के रोगियों को लाभ हुआ है। बुद्धिजीवी लोगों के लिए वरदान स्वरूप है। मूल्य ४) डाकखरच १।=)

टंकरोल

दो दिनमें इसकी ६ मात्राओंके सेवनसे जुकाम (प्रतिश्याय) ठीक हो जाता है। दो खुराक खाने से ही शिर का भारीपन, छींकें आना, नाकसे पानी बहना आदि दूर होजाता है। इसका प्रभाव श्लेष्मकला पर होता है। २४ मात्रा की शीशी का मूल्य १) छः मात्रा का ।=)

निद्राणी

स्वास्थ्य के लिए निद्रा उतनी ही आवश्यक है जितना कि भोजन, जल और शुद्ध वायु। भोजन के पचन और सात्म्यीकरण से शरीर की प्रत्येक सेल को अपनी स्थिति बनाये रखने की सामग्री मिलती है तो पूर्ण निद्रासे आराम मिलने के कारण घिसी हुई सेलों का पुनः निर्माण हो जाता है और खरच हुई शक्ति पुनः संचित हो जाती है। यदि युवा पुरुष को रात्रि में ६—७ घण्टे निरन्तर गहरी नींद नहीं आती या बीच बीच में टूट जाती है तो यह मस्तिष्क धमनियों की कठोरता, पाचन सम्बन्धी रोग, विबन्ध, ब्लडप्रेशर (रक्तचाप) नाडी दौर्बल्य आदि व्याधियों का लक्षण है। निद्राणी' इन सब अवस्थाओं में अपना निश्चित प्रभाव दिखाती है। कुछ ही मात्राओं के सेवन से रात्रिभर खूब गहरी नींद आने लगती है और प्रातः काल उठने पर देह में स्फूर्ति और मन प्रफुल्लित होता है। इसमें कोई मादक या विषैला द्रव्य नहीं है। मूल्य ४) आधाकोर्स २॥) पो० १।=)

चवसोमला

दमा के लिए यह परीक्षित दवा है। इसका प्रभाव श्वास प्रणाली और स्वरयंत्र पर होता है। इसके सेवन से नाडी मण्डल की उत्तेजना शान्त होकर श्वास नलिकाओं का प्रसार होता है जिससे रोगी सुख का सांस लेता है और उसका कष्ट दूर हो जाता है। पूरा कोर्स समाप्त हो जाने के बाद श्वासनलिकायें पूर्ण स्वच्छ और फेफड़े पुष्ट हो जाते हैं। फिर कभी दमा का दौरा पड़ने का भय नहीं रहता। मूल्य ५)

नाग सुरमा

यह सुरमा रसायनिक प्रक्रिया द्वारा बनाया जाता है। यह सभी नेत्र रोगों में लाभकारी है। दृष्टिमन्दता, दूर या निकट कम दिखाई देना, तिमिर, धुन्ध, जाला, आंखों से पानी बहना आदि रोगों को नष्ट करके दृष्टि को तेज बना देता है। लगाते ही नेत्रों में ठंडक प्रतीत होती है। ६ माशा की शीशी १॥) तीन माशा १)

अमोनिरी

यह हमारी नव अनुसन्धानित विशेष वनस्पतियों द्वारा निर्मित और दो वनस्पतियों द्वारा भावित योग है जिसे दीर्घ परीक्षण के बाद अब प्रकाश में ला रहे हैं। यह औषधि आजकल के बहुप्रचलित पेट रोगों और उनके उपसर्गों तथा आंत की सूजन व शूल, व्रण, वायु विकार, मल की सड़न से उत्पन्न होनेवाले विष दोष, गैस चढ़ना, अम्लपित्त, आंव, जीर्ण कब्ज, भूख न लगना, खून की कमी, नींद न आना, बुढ़ापा लाने वाली अम्लता, जोड़ों का दर्द व खांसी, जुकाम आदि के लिए अद्भुत गुणकारी सिद्ध हुई है। आमाशय और आन्तें बलवान होकर भूख खूब लगती है। स्वच्छ रक्त बनने से शरीर पुष्ट हो जाता है। मूल्य एक कोर्स ४) डाकखरच १।=)

कोलरास—हैजा की प्रत्येक दशा में इसके सेवन से लाभ होजाता है। अब तक के परीक्षण में अद्भुत लाभकारी सिद्ध हुई है। प्रति वर्ष हजारों रोगी इसके सेवन से स्वास्थ्य लाभ करते हैं। मूल्य १।) मात्र।

जी० एस० आयुर्वेदिक रीसर्च प्रॉडक्टस ३ दरियागंज, देहली ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रत्नों के साथ तुलनेवाली अनुपम पुस्तकें

४० से अधिक आयुर्वेदीय पुस्तकों के रचयिता प्रसिद्ध लेखक व चिकित्सक राजवैद्य डा० गणपतिसिंह वर्मा द्वारा रचित व प्रकाशित—यह वही पुस्तकें हैं जिनकी वैद्य, हकीम, डाक्टर और जनसाधारण मुक्तकंठ से प्रशंसा कर रहे हैं। क्योंकि जिनके विषय में देश के गणमान्य लोगों की सम्मति है कि इन पुस्तकों का प्रत्येक घर में होना अत्यावश्यक है। क्योंकि इनके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक स्थानमें सहसा होजाने वाले रोगों का सरलतापूर्वक इलाज कर सकता है। प्रत्येक पुस्तक के कई २ संस्करण हो चुके हैं जो कि इनकी लोकप्रियता का सबसे बड़ा प्रमाण है।

अनुभूत योग चिन्तामणि

इसके लेखक ने ५ वर्ष तक लम्बी २ यात्रायें करके संन्यासियों की कठिनतम सेवा और भ्रमण के अथक परिश्रम के अतिरिक्त ५४३५ रुपये खर्च करके जो ५३३ जादुअसर अनुभूत नुस्खे प्राप्त किये थे वह निष्कपट भाव से इस पुस्तकमें प्रकाशित कर दिए हैं। भारतवर्ष के सैंकडों वैद्यों, हकीमों और डाक्टरों ने इन सब नुस्खों की पचासों बार परीक्षा करके शत प्रतिशत अनुभूत होने के प्रमाणपत्र दिये हैं जिससे सिद्ध होगया है कि इसमें एक भी ऐसा योग नहीं—जो अनुभूत सिद्ध न हो, सबके सब संन्यासियों के हृदय के गुप्त योग हैं। भारत के गणमान्य हकीमों व वैद्यों का निर्णय है कि जिसके पास यह पुस्तक नहीं, नि:सन्देह उसकी चिकित्सा और औषधालय अधूरा है। मूल्य प्रथम भाग पांचवीं आवृति ४।) द्वितीय भाग ४) डाकखरच जुदा।

१५ वर्ष के कठिन परिश्रम का फल

अनुभूत योग प्रकाश

आज से १५ वर्ष पूर्व जिस पुस्तक को प्रकाशित करने का आयोजन प्रकाशित किया गया था वह पुस्तक अब छपकर तैयार होगई है। इस पुस्तक के योगों के विषय में केवल इतना बतला देना ही काफी होगा कि गत १५ वर्ष के सतत उद्योग से बड़े २ साधु, महात्मा, फकीरों भीलों से लेकर राजा, रईसों तथा ख्यातिवान प्रसिद्ध विद्वान वैद्यों, हकीमों और डाक्टरों के उन अनुभूत चमत्कारी योगों को इस पुस्तक के पृष्ठों पर अंकित कर दिया है—जिनको आज तक जमाने की हवा भी न लगी थी। फिर इसके लेखक डा० जी० एस० वर्मा का नाम ही बड़ी जमानत है कि पुस्तक कैसी है। इसमें सबसे बड़ी वह रीसर्च आपको मिलेगी जिसे आजतक आपने सुना भी न होगा अर्थात समुद्रीय द्रव्यों यथा मुक्ता शुक्ति, प्रवाल, शंख, कपर्दिका आदि का तेल बनाना। इन तेलों की तुलना में इन द्रव्यों की भस्में बहुत तुच्छ लाभ पहुँचाती हैं। इन तेलों से अनेक कष्टसाध्य कहे जाने वाले रोग शीघ्र मिट जाते हैं। दूसरी विशेषता यह है कि इन तेलों से उड़ने वाले सभी द्रव्य यथा पारद, हिंगुल (शिंगरफ) आदि स्थाई होजाते हैं। इस पुस्तक में कोई ऐसा रोग नहीं छोड़ा जिस पर अनुभूत सिद्ध योग न छपा हो। मूल्य ६।) डाकखर्च ।॥≋)

इन्जेक्शन बनाना व लगाना सीखो

इंजेक्शन चिकित्सा तत्काल प्रभाव दिखाने वाली होने से आज लोकप्रिय हो रही है, किन्तु वैद्यों हकीमों को इसकी जानकारी न होने से उन्हें बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड रहा है। इन्हीं भावों से प्रेरित होकर यह पुस्तक तैयार की गई है, जिसमें समस्त रोगों की चिकित्सा आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक और एलोपैथिक इन्जेक्शनों द्वारा ही करना बतलाया गया है। रोगशीर्षक के नीचे क्रमशः प्रत्येक रोग के तीनों प्रकार के इन्जेक्शन ऐसे ढंग से लिखे गये हैं कि जिससे चिकित्सक एक क्षण में निश्चय कर सकता है कि कौनसा इन्जेक्शन किस स्थान पर, कितनी मात्रा में, कितने अन्तर से, किस प्रकार लगाना चाहिये और साथ २ इन्जेक्शन बनाने की विधि भी लिखदी गई है। आयुर्वेदिक इंजेक्शन जिन द्रव्यों से बनाये जाते हैं वह तमाम आपके घर में, खेतों और जंगलों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वत्र मिल सकते हैं। एक-एक रोग पर कई २ इन्जेक्शन बनाने के योग लिखे गये हैं। इसके अतिरिक्त सीरम, वैक्सिम, पेनिसीलीन, विटामिन्स के इंजेक्शनों का वर्णन और उनको लगाने की सरल व निरापद सचित्र विधि भी खूब समझा कर लिखदी गई है। इस पुस्तकको पढ़ने के बाद इन्जेक्शनों के विषय में जानने का कुछ भी शेष न रहेगा और सब प्रकार के इंजेक्शन तरल (लिक्विड) टेबलेट व पौडरादि रूप में बना व लगा सकेंगे। मूल्य ५) डाकखरच ।।।≈)

सिद्ध रसायन

रस-रसायन की जिन कठिन क्रियाओं से वैद्य बन्धु घबराकर उनके दिव्य गुणों से वंचित रह जाते हैं, उन क्रियाओं का लम्बा अनुभव करके विद्वान लेखक ने उनका सरल तरीका इस ग्रंथमें दर्शाया है और साथ ही महान रसायनाचार्य नागार्जुन और अन्य सिद्धों की संचिकाओं के अज्ञात योगों को उनकी गुत्थी सुलझाकर प्रकाशित किया है जिनसे पाठक न केवल काया (काया-कल्प) रंगने में ही सफल होंगे बल्कि स्थिर मति वाले माया (कीमिया) रंगने में भी सफल होंगे। इस प्रकार पाठकों को जहां आर्थिक संकट से मुक्ति मिलेगी वहां असाध्य समझ कर छोड दिये जाने वाले रोगों के वे सिद्धहस्त चिकित्सक भी बन जावेंगे। इस पुस्तकके कुछेक योगों का दिग्दर्शन करा देने से आपको अनुमान हो जायगा कि यह कितना अपूर्व ग्रन्थ है। यथा—शुद्ध बद्ध और सिद्ध करने वाली दिव्य औषधियां, औद्भिदाम्ल व बूटियां, रस बन्धन, गन्धक को स्थाई करना, बद्ध पारद को सिद्ध बनाना, रजत रंजन कीमिया) अभ्रक सत्व की द्रुति, द्रुति से पारद बन्धन, वंग स्तम्भन, पारद भस्म रक्तयोगेन ताम्रोद्धार (कीमिया) तांबा और रजत (चांदी) वेधी सिद्ध हरिताल, हरिताल कल्प देह व लौह वेधी सिद्ध हरिताल तैल, सिद्ध कुचला कल्प, सर्व रोग हर फिटकडी रसायन (कल्प) पुरुषों के गुप्त रोगों पर रामबाण सिद्ध खादक, पारद गुटिका बंगवेधी, शिंगरफ मोमियां बनाना, नौसादर तैल, सिद्ध गोरखी जलमुद्रा, सिद्ध गन्धक–एक गिरनारी महात्मा का योग जिसको बनाना अति सरल है और क्षय (T. B.) संग्रहणी जैसे अनेक भयंकर रोगों का सफल इलाज है आदि। इसमें अन्य पुस्तकों की भांति जोड-तोडकर एकत्र की हुई सामग्री नहीं है बल्कि लेखक के जीवन भर का अनुभव बन्द किया है। इसके पाठकों के लिए लेखक का सद्परामर्श और सहायता भी सदैव प्रस्तुत रहेगी। मूल्य ५) पो० ।।।≈)

संन्यासियों की चमत्कारी गुप्त बूटियां

इस पुस्तक में सैंकडों ऐसी ही जडी-बूटियों के गुप्त रहस्य प्रकट किये गये हैं, जिनकी बदौलत संन्यासियोंकी धाक जमी हुई है। इनमें से अधिकांश बूटियां वही हैं, जो आपको जंगल, खेत, बागीचों और पंसारियों की दूकानों पर मिल जावेंगी जिनसे आवश्यकता पडने पर सिरसे पांव तकके समस्त रोगों का इलाज हर जगह प्रत्येक आदमी आसानी से कर धन और यश कमा सकता है। इस पुस्तक को पढ़ लेने के बाद आप के पास रोगियों का तांता बंधा रहेगा। विषय सूची मुफ्त। ४५० पृष्ठ, २ भाग मूल्य ५।।) डा० ख० ।।।≈)

गुप्त योग रत्नावली

इस पुस्तक में डा० नेगी के व निज के वह-वह गुप्त योग प्रकाशित किये गये हैं जिनको भारतवर्ष के कोने २ से तथा अरब, मिश्र और अफ्रीका आदि प्रदेशों के विभिन्न स्थानों में जाकर लेखक ने प्राप्त किये थे। मूल्य २।।) डा० ख० ।।।)

पेटेण्ट औषधियां व भारतवर्ष

संसार में सबसे अधिक लाभदायक व्यापार पेटेण्ट औषधियों का है। अमृतधारा और सुधासिन्धु के मालिकों ने १–१ पेटेण्ट दवा के नुस्खे से लाखों रुपया कमाया है। विलायती फर्में एक-एक पेटेण्ट दवा से बेहद रुपया कमा रही हैं। यदि उनकी तरह आप भी भारतवर्ष, इंग्लैंड, अमरीका की प्रसिद्ध और सर्वप्रिय प्रतिवर्ष करोडों रुपये की बिकने वाली पेटेण्ट औषधियों के नुसखे बिना किसी कष्ट के घर बैठे सीख कर साधारण पूंजी से सैंकडों रुपये मासिक की स्थाई आमदनी पैदा करना चाहते हैं तो आज ही 'पेटेण्ट औषधियां और भारतवर्ष' नामक पुस्तक की एक प्रति मंगाकर पढें। १६७ योगवाली मूल्य।।।≈) डा०ख०।।।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यौवन के गुप्त रहस्य

लुटी हुई जवानी और बीता हुआ यौवन वापिस लाने के अनुपम उपाय—पुरुषत्व और जवानी के वह गुप्त रहस्य, जिनको जानने से अशक्ति के ऐसे रोगी जिन्हें किसी दवा से लाभ नहीं हुआ या सैंकडों रुपये की दवा खाकर भी निराश बैठे हैं निःसन्देह सशक्त बन सकते हैं। मनुष्य देह का वह केन्द्र जहां से स्वास्थ्य और यौवन का रस झरकर समस्त शरीर का पोषण करता है, उस केन्द्र को शक्ति प्रदान करने के अनूठे उपाय, जिससे लुटी हुई जवानी और बीता हुआ यौवन पुनः लौट आता है। पुरुषों के अकथनीय भयंकर रोग बिना दवा सेवन किये ही किस प्रकार नष्ट हो जाते हैं। उर्द्ध्वरेता होने का वह प्रयोग जिससे पुरुष की शक्ति में कमी नहीं आती। रसग्रंथियों से आश्चर्यजनक दवाइयां बनाने के प्रयोग। हजारों रुपये खर्च करके डा० बोरनाफ की बताई हुई बन्दर की रसग्रन्थि लगवाने व आपरेशन का कष्ट सहन किये बिना ही सुगमता से प्रत्येक स्त्री पुरुष वही शक्ति कैसे प्राप्त कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त पुरुषों के रोगों के सम्बन्ध में निदान व ऐसे २ गुप्त प्रयोग इस पुस्तक में दर्ज किये गये हैं, जिनको उपयोग करने वाला पुरुषत्व पर गर्व कर सकता है। मूल्य ३) डाकखरच ॥।)

हिन्दी से अंग्रेजी मैट्रिक

विश्व के ज्ञान, विज्ञान और व्यापार तथा कला-कौशल को सीखने के लिए आज की विश्व भाषा अंग्रेजी का सीखना सबके लिए जरूरी है। इसको सीखना कोई कठिन भी नहीं है। जिस प्रकार अंग्रेज मातायें अपने बालकों को अपने घरों में ही अंग्रेजी सिखा देती हैं ठीक उसी प्राकृतिक नियमानुसार यह ३२० पृष्ठोंकी पुस्तक तैयार की गई, जिसे २ घण्टा प्रति दिन पढ़नेसे केवल हिन्दी पढ़े-लिखे व्यक्ति को भी चार मास में भली प्रकार याद होजाती है। इसमें ए० बी० सी० डी० से लेकर आवश्यक ग्रामर (व्याकरण) अनुवाद आदि इङ्गलिश की मैट्रिक तक का सब ज्ञान हिन्दी से अंग्रेजी और अंग्रेजी से हिन्दी में ऐसे सरल और सुबोध ढंग से ४८ पाठों में छपा है कि जिससे केवल अंग्रेजी में मैट्रिक की परीक्षा देनेवाले लडके-लडकियां निःसन्देह पास हो जाते हैं। दसवां संस्करण अभी छपा है। मूल्य ३॥) डाकखरच ॥।=)

७८६ वर्ष का प्राचीन रस ग्रन्थ

वसवराजियम—हजारों वर्ष पहिले दक्षिण भारत में चालुक्यवंशीय राजाओं का राज्य था। उनके प्रधान मन्त्री रुद्र साम्प्रदायी महान रसतन्त्रज्ञ बसवराज ने सं० १२२५ में इस सिद्ध साम्प्रदायी अनुपम ग्रन्थ की रचना की थी, जिसमें भगवान रुद्र के अनुयायी बनों में विचरने वाले रसायनाचार्य नागार्जुन, नागबोधि, नित्यनाथ, चर्पटी, कणेरी, पूज्यपाद आदि योगियों का रसज्ञान भरा पडा है, श्री गोविन्दपादाचार्य के कथनानुसार शरीर को अजरामर करने में पारे की बराबरी करने वाली न तो कोई जडी बूटी है और न ही कोई रसायन और भस्म है। पारे में यह बड़े आश्चर्य की बात है कि वह स्वयं मूर्छित होकर रोगी के रोग को दूर करता है और बंधा हुआ होकर मुक्ति देता है तथा अच्छी तरह मरा हुआ दूसरों को जीवन देता है। आज मद्रास प्रान्तीय वैद्यों की जो प्रतिष्ठा, यश और कीर्ति सर्वत्र प्रसिद्ध हो रही है वह सब इसी ग्रन्थ के योगों का प्रताप है। यह ग्रन्थ तैलंग भाषा में ताड पत्रों पर लिखा हुआ उपलब्ध हुआ था, जिससे अब तक तैलंग भाषा भाषी वैद्य ही लाभ उठाते रहे, किन्तु यह जानकर आप अतीव प्रसन्न होंगे कि अब आयुर्वेद बृहस्पति श्री गोवर्धन जी शर्मा छांगाणी के अतुल परिश्रमके फलस्वरूप आज यह ७८६ वर्ष का प्राचीन तैलंग हस्तलिखित दुर्लभ ग्रन्थ हिन्दी भाषा में भी हमारे द्वारा प्रकाशित होगया है। इस ग्रन्थ के विषय में कहा गया है कि सतयुग में चरक, त्रेता में रसार्णव तथा द्वापर में सिद्ध विद्याभू का महात्म्य है उसी प्रकार कलियुग में बसवराजियम पूज्य ग्रन्थ है। इसमें जो निदान लक्षण प्रत्येक रोग के बतलाये हैं। उनको समझकर इसमें वर्णित योगों द्वारा जो चिकित्सा करेगा, भगवान रुद्र की कृपा से निःसन्देह वह सर्वत्र यश और सिद्धि प्राप्त करेगा। २५ प्रकरणों वाले सम्पूर्ण ग्रन्थ का मूल्य ८॥) डाकखरच १=)

पता—रसायन फार्मेसी (३ दरियागंज) पो० बो० नं० ११२५ देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

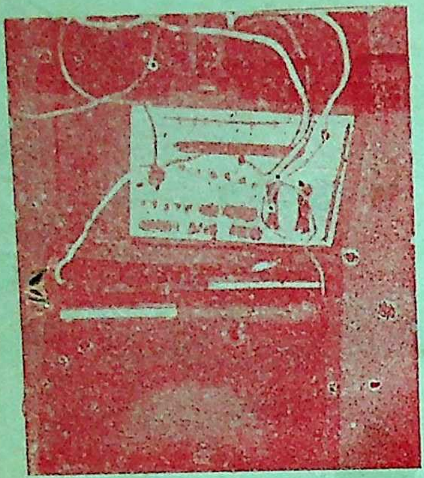

सेल्फ एक्टिंग
इलेक्ट्रो मेग्नेटिक

यह बेटरी सेल पर चलने वाली बिजली के इलाज की मशीन है। इसके द्वारा गठिया, आमवात आदि सभी वातरोगों, पक्षाघात, लकवा, अर्श, मधुमेह, अनेक प्रकार की शारीरिक पीड़ाओं व शोथ आदि ३२ रोगों का इलाज किया जा सकता है। किस रोग पर इस मशीन द्वारा बिजली का किस प्रकार प्रयोग किया जाय इसके लिए पुस्तिका साथ भेजी जाती है। मूल्य २५) डाक व्यय २।।।≈)

एक्सपैंडरो

इस यन्त्र की उपयोगिता प्रायः सभी जानते हैं। नसों और मांसपेशियों की शिथिलता में जहां प्राकृतिक रूप से रक्त का परिभ्रमण सम्यकरूपेण नहीं होता वहां इसके प्रयोग से आशातीत लाभ होता है। नसों और मांसपेशियों को सशक्त बनाने के लिए इसका प्रयोग करना उत्तम उपाय है। मूल्य १५) बढ़िया १८) डाक खरच पै० २।।)

हमारा गुण विधान सीरीज़

दूध गुण विधान	१)	नीबू गुण विधान	।।।)
घृत गुण विधान	।।)	इन्द्रायण गुण विधान	।।)
आरिष्टक (रीठा) गुण विधान	।।)	पीपल गुण विधान	।।)
बबूल (कीकर) गुण विधान	।।)	आम गुण विधान	१।)
फिटकड़ी गुण विधान	१।।)	पलांडु गुण विधान	।।)
एकौषधि गुण विधान	१।।।–)	मधु (शहद) गुण विधान	१।।)
स्वर्णक्षीरी गुण विधान	।।।)	सतरा गुण विधान	।)
अर्क (आक) गुण विधान	१।।)	नीम गुण विधान	।।।≈)
धतूरा गुण विधान	।।।)	नमक चिकित्सा	।)

पता—रसायन फार्मेसी ३, दरियागंज, पो० बो० ११२५ देहली

डा० जी० एस० वर्मा मुद्रक व प्रकाशक द्वारा स्वस्तिक प्रिंटिंग प्रेस, देहली में छपकर प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसायन

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी

(आयुर्वेदीय सचित्र मासिक पत्र)

जोलाई १९५७

सम्पादक—
साहित्य मनीषी
डा० गणपतिसिंह वर्मा

वर्ष १०
अंक-१

वार्षिक ३)
इस अंक का ।=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय अनुक्रमणिका

विषय	लेखक	पृष्ठ
श्रेष्ठ कौन		१६७
विशूचिका, कालरा, हैजा.	श्री वैद्यराज वीरेन्द्रदेव जी	१६८
सिन्दूर (Minium) और गिरिसिंदूर (Brick ore)	श्री० रामेश्वर बद्रीसिंह सूर्य वंशी	१६६
मधुमेह असाम्य आहार जन्य रोग है	श्री० गौरीलाल चानना बी० ए०	१७२
शाही संचिका के योग	श्री० त्यागी त्रिवेणीदास जी	१७५
आम भी टानिक है	श्री० कृष्ण कुमार	१७७
ग्रीष्म ऋतु का आहार-विहार	श्री० विद्याभास्कर परमेश्वर घिल्डियाल	१८०
हमारी आंखें	श्री० डा० एम० एस० अग्रवाल	१८२

फ्लैशटोन

जब किसी रोग के कारण अथवा भय, शोक, चिन्ता, अधिक परिश्रम और अत्यन्त साहस का कार्य करने से मांस के सेलों की जीवनीय शक्ति क्षीण होकर शरीर सूखने लगता है तब ऐसी अवस्था में यह विशेष वनस्पतियों द्वारा निर्मित औषधि अत्यन्त सफल सिद्ध होती है। कृश शरीर को मोटा-ताजा मांसल बनाने व वजन बढाने तथा मस्तिष्क, हृदय और फेफड़ों की निर्बलता दूर करने की यह अनुपम औषधि है। किसी भी कारण से सूखे हुए शरीर को पुष्ट बनाती है। आने वाले रोगों को रोकती है। अन्य औषधि सेवन करते हुए भी शक्ति के लिये इसको अवश्य खाना चाहिये। सूखे हुए बच्चे, गर्भिणी स्त्री, तरुण, वृद्ध सबके शरीर को मोटा-ताजा, मांसल और पुष्ट एवं सुन्दर बनाती है, चेहरे पर लालिमा आ जाती है। प्रत्येक प्रकृति वाले को प्रत्येक ऋतु में अनुकूल है। परहेज कोई नहीं। खाने में स्वादिष्ट। तपेदिक (क्षय) में जब मांस क्षीण होकर शरीर सूखता जा रहा हो और अन्य उपद्रव बढ़ रहे हों उस समय इसका सेवन नवजीवन प्रदान करता है। दिमागी काम करने वालों के लिये परमोपयोगी है। मूल्य १ पौंड ६) आधा पौंड ५) डाक खर्च पैकिंग अलग।

चवसोमला

दमा के लिए यह परीक्षित दवा है। इसका प्रभाव श्वास प्रणाली और स्वरयंत्र पर होता है। इसके सेवन से नाडी मण्डल की उत्तेजना शान्त होकर श्वास नलिकाओं का प्रसार होता है जिससे रोगी सुख का सांस लेता है और उसका कष्ट दूर हो जाता है। पूरा कोर्स समाप्त हो जाने के बाद श्वासनलिकायें पूर्ण स्वच्छ और फेफड़े पुष्ट हो जाते हैं। फिर कभी दमा का दौरा पड़ने का भय नहीं रहता। मूल्य ५) डा० ख० १।)

ल्यूकोआयर

इस दवा के सेवन से नया श्वेत और रक्त प्रदर ६ दिन में ही मिट जाता है, साथ ही हडफूटन, कमर का दरद, उदासी आदि व्याधियां दूर होकर रुग्णा स्त्री स्वस्थ और पुष्ट बन जाती है। ६ दिन की दवा का मूल्य २) यदि रोग पुराना हो तो ४ शीशी सेवन करना चाहिये। एक शीशी से चार शीशी तक का पो० १।)

जी० एस० आयुर्वेदिक रीसर्च प्रॉडक्टस ३ दरियागंज, देहली ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डायबोडीन

इक्षुमेह, मधुमेह (डायबीटीज) प्रसिद्ध और भयंकर रोग है और इस रोग की यह दवा विश्वास जनक चिकित्सा है। डाक्टरी में इन्सुलीन के इंजेक्शन काम चलाऊ इलाज है उससे रोग नहीं मिटता। जब रोग बहुत बढ गया हो तो इससे सहायता ली जा सकती है किन्तु रोग को निर्मूल करने के लिए 'डायबोडीन' का सेवन परमावश्यक है। यह दवा २० दिन में अपना असर दिखा देती है और ३० दिन के सेवन से सुगर नार्मल के बराबर हो जाती है। दो मास सेवन से रोग समूल नष्ट हो जाता है। यह नवीन खोज की गई वनस्पतियों के परीक्षण का सफल परिणाम है। मूल्य पूरा कोर्स २४) परीक्षार्थ आधा कोर्स १२) डा० ख० अलग।

अग्निस्थाई पारदगुटी

अग्नि स्थाई पारे के दिव्य गुणों को प्रायः सभी जानते हैं किन्तु यह दुर्लभ वस्तु है, वर्षों के सतत प्रयास से अब हम इसको बनाने में फसल हो सके हैं। इस पारद को चाहे जितनी तेज आग पर रखो, न उड़ेगा और न वजन कम होगा। इसकी गोली को मुख में रखकर चाहे जितना शारीरिक, मानसिक परिश्रम करो, थकावट बिल्कुल न होगी। २-योगाभ्यास करने वालों को समाधिस्थ अवस्था प्राप्त होती है। ३-भजन पूजन में मन एकाग्र होता है। ४-दूध में गोली को उबालकर पीने से अत्यन्त बल और पराक्रम प्राप्त होता है। अन्य गोपनीय गुण सेवन विधि में पढ़ें। अनेक चिकित्सकों और महात्माओं द्वारा परीक्षित मूल्य २१) डाक खरच १।)

पायोगन

यह पायोरिया की सफल दवा है। इस दवा को दांतों पर मलकर ५ मिनट लगा रहने दो और फिर कुल्ला कर डालो। इस प्रकार प्रातःकाल, दोपहर और रात्रि को सोने से पहिले लगाने से मसूढ़ों का गला हुआ मांस भरने लग जाता है, पीप और रक्त का बहना बन्द होकर हिलते हुए दांत मजबूत हो जाते हैं। मूल्य १ औंस का २॥) डा० ख० १।)

आमाशयम

दिन भर कुर्सी या गद्दी पर बैठकर काम करने वालों का आमाशय (मेदा) प्रायः दुर्बल हो जाता है कारण झुककर बैठने से आमाशय पर दबाव पड़ता है जिससे उसके क्रिया संचालन में बाधा पड़ती है और धीरे २ वह निष्क्रिय सा होता चला जाता है फिर भोजन पचन उचित रूप से नहीं होता और भांति भांति की उदर सम्बन्धी व्याधियां उत्पन्न हो जाती हैं यदि आमाशय कठोर हो जाये तो खाने की औषधियां बहुत कम लाभ पहुंचाती हैं। 'आमाशयम' आमाशय पर मालिश करने की दवा है जो लगाते ही त्वचा में प्रविष्ठ हो जाती है। यह खाने की दवाइयों की अपेक्षा शीघ्र लाभप्रद है। इसके प्रयोग से आमाशय सबल होकर अपना काम सुचारु रूप से करने लगता है मूल्य १ औंस का ४) डाकखरच १।)।

पीताम्बर (एक महान टॉनिक)

यह दवा बर्फीले पर्वतों पर पाई जाने वाली एक अत्यन्त शक्तिवर्धक बूटी के योग से बनी है। इसके सेवन से स्त्री-पुरुषों में किसी भी कारण से उत्पन्न हुई अशक्ति, दुर्बलता, शरीर का दुबलापन, वजन घट जाना, खून की कमी, गहरी नींद न आना, उत्साह और स्फूर्ति का अभाव आदि विकार मिटकर शरीर पुष्ट, शक्ति सम्पन्न और कान्तिमय हो जाता है, क्योंकि इसके सेवन से खून में श्वेत और लाल अणु खूब बढ़ते हैं। मूल्य एक मास की दवा का १०) पो० १।)

नोट—निरामिष भोजी, अविवाहित और विद्यार्थी इसके लिये आवेदन न करें।

बवासीर का सरल इलाज (अंकूरना)

बवासीर चाहे खूनी हो या बादी-दोनों को ही ५ दिन में आराम हो जाता है। इस दवा में खाने या लेप करने का कोई झंझट नहीं। केवल थोड़ी सी देर इस दवा का धुवां मस्सों को स्पर्श कराना होता है जिससे किसी प्रकार का किंचित भी कष्ट नहीं होता। दवा का नाम अंकूरना है। मूल्य ५) डाकखरच १।)

जी० एस० आयुर्वेदिक रीसर्च प्रॉडक्टस ३ दरियागंज, देहली ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसायन फार्मेसी देहली का प्रमुख सचित्र मासिक पत्र

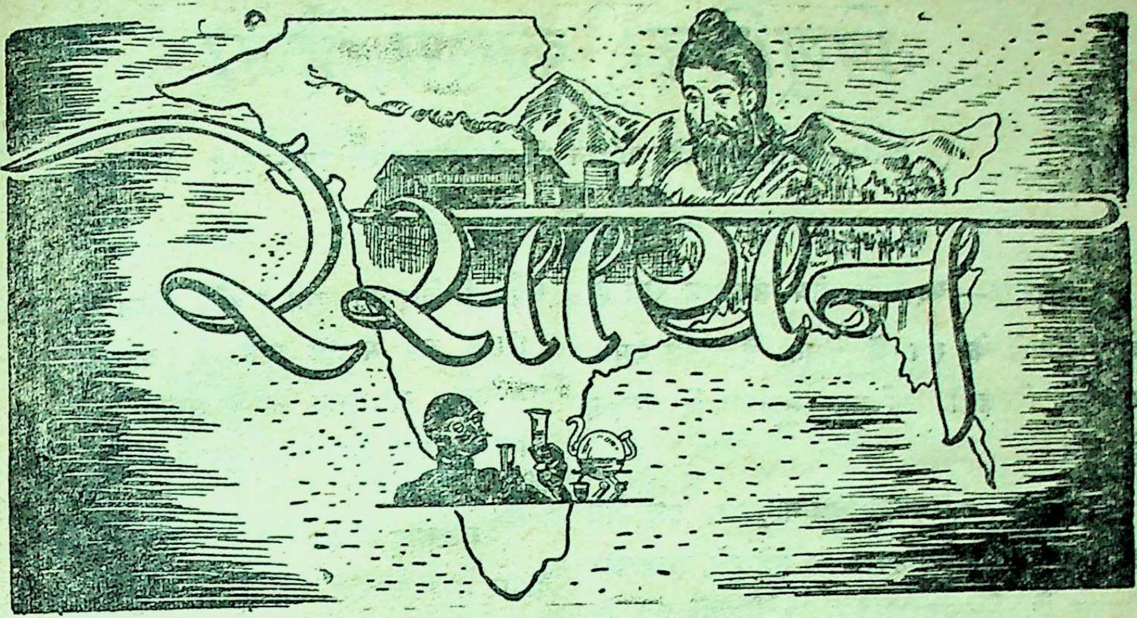

'सिद्ध रसे करिष्यामि, निर्दारिद्रय मयं जगत्।'

वर्ष १०	देहली जोलाई १९५७	अङ्क १

❀ श्रेष्ठ कौन ❀

आम के सूखे वृक्ष के चारों ओर लिपटी अमरवेल ने सगर्व कहा, "देखते हो मेरी हरियाली ! लिए फिरते हो सूखा सा शरीर !"

आमके वृक्ष ने शान्त भाव से उत्तर दिया, "ठीक कहती हो बहन ! किन्तु मुझे, दूसरों का जीवन-रस चूस कर हरे बने हुओं की अपेक्षा अपनी शुष्कता ही भाती है। कम से कम यह संतोष तो होता है कि स्वजीवन का फल देकर दूसरों के जीवन में सरसता का संचार करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है।

× × × × ×

साधकने निष्कर्ष प्रस्तुत किया दूसरों का शोषण करके स्वजीवन बनाए रखने की अपेक्षा परहित में काम आजाना अधिक श्रेष्ठ है।

—पुरातन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशूचिका, कालरा, हैजा

(लेखक—वैद्यराज वीरेन्द्रदेव जी धन्वन्तरि औषधालव, बरालोकपुर–इटावा)

परिचय—यह अति तीव्र संक्रामक रोग है, जो महामारी के रूप में फैलता है, इसमें वमन, अतिसार पिण्डली उद्वेष्टन, मूत्राभावादि लक्षण होते हैं।

कारण—पाश्चात्य विज्ञानानुसार, इस रोग का कारण, एक विशेष प्रकार के मुड़े हुये, दण्डाकार कीटाणु हैं, जिनका आकार अर्धविरामों (,) के समान होता है। इसको "कालरा विब्रियो" कहते हैं। यह कीटाणु रोगी के अन्त्र, मल, मूत्र में अत्यधिक मात्रा में पाये जाते हैं। कभी २ उदरस्थ अंग, पित्ताशय और उदर कला की लसीका ग्रन्थियों में भी चले जाते हैं।

संक्रम प्रसार—इस रोग के कीटाणु ठीक उसी प्रकार से प्रसार पाते हैं जिस प्रकार कि आंत्रिक ज्वर के। यह रोग हिन्दुओं के तीर्थ स्थानों पर विशेषकर ग्रीष्म और वर्षा ऋतु में बहुत फैलता है। किन्हीं २ प्रान्तों में महामारी के रूप में फैल जाता है। इसका मुख्य हेतु यही है कि कुछ संक्रमबाहक ऐसे स्थानों पर पहुँच जाते हैं और अपनी असावधानी से उस स्थान के पीने के जल को अपने मल से दूषित कर देते हैं, तथा रोग के फैलने का कारण बनते हैं। यात्रीगण प्रायः बाजार का ही भोजन करते हैं और तीर्थ स्थान का दुर्व्यवस्थित जल पीते हैं। जो कि रोगी के मल मूत्रादि से दूषित हो चुका होता है। अतः यह रोग शीघ्र ही फल जाता है। भारत के बड़े २ नगर कलकत्ता, बम्बई आदि में यह रोग एकाकी रूप से सदैव ही विद्यमान रहता है और ग्रीष्म ऋतु में महामारी के रूप में फैल जाता है। यह रोग आबाल वृद्ध, तरुण, स्त्री, पुरुष सब में समान रूप से पाया जाता है। उदर रोगी और कुपथ्य भोजियों को बहुत शीघ्र हो जाता है।

सम्प्राप्ति—इस रोग के कीटाणु क्षुद्रान्त्र की दीवार में जाकर बैठ जाते हैं और वृद्धि पाकर वहीं से इसका विष रक्त में जाकर रोग पैदा करता है, किन्तु कई विज्ञानाचार्यों का यह मत भी है, कि विष अन्त्र में रह कर ही रोग उत्पन्न कर देता है।

क्षुद्रान्त्र की लसीका ग्रन्थि समूह तथा उदरक कला की लसीका ग्रन्थियों में शोथ हो जाती है। अत्यधिक वमन और अतिसार से शरीर का बहुत सा तरल निकल जाता है, जिससे रक्त का आपेक्षिक घनत्व बढ़कर इसी कारण और रोग विष के कारण वृक्कों में मूत्र बनना बन्द हो जाता है, तरल के अत्यधिक निस्सरण व रक्त न्यूनता के कारण, अन्तस्ताप होते हुये भी वाह्य शरीर शीतल प्रतीत होता है।

इस रोग का परिपाक प्रायः २ से ५ दिन में हो जाता है।

लक्षण—इस रोग की तीन अवस्थायें होती हैं प्रथमावस्था को अतिसारावस्था ही मानते हैं। रोगी को अकस्मात उदर भारी और किञ्चित शूल के साथ दस्त आने लगते हैं। कभी २ जब उदर पहिले से ही अस्वस्थ हो तथा थोड़ा बहुत अतिसार हो तो अतिसार अधिक हो जाता है। अतिसार आरम्भ होते ही दस्त पहिले पीले रंग के होते जाते हैं और जल्दी २ आने

(शेष पृष्ट १८४ पर पढें)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैज्ञानिक तथा समन्वयात्मक टीका

सिन्दूर (Minium) और गिरिसिन्दूर (Brick Ore)

(लेखक—श्री रामेश्वर बद्रीसिंह सूर्यवंशी, कोविद, आयुर्वेद रत्न, महावीरपुर, अलीगंज, कुर्सी मार्ग, लखनऊ)

रस शास्त्रीय ग्रन्थों में तीन प्रकार के सेन्दुरों का वर्णन मिलता है। यथा—

(१) रससिन्दूर (Sulphide of Mercury)

अन्तर्धूम या बहिर्धूम मूर्च्छन द्वारा परिपक्व पारद (Mercury) और गंधक (Sulphur) का यौगिक (Compound) यह कृत्रिम द्रव्य है और इसकी बनाने की विधि आयुर्वेद प्रकाश,❀ रसेन्द्रसारसंग्रह+ इत्यादि ग्रन्थों में वर्णित है। अतः पाठक इस विषय को अन्यत्र पढ़ने का कष्ट करें।

(२) साधारण सिन्दूर अथवा नागसिन्दूर (Minium)

भावप्रकाश में इसे सीसे (lead) की उपधातु (Submetal or Mineral) लिखकर एक खनिज (mineral) माना है। आजकल कृत्रिम विधि से भी यह बनाया जाता है।

(३) गिरिसिन्दूर (Brick Ore)

"अर्बुदस्य गिरेः पार्श्वे जातं मृद्दारशङ्गकम्।"

ऐसा लिखकर साधारण सिन्दूरवत् इसे भी रसरत्न समुच्चयकार ने खनिज बतलाया है और वस्तुतः है भी किन्तु वर्तमान वैज्ञानिक युग में यह रासायनिक विधि से भी तैयार किया जाता है।

(१) सिन्दूर (Minium)

सिन्दूरं रक्तरेणुश्च नागगर्भश्च च सीसजम्।
सीसोपधातुः सिन्दूरं गुणैस्तत्सीसवन्मतम्॥ ७६॥

भावप्रकाशनिघण्टौ धातुवर्गः।

❀ देखिए आयुर्वेद प्रकाश, रस प्रकरण, भस्मीकरण

+ देखिए रसेन्द्रसार संग्रह, पारद विषयः

संस्कृत पर्याय

सिन्दूर, रक्तरेणु, नागगर्भ और सीसज ये सिन्दूर के संस्कृत नाम हैं।

भाषाभेद से नामभेद

(१) हिन्दी—सिन्दूर, सेन्दूर

(२) बंगाली—सिन्दूर

(३) मराठी—शेन्दुर

(४) तैलगू—सिन्दूरम्

(५) फारसी—सिरिंज

(६) आंग्लभाषा (English):-Orinotoo, Minium, Lead Peroxide, Red Oxide of Lead.

(७) लैटिन (Latin):-Brize Orman.

सिन्दूर—सीसे (lead) की उपधातु (Submetal or mineral)❀ है। अतः इसमें सीसे के गुण भी हैं।

❀ उपधातुषु सर्वेषु तत्तद्धातुगुणा अपि।
सन्ति किन्त्वेषु ते गौणास्तत्तदंशाल्पभावतः॥ ५४॥

भावप्रकाशनिघण्टौ धातुवर्गः।

धातुओं (metals) के अल्पमात्रा योग के साथ बने हुए यौगिक के 'उपधातु' (Sub metal or mineral) कहते हैं। सम्पूर्ण उपधातुओं में उसी उसी विशेष धतु के गुण होते हैं; किन्तु धातु के अंश कम होने से उपधातुएं अल्पगुणवाली होती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(16) Lead monoxide, Pbo:—It is produced as a yellow powder when lead is oxidised in air at a low termperature about 300° C. and is known as **massicot.** On further heating, it fuses at 877° C. and the fused mass forms yellow crystals of Pb0 called 'Litharge'.

(17) Triplumbic Tetroxide : Red Lead, Pb3°4 (Sandhur):—It is obtained by heating lead monoxide to a temperature of about 340° C. in excess of air 6 Pb0+°2=2 Pb3°4

It is a red powder which when strongly heated above 450° C. gives off oxygen.

G. D. Tuli, B. S. Bahl & Amba Prasad's "Intermediate Inorganic Chemistry (published by Messrs S. Chand & Co., Delhi & Jullundur)" New Eighth Edition, 1950, page 515

सिन्दूर का खनिज वैज्ञानिक वर्णन*

(Mineralogical description of Minium)

(१) नाम:–सिन्दूर, नाग सिन्दूर, सीसजारिज

(२) रासायनिक संगठन:-सीस अति-जारेय, सी३ज४

(३) सामान्य स्वरूप:–क्षोदरूप, क्षोदमय

(४) रंग:—दीप्त रक्त, शोण, अथवा नारङ्ग रक्त

(५) विशेष अर्थात् चूर्णरंग:–नारंग पीत

(६) द्युति:–मन्द, आवसा अथवा निप्रभ; अपारदर्शी

(७) काठिन्य परिमाण:–२—३

(८) विशिष्ट गुरुत्व:–४—६

परीक्षा:—प्रहसन ज्वाला में धमनाड के आगे धात्वीय सीस की गोलिकाएं बनाता है; अन्य सीस

* 1. Name:-Minium, Red Oxide of Lead.

2. Chemical Composition:-Lead oxide, Pb3°4.
3. Common Form:–Powdery.
4. Colour:--Bright red, scarlet, or orange-red.
5. Streak:—Orange-yellow.
6. Lusture:—Faint, greasy or dull; opaque.
7. Hardness:—2–3.
8. Specific Gravity:—4–6

Tests:—Before the blowpipe in the reducing flame, yields globules of metallic lead; other lead tests given; oxygen, tested by glowing splinter, is given off on heating in closed tube.

Occurrence:—Occurs associated with galena and sometimes with cerussite being derived by the alteration of these minerals.

"(१४) घर्षण (streak), ज्वाला (flame), काठिन्यपरिमाण (hardness), विदारण (cleavage), द्रुतिभाव (fusibility) इत्यादिभिर्धातूनां परीक्षणं लेखनीयम् ।"

नि० भा० आयुर्वेदमहामण्डल विद्यापीठस्य आयुर्वेदाचार्य परीक्षायाः रसशास्त्रे प्रश्न; १६३४ई०

Uses:—The red lead of commerce, which has the same composition as minium, is artificially prepared by heating lead to form the yellow monoxide, and then subjecting the cooled monoxide to heating again at a lower temperature; red lead is used in the manufacture of glass and as a pigment.

H. H. Read : Rutley's "Elements of Mineralogy", 24th. Edition (published by Messrs Thomas Murby & Co., 40, Museum Street, London, W. C. 1), 1249, page 434.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की परीक्षाएं अन्यत्र लिखे अनुसार; संवृत नाल में गरम करने पर जारक (प्राणवायु) निकलता है, जिसकी परीक्षा विभायी अवभ्रश्र को नाल में डालकर की जाती है।

प्राप्तिः—कृष्णाञ्जन और कभी-कभी सीस प्रांगीयिज के साथ नागसिन्दूर मिलता है और उसकी उत्पत्ति इन्हीं खनिजों के परिवर्तन से होती है।

उपयोगः—वाणिज्य रक्त सीस, जिसका रासायनिक संगठन नागसिन्दूरवत् रहता है, पीत एक जारेय निर्माणार्थ सीस को गरमा कर और तदूनन्तर शीत एक जारेय को पुनः तापक्रम पर गरमाकर कृत्रिम विधि से बनाया जाता है। काच कल्पनार्थ तथा रंग निर्माणार्थ रक्त सीस का उपयोग होता है।"

"संयोगजप्रभावेण तस्याप्यन्ये गुणाः स्मृताः।
सिन्दूरमुष्णवीसर्पकुष्ठकण्डूविषापहम्।
भग्नसन्धानजननं व्रणशोधनरोपणम्॥ ७७॥
भाव प्रकाशनिघण्टौ धतुवर्गः।

किन्तु संयोग प्रभाव से और दूसरे भी गुण इसमें विद्यमान हैं।

गुणः—सिन्दूर गरम, वीसर्प (Erysipelas), कुष्ठ (leprosy), विष (poison) को दूर करने वाला, व्रणशोधक वा रोपक तथा हड्डियों (fracture) को जोड़ने वाला है।

(२) गिरिसिन्दूर (Brick Ore) *

भाषाभेद से नामभेद—

[१] **संस्कृत**—गिरिसिन्दूर, पुल्लिग में हिंगुलः अथवा हिङ्गुलः, नपुंसकलिंग में हिंगुलं अथवा हिङ्गुलं और पुल्लिग तथा नपुंसकलिंग में हिंगुलु अथवा हिङ्गुलु।

[२] हिन्दी—इंगुर, इंगुल

[३] मराठी—इंगुर

[४] आङ्गल भाषा (English)—Brick Ore, Red of Oxide Mercury, Vermilion,

अथ गिरिसिन्दूर निरूपणम्

महागिरिष चाल्पीयः पाषाणान्तः स्थितौ रसः।
शुष्कशोण स निर्दिष्टौ सिन्दूर संज्ञया॥ १४५॥

हिमालय (Himalaya), विन्ध्याचल (Vindya Mountain) आदि बड़े बड़े पर्वतों की चट्टानों के बीच में जो लाल वर्ण का रस सूख जाता है, उसको **गिरिसिन्दूर** (Brick Ore) नाम से कहते हैं।

"Brick-ore (Ziegelerz) sandy, granular and of a bright red colour, It contains 68% mercury when pure and is mixed with dolomite, some quartz and native mercury, but is free from bitumen. It always occurs at the margin of the deposit."

Loc. cit., Page 41-42.

गिरिसिन्दूर—वालुमय, कणिकावत् तथा दीप्त रक्त वर्णीय। शुद्धावस्था में ६८% प्रतिशत पारद रहता है और इसमें चूर्ण भ्राजाश्म, कुछ स्फटिक तथा प्राकृत पारद मिला रहता है, किन्तु जतु से मुक्त रहता है। यह सदा निक्षेप के किनारे पर मिलता है।

क्रमशः

---

* शीले (Scheele) ने सन् १७७४ ई० में और प्रिस्टले (Priestley) ने सन् १७७७ ई० में द्विगुण उदुब्ज वीक्ष (double convex lens) की सहायता से सिन्दूर (Brick ore Red oxide of Mercury) को गरमा कर प्राणवायू (oxygen) तैयार किया था।

$$2\ Hg^{\circ} = 2\ Hg + {}^{\circ}2$$

E. J. Holmyard's "Inorganic Chemistry", 1937, page. 408

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधुमेह असात्म्य आहार जन्य रोग है

(लेखक—श्री गौरीलाल चानना बी० ए० वैद्य वाचस्पति)

(गतांक से आगे)

यह कण वहां कैसे जलते हैं ?

क्लोम ग्रंथी में एक ओज बनता है जिसे मधु विलीन कहते हैं, यह क्लोम ग्रंथी में बनकर सीधे रक्त में मिलता रहता है, इसकी मात्रा सदा ही रक्त में विद्यमान रहती है, यह सारे रक्त में व्यापक होती है इसका स्पर्श जब द्राक्षोज से होता है तो उन कणों में दहन के लिये उत्तेजना मिलती है। रक्त कणिकाएं फुफ्फुस से ऊष्मजन को अपने रंजनी डिबिया में भरकर लाती है, ऊष्मजन को वह रक्त कणिकाएं शरीर की एक एक कोषाओं (धातुओं) तक पहुँचाती रहती है। वह शर्करा कणिका का कज्जल मधुविलीन के स्पर्शसे सक्रिय हुई होती है। रक्त कणिकाएं अपनी रंजनी डबिया का मुंह वहां पर खोल दिया करती है जहां यह सक्रिय शर्करा का कज्जल विद्यमान होता है बस उस शर्करा का कज्जल उस ऊष्मजन को समीप देखकर उस ओर आप आकर्षित होता है और उससे जा मिलता है जहां वह ऊष्मजन से मिला कि जल उठता है। इस दहन प्रक्रिया में एक ओर कज्जलद्वि ऊष्मिद (CO_2) वायव्य बनता है दूसरी ओर जो उदजन उस शर्करा में युक्त होता है वह भी ऊष्मजन से मिलकर पानी (HO_2) का अणु बनाता है इससे भी ऊष्णता उत्पन्न होती है। इसी को आयुर्वेद में विपाक कहते हैं, आधुनिक वैज्ञानिक दहन।

इंजन में तो एक स्थान पर कोयले का दहन होता है। शरीर में शर्करा का दहन सारे शरीर की एक एक एक कोषाओं में होता है। एक क्षण में शर्करा का कज्जल जितना सारे शरीर में जलता है यदि वह एक स्थान पर जलाया जाय तो वहां इतना उत्ताप उत्पन्न हो सकता है कि वह स्थान जलकर भस्म हो सकता है। किन्तु एक कण में होने के कारण उससे जो ऊष्णता उत्पन्न होती है एक तो धातुओं में ऊष्मा को बढाने की शक्ति होती है इसी लिये वह उत्ताप चारों ओर फैल जाता है। दूसरे यह कार्य शरीर में व्यापक रूप से होता रहता है इसी से तो शरीर को उत्ताप मिलता है वह स्थिर रहता है जिसकी मात्रा ९८·५ आधुनिक थर्मामीटर (ताप मापक) से जानी जा सकती है।

शरीर के भीतर शर्करा की मात्रा कैसे बढती है !

मान लीजिये २४ घण्टे में दहन के लिये २० तोले शर्करा की आवश्यकता रहती है, हमें मीठा खाने की आदत पड़ी हुई है इसीलिये हम नित्य भोजन से भिन्न १५–२० तोले और मिठाई खा लिया करते हैं जब इस तरह अधिक शक्कर अन्दर पहुँचती है तो उसे पचाने के लिये लाला रस, क्लोम रस, क्षुद्रान्त्र रस की मात्रा भी कुछ न कुछ अधिक उन ग्रन्थियों को बनाकर भेजनी पड़ती है, इन ग्रन्थियों का काम बढ जाता है। इसके इलावा जब यह शक्कर पचकर द्राक्ष शर्करा बनती है तो सिरा मार्ग से यह यकृत में पहुँचती है यकृत उसे अपने पास रोकता रहता है और द्राक्षोजन में बदलकर संचित करता रहता है, किन्तु वह इसे २०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तोले से अधिक अपने पास संचित नहीं रख सकता। उसके पास तो ४ घंटे के लिये ही संचित रखने का स्थान होता है। किन्तु शर्करा जब अधिक आ जाय तो वह रक्त में चली ही जाती है क्योंकि यकृत के भी तो काम की एक सीमा होती है। अधिक आई हुई शर्करा जब रक्त में विद्यमान रहने लगती है और ऊष्मजन की मात्रा इतनी नहीं होती कि सबका दहन करे।

उधर द्राक्ष शर्करा का कज्जल मधुविलीन के सम्पर्क से सक्रिय हुआ होता है, वह जब दहन नहीं होता तो वह रक्त में विद्यमान स्नेहाम्लों, मधुराम्लों, क्लिष्टस्नेहों (Cholestrol) के अणुओं के सम्पर्क में आने लगता है और इससे स्नेहजन अणुओं की शरीर में वृद्धि होने लगती है। वही स्नेहजन अणु वसा में बदलने लगते हैं और वह वसा सारे शरीर में बढ़कर संचित होने लगती है। मधुमेह से पूर्व अधिक मीठा खाने वाले जब मोटे होने लगते हैं तो यही कारण होता है कि निर्धारित शर्करा की मात्रा—जो दहन के कार्य में नहीं आती—चर्बी बनकर शरीर के हर स्थान में जमने लगती है।

इसमें कोई संशय नहीं कि शर्करा के विपाकार्थ शरीर के भीतर बड़ा प्रयत्न होता रहता है। रक्त में जब द्राक्ष शर्करा की मात्रा अधिक रहने लग जाती है तो क्लोम अधिक मधुविलीन बनाकर रक्त में इस लिये भेजता रहता है कि उनका दहन होकर मात्रा अपनी सीमा में आजाय, किन्तु मीठा खाने वाला इस बात को तो जान ही नहीं सकता कि मेरे अधिक मीठा खाने से शरीर के भीतरी अंगों को अधिक काम करना पड़ रहा है और वह अधिक श्रम करने के कारण क्षीण होते जा रहे हैं। अधिक काल तक क्लोम के मधुविलीन निर्माता तन्तु जब क्षीण होते चले जाते हैं और रक्त में विद्यमान शर्करा की मात्रा वृक्क मर्यादा से अधिक रहने लग जाती है तब वह द्राक्ष शर्करा वृक्कों से छन कर जाने लगती।

वृक्क मर्यादा का क्या अर्थ है

शरीर में समस्त कार्य व्यापार एक मर्यादा के भीतर ही रह कर चलते हैं, बाहर भी हम एक मर्यादा के भीतर चल सकते हैं। उस से बाहर नहीं। इसी तरह शरीर के भीतर वृक्क के भीतर कोषों से निर्मित जो सजीव छलनी बनी हुई है उसमें से वृक्ककोषाएं वही वस्तु छनकर बाहर निकलने देती हैं जिन को शरीर की आवश्यकता नहीं होती। न तो रक्त में का विद्यमान अम्लजन छनकर जाता है, न द्राक्ष शर्करा, न वसा। किन्तु इनकी मात्रा मर्यादा के भीतर जब तक रहती है तभी तक यह नहीं छनते। मर्यादा से अधिक बढ़ने पर फिर वह इन्हें रोकने में असमर्थ हो जाते हैं। अम्लजन, शर्करा की मात्रा कितनी हो तब तक वह वृक्कों से नहीं निकलते। शर्करा के लिये रक्त में इसकी मात्रा साधारणतः ८$\frac{1}{4}$ तोला रक्त में १२० सहस्रांश मासे के लगभग रहती है भोजनोपरान्त १६० तक बढ़ जाया करती है। यदि १८० तक बढ़ जाय तो इतनी शर्करा मात्रा को रक्त में से वृक्क बाहर नहीं जाने देते। यह वृक्क मर्यादा कहलाती है। किन्तु इसके रक्त में शर्करा १८० सहस्रांश माशे से अधिक हो जाय तो फिर वृक्क कोषाएं उसे रोकने में असमर्थ होती है तभी मूत्र में शर्करा आने लगती है। जिसे चिकित्सक मधुमेह के नाम से पुकारते हैं।

आयुर्वेद सिद्धान्त का रहस्य

हम ऊपर बतला आये हैं कि अनेक प्रमेहों में से किसी प्रमेह के बने रहने पर जब वह राजी नहीं होते तब उसके बिगड़ जाने पर मधुमेह हो जाता है किसी भी अन्य प्रमेहों के होने की सम्प्राप्ति का उल्लेख शास्त्रकार करता है उसकी जानकारी अब आकर हो गई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद कहता है—

आस्यासुखं स्वप्न सुखं दधीनि ग्राम्योदकानूप रसाः पयांसि ।

नवान्न पानं गुडवैकृतंच प्रमेह हेतुः कफकृच्छ सर्वम् ॥ माधव ।

आराम में सुख पूर्वक बैठा रहना या सोये पड़े रहना, ग्राम्योदक (दूध दही, इक्षुरस , नया अन्न, गुड़, शक्कर अधिक खाते रहना, इससे कफ की वृद्धि होने पर प्रमेह होता है यह शास्त्र का सिद्धान्त है ।

जिन मनुष्यों को यह पता नहीं होता कि हमें कितना भोजन करना चाहिये, शरीर को कितने भोजन की जरूरत है ? वह आवश्यकता से अधिक खाते रहते हैं तभी शरीर के भीतर रक्त में मर्यादा से अधिक भुक्त रसमयी वस्तुएं बढी हुई रहती हैं । इनकी वृद्धि को शास्त्र ने श्लेष्म संज्ञा दी हैं । ऐसे व्यक्ति शरीर से स्थूल हो जाते हैं मोटापा का बढ़ना देखकर श्लेष्म वृद्धि का अनुमान किया गया हो तो आश्चर्य नहीं ।

यदि रक्त में अस्रजन की मात्रा बढ़ जाय तो मूत्र में यह दो तीन रूपों में जाने लगती है, वसा बढ़ जाय तो यह भी दो तीन रूपों में से जिस रूप में हो, जाने लगती है । इससे भिन्न अधिक खाने वाले की पचन व्यवस्था बिगड़ी रहने से चून स्फुरेत या अन्य स्फुरेत भी जाने लगते हैं ।

रक्त में कोई वस्तु मिल पचकर (रस बन कर) जब अधिक मात्रा में पहुंचती है तो वह जब तक वृक्क मर्यादा के भीतर रहे तब तक तो वृक्क रक्त में से उसे छनने नहीं देते, जब मर्यादा से वह वस्तु अधिक हो जाय तो वृक्क फिर उन्हें नहीं रोक सकता । जब वस्तु मूत्र में जाने लगती है जैसा उनका रूप, रंग, आकृति देखी जाती है उसके अनुसार उसके नाम रख लिये जाते हैं जैसे अण्डसित मेह (Albuminuria), अस्रजिन मेह (Proteinuria) वसामेह, सान्द्रमेह, पिष्टमेह, शर्करामेह, सिकतामेह, इक्षुमेह आदि ।

प्रत्येक प्रमेह का सम्बन्ध जो चिकित्सक यौन ग्रन्थियों के सम्बन्ध से जोड़ते हैं वह भयंकर भूल करते हैं । यौन ग्रन्थियों से तो दो ही चीज मूत्र मार्ग से जाती हैं एक (१) मद ग्रन्थी (पूगी Prostate gland) का स्राव, (२) वृषण ग्रन्थि का स्राव, जिसमें वीर्य रस और वीर्याणु होते हैं । मद ग्रन्थी से मद निकलता है, यह ग्रन्थी भी उस समय ही अपना मद मूत्र मार्ग में छोड़ती है जब मनुष्य के भीतर मनोज प्रवृति बढ़ती है और शिश्न में रह रह कर उत्तेजना बनाये रखने के लिये मन में विषय वासना के संकल्प विकल्प उठते रहते हैं उस समय ही वह मद बह कर मूत्र मार्ग से बाहर आता है, इस तरह नहीं । वृषण ग्रन्थी का वीर्य-रस तो उसी समय स्थानच्युत होता है जब मनोवृत्ति काम में तल्लीन हो जाती है इन दोनों के स्राव सन्तति उत्पादन के निमित्त ही होते हैं, या लम्पटों में दुष्टप्रवृत्ति के बने रहने पर उक्त ग्रन्थियां स्राव त्यागने की अभ्यासी बन जाती हैं जिससे स्मृति मन्दिर में यौन विषयक कल्पना के उठते ही स्राव स्वप्न पात आदि रोग कि स्थिति देखी जाती है । इनका स्राव न प्रमेह के उक्त कारणों से सम्बन्ध रखता है, न इसे प्रमेह के साथ मिलाया ही जा सकता है। प्रमेह मात्र तो वास्तव में अत्यधिक आहार सेवन से होने वाला ऐसा कष्ट है जो जीर्ण हो जाने पर मधुमेह उत्पन्न करता है क्योंकि आन्तरिक अवयव (अंग) अधिक काम करते २ शक्ति हीन (क्षीण) दुर्बल हो जाते हैं । उनके रस और ओजों की मात्रा घट जाती है इसलिये रक्त में विद्यमान उन पदार्थों का सात्मीकरण और दहन नहीं होता इसीलिये वह मर्यादा से अधिक बढ़े रहने पर वृक्कों के छन्नों में नहीं रुकते और मूत्र में जाने लगते हैं । सिद्धान्ततः हमारे शास्त्र

(शेष पृष्ठ १७६ पर पढ़ें)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाही संचिका के योग

(लेखक—श्री त्यागी त्रिवेणीदास जी आयुर्वेद विशारद)

(गतांक से आगे)

सिंगरफ भस्म

(४) सिंगरफ १ तो०, लौंग १५ तो०, नरइलायची १५, सोंठ १५ तो०, अंडा मुर्गी जर्दी ३० नग। सिंगरफ के सिवाय दूसरी सब चीजों को पीसलें और उसके तीन भाग बनालें एक भाग में डली सिंगरफ रखकर घृत में मन्द अग्नि से तललें। बादामी रंग हो जाय तब निकाललें। फिर दूसरी और तीसरी डली इसी प्रकार तलकर डली निकाल कर खरल में वारीक पीसकर रखें। मात्रा १ रत्ती उत्तम है।

(५) जायफल में सिंगरफ १ तोला रखकर उसको धतूरा के फल के बीच में रखकर कपड़मिट्टी कर सुखा ४ सेर की अग्नि देवें। इस प्रकार २१ बार करें। अति उत्तम सिंगरफ भस्म होगी।

(६) खाने के नमक के बीच में सिंगरफ रखकर १० सेर छाना में फूकें।

(७) अजवायन ५ तो०, मालकांगनी ५ तोला। चूर्ण बनाकर नीचे ऊपर रख बीच में सिंगरफ १ तोला की डली रखकर पाताल यंत्र से तेल निकाललें। बाद में डली निकाल कर उसी तेल में खरल करलें। मात्रा १ रत्ती धातु पौष्टिक है।

(८) सिंगरफ १ तोला, मुर्गी के ४ अंडों में खरल कर टिकिया बना सराव सम्पुट करलें और उसमें नींबू का रस खूब भरदें। ऊपर एक हांडी रखें जिसमें ६ सेर पानी आजाये। संधी लेप कर सुखा चूल्हे पर चढा ४ सेर छाना की अग्नि देवें। भस्म तैयार है नामर्दी में उत्तम ताकत प्रद है।

(९) आक के दूध में १ तोला सिंगरफ को खरल करके टिकिया बना धूप में सुखा लोहे की कढ़ाई में ऊपर नीचे आक के पत्ते रख बीच में टिकिया रखलें और उनके नीचे ऊपर प्याज की लुगदी रखें बाद में आक के पत्ते रख ऊपर बालु रेत भरकर दिनभर अग्नि देवें भस्म तैयार होगी।

हरताल भस्म

(१) हरताल १ तोला आक के दूध में खरल कर टिकिया बना खटकल (खटाचूक) की लुगदी में रखकर ऊपर १ सेर कपड़ा लपेट निर्वायु स्थान में अग्नि दें। भस्म खाने में उत्तम है।

(२) हरताल १ तोला को तुम्बीदाना ५ के रस में खरल कर छाया में सुखा २३ तोला सूत लपेट कुंजा में रख निर्वायु स्थान में फूकें। श्वेत भस्म होगी।

(३) हरताल १ तोला बड़े अनार के रस में खरल कर टिकिया बना २३ तोला सूत लपेट कर निर्वात स्थान में अग्नि दें। काली भस्म होगी।

(४) हरताल ५ तोला को कुकरौंधा रस एक पाव में अग्नि पर सात बार औटावें बाद में डेढ पाव कुकरौंधा रस में टिकिया बनाकर १० सेर पीपल की छाल और १० सेर इमली की छाल दोनों की लुगदीके बीचमें टिकिया रख कपड़मिट्टीकर सुखालें, पहिले टिकिया को अर्क दुग्ध में तर करलें और ऊपर नीचे आक के पत्ते रखकर बाद में लुगदी ऊपर नीचे रखें और फूंक दें, भस्म होगी। अनुपान—आतशक, घृत, मिश्री। खांसी भांग, शहद। सुजाक—मिश्री, शर्बतमें। प्रसूतमें अननी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूत के अर्कमें । पीलिया, जलोदर पर भैंस मूत्रमें । आंख का फूला में शहद में । शूल में लौंग चूर्ण में । गठिया में भंगरिया के रस में, कान दर्द में पुराने गुड़ में । मात्रा १ चावल है ।

(५) हरताल १ तोला महानीम के रस में ३ दिन खरल कर टिकिया बना बकायन नीम की लुगदी में सम्पुट कर गजपुट आंच देवें तो लाल रंग की भस्म होगी ।

(६) हरताल १ तोला शीशक भस्म डेढ छटांक के बीच में रख मिट्टी के बर्तन में आंच दें तो हरताल और सिंगरफ भस्म होगी ।

(७) मुर्गी अंडा छिलका १ तोला, सिंगरफ १ तो०, हरताल १ तो० नीबू रस २० तोला में खरलकर टिकिया बना सराव सम्पुट कर रख नींबू रस और डाल ऊपर एक जल का कूजा भर कर रख सम्पुट संधी बन्दकर १५ सेर छाना में फूंकें भस्म होगी । दम और ताकत में उत्तम होगा ।

(८) गौ मूत्रमें लहसुन रस मिला हड़ताल खरल कर गोली बना गोजीभी की लुगदी में रख कपड़ मिट्टी कर सुखा गजपुट देना तो सफेद रंग की भस्म तैयार होगी ।

(९) शुद्ध हड़ताल ५ तोला, प्याज का रस १० तोला, रस में भीगोकर वाह हांडी में पीपल या ढांक की भस्म ३ अंगुल बिछा ऊपर डली रख उसके ऊपर भस्म डालना उसपर ३ अंगुल प्याज का रस डाल मुंह बन्द कर चूल्हे पर चढ़ा ३ प्रहर आंच बेर की लकड़ी की देना । दूसरे दिन निकाल लेना सफेद भस्म होगी । मात्रा १ चावल शहद में । सम्पूर्ण कुष्ठ नष्ट होगा । अनुपान से सर्व रोग हारी है ।

(१०) हड़ताल को कुंवार रस, कोहरा रस और दही में यह प्रत्येक में ३-३ बार खरल कर गोली बना सुखा कर एक हांडी में ६ अंगुल नमक भरकर उसपर हड़ताल डली लोहे की डिब्बी में बन्द करके रखें ऊपर और नमक रख दबा दें और ४ दिन रात अग्नि देना तो चूना जैसी सफेद भस्म तैयार होगी । मात्रा १ चावल ।

हडताल तेल

(११) हडताल को कडवी तोरई के फूल में खरल कर गोली बनायें । दो शीशी में डमरुयंत्र बनायें शीशी में कपड़ मिट्टी कर एक शीशी को जमीनमें गाड़ दें दूसरी में औषधि रहे डमरुयंत्र ठीक रहे बाद में उसके ऊपर १ पाव कंडे की अग्नि रखें जब यह बुझ जाय तब दूसरी बार १ पाव कंडे की अग्नि फिर रखें इस क्रम से ही अग्नि रखते जायें तो हडताल तेल निकल आयेगा । सर्व काम में चले ।

पारा भस्म

(१) पारा १ तोला, कोकाई सोडा का तेजाब ६ तो० आतशी शीशी में डाल आग पर रखना निर्धूम होने पर भस्म होगी ।

(२) शुद्ध पारा १ तोला कोचुआ के पताल के रस में महीन खरल कर शुक्ल पक्ष के एकम से बारस तक बाद में रात को चन्द्रमा के प्रकाश में खरल करना चमक नष्ट होने पर बैंगन की आध पाव लुगदी बना उसमें टिकिया रख कपड मिट्टी कर १ मन छाना में फूंकना भस्म होगी ।

(३) पारा १ तोला, संखीया १ तोला, सुहागा १ तो०, साबुन १ तोला सबको नींबू अर्क में खरल करना टिकिया बना तांबे की डिब्बी में रख संपुट करना आधा सेर छाना में फूकना शीतल होने पर निकालें पारा शेष बचेगा उसे कुठाली में डाल अग्नि पर रखें जब पारा घुमे तब सुहागा वाला पारा जल जावे तब लेना । तब कार्य में लावें ।

(४) पारा २ तोला, बिनौले के पत्र ४ तो० की लुगदी में रख सराव संपुट कपड मिट्टी कर सुखाना ४ सेर छाना में फूंकना भस्म होगी ।

क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आम भी टानिक है

(लेखक—कृष्ण कुमार)

ग्रीष्म ऋतुमें जहां सूर्यके तीव्र उत्तापसे रक्त ओजादि धातु क्षीण होते हैं तथा पाचन शक्ति घटती है, वहां प्रकृति का अनुपम वरदान 'आम' इस दुर्बलता का निवारण करनेमें एक ही है। "आम" भारतका सर्वश्रेष्ठ सर्वप्रिय और प्रसिद्ध फल है। इस देशमें विरला ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जिसने इस अमर फल का आस्वादन नहीं किया हो। उत्पत्ति से आम के तीन भेद पाये जाते हैं। जो अपने आप जङ्गलों में उत्पन्न होते हैं, उन्हें रानी आम कहा जाता है। जिन आमों की गुठली बोकर खेतों व बागों में पैदा किया जाता है, वे देशी आम कहलाते हैं। ऊंची जाति के आमों को कलम बांधकर लगाये जाने के कारण कलमी आम कहते हैं। सामान्य दृष्टि से इसके दो प्रकार होते हैं। 'रस वाले आम' उत्तम देशी आम (रस वाला) कुछ अम्लत्व लिये हुए मीठा होता है, तथा अच्छा कलमी आम बस मधुर ही होता है। रंग, रूप और स्वाद के भेद से इसके अनेक उपभेद पाये जाते हैं जिनमें मालदह, तोतापरी, नीलम परी, फजली, लंगड़ा, बम्बई, सफेदा, हाफुस, पायरी, मोहन भोग, राज भोग, गुलाब खास, दशहरी आदि प्रसिद्ध हैं। इसके ये उपभेद जलवायु और मिट्टी की भिन्नता और गुठली आदि का सम्पर्क प्रथम होने से उत्पन्न होते हैं। गुण की दृष्टि से उपभेद का कोई महत्व नहीं है।

आम के गुण

कच्चे आम किंचित गरम होते हैं। तथा खट्टे होने के कारण पित्त को बढ़ा कर पाचन शक्ति को बढ़ाते हैं। लवण के साथ सेवन करने से रुचिवर्धक एवं पोदीना या धनियां के साथ सेवन करने से उल्टी और दस्त को रोकता है। डा० एन० खोरी के मतानुसार कच्चा आम स्कर्वी रोग में विशेष लाभदायक है। "इण्डियन मैटरिया मेडिका के" लेखक डा० नाडकरणी ने लिखा है कि आम का कच्चा फल आमाशय को बलदायक, व्याधियोंमें प्रायशः हितकारी और स्कर्वी रोग में विशेष लाभप्रद है। लू लग जाने पर इसको भूनकर इसके रस में जीरा और शक्कर मिलाकर 'पना' बनाकर पीने से विशेष लाभ प्राप्त होता है और शीघ्रही लू दूर हो जाती है। कच्चे आम के उपरोक्त गुण इसके नियत प्रमाण में सेवन करने से होते हैं। अधिक प्रमाण में लगातार सेवन करना गले की बीमारियां, चर्म रोग, रक्त के विकार और रक्त पित्त संज्ञक व्याधि को उत्पन्न कर सकता है।

पोषक तत्व

आम का पका फल मधुर, वीर्यवर्धक, बलवर्द्धक व हृदय को हितकारी तथा कफ और शुक्र वर्धक होता होता है स्निग्ध होने से ग्रीष्म सन्ताप जनित विकारों को दूर करता है। पाचन प्रणाली के लिये पका आम विशेष लाभदायक होता है। यह कोठे को थोड़ा मुलायम करने वाला, पेशाब साफ लाने वाला और पौष्टिक रसायन होता है। ये गुण उत्तम 'टानिक' में पाये जाते हैं, इसलिये आम का पका फल एक उत्तम टानिक का स्थान ले सकता है। इसमें विटामिन 'ए' और विटामिन 'सी' पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं; जो स्वस्थ मनुष्य के लिये भी विशेष लाभदायक तत्व हैं। विटामिन 'ए' के प्रभाव से रोगी वाह्य विष और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

112383
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कीटाणुओं के उपसर्ग से अपनी रक्षा करने में समर्थः शारीरिक शक्ति प्राप्त करता है। आयुर्वेद पञ्चानन श्री जगन्नाथ प्रसाद जी शुक्ल के मतानुसार विटामिन 'ए' ओज वर्धक तत्व है। ओज सम्पूर्ण शरीर में धातुओं मे रहने वाला तेज स्वरूप द्रव्य है। ओज अधिक होने से ही आम बल वर्धक होता है। विटामिन 'सी' चर्म रोगों का नाश करता है और शरीर के वर्ण को सुधारता है। रक्त रञ्जनीय द्रव्य होने से विटामिन 'सी' शरीर को अतीव लाभप्रद होता है।

इसके साथ ही आम आमाशय और आंतों की क्रियाओं पर विशेष लाभदायक होते हैं। भयानक संग्रहणी आदि की व्याधियां गुजरात के अनेक वैद्यों ने केवल आम और दूध के प्रयोगों से अच्छी की है।

रसीले और पाल

बाजार में आम दो प्रकार से पके हुए मिलते हैं। 'वृक्ष के पके' और पाल द्वारा (कृत्रिम विधि से) पकाए हुए। इनमें वृक्ष के पके आम की अपेक्षा पाल द्वारा पके हुए अधिक उपयोगी होते हैं जब कि पाल द्वारा पका हुआ आम पित्त कारक नहीं होता लाभ की दृष्टि से कलमी आम की अपेक्षा रस वाला आम अधिक लाभदायक और उपयोगी होता है। रस वाला आम आसानी से हजम होता है तथा साथ ही पाचन संस्थान की शक्ति को भी बढ़ाता है। अतः औषधि प्रयोग में रस वाले आम का अधिक महत्व होता है।

रस वाला आम कलमी आम की अपेक्षा अधिक लाभदायक होता है। रस वाले आम का सेवन चूस कर किया जाना चाहिये। रस निकाल कर सेवन करना उत्तम नहीं रहता। बाहर निकाले हुए रस में शीघ्र ही कीटाणुओं का उपसर्ग हो सकता है तथा बाहर पात्र में निकाल कर सेवन किया हुआ रस वायुवर्धक भी हो जाता है। इसलिए रस वाले आम को चूस कर खाना उचित मार्ग है।

आम कैसे खायें

सेवन करने से पूर्व आम को २—३ घन्टे शीतल जल में डालकर रख देना चाहिये उसे अच्छी प्रकार धोकर चेप निकाल दिया जाना चाहिये। फिर उन आमों को चूस-चूस कर सेवन करें ऊपर से गर्म करके ठण्डा किया हुआ दूध, मिश्री या शक्कर मिला हुआ सेवन करें। आम के साथ दूध लेने से अधिक लाभ होता है। एवं वह आसानी से हजम हो जाता है। दिन में आम एक ही बार खाना चाहिए। पाचन तीव्र होने पर शाम को दुबारा भी आम का सेवन किया जा सकता है। यह विधि रस वाले आम के सेवन के लिए वर्जित है। कलमी आम का सेवन करनेके उपरांत भी दूधका सेवन आवश्यक है। अच्छा तो यह हो कि कलमी आमों को छीलकर छोटे छोटे टुकड़े चीनी या कांच के पात्रों में रखलें, ऊपर से मिश्री या शक्कर मिला हुआ दूध टुकड़े डूबने तक भरदें, फिर चम्मच से आम के टुकड़े चबा चबा कर खाये और ऊपर से उसी दूध को पी लें। इस प्रकार से सेवन करने से आम के गुणों का विशेष लाभ शरीर पर होसकता है। आम दूधके साथ सेवन करने से शीतलता, मधुरता और स्निग्धतामें विशेष आधिक्य उत्पन्न हो जाता है। इससे शरीर पर इसका विशेष लाभ होता है। एवं ग्रीष्म ऋतु का कोई भी बुरा प्रभाव शरीर पर नहीं हो पाता यहां पर विशेष रूप से इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि आम सदा उत्तम और मीठा ही सेवन करें। यदि कुछ खट्टा आम खाना हो तो दूध के साथ कदापि आम का सेवन नहीं करें क्योंकि दूध के साथ खट्टी चीजें खाना निषिद्ध है। वह व्याधि कारक होता है।

आम का कल्प

आयुर्वेद शास्त्र में आम के कल्प का भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधान निर्दिष्ट है। भयंकर संग्रहणी, श्वास, तपेदिक आदि व्याधियों में केवल आम का सेवन उपरोक्त विधि से करना ही कल्प का मुख्य विषय है। इस विधान में केवल आम और दूध मात्र का ही प्रयोग किया जाता है। अन्य किसी भी खाने पीने की वस्तु को उपयोग नहीं करना चाहिये। इसके अलावा आम पाक भी होता है। जिसके विषय में कहा जाता है—'समर्थो बलवान पुष्टों नित्य सस्यालिसमयः ग्रहणी नाश्ये देव त्रय श्वासमरो-याक्रम अम्लपित्त महाश्वास रक्त पित्तश्च पाण्डुताम' अर्थात् इसको सेवन करने से मनुष्य समर्थ बलवान, पुष्ट सदा ही रोग रहित होते हैं और ग्रहणी, क्षय, अरुचि, श्वास, अम्ल पित्त, महा श्वास, रक्त, पित्त और पांडुता दूर होती है। भाव मिश्र लिखते हैं कि इस प्रकार १ मास पर्यन्त आम का सेवन करने कितनी ही व्याधियों से प्रायः मुक्ति मिल जाती है स्वास्थ्य एवं सम्पन्न व्यक्ति भी 'आम कल्प' का सेवन कर शक्ति, कान्ति, तेजस्विता आदि प्राप्त कर सकते हैं इससे रक्त का निर्माण शीघ्र ही बढ़ता है।

(शेष पृष्ठ १७४ का)

कार इस रहस्य को बिल्कुल ठीक रूप में समझ अवश्य गये थे किन्तु उस पूर्व काल में इस बात को जानने के सूक्ष्म साधन नहीं थे कि शरीर के भीतर भोजन पचन और सात्म्यीकरण की जो व्यवस्था चलती है वास्तव में वह वैसी नहीं जैसी शास्त्र कहता है प्रत्युत नये सिरे से समझने की जरूरत है।

जिन बातों का प्रत्यक्षीकरण होना जरूरी है यदि उन कार्य कारण सम्बन्धी बातों को सही रूप में न देखा जाय तो उस दशा में अनुमान से ही काम लेना होता है। अनुमान करते समय हमें उन विचार वानों की ओर देखना पड़ जाता है जिन्होंने उस विषय पर हम से पूर्व कुछ विचार किया हो। अनुकरण की प्रकृति मनुष्य में स्वभावतः बाल्यकाल से होती है, इसी प्रकृति के कारण यदि प्रत्यक्ष साधन न हो तो बहुधा उन्हीं विचारवानों का अनुकरण करना होता है जो उस विषय पर हमसे पूर्व विचार कर चुके थे। इसी आधार पर वह आगे चलकर सिद्धान्त बनाते हैं। ऐसे ही बने हमारे उक्त सिद्धान्त हैं।

इस समय जब कि हमारे सामने प्रत्यक्षीकरण के साधन आ चुके हों और हम उनका उपयोग कर वस्तु स्थिति को समझने में समर्थ हों तो हमें अपने उन सिद्धांतों में ऐसा परिवर्तन लाना चाहिये जिससे हम प्रत्यक्ष प्रायोगिक पथ के समीप पहुँच जांय।

क्या ऐसे स्थलों पर समन्वय की गुंजायश है

मधुमेह की सम्प्राप्ति जहां हमारे ग्रन्थों में एक श्लोक में बता दी गई हो और उसको प्रत्यक्ष रूप में समझने के लिये जहां शरीर की सारी पचन में सात्म्यीकरण व्यवस्था तक को समझना आवश्यक होता है ऐसी दशा में इन दोनों का मिलान कहां पर कैसे किया जाय? इनका मेल बैठाना सुकर नहीं। यदि सिद्धान्त रूप में हमारी सम्प्राप्ति का मेल बैठ भी जाय तो शरीर धर्म शास्त्र का अनुशीलन जब तक हम नये रूप में न करें उस विषय को कैसे समझोगे। हम अपनी सम्प्राप्ति के लिये केवल अपने सिद्धान्त की रक्षा पर अड़े रहें हमारे लिये कठिन हो जायगा। यदि हम ऐसा करें तो उस दशा में न तो हम आयुर्वेद की उन्नति कर सकते हैं न हम अपने ज्ञान को बढ़ा सकते हैं। इसलिये दो नावों पर पैर रखकर पार उतरने का प्रयत्न तो डूबने के सिवाय और कुछ नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रीष्म ऋतु का आहार-विहार

(लेखक—श्री विद्याभास्कर परमेश्वर घिल्डियाल)

प्रत्येक ऋतु का प्रभाव मानव देह पर पड़ता है। ऋतु के कुप्रभाव से मानव शरीर को मुक्त रख उसमें प्रकृतिप्रदत्त रोगनिरोधनी शक्ति संतुलित रखने के हेतु आयुर्वेद शास्त्र के सर्वभूतहितेरत ऋषि मुनियों ने आयुर्वेद के प्रथम उद्देश्य 'स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणम्' के अनुसार आयुर्वेदिक स्वस्थवृत में यथास्थान ऋतुचर्या का उल्लेख किया है। तदनुसार आचरण कर हमारे राष्ट्र के नागरिक ऋतुज आधि-व्याधियों से मुक्त रह कर स्वस्थ जीवन यापन कर सकते हैं।

ग्रीष्म ऋतु और उसका प्रभाव

साधारणतया यह ऋतु मई और जून (ज्येष्ठ और आषाढ़) मासमें मानी जाती है और यह आदान काल (उत्तरायण) के अन्तर्गत आती है। इस समय पृथ्वी सूर्य के अधिक निकट रहती है, क्योंकि पृथ्वी अपनी धूरी पर घूमती हुई सूर्य की परिक्रमा करती है। पृथ्वी के परिक्रमणवश सूर्य के सान्निध्य एवं दूरस्थ होने के हेतु ही कभी गर्मी, कभी सर्दी और कभी वर्षा ऋतु होती है। मई, जून और जौलाईमें उत्तरगोलार्द्ध में ग्रीष्म ऋतु होती है। इस समय सूर्य पृथ्वी के समीप रहता है और अपनी प्रखर एवं प्रचण्ड किरणों से पृथ्वी के जलीयांश या सारभाग का शोषण करता है। स्नेहांश के शोषण होने के कारण सारा वातावरण रूक्ष एवं सारहीन होजाता है। खाद्य वस्तुएं भी अपेक्षाकृत सारहीन ही प्राप्त होती हैं जिससे शरीर में वायु का संचय, पित्त प्रकोप एवं कफ का क्षय होता है। परन्तु उष्णतावश वायु का प्रकोप नहीं होता। अतः यह ऋतु रूक्ष, तीक्ष्णताकारक, पित्त बढ़ाने वाली और कफकारक होती है। 'ग्रीष्मो रूक्षोऽति कटुकः पित्तकृत्कफनाशनः' (भाव प्रकाश)।

खान पान का सिद्धान्त

इस ऋतु में जो पदार्थ मीठे, ठण्डे, तरल, स्निग्ध और हल्के हों, उन्हीं को खानपान में अपनाना चाहिये।

'स्वादु शीतं द्रवं स्निग्धमन्नपानं तदा हितम्। (चरक)

इस ऋतु के हमारे नित्य के भोजन में जौ, गेहूँ और ज्वार की रोटी, खांड के साथ शालि चावलों का भात, अरहर, मूंग और मसूर की दाल, परमल, प्याज, लौकी, बथुआ, चौलाई, तोरई, भिण्डी तथा करेले आदि ऋतुज शाक सब्जियों की प्रधानता रहनी चाहिये। प्रातःकाल दूध और दही की लस्सी, गन्ने का रस या कागजी निम्बू की सिकञ्जी बनाकर पीना हितकर है। इससे वात-पित्त का प्रशमन होता है और शरीर में जीवनी शक्ति संचित होती है। इमली और आम का पना इस ऋतुमें बहुत ही उपादेय और सामयिक पेय माना गया है। ऋतु प्रभाववश शरीर से पसीना आने के कारण शरीर में लवण एवं जलीयांश की कमी पूरी करने के लिये इससे सरल एवं आशुफलप्रद और कौन उपाय हो सकता है।

इस ऋतु में शक्कर मिला जला-लोड़ित सत्तू, का पान भी हितकर माना गया है। आंवलों को चटनी या मुरब्बे के रूप में उपयोग में लाना चाहिये। यह शीतवीर्य, पित्त शामक, तृष्णाहर एवं तृप्तिदायक होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। इसमें विटामिन सी प्रचुर मात्रा में पायी जाती है, जो कि अग्नि सम्पर्क से भी विनष्ट नहीं होती। 'आमलकी फलं सदा पथ्यम्' की उक्ति को कौन भारतीय नहीं जानता। इमली के रस में प्याज की कतरनें काटकर और पुदीना, काली मिर्च, जीरा एवं सेंधा नमक मिला रुचिकर व्यञ्जन के रूप में खाने से ऋतुज रोग हैजा और लू से शरीर को मुक्त रखा जा सकता है। प्याज से वातप्रशमन और बल वीर्य की प्राप्ति होती है। इस ऋतु में कूप का स्वच्छ जल या कपूर, चन्दन, केवड़ा, गुलाब और खस आदि सुवासित एवं शीत वीर्य द्रव्यों से संस्कारित जल पीना चाहिये।

दुर्भाग्यवश हमारे देश में भी बर्फ का आम प्रचलन हो गया है, जो कि स्वास्थ्य के लिये बहुत ही हानिप्रद एवं विनाशक है। इससे क्षणिक शान्ति भले ही मालूम पड़े परन्तु कालान्तर में रूक्षता पैदा करने वाला और प्रतिक्रिया में उष्ण ही होता है। इस ऋतु में शहतूत, संतरा, नीबू, अनार, मौसमी, ककड़ी, खीरा तरबूज, नारियल, खरबूजा और आम आदि शीतल वातपित्त हर, तृप्तिदायक तथा जीवनीय तत्वों से युक्त ऋतुज फलों को यथेष्ट रूप में उपयोग में लाना स्वास्थ्य को बढ़ाना माना गया है। तरबूज, खरबूजा और ककड़ी खाली पेट नहीं खानी चाहिये और खाने के तुरन्त बाद ही जल नहीं पीना चाहिये। इस ऋतु में सड़ी-गली बासी वस्तुओं को खाना हैजा को निमंत्रण देना है।

महर्षि चरक के मतानुसार मांसाहारियों को इस ऋतु में जंगली पशु-पक्षियों का मांस खाना चाहिये।

रहन सहन

ग्रीष्म ऋतु में पसीना खूब आता है। वातावरण के उष्ण एवं रूक्ष होने के कारण वह शीघ्र सूखने भी लगता है, जिससे शरीर से बदबू आने लगती है। अतः प्रातः एवं सायं बिना तेल मालिश के ही स्वच्छ एवं शीतल जल से मोटे वस्त्र से शरीर को रगड़ते हुए स्नान करना चाहिये। इस ऋतु में नदी में तैरना बहुत ही सुखद और स्वास्थ्यवर्द्धक है। इसमें स्नान के साथ-साथ व्यायाम का भी फल प्राप्त हो जाता है। इस ऋतु में तैरना कितना हितकर और सौख्यकारक है, इसे वे लोग भली भांति जानते हैं जिनको हरद्वार और ऋषिकेश जैसे गंगातटीय धर्म क्षेत्रों में रह कर नित्य गंगा की निर्मल धारामें स्नान करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

इस ऋतु में तैलाभ्यंग से रोग से पसीने निकलने में बाधा उत्पन्न न हो और शरीर की निर्विषीकरण क्रिया होती रहे इसी हेतु तैल मालिश का निषेध किया गया है। तदनन्तर चन्दन आदि शीतल द्रव्यों का माथे पर लेप लगाना चाहिये। रंगीन वस्त्र धारण न कर श्वेत एवं स्वच्छ वस्त्र पहनने चाहिये। रंगीन कपड़ा गर्म होता है। मध्याह्न में मार्ग गमन भी नहीं करना चाहिये। यदि किसी आवश्यक कार्यवश बाहर जाना ही पड़े तो शीतल जलपान कर छाता लगा अपने पास एक प्याज की गांठ रख और पाद त्राण पहन कर जाना चाहिये। इससे लू लगने का भय जाता रहता है। हैजे से रक्षा होती है।

इस ऋतु में दिन में सोना महर्षिचरक के निम्न मतानुसार हितकर माना गया है—

ग्रीष्मे चादान रूक्षाणांवर्धमाने च मारुते।
रात्रीणां चाति संक्षेपातद् दिवा स्वप्नः प्रशस्यते ॥

(चरक सूत्र स्थान)

अतः मध्याह्न में शीतल गृह में सोना चाहिये और रात को बाहर चांदनी में। पंखे को चन्दन, कपूर और खस के पानी में भिगोकर उपयोग में लाना चाहिये। विद्युत चालित पंखा रूक्षताजनक होता है।

शेष पृष्ठ १८३ पर पढ़ें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी आंखें

(लेखक—डा० एम० एस० अग्रवाल, १५ दरियागंज, देहली)

[गतांक से आगे]

सन्निपातस्राव:—संधियों में पकने वाली शोथ कहते हैं।

रुधिरजन्यस्राव:—स्राव गरम एवं रुधिर गिरता है। ऐसी अवस्था को रुधिर जन्य स्राव कहते हैं।

पर्वणी:—काले एवं सफेद भाग की संधि पर छोटी, लाल एवं दाहयुक्त सूजन को पर्वणी कहते हैं।

जंतुग्रंथिलक्षणम:—पलक या पलक की संधियों में उत्पन्न अनेक आकृतिवाले कृमी खुजली को उत्पन्न करें और नेत्र को बिगाड़ बिगाड़कर पलक तथा सफेद भाग की संधियों में जाते हैं उसे जन्तुग्रंथी कहते हैं।

सारे नेत्र में सत्रह रोग होते हैं

चार अभिष्यन्द, चार अधिमन्थ, सशोथपाक, अशोथपाक, हताधिमंथ, वातर्पयय, शुष्काक्षिपाक, अन्यतोवात, अम्लाष्युषित, शिरोत्पात और शिराहर्ष।

चार अभिष्यंद

(क) वाताभिष्यंद (ख) पित्ताभिष्यंद (ग) कफाभिष्यंद (घ) रक्ताभिष्यंद यह सब पीड़ा देने वाले होते हैं।

चिन्ह:—पीड़ा, जड़ता, रोमांच का होना, खुजली, रुक्षता, मस्तकपीड़ा, चिपकना, और आंसुओं का शीतल होना। यह सब चिन्ह वाताभिष्यंद में होते हैं।

(ख) दाह पकना, शीतल पदार्थों की इच्छा, नेत्रों के सामने धुंध, आंसुओं का अधिक आना, आंसुओं में गर्मी एवं पीड़ा का अनुभव।

(ग) गरम पदार्थों की इच्छा, भारीपन, सूजन, खुजली, कीचड़ा अधिक आना, शीतल स्राव।

(घ) आंखों में लाली, नेत्रों में लाली वात के अन्य लक्षणों का होना।

जैसे कफाभिष्यन्द हो तो उसकी सात रात्रियों में दृष्टि चली जाती है। रक्ताभिष्यंद की पांचरात्रियों में, वाताभिष्यंद हो तो ६ रात्रियों में और पित्ताभिष्यंद हो तो तीन रात्रियों में दृष्टि चली जाती है। अतः रोगी को रोग के बढ़ने से पहले उसके उपचार पर ध्यान देना चाहिये।

सशोथपाक:—नेत्रों में खुजली, चिपके, अधिक आंसू, पके गूलर के समान लाल और सूजन लिये हुए हो।

सशोथपाक:—सशोथपाक के सब लक्षण हों लेकिन खुजली न हो तो उसे सशोथपाक रोग कहते हैं।

वातर्पयय:—वायु भौओं में या नेत्र में मालूम हो या तीव्र पीड़ा का अनुभव।

शुष्काक्षिपाक:—नेत्र के पलक दारुण तथा कठिन और रुखे हो, आंख मिची रहे, दाह हो और दृष्टि साफ न हो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अम्लाध्युषितः—खट्टे पदार्थों के सेवन से नेत्र लाल, दाहयुक्त और सूजन लिये हुए हों,

शिरोत्पातः—वेदनारहित या वेदनायुक्त नेत्रों की शिरा लाल हो जाय या विकृत हो जायें।

शिरोहर्षः—नेत्र पूर्ण लाल, अत्यन्त स्राव और दृष्टि नहीं के बराबर।

चिकित्साः—पांव की दो नसें मस्तक तक गई है। इनका मर्दन एवं लेपन बहुत लाभकारी होता है। जूतों का सेवन, पांव का धोना आदि सदा लाभदायक हैं।

भोजन में:—शालि चावल, मूंग, जौ, बथुआ, चौलाई परवल, करेले, नवीन बैंगन, घी में पकाकर खाने से लाभ होता है।

तीखे, खट्टे, भारी, तीक्ष्ण एवं गरम पदार्थ उड़द की दाल, लोबिया, मैथुन, मदिरा, मांस, मछली, दाहकारक अन्न आदि नेत्रों के लिये हानीकारक है।

उपचारः—सेक, पिंडी (दवा बांधना), विडाल (लेप) तर्पण (दूध या घी से नेत्रों का धोना) पुटपाक (पकाया रस नेत्रों में डालना) और अंजन नेत्रों को हितकर है।

जो फूला थोड़े समय का हो वह साध्य है लेकिन पुराना फूला असाध्य होता है। इस रोग को अव्रयशुक्र कहते हैं।

सफेद भाग में कोमल लाल मांस को रक्तार्म कहते हैं प्रारंभिक अवस्था में साध्य एवं बढ़ने पर असाध्य होता है।

कुछ सुझाव

भोजन के बाद दोनों हाथों को मलकर दो बूंद जल की नेत्रों में डालने से नेत्रों की गरमी कम होती है। काले तिल को पीसकर सिर से मलकर स्नान करने से नेत्र उत्तम होते हैं एवं पीड़ा भी कम होती है। नित्य आंवले के तेल को लगाकर स्नान करना चाहिये। त्रिफले के क्वाथ से नित्य नेत्रों के धोने से लाभ होता है। इस क्वाथ को पीने से अनेक शारीरिक रोग नष्ट होते हैं। अभिष्यंद के रोगी को बहुत लाभ दायक है। वायु अभिष्यंद में अरण्ड के पत्ते, इसकी जड़ और छाल की पिंडी रोग का शमन करती है। पित्ताभिष्यंद में आमले की पिंडी रोगी की पीड़ा का शमन करती है। त्रिफले की पिंडी बांधने से अनेक अभिष्यंदों का निदान होता है। क्रमशः

शेष पृष्ठ १८१ का

इस ऋतु के रूक्ष एवं उष्ण वातावरणमें ऐश्वर्य सम्पन्न लोग मुक्तामणि विभूषित हो और साधारण लोग सुगंधित पुष्पों की मालायें धारण कर प्रातः सायं जलाशयों के किनारे एवं सुन्दर बाग बगीचों में पर्यटन कर जीवन को इस ऋतु में सानंद व्यतीत कर सकते हैं। इसी कारण संस्कृत साहित्य में इन्हीं सब उपायों को बहुत ही सरल एवं भावपूर्ण शब्दों में कहा गया है—

चन्दनं च चतुर्द्वारं चामरं चीर चन्द्रिका
चम्पकं च चतुर्नारी ग्रीष्मे सप्त सुखावहाः ॥

ग्रीष्म ऋतु का अपथ्य

इस ऋतु में अधिक नमकीन, खट्टे, चाट चटनी वाले पदार्थ, तीखे (मिर्च मसालेदार) एवं उष्ण पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिये। इस ऋतु में शरीर स्वभावतः क्षीण हो जाता है। अतः कठोर व्यायाम का भी निषेध है। महर्षि चरक ने तीक्ष्ण उष्ण और रूक्ष होने के कारण इस ऋतु में शराब न पीने का भी निर्देश किया है। उक्त महर्षि मतानुसार यदि पीने के अभ्यासी ही हों तो उन्हें कम मात्रा में और अधिक पानी मिलाकर पीना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(शेष पृष्ठ १६८ का)

लगते हैं। दस्तों का वर्ण बिल्कुल श्वेत तण्डुलोदकवत् हो जाने पर प्रायः ५—५ मिनट पर मलागार में जाने को विवश होना पड़ता है, रोगी में उठने बैठने की भी शक्ति नहीं रहती। और एक ही स्थान पर पड़े २ दस्त फिरता रहता है।

वमन आरम्भ से ही होते हैं और अतिसार की भांति यह भी बढ़ते ही जाते हैं। वमन में प्रथम आमाशयिक द्रव्य निकलते हैं। पुनः क्षुद्रांत्र से पित्तादि पीतद्रव निकते हैं। अकस्मात् वमन का वर्ण भी अतिसारवत् श्वेत हो जाता है। इस अवस्था का वमन अतिसार, विशूचिका कीटों से पूर्ण होता है। दुर्बलता बढ़कर पिण्डलियों में उद्वेष्टन होने लगता है, तृषा अत्यधिक होती है, बाह्य ताप कम, किन्तु गुदा में थर्मामीटर लगाकर देखा जाय तो ताप १०३ का या इससे भी अधिक होता है।

द्वितीयावस्था—इसको शीतकायावस्था कहा जाता है रोगी अत्यंत क्षीण और उसका शरीर बिल्कुल ठंडा स्पर्श से प्रतीत होने लगता है। चिहरा पिचका हुआ, आंखें अन्दर को धंसी हुई और कपोल बैठ जाते हैं। त्वचा, शीत, शुष्क, नीलाभ हो जाती है। और झुर्रिया पड़ जाती हैं। मूत्र पहिले कम और गाढ़ा हो जाता है। पीछे आना ही बन्द हो जाता है। नाड़ी गति क्षीण और अति तीव्र हो जाती है पश्चात नाड़ी गति शनैः प्रतीत भी नहीं होती है; रक्त गाढ़ा और उसका घनत्व १०६५ से अधिक हो जाता है, रक्त भार कम और १२० के स्थान पर ८० रह कर श्वांस क्षुद्र और दुर्बल हो जाता है, उच्चारण बहुत धीमा होकर अन्त में रोगी सन्यस्त होकर मर जाता है।

तृतीयावस्था—साध्यावस्था में कुछ घन्टों या दिनों के पश्चात् रोगी अच्छा होने लगता है, वमन और अतिसार कम होने लगते हैं। शनैः २ उनका वर्ण भी बदल ने लगता है और थोड़ा २ मूत्र भी आने लगता है, नाड़ी वापस लौट आती है, त्वचा स्पर्श में उष्ण प्रतीत होने लगती है। रोगी संज्ञावान हो जाता है।

अवरुद्धविशूचिका—रोगी वमनातिसारादि बिना लक्षणों के प्रगट किये आध्मान शूल मल मूत्रावरोध बताकर, झटपट शीत कायावस्था तथा जन्यस्तावस्था में चला जाता है, रोग निर्णय करते २ चल बसता है आयुर्वेदज्ञ इस स्थिति में अलसक विलम्बिका के निदान करते हैं।

रोग मीमांसा—महामारी के दिनों में इस रोग का पहिचानना कठिन नहीं। परन्तु एकाकी रूप में, अजीर्ण, आहार विष, पारद व संखिया के विष तथा आन्त्रिक शूल (जिसमें अतिसार और वमन दोनों ही हों) से भेद करना कठिन होता है उस समय केवल मल परीक्षा से ही पता लगता है।

अवरोधकोपाय और चिकित्सा—हैजे के दिनों में अपने पथ्यापथ्य पर विशेष ध्यान दें, बाजार की कोई चीज न खावें जो कुछ खाना हो उबाल कर खावें, बिना उबाले खाये जाने वाले हरित फलादि को जहां तक हो सके नहीं खाना चाहिये, यदि खाना ही पड़े, तो पोटाशियम परमेंगनेट के बिलियन में धोकर, पुनः उबले हुये पानी से स्वच्छ कर खा सकते हैं। बर्फ इस रोग में प्रयुक्त होने पर भी ध्यान रहे कि विशूचिका कीट बर्फ में सानंद जीवित पाये जाते हैं।

यदि सम्भव हो तो रोगी को संक्रामिक आतुरालय में भेज दें। अथवा मकान के किसी स्वच्छ एकान्त कमरे में रखलें। उसके मल वमनादि के दूर करने का पूर्व प्रबन्ध होना चाहिये। रोगी के त्यागे हुये मल पर बैठी मक्खियां भोज्य पदार्थों पर न बैठने पायें, परीचारकों को स्वयं के तथा औरों के लिये विशेष सावधान रहना चाहिये। कालरा वैक्सीन का इंजेक्शन करा लेने से रोग क्षमता बढ़ जाती है। क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रत्नों के साथ तुलनेवाली अनुपम पुस्तकें

४० से अधिक आयुर्वेदीय पुस्तकों के रचयिता प्रसिद्ध लेखक व चिकित्सक राजवैद्य डा० गणपतिसिंह वर्मा द्वारा रचित व प्रकाशित—यह पुस्तकें हैं जिनकी वैद्य, हकीम, डाक्टर और जन साधारण मुक्त कंठ से प्रशंसा कर रहे हैं। जिनके विषय में देश के गणमान्य लोगों की सम्मति है कि इन पुस्तकों का प्रत्येक घर में होना आवश्यक है। क्योंकि इनके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक स्थान में सहसा होजाने वाले रोगों का सरलतापूर्वक इलाज कर सकता है। प्रत्येक पुस्तक के कई २ संस्करण हो चुके हैं जोकि इनकी लोकप्रियता का सबसे बड़ा प्रमाण है।

अनुभूत योग चिन्तामणि

इसके लेखक ने ५ वर्ष तक लम्बी २ यात्रायें करके संन्यासियों की कठिनतम सेवा और भ्रमण के अथक परिश्रम के अतिरिक्त ५४२५ रुपये खर्च करके जो ५३३ जादुअसर अनुभूत नुस्खे प्राप्त किये थे वह निष्कपट भाव से इस पुस्तक में प्रकाशित कर दिए हैं। भारतवर्ष के सैंकड़ों वैद्यों, हकीमों और डाक्टरों ने इन सब नुस्खों की पचासों बार परीक्षा करके शत प्रतिशत अनुभूत होने के प्रमाणपत्र दिये हैं जिससे सिद्ध होगया है कि इसमें एक भी ऐसा योग नहीं—जो अनुभूत सिद्ध न हो, सबके सब सन्यासियों के हृदय के गुप्त योग हैं। भारत के गणमान्य हकीमों व वैद्यों का निर्णय है कि जिसके पास यह पुस्तक नहीं, निःसन्देह उसकी चिकित्सा और औषधालय अधूरा है। मूल्य प्रथम भाग पांचवीं आवृति ४।) द्वितीय भाग ४) डाकखरच जुदा।

१५ वर्ष के कठिन परिश्रम का फल

अनुभूत योग प्रकाश

आज से १५ वर्ष पूर्व जिस पुस्तक को प्रकाशित करने का आयोजन प्रकाशित किया गया था वह पुस्तक अब छप कर तैयार होगई है। इस पुस्तक के योगों के विषय में केवल इतना बतला देना ही काफी होगा कि गत १५ वर्ष के सतत उद्योग से बड़े २ साधु, महात्मा, फकीरों भीलों से लेकर राजा रईसों तथा ख्यातिवान प्रसिद्ध विद्वान वैद्यों, हकीमों और डाक्टरों के उन अनुभूत चमत्कारी योगों को इस पुस्तक के पृष्ठों पर अंकित कर दिया है—जिनको आज तक जमाने की हवा भी न लगी थी। फिर इसके लेखक डा० जी० एस० वर्मा का नाम ही बड़ी जमानत है कि पुस्तक कैसी है। इसमें सबसे बड़ी वह रीसर्च आपको मिलेगी जिसे आजतक आपने सुना भी न होगा अर्थात समुद्रीय द्रव्यों यथा मुक्ता शुक्ति, प्रवाल, शंख, कपर्दिका आदि का तेल बनाना। इन तेलों की तुलना में इन द्रव्यों की भस्में बहुत तुच्छ लाभ पहुँचाती हैं इन तेलों से अनेक कष्टसाध्य कहे जाने वाले रोग शीघ्र मिट जाते हैं। दूसरी विशेषता यह है कि इन तेलों से उडने वाले सभी द्रव्य यथा पारद, हिंगुल (शिंगरफ आदि स्थाई होजाते हैं इस पुस्तक में कोई ऐसा रोग नहीं छोड़ा जिस पर अनुभूत सिद्ध योग न छपा हो। मूल्य ६।) डाकखर्च ॥।=)

इन्जेक्शन बनाना व लगाना सीखो

इंजेक्शन चिकित्सा तत्काल प्रभाव दिखाने वाली होने से आज लोकप्रिय हो रही है' किन्तु वैद्यों हकीमों को इनकी जानकारी न होने से उन्हें बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड रहा है इन्हीं भावों से प्रेरित हो कर यह पुस्तक तैयार की गई है, जिसमें समस्त रोगों की चिकित्सा आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक और एलोपैथिक इन्जेक्शनों द्वारा ही करना बतलाया गया है। रोगशीर्षक के नीचे क्रमशः प्रत्येक रोग के तीनों प्रकार के इन्जेक्शन ऐसे ढंग से लिखे गये हैं कि जिससे चिकित्सक एक क्षण में निश्चय कर सकता है कि कौनसा इन्जेक्शन किस स्थान पर, कितनी मात्रा में कितने अन्तर से, किस प्रकार लगाना चाहिये और साथ २ इन्जेक्शन बनाने की विधि भी लिखदी गई है। आयुर्वेदिक इन्जेक्शन जिन द्रव्यों से बनाये जाते हैं वह तमाम आपके घर में, खेतों और जंगलों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वत्र मिल सकते हैं। एक एक रोग पर कई २ इन्जेक्शन बनाने के योग लिखे गये हैं। इसके अतिरिक्त सीरम, वैक्सिन, पेनिसिलीन, विटामिन्स के इन्जेक्शनों का वर्णन और उनको लगाने की सरल व निरापद सचित्र विधि भी खूब समझा कर लिखदी गई है। इस पुस्तकको पढ़ने के बाद इन्जेक्शनों के विषय में जानने को कुछ भी शेष न रहेगा और सब प्रकार के इंजेक्शन तरल (लिक्विड) टेबलेट व पौडरादि रूप में बना व लगा सकेंगे। मूल्य ५) डाकखरच ।।।=)

सिद्ध रसायन

रस-रसायस की जिन कठिन क्रियाओं से वैद्य बन्धु घबराकर उनके दिव्य गुणों से वंचित रह जाते हैं, उन क्रियाओं का लम्बा अनुभव करके विद्वान लेखक ने उनका सरल तरीका इस ग्रन्थ में दर्शाया है और साथ ही महान रसायनाचार्य नागार्जुन और अन्य सिद्धों की संचिकाओं के अज्ञात योगों को उनकी गुत्थी सुलझाकर प्रकाशित किया है जिनसे पाठक न केवल काया (कायाकल्प) रंगने में ही सफल होंगे बल्कि स्थिर मांत वाले माया (कीमिया) रंगने में भी सफल होंगे। इस प्रकार पाठकों को जहां आर्थिक संकट से मुक्ति मिलेगी वहां असाध्य समझ कर छोड दिये जाने वाले रोगों के वे सिद्धहस्त चिकित्सक भी बन जावेंगे। इस पुस्तकके कुछेक योगों का दिग्दर्शन करा देने से आपको अनुमान हो जायगा कि यह कितना अपूर्व ग्रन्थ है, यथा—शुद्ध बद्ध और सिद्ध करनेवाली दिव्य औषधियां, औद्भिदाम्ल व बूटियां, रस बन्धन, गन्धकको स्थाई करना, बद्ध पारद को सिद्ध बनाना, रजत रंजन (कीमिया) अभ्रक सत्व की द्रुति, द्रुतिसे पारद बंधन, बंग स्तम्भन, पारद भस्म रक्तयोगेन ताम्रोद्धार (कीमिया) तांबा और रजत (चांदी) वेधी सिद्ध हरिताल, हरिताल कल्प, देह व लौह वेधी सिद्ध हरिताल तैल, सिध्द कुचला कल्प, सर्व रोग हर फिटकडी रसायन (कल्प) पुरुषों के गुप्त रोगों पर रामबाण सिद्ध खादक, पादक गुटिका, बंगवेधी शिंगरफ मोमियां बनाना, नौसादर तैल, सिद्ध गोरखी जलमुद्रा, सिद्ध गन्धक—एक गिरनारी महात्मा का योग जिसको बनाना अति सरल है और क्षय (T. B) संग्रहणी जैसे अनेक भयंकर रोगों का सफल इलाज है आदि। इसमें अन्य पुस्तकों की भांति जोड तोडकर एकत्र की हुई सामग्री नहीं है बल्कि लेखक के जीवन भर का अनुभव बन्द किया है। इसके पाठकों के लिए लेखक का सद्परामर्श और सहायता भी सदैव प्रस्तुत रहेगी। मूल्य ५) पो० ।।।=)

संन्यासियोंकी चमत्कारी गुप्त बूटियां

इस पुस्तक में सैकडों ऐसी ही जडी बूटियों के गुप्त रहस्य प्रकट किये गये हैं, जिनकी बदौलत संन्यासियोंकी धाक जमी हुई है। इनमें से अधिकांश बूटियां वही हैं, जो आपको जंगल, खेत, बागीचों और पंसारियों की दूकानों पर मिल जावेंगी जिनसे आवश्यकता पडने पर सिरसे पांव तकके समस्त रोगों का इलाज हर जगह प्रत्येक आदमी आसानी से कर धन और यश कमा सकता है इस पुस्तक को पढ़ लेने के बाद आप के पास रोगियों का तांता बंधा रहेगा। ४५० पृष्ठ, २ भाग मूल्य ५।) डा० ख० ।।।=)

गुप्त योग रत्नावली

इस पुस्तक में डा० नेगी के व निज के बड़-बड़े गुप्त योग प्रकाशित किये गये हैं जिनको भारतवर्ष के कोने २ से तथा अरब, मिश्र और अफ्रीका आदि प्रदेशों के विभिन्न स्थानों में जाकर लेखक ने प्राप्त किये थे। मूल्य २।) डा० ख० ।।।–)

पेटेण्ट औषधियां व भारतवर्ष

संसार में सबसे अधिक लाभदायक व्यापार पेटेण्ट औषधियों का है। अमृतधारा और सुधासिन्धु के मालिकों ने १-१ पेटेण्ट दवा के नुस्खे से लाखों रुपया कमाया है विलायती फर्में एक-एक पेटेण्ट दवा से बेहद रुपया कमा रही हैं। यदि उनकी तरह आप भी भारतवर्ष, इंगलैंड, अमरीका की प्रसिद्ध और सर्वप्रिय प्रति वर्ष करोडों रुपये की बिकने वाली पेटेण्ट औषधियों के नुसखे बिना किसी कष्ट के घर बैठे सीख कर साधारण पूंजी से सैंकडों रुपये मासिक की स्थाई आमदनी पैदा करना चाहते हैं तो आज हो 'पेटेण्ट औषधियां और भारतवर्ष' नामक पुस्तक की एक प्रति मंगाकर पढ़े। १६७ योगवाली मू० ।।।=) डा०ख० ।।।)

CC-0. In Public Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यौवन के गुप्त रहस्य

लुटी हुई जवानी और बीता हुआ यौवन वापिस लाने के अनुपम उपाय—पुरुषत्व और जवानी के वह गुप्त रहस्य, जिनको जानने से अशक्ति के ऐसे रोगी जिन्हें किसी दवा से लाभ नहीं हुआ या सकडों रुपये की दवा खाकर भी निराश बैठे हैं निःसन्देह सशक्त बन सकते हैं। मनुष्य देह का वह केन्द्र जहां से स्वास्थ्य और यौवन का रस झरकर समस्त शरीर का पोषण करता है, उस केन्द्र को शक्ति प्रदान करने के अनूठे उपाय, जिससे लुटी हुई जवानी और बीता हुआ यौवन पुनः लौट आता है पुरुषों के अकथनीय भयंकर रोग बिना दवा सेवन किये ही किस प्रकार नष्ट हो जाते हैं। ऊर्द्ध्वरेता होने का वह प्रयोग जिससे पुरुष की शक्ति में कमी नहीं आती। रसग्रंथियों से आश्चर्य जनक दवाइयां बनने के प्रयोग हजारों रुपये खर्च करके डा० वोरनाफ की बताई हुई बन्दर की रसग्रंन्थि लगवाने व आपरेशन का कष्ट सहन किये बिना ही सुगमता से प्रत्येक स्त्री पुरुष वही शक्ति प्राप्त कैसे कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त पुरुषों के रोगों के सम्बन्ध में निदान व ऐसे २ गुप्त प्रयोग इस पुस्तक में दर्ज किये गये हैं, जिनको उपयोग करने वाला पुरुषत्व पर गर्व कर सकता है। मूल्य ३) डाक खर्च ॥=)

हिन्दी से अंग्रेजी मैट्रिक

विश्वके ज्ञान, विज्ञान और व्यापार तथा कला-कौशल को सीखने के लिए आज की विश्व भाषा अंग्रेजी का सीखना सबके लिये जरूरी है। इसको सीखना कोई कठिन भी नहीं है। जिस प्रकार अंग्रेज मातायें अपने बालकों को अपने घर में ही अंग्रेजी सिखा देती हैं ठीक उसी प्राकृतिक नियमानुसार यह ३२० पृष्ठों की पुस्तक तैयार कीगई, जिसे दो घण्टा प्रति दिन पढ़नेसे केवल हिन्दी पढ़े लिखे व्यक्ति को भी चार मास में भली प्रकार याद होजाती है। इसमें ए०बी० सी० डी० से लेकर आवश्यक ग्रामर (व्याकरण) अनुवाद आदि अंग्रेजी की मैट्रिक तक का सब ज्ञान हिन्दी से अंग्रेजी और अंग्रेजी से हिन्दी में ऐसे सरल और सुबोध ढंग से ४८ पाठों में छपा है कि जिससे केवल अंग्रेजी में मैट्रिक की परीक्षा देनेवाले लड़के लडकियां निःसन्देह पास हो जाते हैं। दसवां संस्करण अभी छपा है। मूल्य ३॥) डाक खरच ॥=)

७८६ वर्ष का प्राचीन रस ग्रन्थ

वसवराजियम—हजारों वर्ष पहिले दक्षिण भारत में चालुक्यवंशीय राजाओं का राज्य था उनके प्रधान मन्त्री रुद्र साम्प्रदायी महान रसतन्त्रज्ञ वसवराज ने सं० १२२५ में इस सिद्ध साम्प्रदायी अनुपम ग्रन्थ की रचना की थी, जिसमें भगवान रुद्र के अनुयायी बनों में विचरने वाले रसायनाचार्य नागार्जुन नागबोधि, नित्यनाथ चर्पटी, कर्णेरी, पूज्यपाद आदि योगियों का रसज्ञान भरा पडा है, श्री गोविन्दपादाचार्य के कथनानुसार शरीर को अजरामर करने में पारे की बराबरी करने वाली न तो कोई जडी बूटी है और न ही कोई रसायन और भस्म है। पारे में यह बड़े आश्चर्य की बात है कि वह स्वयं मूर्छित होकर रोगी के रोग को दूर करता है और बन्धा हुआ होकर मुक्ति देता है तथा अच्छी तरह मरा हुआ दूसरों को जीवन देता है। आज मद्रास प्रान्तीय वैद्यों की जो प्रतिष्ठा, यश और कीर्ति सर्वत्र प्रसिद्ध हो रही है वह सब इसी ग्रन्थ के योगों का प्रताप है। यह ग्रन्थ तैलंग भाषा में ताड पत्रों पर लिखा हुआ उपलब्ध हुआ था जिससे अब तक तैलंग भाषा भाषी वैद्य ही लाभ उठाते रहे, किन्तु यह जानकर आप अतीव प्रसन्न होंगे कि अब आयुर्वेद बृहस्पति श्री गोवर्धन जी शर्मा छांगाणी के अतुल परिश्रमके फलस्वरुप आज यह ७८६ वर्ष का प्राचीन तैलंग हस्तलिखित दुर्लभ ग्रन्थ हिन्दी भाषामें भी हमारे द्वारा प्रकाशित होगया है। इस ग्रन्थ के विषय में कहा गया है कि सतयुग में चरक, त्रेता में रसार्णव तथा द्वापर में सिद्ध विद्याभू का महात्म्य है उसी प्रकार कलियुग में बसवराजियम पूज्य ग्रन्थ है। इसमें जो निदान लक्षण प्रत्येक रोग के बतलाये हैं, उनको समझकर इसमें वर्णित योगों द्वारा जो चिकित्सा करेगा, भगवान रुद्र की कृपा से निसःन्देह वह सर्वत्र यश और सिद्धि प्राप्त करेगा। २५ प्रकरणों वाले सम्पूर्ण ग्रन्थ का मूल्य ८॥) डाकखरच १।)

पता—रसायन फार्मेसी (३ दरियागंज) पो० बो० नं० ११२५ देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

112383

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुधान

अधिक मानसिक परिश्रम, चिन्तन, अध्यापन या किसी अकथनीय कारण से जिनका दिमाग कमजोर हो गया है, स्मरणशक्ति घट गई है, हृदय दुर्बल हो गया है, सिर में हल्का २ दरद और थकावट रहती है उनके लिए 'बुधान' बहुत लाभदायक है। इसके सेवन से उपरोक्त दोष मिट जाते हैं। दिमाग पुष्ट होकर स्मरणशक्ति तीव्र हो जाती है। इससे उन्माद तक के रोगियों को लाभ हुआ है। बुद्धिजीवी लोगों के लिए वरदान स्वरूप है। मूल्य ४) डाकखरच १।)

टंकरोल

दो दिनमें इसकी ६ मात्राओंके सेवनसे जुकाम (प्रतिश्याय) ठीक हो जाता है। दो खुराक खाने से ही शिर का भारीपन, छींकें आना, नाक से पानी बहना आदि दूर होजाता है। इसका प्रभाव श्लेष्मकला पर होता है २४ मात्रा की शीशी का मूल्य १)

निद्राणी

स्वास्थ्य के लिए निद्रा उतनी ही आवश्यक है जितना कि भोजन, जल और शुद्ध वायु। भोजन के पचन और सात्म्यीकरण से शरीर की प्रत्येक सेल को अपनी स्थिति बनाये रखने की सामग्री मिलती है तो पूर्ण निद्रा से आराम मिलने के कारण घिसी हुई सेलों का पुनः निर्माण हो जाता है और खरच हुई शक्ति पुनः संचित हो जाती है। यदि युवा पुरुष को रात्रि में ६—७ घण्टे निरन्तर गहरी नींद नहीं आती या बीच बीच में टूट जाती है तो यह मस्तिष्क धमनियों की कठोरता, पाचन सम्बन्धी रोग, विबन्ध, ब्लडप्रेशर (रक्तचाप) नाडी दौर्बल्य आदि व्याधियों का लक्षण है। निद्राणी' इन सब अवस्थाओं में अपना निश्चित प्रभाव दिखाती है। कुछ ही मात्राओं के सेवन से रात्रिभर खूब गहरी नींद आने लगती है और प्रातः-काल उठने पर देह में स्फूर्ति और मन प्रफुल्लित होता है इसमें कोई मादक या विषैला द्रव्य नहीं है। मूल्य ४) आधा कोर्स २।।) पो० १।)

सनोल

यह पुराने कब्ज की दवा है। इसे लगातार १५ दिन सेवन करने से पुरानी कब्ज मिट जाती है। प्रति दिन प्रातःकाल दस्त खुलकर साफ आता है। पेट साफ हो जाने से चित्त प्रसन्न रहता है और भूख अच्छी लगती है तथा शरीर में स्फूर्ति आती है। दवा का कोर्स पूरा हो जाने के बाद फिर कभी कब्ज नहीं होगा और समय पर नियमित रूप से दस्त साफ हुआ करेगा। मूल्य ३।।) पो० १।।।–)

नाग सुरमा

यह सुरमा रसायनिक प्रक्रिया द्वारा बनाया जाता है। यह सभी नेत्र रोगों में लाभकारी है। दृष्टिमन्दता, दूर या निकट कम दिखाई देना, तिमिर, धुन्ध, जाला, आंखों से पानी बहना आदि रोगों को नष्ट करके दृष्टि को तेज बनाता है। लगाते ही नेत्रों में ठंडक प्रतीत होती है। ६ माशा की शीशी १।।) तीन माशा १)

अमोनिरी

यह हमारी नव अनुसन्धानित विशेष बनस्पतियों द्वारा निर्मित और दो वनस्पतियों द्वारा भावित योग है जिसे दीर्घ परीक्षण के बाद अब प्रकाश में ला रहे हैं। यह औषधि आजकल के बहुप्रचलित पेट रोगों और उनके उपसर्गों तथा आंत की सूजन व शूल, व्रण, वायु विकार, मल की सड़नसे उत्पन्न होने वाले विष दोष, गैस चढ़ना, अम्लपित्त, आंव, जीर्ण कब्ज, भूख न लगना, खून की कमी, नींद न आना, बुढ़ापा लाने वाली अम्लता, जोड़ों का दर्द व खांसी, जुकाम आदि के लिए अद्भूत गुणकारी सिद्ध हुई है। आमाशय और आन्तें बलवान होकर भूख खूब लगती है। स्वच्छ रक्त बनने से शरीर पुष्ट हो जाता है। मूल्य एक कोर्स ४) डाकखरच १।)

कोलरास—हैजा की प्रत्येक दशा में इसके सेवन से लाभ हो जाता है। अब तक के परीक्षण में अद्भुत लाभकारी सिद्ध हुई है। प्रति वर्ष हजारों रोगी इसके सेवन से स्वास्थ्य लाभ करते हैं। मूल्य १।) मात्र।

जी० एस० आयुर्वेदिक रीसर्च प्रॉडक्टस ३ दरियागंज, देहली ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेल्फ एक्टिंग
इलेक्ट्रोमेग्नेटिक

यह बेटरी सेल पर चलने वाली बिजली के इलाज की मशीन है। इसके द्वारा गठिया, आमवात आदि सभी वातरोगों, पक्षाघात, लकवा, अर्श, मधुमेह, अनेक प्रकार की शारीरिक पीड़ाओं व शोथ आदि ३३ रोगों का इलाज किया जा सकता है। किस रोग पर इस मशीन द्वारा बिजली का किस प्रकार प्रयोग किया जाय इसके लिए पुस्तिका साथ भेजी जाती है। मूल्य २५) डाक व्यय २|||≡)

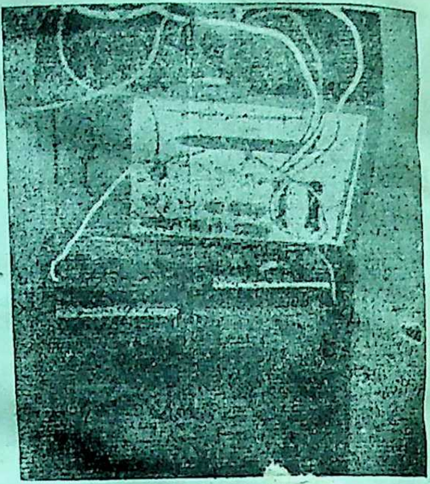

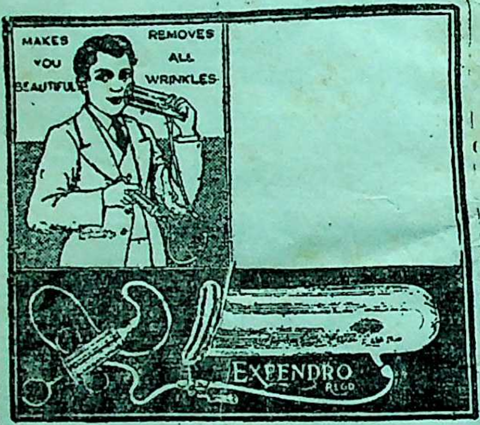

एक्सपैंडरो

इस यन्त्रकी उपयोगिता प्रायः सभी जानते हैं। नसों और मांसपेशियों की शिथिलता में जहां प्राकृतिक रूप से रक्त का परिभ्रमण सम्यकरूपेण नहीं होता वहां इसके प्रयोग से आशातीत लाभ होता है। नसों और मांसपेशियों को सशक्त बनाने के लिए इसका प्रयोग करना उत्तम उपाय है। मूल्य १५) बढ़िया १८) डाक खरच पै० २||)

हमारा गुण विधान सीरीज

दूध गुण विधान	१)	नीबू गुण विधान	|||)
घृत गुण विधान	||)	इन्द्रायण गुण विधान	||)
आरिष्टक (रीठा) गुण विधान	||)	पीपल गुण विधान	||)
बबूल (कीकर) गुण विधान	||)	आम गुण विधान	१|)
फिटकड़ी गुण विधान	१||)	पलांडु गुण विधान	||)
एकौषधि गुण विधान	१|||–)	मधु (शहद) गुण विधान	१||)
स्वर्णक्षीरी गुण विधान	|||)	संतरा गुण विधान	|)
अर्क (आक) गुण विधान	१||)	नीम गुण विधान	|||≡)
धतूरा गुण विधान	|||)	नमक चिकित्सा	|)

पता—रसायन फार्मेसी ३, दरियागंज, पो० बो० ११२५ देहली

डा० जी० एस० वर्मा मुद्रक ... द्वारा स्वस्तिक प्रिंटिंग प्रेस, देहली में छपकर प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar